॥ श्रीः ॥

भैरवप्रतिष्ठाप्रयोगः

व्याख्याकारः

पं० अशोक कुमार गौड 'वेदाचार्य'

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

256

भैरवप्रतिष्ठाप्रयोगः

(भैरव प्रतिष्ठा की सम्पूर्ण विधियों का समावेश)

अशोकेन्दुहिन्दी-टीकासंवलित

व्याख्याकार

डॉ० अशोक कुमार गौड

वेदाचार्य, पी.एच-डी.

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

प्रकाशक
चौखम्बा विद्याभवन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
चौक (वैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069, वाराणसी - 221 001
दूरभाष—2420404
Email - cvbhawan@yahoo.co.in

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण 2013
मूल्य : 180/= रुपए

अन्य प्राप्तिस्थान :

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113, दिल्ली - 110 007
दूरभाष—23856391

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, 21-ए. अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली
दूरभाष : 32996391

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
के. 37/117, गोपालमन्दिर लेन
पो० बा० नं० 1129, वाराणसी-221 001
दूरभाष-2335263

प्रस्तावना

इस पवित्र भारतभूमि में भैरव की उपासना आज से नहीं अपितु प्राचीन समय से ही होती चली आ रही है। भैरवदेवता अपने उपासकों को भय-बाधाओं से मुक्त कर उनके कष्टों का हरण कर उन्हें सुख प्रदान करते हैं। इसीलिए चारों वर्णों के लोग भैरव देवता की उपासना सर्वाधिक रूप से करते हैं।

रुद्रयामल तन्त्र में चौसठ भैरवों का उल्लेख प्राप्त होता है, किन्तु वैदिक ग्रन्थों के अनुसार आठ भैरव होते हैं। इन आठ भैरवों में बटुक भैरव, काल भैरव, संहार भैरव और भैरव अत्यधिक पूजित होते हैं, जिनके देवालय आज भी भारतवर्ष के शहरों और गाँवों में प्राप्त होते हैं। इनके देवालयों में इनकी जो मूर्ति स्थापित की गई है, वह साङ्गोपाङ्ग विधि से प्रतिष्ठित है और जो इनके नवीन देवालय बन रहे हैं, उनमें भी इनकी जो मूर्ति स्थापित की जाएगी, उसकी भी प्रतिष्ठा साङ्गोपाङ्ग विधि से ही होगी। बिना प्रतिष्ठा किए इनकी मूर्ति तो क्या किसी भी देवी या देवता की मूर्ति कदापि स्थापित नहीं हो सकती।

जिस प्रकार वेद अत्यन्त दुरूह है, उसी प्रकार वेदाङ्गभूत प्रतिष्ठा भी अत्यन्त दुरूह है। भैरव देवता की प्रतिष्ठा भोग चाहनेवाले को उत्तरायण सूर्य में और मोक्ष चाहनेवाले को दक्षिणायन सूर्य में करनी चाहिए। वैसे भी हमारे शास्त्रों में लिखा है कि उग्र देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा दक्षिणायन सूर्य में भी की जा सकती है, किन्तु मलमास (अधिकमास) और खरमास में इनकी प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

इनकी प्राणप्रतिष्ठा कैसे और किस प्रकार से होती है, इस विषय पर कोई भी पुस्तक स्वतन्त्र रूप से आजतक प्रकाशित न हो पाई थी। अत: 'भैरवप्रतिष्ठाप्रयोग' नाम की यह पुस्तक आप सभी महानुभावों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु, पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के द्वारा इनकी प्रतिष्ठा वैदिक व कर्मकाण्डी विधिपूर्वक सम्पन्न करा सकेंगे।

भवदीय
अशोक कुमार गौड

भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल,
म०म०पा० पं० विद्याधर गौड लेन,
डी. ७/१४ सकरकन्द गली, वाराणसी
मो० - ९७९२३५३७४५

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
मङ्गलाचरणम्	७
प्रतिष्ठारम्भ:	७
स्वस्तिवाचनम्	९
प्रधानसंकल्प:	१२
गणेशपूजनम्	१३
कलशपूजनम्	२४
स्वस्तिपुण्याहवाचनम्	२९
अभिषेक:	३५
षोडशमातृकापूजनम्	३७
वसोर्द्धारापूजनम्	४२
आयुष्यमन्त्रजप:	४४
सांकल्पिक नान्दीश्राद्धविधि:	४५
आचार्यादिवरणम्	५०
एकतन्त्रेण वरणसंकल्प:	५२
मण्डपप्रदक्षिणामन्त्रा:	५३
मण्डपद्वारभूमिपूजनमन्त्रा:	५३
मधुपर्कादिपूजनम्	५३
ब्राह्मणप्रार्थना:	५६
मण्डपप्रवेश:	५७
दिग्रक्षणम्	५९
पञ्चगव्यकरणम्, मण्डपप्रोक्षणम्	६०
मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम्	६१
मण्डपपूजनम्	७९
तोरणपूजनम्	८२
द्वारपूजनम्	८५
लिङ्गतोभद्रदेवतास्थापनं पूजनं च	१०२
प्रधानकलशस्थापनम्	११५
पीठदेवतान्यास:	११६
पीठपूजनम्	११७
अथाग्न्युत्तारणम्	११८
अग्निस्थापनम्	१२०
ग्रहादिस्थापनं पूजनं च	१२३
असङ्ख्यात रुद्रकलश स्थापनं पूजनं च	१३७
योगिनीस्थापनम्	१३८
योगिनीपूजनम्	१४८
क्षेत्रपालस्थापनम्	१५२
क्षेत्रपालपूजनम्	१५९
कुशकण्डिकाविधि:	१६३
वराहुति:, ग्रहादिहवनम्	१६८
केवलं नामाऽनुक्रमेण ग्रहादिहवनम्	१७२
केवलं नामाऽनुक्रमेण वास्तुमण्डलहोम:	१७२
अघोरहोम:	१७४
केवलं नामाऽनुक्रमेण लिङ्गतोभद्र-देवताहोम:	१७४
केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीहोम:	१७५
केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालहोम:	१७६
प्रधानाहुति:	१७७
भैरवाष्टोत्तरशतनामहवनम्	१७७
कर्मकुटी	१७९
जलाधिवास:	१८०
धान्याधिवासम्, घृताधिवास:	१८२
गन्धाधिवास:, पुष्पाधिवास:	१८२
धूपाधिवास:, फलाधिवास:	१८३
मिष्ठानाधिवास:	१८४
देवस्नपनम्	१८५
शय्यायामर्चाधिवास:	२०४
भैरवप्रतिष्ठायां विहितन्यासा:	२१०
एककुण्डीयपक्षे होम:	२२८
शान्तिक-पौष्टिकहोम:, वेदादिहोम:	२३१
मूर्त्यादिहोम:	२३२

विषय **पृष्ठ सं.**

महाव्याहृतिहोमः २३२
स्थाप्यभैरवदेवतालिङ्गकमन्त्रहोमः २३२
कूर्मशिलादिस्थापनम् २३३
प्रासादाधिवासन कलशस्थापनक्रमः २३६
प्रासादाधिवासनम् २४१
प्रासादवास्तुपूजनम् २४६
प्रासादोत्सर्गविधिः २४९
स्थापनादिवसकर्म २५०
पिण्डिकायां तत्त्वन्यासः २५४
पिण्डिकायां मूर्तिप-लोकेशन्यासः २५४
पिण्डिकास्थापनम् २५५
प्रासादबहिरष्टदिक्षु स्थण्डिलादिकृत्यम् २५६
प्राणप्रतिष्ठा २५९
पिण्डिकामन्त्रहोमः २६१
वाहनहोमः, भैरवायुधहोमः २६२
वाहनपूजनम् २६२
भैरवदेवस्य पादनाभिवक्षः
स्थलादिस्पर्शने अष्टौ मन्त्राः २६३
भैरवपूजनम् २६४
नामकरणम्, पूजनसामग्रीदानम् २८७
शान्त्यादिहोमः, अग्निपूजनम् २८७
स्विष्टकृद्धवनम्: २८७
भूरादिनवाहुतिः, बलिदानम् २८८
क्षेत्रपालबलिः २८९
पूर्णाहुतिः २९१
वसोर्द्धाराहोमः २९३
अग्निप्रदक्षिणाः २९५
हवनीयकुण्डभस्मधारणम् २९६
पूर्णपात्रदानम् २९६
श्रेयोदानम् २९७
आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम्, गोदानम् २९७

विषय **पृष्ठ सं.**

भूयसीदक्षिणासंकल्पः २९८
ब्राह्मणभोजनसंकल्पः, उत्तरपूजनम् २९८
प्रधानपीठादिदानसङ्कल्पः, अभिषेकः २९८
घृतच्छायापात्रदानम् ३००
क्षमाप्रार्थना ३०१
विसर्जनम् ३०२
प्रासादे ध्वजारोपणम् ३०३
भैरवप्रतिष्ठायां चतुर्थीकर्म ३०४
यजमानरक्षाबन्धनमन्त्रः ३०५
यजमानपत्नीरक्षाबन्धनमन्त्रः ३०५
यजमानतिलककरणम्, आशीर्वादमन्त्राः ३०५

परिशिष्टो भागः

प्रायश्चित्तम् ३०९
दश दानानि ३२४
मङ्गलस्नानम् ३३०
जलयात्रा ३३३
भैरवसहस्रनामस्तोत्रम् ३३९
श्रीभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ३५९
श्रीबटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रम् ३६२
आपदुद्धारणवटुकभैरवस्तोत्रम् ३७४
बटुकभैरवकवचम् ३७८
कालभैरवकवचम् ३८१
कालभैरवाष्टकम् ३८३
कालभैरवस्तुतिः ३८५
भैरवाष्टोत्तरशतनामावलिः ३८८
भैरवाभिषेकविधिः ३९०
कुण्डनिर्माणम् ३९५
दीपदान, भैरवव्रत ३९७
भैरव आरती ३९७
भैरवप्रतिष्ठासामग्री ३९९

॥ इति विषयानुक्रमणिका ॥

भैरवप्रतिष्ठाप्रयोगः

मङ्गलाचरणम्

या वेरिकाख्यसविधे हरियाणाराज्ये,
दुर्वाससः समधिगम्य पुनः प्रतिष्ठा।
सा पूर्वसिद्धरिपुमर्दिनिभीमरूपा,
भीमा सदाऽवतु परा कुलदेवता नः॥ १ ॥
गौडाशोककुमारेण समर्चासाङ्गपूर्तये।
भैरवस्य प्रतिष्ठेयं कृता साङ्गा यथाविधि॥ २ ॥

आचार्य प्रायश्चित्त[1] इत्यादि कर्मों के उपरान्त यजमान और उसकी धर्मपत्नी को आसन पर पूर्वाभिमुख बैठाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान के मस्तक पर तिलक करें—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

आचार्य निम्न तीन नामों का उच्चारण करते हुए यजमान से आचमन करावें—**ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।**

इसके बाद **ॐ ऋषिकेशाय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः** का उच्चारण करके यजमान का हाथ शुद्ध जल से धुलवावें।

निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान को कुशा की पवित्री धारण करवाके आचार्य प्राणायाम करावें—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आगे दिए हुए श्लोक का उच्चारण करके यजमान के ऊपर और प्रतिष्ठा-सामग्री की पवित्रता हेतु दूर्वा के द्वारा आचार्य जल छिड़कें—

---

[1] प्रायश्चित्त इत्यादि कर्मों के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या ३०९ को देखें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से भगवान् श्रीविष्णु का ध्यान आचार्य करावें—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपाꣳ सुरे स्वाहा॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

निम्न विनियोग और पौराणिक श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से आचार्य आसन शुद्धि कर्म करावें—**ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्र करणे विनियोगः।**

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से उसकी शिखा का बन्धन आचार्य करावें—

ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते॥

आचार्य भूमि में अक्षत छोड़वाकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसपर यजमान से दीपक प्रज्वलित करावें—

भो दीप! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से दीपक की प्रार्थना करावें—

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं धनसम्पदाम्।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

स्वस्तिवाचनम्

तदुपरान्त आचार्य और ब्राह्मण ‘ॐ आ नो भद्रा०’ से आरम्भ कर ‘सर्वकार्मार्थसिद्धये’ तक पढ़कर स्वस्तिवाचन करें।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १ ॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाठं० रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाठं० सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २ ॥
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणठं० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३ ॥
तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४ ॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५ ॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६ ॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथे षु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ७ ॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाठं० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८ ॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९ ॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ १२॥
सुशान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृचरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १ ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ २ ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३ ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४ ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५ ॥

वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य-समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ ७ ॥
सर्वंदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥ ८ ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ ९ ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ १० ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ ११ ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥ १४ ॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥ १५ ॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्मार्थसिद्धये॥ १६ ॥

प्रधानसंकल्पः

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं[1] कुर्यात्—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे[2], अमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं[3] (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य पुत्रपौत्रधनधान्यदीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिसमृद्ध्यर्थं श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं भैरवदेवताप्रीतिद्वारा धर्मार्थ-काम-मोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिसहितां चलां (अचलां) भैरवप्रतिष्ठामहं करिष्ये।

तदङ्गविहितं गणेशपूजनपूर्वकं स्वस्तिपुण्यावाचन षोडशमातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च करिष्ये।

---

[1] सङ्कल्पमूलः कामो वै यज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे सङ्कल्पजाः स्मृता॥
(मनु० २/३)

[2] उत्तरं यत्समुद्रस्य हेमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः। आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधा इति।
(विष्णुपुराण)

[3] अव्युत्पन्नोऽयमदःशब्दपर्यायः। पुरश्चर्यार्णवे—अमुके चामुकक्षेत्रे गोत्रप्रवरमुच्चरेत्। स्वनामजातिनामानि द्विजाच्छर्म च वर्म च। गुप्तो दासोऽथामुकस्य मन्त्रस्य सिद्धिकामुकः। अद्यारभ्य दिनैस्तैरसति प्रतिबन्धके। करिष्य इति। सङ्कल्प मनसैव प्रकल्पयेदिति।

गणेशपूजनम्

आवाहनम्

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितः प्रभो॥
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागञ्च रक्ष मे॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भ धमा त्वमजासि गर्भ धम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामीत्य क्षतैर्गणपतिं स्थापयित्वा तदुत्तरतोऽम्बिकां स्थापयेत्।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कां पीलवासिनीम्॥
हेमाद्रितयनां देवीं वरदां भैरवप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्। इति प्रतिष्ठापयेत्।

आसनम्

ॐ पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
अलङ्कार समायुक्तं मुक्ता-मणि विभूषितम्।
दिव्य सिंहासनं चारू प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
गौरी सुत! नमस्तेऽस्तु शङ्कर प्रियकारक!।
भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण प्रणतप्रिय!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥
व्रतं उद्दिश्य विघ्नेशं गन्ध-पुष्पादि संयुतम्।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वसिद्धि प्रदायकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण विघ्नेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पयःस्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधी षु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयःस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूर्ठ०षि तारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य यो निर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्व धमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ०रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो
वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्ये सन्तꣳसमाहितम्। अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो॥
शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।
तन्धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। अथवा ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि। अलङ्करणार्थे अक्षतां समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धम्

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

कनिष्ठामूलगताङ्गुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वाम्

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्त्व पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाठ०सं परि पातु विश्वतः॥
नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अवीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वा।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितमठ० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

तर्जनीमूलयोरङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं समर्पयामि।

दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

भक्तया दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य।

नैवेद्यम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ अकल्पयन्॥

अनेकस्वादु संयुक्तं नानाफल समन्वितम्।
मोदकं पायसं चैव गृहाण विघ्नेश्वर!॥

अनामामूलयोरङ्गुष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत् तद्यथा—अङ्गुष्ठप्रदेशिनी मध्यमाभिः—ॐ प्राणाय स्वाहा॥ १॥ अङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभिः ॐ अपानाय स्वाहा॥ २॥ अङ्गुष्ठानामिकाकनिष्ठिकाभिः ॐ व्यानाय स्वाहा॥ ३॥ कनिष्ठिका तर्जन्यङ्गुष्ठैः ॐ समानाय स्वाहा॥ ४॥ साङ्गुष्ठाभिः सर्वाङ्गुलिभिः ॐ उदानाय स्वाहा॥ ५॥ इति प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनम्

ॐ अꣳ शुनाते अꣳ शुः पृच्यतां परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनार्थे गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धवि॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलपत्रं पूगीफलं च समर्पयामि।

ऋतुफलानि

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः॥
इदं फलं मया देव स्थापितं परतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

दक्षिणाम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे-द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनम्

ॐ आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदार्ठ०सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वे षं वर्तते तमः॥ १॥
ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसनयभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वनं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥ २॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुपान्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति॥ तदप्येप श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तो गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणापदे पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम्

ताम्र अथवा चाँदी के पात्र में या मिट्टी के कसोरे में जल, चन्दन, अक्षत, फल, लाल पुष्प, दूर्वा, कुशा, दधि, दुग्ध और दक्षिणा रखकर बायाँ घुटना मोड़कर अर्घ्यपात्र को दोनों अंजुलि में लेकर निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए गणेश-गौरी के ऊपर इस विशेषार्घ्य को प्रदान करें—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानां भयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥ १॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा मम॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय।
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय।
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥ १॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय।
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय।
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥ २॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥ ३॥

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!॥ ४॥

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ५॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्देरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव॥ ६॥

इति गणेशाम्बिकयोः पूजनं कृत्वा पूर्व वदर्घपात्रे गन्धादि कृत्वा—

ॐ रूपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥

'ॐ अम्बिकायै नमः' इति विशेषार्घं समर्पयामि। 'अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम' इति जलं प्रक्षिपेत्। 'आचरितगणेशाम्बिकापूजनविधौ यन्यूनातिरिक्तं तत्परिपूर्णमस्तु।'

कलशपूजनम्

निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से जिस स्थान पर कलश स्थापित करवाना हो, वहाँ की भूमि का स्पर्श करवा के वहाँ कुंकुमादि से पवित्र भूमि पर अष्टदलपद्म का निर्माण आचार्य करावें—**ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥**

यजमान ने भूमि का जहाँ स्पर्श किया हो वहाँ एक किलो सप्तधान्य आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए छोड़वायें—

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से धान्य पुञ्ज पर कलश स्थापित करावें—

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥

आचार्य कलश में शुद्ध जल को यजमान से निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए भरवायें—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदनयसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥

आगे दिए हुए मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से कलश में गन्ध आचार्य छोड़वायें—

**ॐ त्वां गन्धर्वाअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥**

आचार्य कलश में सर्वौषधि निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

**ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बभ्रूणामहर्ठ० शतं धामानि सप्त च॥**

आचार्य कलश में दूर्वा निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

**ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥**

आचार्य कलश में पञ्चपल्लव आगे दिए हुए मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

**ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश में सप्तमृत्तिका यजमान से छोड़वायें—

**ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म स प्रथाः॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश में पूगीफल यजमान से छोड़वायें—

**ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥**

आचार्य कलश में पञ्चरत्न निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

आचार्य कलश में स्वर्ण निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से दो वस्त्रों के द्वारा कलश को चारों ओर से वेष्टित करावें—

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूपठं० संव्ययस्व विभावसो॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से ताँबे के पात्र में अक्षत भरवाकर कलश के ऊपर स्थापित करावें—

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जठं० शतक्रतो॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश के ऊपर अपने अभिमुख लालवस्त्र आदि से वेष्टित नारिकेल फल का स्थापन यजमान से करावें—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वठं० हसः॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए स्थापित कलश में अंग के सहित सपरिवार सायुध-सशक्तिक वरुण का आवाहन व स्थापन यजमान से करावें—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशठं० स मा न आयुः प्रमोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि।

'ॐ अप्पतये वरुणाय नमः' इति पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूज्य ततस्तत्रैव देवता आवाहयेत्—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ १॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥ २॥
कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥ ३॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥ ४॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥ ५॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः॥ ६॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारिकाः॥ ७॥

कलशेवरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। विष्णवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इति वा। आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानाङ्गाचमनं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मध्ये पानीयम्। उरत्तापोशन च समर्पयामि।

ताम्बूलं समर्पयामि। पूगीफलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। आर्तिक्यं समर्पयामि। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारं समर्पयामि। अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

यजमानः स्वहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा, ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण क्षिपेत्।

कलशप्रार्थना

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥ १॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥ २॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥ ३॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥ ४॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥ ५॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं सन्निधौ भव॥ ६॥

स्वस्तिपुण्याहवाचनम्

अपने दोनों घुटनों को पृथ्वी पर मोड़कर यजमान कमल के तुल्य अपनी अञ्जली को सिर पर रखकर अपने दायें हाथ में स्वंर्णादि के जल से पूर्ण कलश को अपने मस्तक से स्पर्श कर आचार्य सहित सभी ब्राह्मणों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये निम्न श्लोक का उच्चारण करे—

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽऽयुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥

विप्राः—अस्तु दीर्घमायुः।

ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा ऽअदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥

तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु—इति यजमानः।

पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु—इति द्विजाः।

एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निधाय।

यजमानः ब्राह्मणानां हस्ते—शिवा आपः सन्तु इति दद्यात्। सन्तु शिवा आपः। इति ब्राह्मणाः। एवं सर्वत्र वचनोत्तरं दद्युः।

यजमानः—सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्। विप्राः—अस्तु सौमनस्यम्। यजमानः—'अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु' इत्यक्षतान्। विप्राः—अस्त्वक्षतमरिष्टं च। यजमानः—गन्धाः पान्तु इति गन्धम्। विप्राः—सौमङ्गल्यं चाऽस्तु।

यजमानः—अक्षताः पान्तु। विप्राः—आयुष्यमस्तु। यजमानः—पुष्पाणि पान्तु। विप्राः—सौश्रियमस्तु। यजमानः—सफलताम्बूलानि पान्तु। विप्राः—ऐश्वर्यमस्तु।

यजमानः—दक्षिणाः पान्तु। विप्राः—बहुदेयं चास्तु। यजमानः—पुनरत्राऽऽपः पान्तु। विप्राः—स्वर्चितमस्तु। यजमानः—दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं

चाऽस्तु। विप्राः—तथाऽस्तु। यजमानः—यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा, ऋग्यजुः सामाऽथर्वा-ऽऽशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। विप्राः—वाच्यताम्।

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा॥ १॥
ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः॥ २॥
स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा॥ ३॥
स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे॥ ४॥
लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाऽङ्गिराः॥ ५॥
वशिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः॥ ६॥
स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा॥ ७॥
दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः॥ ८॥
शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्प्रचतिष्ठत। नेष्टादृतुभिरिष्यत॥ १॥ सविता त्त्वा सवानाꣳ सुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳ सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठाय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्त्यो वरुणो धर्मपतीनाम्॥ २॥ न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ

ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणर्ठ० हिरण्यर्ठ० स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ ३ ॥ उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्याददे। उग्रर्ठ० शर्म्म महि श्रवः ॥ ४ ॥ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२ ॥ इयक्षते ॥ इत्येता ऋचः पुण्याहे ब्रूयात्॥ ५ ॥

व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्। इति यजमानः। समाहितमनसः स्मः इति विप्राः। प्रसीदन्तु भवन्तः इति यजमानः। प्रसन्नाः स्मः इति विप्राः।

ततो यजमानःऽशक्तौ सति आचार्यो ब्रूयात्—ॐ शान्तिरस्तु इत्यादि। 'अस्त्वि'ति द्विजाः। एवं वचनं प्रतिवचनं सर्वत्र दद्युः। ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु। (बहिः) ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु। (अन्तः) ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरण-मुहूर्त-नक्षत्र-ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथि-करणे स-मुहूर्ते स-नक्षत्रे स-ग्रहे स-लग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा मातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे प्रीयन्ताम्। श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती

पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वा कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। (बहिः) ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवा। (अन्तः) ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां। योगक्षेमो नः कल्पताम्।

शुक्राङ्गारक बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोमादित्यरूपाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयन्ताम्। पुरोऽनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट् कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये, इति यजमानः। ॐ वाच्यतामि 'ति ब्राह्मणाः।

ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य भैरवप्रतिष्ठाकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति यजमानः। ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्। इति ब्राह्मणाः एवं वचन प्रतिवचनं च त्रिःपठित्वा।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ इति ब्राह्मणाः।

ॐ पृथिव्यमुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य भैरवप्रतिष्ठाकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेब्भ्यः। ब्रह्मराजन्याब्भ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु॥ इति ब्राह्मणाः पठेयुः।

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महाक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य भैरवप्रतिष्ठाकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ कर्म ऋध्यताम् इति त्रिःब्रूयात्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ सत्रस्य ऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम। दिवं पृथिव्या ऽअद्ध्यारु हामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥

स्वस्तिस्तुयाऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य भैरवप्रतिष्ठाकर्मणे स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ आयुष्मते स्वस्ति। इति तथैव त्रिर्विप्राः ब्रूयुः।

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य भैरवप्रतिष्ठाकर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः। इति तथैव त्रिर्विप्राः ब्रूयुः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म ऽइषाण॥

मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

इति यजमानः। शतं जीवन्तु भवन्तः—इति ब्राह्मणाः।

ॐ शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः॥

शिवगौरीविवाहे या या श्री रामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि॥

इति यजमानः। ॐ अस्तु श्रीः इति ब्राह्मणाः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूनार्ठ० रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षन्तु सर्वतः॥

इति यजमानः—ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयर्ठ०स्याम पतयो रयीणाम्॥

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये रत्नाशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

इति यजमानः। आयुष्मते स्वस्ति। इति विप्राः ब्रूयुः।

ॐ प्रति पन्था म पद्महि स्वस्ति गामनेहसम्। येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु॥

ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु। इति विप्राः ब्रूयुः।

यजमानः 'कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये'। इति दक्षिणा दद्यात्। 'अस्तु' इति ब्राह्मणाः ब्रूयुः। ततः यजमानः 'अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु' इति वदेत्। 'अस्तु परिपूर्णः' इति ब्राह्मणा ब्रूयुः। अनेन पुण्याहवाचनेन प्रजापतिः प्रीयताम्।

अभिषेकः

तदनन्तर यजमान के बायें भाग में उसकी पत्नी बैठ जाए। अविधुर (जिनकी विवाहित पत्नी जीवित हो) ऐसे ब्राह्मण हाथ में कुशा आदि लेकर कलश के जल को किसी अन्य चौड़े मुख के पात्र में लेकर दूर्वा-पंचपल्लव द्वारा उस जल से उत्तर मुख बैठे हुए सपत्नीक यजमान और उसके परिवार के सदस्यों के ऊपर छिड़कते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए अभिषेक करें—

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ १॥

पयः पृथिव्यां पय ओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ २॥

पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्॥ ३॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ४॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ५॥

तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ६॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ७॥

यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयं नः पशुभ्यः॥ ८॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥ १॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥ २॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ ३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥ ४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजा॥ ५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥ ६॥
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥ ७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये॥ ८॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामाऽर्थसिद्धये॥ ९॥

यजमान कहे '**अमृताभिषेकोऽस्तु**' यह अभिषेक जल अमृतरूप हो। ब्राह्मण कहें—ऐसा ही हो। तदनन्तर किए हुए अभिषेक कर्म की समृद्धि के लिए अभिषेक करने वाले ब्राह्मणों को दक्षिणा देने के पश्चात् यजमान द्विराचमन करें, किन्तु उसकी धर्मपत्नी एक बार ही आचमन करके अपने पति के दाहिने ओर पुनः बैठ जाए।

षोडशमातृकापूजनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य 'करिष्यमाण-भैरवप्रतिष्ठाकर्माङ्गत्वेन षोडशमातृकापूजनं करिष्ये।'

अग्निकोण में लकड़ी के पीढ़े पर पश्चिम से पूर्व या दक्षिण से उत्तर दिशा तक सोलह स्थानों पर अक्षत की ढेरी पर गणेशजी से प्रारम्भ कर तुष्टि एवं कुलदेवी पर्यन्त मातृका का स्थापन निम्न क्रम द्वारा करें—

गणेश—**ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥**

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवरदं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

गौरी—**ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्रयन्त्स्वः॥**

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

पद्मा—ॐ हिरण्यरूपाऽउषसो विरोक ऽउभाविन्द्राऽ उदिथः सूर्य्यश्च। आरोहतं वरुणमित्रगर्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्च मित्रोसि वरुणोसि॥

पद्मिनीं पद्मवदनां पद्मनाभोपरिस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः। पद्मामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

शची—ॐ निवेशनः सङ्गमनोवसूनां विश्वारूपाभिचष्टे शचीभिः। देवऽइवसवितासत्यधर्म्मेन्द्रो न तस्थौ समरेपथीनाम्॥

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिमण्डलधारिणीम्।
रत्नमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

मेधा—ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्चमेधान्धाता ददातु मे स्वाहा॥

विश्वस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

सावित्री—ॐ सवितात्त्वासवानार्ठ० सुवतामग्निगृर्हपतीनार्ठ० सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रःपशुभ्यो मित्रः सत्योवरुणाधर्मपतीनाम्॥

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

विजया—ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्योबाणवाँ२उत। अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम्।
सर्वदेवनुतां ध्यातां विजयां स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

जया—**ॐ बह्वीनां पिताबहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनागत्य इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयतिप्प्रसूतः॥**

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

देवसेना—**ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरऽ एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥**

मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।
आवाहये देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

स्वधा—**ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥**

कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति।
पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

स्वाहा—**ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा॥**

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥

मातृ—**ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु॥ विश्वर्ठ०हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि। दीक्षातपसोस्तनूरसि तान्त्वाशिवार्ठ० शग्माम्परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्॥**

आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोकपूजिताः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषिताः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृमावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

लोकमाता—**ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे विभुच मे पूर्णञ्च मेपूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मे क्षितञ्च मे न्नञ्च मे क्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥**

आवाहये लोकमातृर्जयन्तीप्रमुखाः शुभाः।
नानाभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि॥ १३॥

धृति—**ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तर मृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥**

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां हृष्टिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

पुष्टि—**ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥**

पोषयन्तीं जगत्सर्वं शिवां सर्वार्थसाधिकाम्।
बहुपुष्टिकरीं देवीं पुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

तुष्टि—ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती। इन्द्रस्य रूपठ० शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतन्दधानाः॥

आवाहयामि सन्तुष्टिं सूक्ष्मवस्त्रान्वितां शुभाम्।
सन्तोषभावयित्रीं च रक्षन्तीमध्वरं शुभम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

आत्मनः—ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥

आत्मनो देवतां देवीमैश्वर्यसुखदायिनीम्।
वंशवृद्धिकरीं नित्यामाह्वये च कुलाम्बिकाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकनाम्न्यै आत्मनः कुलदेवतायै नमः, अमुकनाम्नीमात्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥
'गौर्यादिषोडशमातृभ्योनमः' इत्यावाह्य।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ० समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य षोडशभिरुपचारैः पूजनं कुर्यात्। ततः—

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

इति नारिकेलफलं समर्प्य कृताञ्जलिर्भूत्वा गणेशपूर्वकगौर्यादिषोडशमातृणां पूजनविधौ यन्न्यूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं मातृणां प्रसादात्परिपूर्णमस्तु। 'अनया पूजया सगणेशगौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम्' इति वदेत्। पश्चादर्घपात्रे जलं प्रक्षिपेत्।

वसोर्द्धारापूजनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाण-भैरवप्रतिष्ठाकर्माङ्गत्वेन वसोर्द्धारापूजनं करिष्ये।

आचार्य अग्निकोण में काष्ठ के पीढ़े पर सफेद वस्त्र बिछाकर मौली से उसका बन्धन करें, फिर रोली के द्वारा क्रम से ऊपर से नीचे तक एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः तथा सात बिन्दु बनावें। उन बिन्दुओं के ऊपरी भाग में 'श्रीः' लिखे, पुनः उसके नीचे की सात बिन्दुओं में **ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥**

उपरोक्त मन्त्र के द्वारा घृतधारा कर और 'कामधुक्षः०' इस मन्त्र का उच्चारण कर गुड़ के चूरे से सातों घृतधाराओं को एक में मिला दें। तदुपरान्त उन सातों धाराओं में क्रमानुसार निम्न और आगे दिए गए एक-एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रत्येक पर अक्षत छोड़वाकर एक-एक देवी का आवाहन स्थापन यजमान से करावें। तद्यथा—

श्रियै-**ॐ मनसः काममाकूतिं वाचःसत्यमशीय। पशूनाꣳ० रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीꣳ०श्रयतां मयि स्वाहा॥**

सुवर्णपद्महस्तां तां विष्णोर्वक्षःस्थले स्थिताम्।
त्रैलोक्यवल्लभां देवीं श्रियमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

लक्ष्म्यै-**ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौ-व्यात्तम्। इष्णनिषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण॥**

शुभलक्षणसम्पन्नां क्षीरसागरसंवृताम्।
चन्द्रस्य भगिनीं सौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

धृत्यै-**ॐ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्ययशेमहिदेवहितं यदायुः॥**

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

मेधायै-**ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥**

सदसत्कार्यकरणक्षमां बुद्धिविशालिनीम्।
भव्यकार्ये शुभकरीं मेधामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः। मेधामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

स्वाहायै-**ॐ प्राणाय स्वाहा ऽअपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥**

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

प्रज्ञायै-**ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥**

प्रणवस्यापि जननीं रसनाग्रस्थितां सदा।
प्रागल्भ्यदात्रीं चपलां प्रज्ञामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

सरस्वत्यै-**ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥**

सरस्वतीं सुरैर्वन्द्यां धातृपुत्रीं क्षमाकरीम्।
विद्वज्जनस्य सत्कर्त्रीं देवीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ श्रीश्च लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥

ॐ वसोर्द्धारादेवताभ्यो नमः श्रियादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः।

इत्यावाह्य—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

इति मन्त्रेण वसोर्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। इत्यक्षतैस्तन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः पञ्चोपरैर्वा सम्पूज्य प्रार्थयेत्।

यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥

यजमानः—'आचारितवसोर्द्धारापूजनविधौ यन्न्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु'। इति कृताञ्जलिः प्रार्थयेत् 'अनया पूजया श्रियादिसप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम्' इति जलमर्घपात्रे प्रक्षिपेत्।

आयुष्यमन्त्रजपः

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, करिष्यमाण-भैरवप्रतिष्ठाकर्मणोऽमङ्गल-नाशार्थमायुष्यमन्त्रजपं करिष्ये।

आचार्य और सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों व आगे दिए हुए पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करें—

ॐ आयुष्यं वर्चस्यठं० रायस्पोषमौद्भिदम्। इदठं० हिरण्यं वर्चस्वजैत्रायाविशतदु माम्॥ १॥ न तद्रक्षाठं०सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजठं० ह्येतत्। यो बिभर्त्ति दाक्षायणठं० हिरण्यठं० स देवेषु कृणुते दीर्ग्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्ग्घमायुः॥ २॥ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यठं० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म ऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥ ३॥

अश्वत्थामादिऋषयो वसिष्ठप्रमुखस्तथा।
मार्कण्डेयप्रभृतयः सर्वे सन्तु शिवार्चकाः।। १।।
जमदग्निः कश्यपश्च दीर्घमायुः करोतु मे।
अन्ये ऋषिगणा देवा इन्द्राद्याश्च सशक्तिकाः।। २।।
भूसुराः सुतपोनिष्ठाः सत्यव्रतपरायणाः।
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु सर्वकामस्य सिद्धये।। ३।।
यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा सम्यक् जीवेम शरदः शतम्।। ४।।
दीर्घा नागास्तथा नद्यः समुद्रा गिरयो दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्।। ५।।
सत्यानि पञ्च भूतानि विनाशरहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्।। ६।।

आयुष्यमन्त्रजपसंकल्पः—कृतैतत् आयुष्यमन्त्रजपकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं विप्रेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

साङ्कल्पिक नान्दीश्राद्धविधिः

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, करिष्यमाण-भैरवप्रतिष्ठाकर्माङ्गत्वेन साङ्कल्पिक नान्दीश्राद्धं करिष्ये।

आचार्य पूर्व दिशा की ओर विश्वेदेव के आसन स्थान पर कुशा उत्तराग्र रक्खे तथा तीन आसन दक्षिण पूर्वाग्र क्रमानुसार रखें। आसनों की दूरी अधिक न हो, केवल आसन एक दूसरे से आपस में सटे न रहें। यजमान से उन स्थापित आसनों पर आचार्य विश्वेदेव सहित उसके पितरों की पूजा निम्न प्रकार सव्य से ही आरम्भ करावें, आचार्य यजमान से ही उसके मस्तक और श्राद्धसामग्री पर पवित्रीकरण हेतु निम्न श्लोक द्वारा जल छिड़कवायें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य पादप्रक्षालनार्थ के लिए निम्न क्रमानुसार यजमान से जल प्रदान करावें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धि:। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यो नान्दीमुख्य: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धि:। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धि:। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहा: सपत्नीका: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धि:। इत्युक्त्वा सर्वत्र पात्रे सकुशयवाक्षतजलं प्रक्षिपेत्।

तदुपरान्त यजमान के पितरों के निमित्त आसन आचार्य निम्न क्रम से प्रदान करावें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इमे आसने वो नमो नम:। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्य: तथा प्राप्नुवाम:। मातृ-पितामही-प्रपितामह्य: नान्दीमुख्य: ॐ भूर्भुव: स्व: इमे आसने वो नमो नम:। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्य: तथा प्राप्नुवाम:। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहा: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इमे आसने वो नमो नम:। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्य: तथा प्राप्नुवाम:। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहा: सपत्नीका: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इमे आसने वो नमो नम:। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्य: तथा प्राप्नुवाम:।

यजमान से पितरों के निमित्त जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, नैवेद्य, ऋतुफल, ताम्बूल, लवङ्ग, इलायची, सुपारी तथा सुगन्धित इत्र आदि आगे दिए हुए क्रम से आचार्य प्रदान करावें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

यजमान से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त भोजन निष्क्रय की दक्षिणा निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करावें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तम् आमान्ननिष्क्रय-भूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

यजमान से निम्न क्रमानुसार दुग्धादिसहित यवादि आचार्य प्रदान करावें—

स-क्षीरयवकुशजलदानम्—ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ततः 'अघोराः पितरः सन्तु' इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।

यजमान से जल, पुष्प, अक्षतादि निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करावें— **ॐ शिवा आपः सन्तु, ॐ सौमनस्यमस्तु, ॐ अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु।**

यजमान से उसके सभी पितरों के निमित्त दाहिने हाथ के अँगूठे की ओर से इस वाक्य द्वारा आचार्य जलधारा अर्पण करावें—**ॐ अघोराः पितरः सन्तु।**

यजमान से दोनों हाथ जुड़वाकर उसके पितरों की निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रार्थना करावें—

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेद तिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चनः॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु।

प्रतिष्ठास्थल पर उपस्थित आचार्य सहित सभी ब्राह्मण यजमान को निम्न वाक्य द्वारा आशीर्वाद प्रदान करें—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

यजमान से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त आँवला, मुनक्का, यव, अदरक और मूलादि अलग-अलग निम्न क्रमानुसार आचार्य वितरण करवायें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही।
पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामह कस्तथा।
एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयक्षन्तु च मङ्गलम्॥

आचार्य और ब्राह्मण निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करें—

ॐ इडामग्ने पुरुदर्ठ० सर्ठ० सनिंगोः शश्वत्तमर्ठ० हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्ब्भूत्त्वस्मे॥ १॥
उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२॥ इयक्षते॥ २॥

नान्दीश्राद्ध की पूर्णता हेतु यजमान निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए आचार्य और ब्राह्मणों से पूछें—**'अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्'।**

उपरान्त आचार्य और सभी ब्राह्मण यजमान से प्रसन्नतापूर्वक निम्न वाक्य कहें—**सुसम्पन्नम्।**

विसर्जनम्

ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः।
अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्द्देवयानैः॥ १॥

अनुव्रजनम्

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे।
आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो ऽअमृतत्वेन गम्यात्॥ २॥
ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्तामिति।

यजमान निम्न वाक्य आचार्य सहित ब्राह्मणों से कहे—

मयाऽऽचरितेऽस्मिन् साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीगणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

यजमान द्वारा कहे गये वाक्यों का प्रत्युत्तर आचार्य और ब्राह्मण निम्न वाक्य द्वारा दें—**अस्तु परिपूर्णः।**

अनेन साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।

आचार्यादिवरणम्

यजमान उत्तराभिमुख आसन पर बैठकर भैरवप्रतिष्ठा के निमित्त निम्न सङ्कल्प करके आचार्य का गन्ध, अक्षत, पुष्प द्वारा पूजन करते हुए वरण करें—

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्— देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहममुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अमुकगोत्रोत्पन्नममुकशर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

आचार्य कहें—**वृतोऽस्मि।**

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

निम्न मन्त्र का उच्चारण कर रक्षासूत्र बाँधे—**ॐ यदाबन्धन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम्॥**

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

पुनः यजमान अपने हाथों को जोड़कर निम्न श्लोक द्वारा आचार्य की प्रार्थना करें—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

ब्रह्मवरणम्

यजमानः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।

ब्रह्मा का वरण ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को निम्न वाक्य कहना चाहिये—**वृतोऽस्मि।**

पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करें-**ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥**

यजमान दोनों हाथ जोड़कर निम्न श्लोक द्वारा प्रार्थना करें—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदविशारदः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम!॥

गाणपत्यवरणम्

यजमानः—अस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे।

गाणपत्य का वरण ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को निम्न वाक्य कहना चाहिये—**वृतोऽस्मि।**

पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करें—**ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥**

उपद्रष्टृवरणम्

यजमानः—अस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं उपद्रष्टृत्वेन त्वामहं वृणे।

उपद्रष्टृ का वरण ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को निम्न वाक्य कहना चाहिये—**वृतोऽस्मि।** पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करें-**ॐ ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमौपद्रष्ट्यायानुक्षत्तारं बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिनमरिष्ट्या अश्वसादꣳ स्वर्गाय लोकाय भागदुघं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥**

उपद्रष्टृप्रार्थना

भगवन् सर्वकर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज॥

ऋत्विक्वरणम्

यजमानः—अस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।

ऋत्विक् वरण को ग्रहण करनेवाला ब्राह्मण निम्न वाक्य को कहे—वृतोऽस्मि।

पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—ॐ ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी ऽअनेहसा। पूषा नः पातु दुरिताद्दतावृधो रक्षा माकिर्न्नो ऽअघशर्ठ० स ऽईशत॥

ऋत्विक् प्रार्थना

भगवन् सर्वधर्मज्ञ! सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव॥

(अथवा)

एकतन्त्रेण वरणसंकल्पः

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मान् वृणे।

मण्डपप्रदक्षिणामन्त्राः

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ १॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ २॥ ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ॥ ३॥ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः॥ ४॥ अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतिभिः॥ ५॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ६॥ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतर्ठ० शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ ७॥ ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॥ ८॥

मण्डपद्वारभूमिपूजनमन्त्राः—ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृर्ठ०ह पृथिवीं मा हिर्ठ०सीः॥ १॥ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥ २॥ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म स प्रथाः॥ ३॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥ ४॥

मधुपर्कादिपूजनम्

सङ्कल्पः—यजमानः दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि वृतान् ऋत्विजो मधुपर्केणार्चयिष्ये।

ॐ साधु भवन्त आस्यतां अर्चयिष्यामो भवतः॥ (ब्राह्मणाः) ॐ अर्चय॥ ऋत्विक्संख्यया विष्टरान्गृहीत्वा (आचार्यः)—ॐ विष्टराः विष्टराः विष्टराः॥ (यजमानः) विष्टराः प्रतिगृह्यन्ताम्। (ब्राह्मणाः) ॐ विष्टराः प्रतिगृह्णीमः॥ ततो यजमानः हस्ताद्विष्टरं गृहीत्वा॥ ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभि तिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति॥ इति मन्त्रेण ब्राह्मणाः प्रत्येकं विष्टरं उद्‌गग्रं स्वासनतले स्थापयेयुः॥ ततो कर्ता पाद्यपात्रमादत्ते। (आचार्यः) ॐ पाद्यानि पाद्यानि पाद्यानि। (यजमानः) पाद्यानि प्रतिगृह्यन्ताम्। (ब्राह्मणाः) पाद्यानि प्रतिगृह्णीमः॥ ततो यजमानः हस्तात्पाद्यपात्रमादाय॥ ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमसीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः॥ इति मन्त्रेण प्रथमं दक्षिणचरणं तत्पश्चाद्वामचरणं च क्रमेण स्वयं प्रक्षालयेत्॥ ततः पूर्ववद्विष्टरान्गृहीत्वा पूर्ववन्मन्त्रं पठित्वा (ब्राह्मणाः) स्वस्वचरणयोरधस्तादुत्तराग्रं दद्युः। (ततः आचार्यः) ॐ अर्घाः अर्घाः अर्घाः। (यजमानः) अर्घाः प्रतिगृह्यन्ताम् (ब्राह्मणाः) अर्घान्प्रतिगृह्णीमः॥ ॐ आपः स्थयुष्माभिः सर्वान्कामान् वाप्नवानि॥ इति मन्त्रेण (ब्राह्मणाः) अर्घपात्रं शिरसाभिवन्द्य ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वा न्योनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरामापराचेति मत्पयः॥ इति मन्त्रं पठन्नैशान्यां दिशि जलं क्षिपेत्॥ ततो कर्ता आचमनीयपात्रमादत्ते। (आचार्यः) ॐ आचमनीयानि आचमनीयानि आचमनीयानि। (यजमानः) आचमनीयानि प्रतिगृह्यन्ताम्॥ (ब्राह्मणाः) आचमनीयानि प्रतिगृह्णीमः॥ ततो यजमानः हस्तादाचमनीयपात्रमादाय ॐ आमागन्यशसासर्ठ० सृजवर्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्॥ इति मन्त्रेण सकृदाचामेत् द्विः तूष्णीम्॥ ततो यजमानः कांस्यपात्रे दधिमधुघृतानि कांस्यपात्रपिहितान्यादत्ते। (आचार्यः) ॐ मधुपर्काः

मधुपर्काः मधुपर्काः॥ (यजमानः) मधुपर्काः प्रतिगृह्यन्ताम्॥ (ब्राह्मणाः) मधुपर्कान्प्रतिगृह्णीमः॥ कर्तृहस्तस्थमेव तत्पात्रमुद्घाट्य॥ ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्ष्ये इति मन्त्रेण वीक्ष्य॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ इति मन्त्रेण गृहीत्वा सव्ये पाणौ निधाय दक्षिणानामिकया ॐ नमः स्यावास्यायान्नशने यत्तऽआविद्धंतत्ते निष्कृन्तामि॥ इति मन्त्रेण प्रादक्षिण्येन मधुपर्कमालोड्य किञ्चिद्भूमौ क्षिप्त्वा पुनरेवं द्विवारं अनेन मन्त्रेणालोड्य भूमौ निक्षिपेत्। (ततः पात्रं भूमौ निधाय) ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानि॥ इति मन्त्रेणानामिकांगुष्ठाभ्यां त्रिः प्राश्य प्रतिप्राशने चैतन्मन्त्रपाठः॥ शेषमसञ्चरदेशे धारयेत्॥ त आचम्याङ्गानि स्पृशेत्॥ ॐ वाङ्मऽआस्येऽस्तु॥ इति कराग्रेण मुखालम्भनम्॥ ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु॥ इति दक्षिणवामनासारन्ध्रद्वये॥ ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु इति दक्षिणवामचक्षुषी॥ ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु इति दक्षिणवामकर्णयोः॥ ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु इति दक्षिणवामजान्वोः॥ ॐ ऊर्वोर्मे ओजोस्तु इति युगपदूरू॥ ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनुस्तन्वा मे सह सन्तु इति शिरःप्रभृति सर्वाङ्गाणि उभाभ्यां हस्ताभ्यामालभ्याचामेत्॥ ततो गावः गावः गावः इति यजमानेनोक्ते (ब्राह्मणाः) ॐ मातारुद्राणां दुहिता वसूनार्ठ० स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः। प्रनु वोचं चिषितुषे जनाय मागामनागामधितिं वधिष्ट मम चामुष्य यजमानस्योभयोः पाप्मा हतः॥ उत्सृजत्तृणान्यत्तु इत्युच्चैर्ब्रूयात्॥

गोदानसंकल्प—कृतस्य मधुपर्कादिपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् इमानि गोनिष्क्रयभूतानि द्रव्याणि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज् दातुमहमुत्सृजे॥

पुनः सर्वान् प्रार्थयेत्—

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥ १॥
ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः पापात्पान्तु समाहिताः।
वेदानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम्॥ २॥
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः शुभैः।
देवानां च पितॄणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः॥ ३॥
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्।
रक्षन्तु सततं ते मां जपयज्ञे व्यवस्थिताः॥ ४॥
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
देवध्यानपरा नित्यं प्रसन्नमनसः सदा॥ ५॥
अदुष्टभाषणा सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥ ६॥

भावार्थ—इस (प्रतिष्ठा) कर्म की सिद्धि के लिए मेरे द्वारा आपलोग पूजित हैं। इसलिए अत्यधिक प्रसन्न होकर आपलोगों के द्वारा यह कार्य, यह कर्म विधि करने योग्य है॥ १॥ ब्राह्मणगण शासन करनेवाले हों, समाहित होकर पाप से रक्षा करें तथा वेदों के मर्मज्ञ होते हुए सभी लोगों की रक्षा (सदैव) करें॥ २॥ जप-यज्ञ-होम तथा नाना प्रकार के दान, देवताओं व पित्रों की तृप्ति के लिए याजक होते हैं, ऐसा कहा गया है॥ ३॥ जिनके घर में वेद स्थित है। वे तीनों लोकों को पवित्र करते हैं। जप-यज्ञ में व्यवस्थित अर्थात् संलग्न होकर मेरी सदैव रक्षा करें॥ ४॥ (आचार्य सहित सभी ब्राह्मणगणों) क्रोधित न हों, पवित्र रहें (प्रतिष्ठा के समय) ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करें, प्रतिदिन देवता में ध्यान लगावें और (इस कर्म के समय) सदैव प्रसन्नचित् रहें॥ ५॥ आप सभी (ब्राह्मण लोग) दुष्ट (अप्रिय) संवाद न करें, किसी की भी निन्दा स्तुति न करें, ये नियम (स्वयं) मेरे लिए और आपके लिए अर्थात् हम दोनों के लिए ही हैं॥ ६॥

मण्डपप्रवेशः

यजमान अपनी पत्नी व पुत्र, पौत्रादि और आचार्य तथा ब्राह्मणों के संग मण्डप की ओर प्रस्थान करे। उस समय मंगलघोष बाजे आदि बजते रहें। उसी समय आचार्य सहित सभी ब्राह्मण—'स्वस्तिवाचन' के वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करें, घोष से युक्त हो और हाथ में कलश लेकर सुहागिन स्त्रियों को आगे कर गणेश-अम्बा, वरुण कलश, मातृपीठादियों से युक्त हो महामण्डप की प्रदक्षिणा कर पश्चिमद्वार पर प्राङ्मुख खड़े होकर निम्न श्लोकों का आचार्य उच्चारण करते हुए यजमान से ध्यान करावें—

ॐ चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
शङ्खपद्मधरां चक्रशूलहस्तां धरां भजे॥
आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणी।
पृथिवि ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥

यजमान '**ॐ भूम्यै नमः**' इस वाक्य का उच्चारण करे। तदुपरान्त आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रणाम करावें—

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम्॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से अर्घ्य प्रदान करावें-

ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शङ्करेण च।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दवै-श्रवणेन च॥
यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता।
गृहाणार्घमिमं देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे॥
ॐ भूम्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

यजमान गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य से भूमि का पूजन करें उस समय आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ उपचारानिमां तुभ्यं ददामि परमेश्वरि।
भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें–

ॐ नन्दे नन्दस्य वसिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह॥
पूर्णे गिरिश दायादे पूर्णं कामं कुरुष्व मे।
भद्रे काश्यपदायादे कुरु भद्रां मतिं मम॥
सर्वबीजसमायुक्ते सर्वारत्नौषधीवृते।
रुचिरे नन्दने नन्दे वसिष्ठे रम्यतामिह॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्त्रे महीयसि।
सुभगे सुव्रते देवि यज्ञे भार्गवि रम्यताम्॥
देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे।
मनुष्यधनहस्त्यश्वपशुवृद्धिकरी भव॥

आचार्य और ब्राह्मणों के साथ द्वारपालों से आज्ञा प्राप्त कर पञ्चांग देवताओं के साथ मण्डप के पश्चिमद्वार पर जाकर भूमिपूजा करके तथा सूर्यार्घ्यं देकर मण्डप की प्रदक्षिणा कर शंखघोष के साथ यजमान पश्चिमद्वार से औ उसकी धर्मपत्नी दक्षिणद्वार से मण्डप में प्रवेश करे। मण्डप में प्रवेश करने के उपरान्त अग्न्यायतन की प्रदक्षिणा कर अग्निकोण में गोधूम गेहूँ के ऊपर कुम्भ का स्थापन करके निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

आचार्य निम्न वाक्य एवं मन्त्रों का उच्चारण यजमान से करावें—

ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व।

आचार्य निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करें—

ॐ इयं वेदिः परोअन्तः पृथिव्याअयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। अयठं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम॥ १॥ सुभूः स्वयं भ प्रथमोन्तर्महत्यर्णवे। दधे हगर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः॥ २॥

दिग्रक्षणम्

यजमान के बायें हाथ में आचार्य पीली सरसों और धान का लावा देकर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें—

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि॥ १॥

रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहना उपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्य्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवाः स्थ॥ २॥

रक्षसां भागोऽसि निरस्तरꣳ रक्ष इदमहꣳ रक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳ रक्षोऽवबाध इदमहꣳ रक्षोऽधमं तमो नयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वेस्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्॥ ३॥

रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥ ४॥

आचार्य और ब्राह्मण निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से सभी दिशाओं में सरसों को छिड़कवायें—

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ २॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठाकर्म समारभे॥ ३॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवम् त्विमाम्॥ ४॥
भूतानि राक्षसा वाऽपि यत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु प्रतिष्ठां च करोम्यहम्॥ ५॥

पञ्चगव्यकरणम्

आचार्य निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए पंचगव्य बनावें—

ताम्रपात्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ इति गोमूत्रम्॥ ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥ इति गोमयम्॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ इति पयः॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूठ०षि तारिषत्॥ इति दधि॥ ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि। प्रियंदेवानामनाधृष्टन्देवयजन्मसि॥ इति आज्यम्॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ इति कुशोदकम्॥ इति आलोडनं तेनैवाभिमन्त्रणश्च॥ एवं पञ्चगव्य सम्पाद्य।

मण्डपप्रोक्षणम्

आचार्य निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए प्रतिष्ठा मण्डप का प्रोक्षण यजमान से करावें—

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्॥ १॥
ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ २॥
ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ३॥
ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ४॥

मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम्

यजमान अपनी धर्मपत्नी के साथ गुरु मण्डप के नैर्ऋत्यकोण में हस्त मात्र की वेदी के समीप आकर अपने आसन पर प्राङ्गमुख बैठकर आचमन एवं प्राणायाम कर निम्न संकल्प करें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्मिन् कर्मणि कुण्डमण्डपादिषु हीनाधिकाङ्गतादिवास्तुदोषसूचितसर्वारिष्टनिवर्हणार्थं भैरवप्रतिष्ठाङ्गभूतं मण्डपाङ्गवास्तुपूजनं करिष्ये।

पुनः मन्त्रावृत्त्या आग्नेयादितश्चतुरः शङ्कून् संरोप्य ततः—

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥

आचार्य निम्न श्लोकों का क्रम से उच्चारण करते हुए यजमान से अपने पार्श्व में मापभक्तिवलि प्रदान करें।

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ १॥
ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ २॥
ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ ३॥
ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चानन्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ ४॥

तदुपरान्त वेदी के ऊपर बिछे हुए वस्त्र पर स्वर्ण की शलाका से पूर्व अग्रभाग वाली दो-दो अंगुल की नौ रेखा का निर्माण आचार्य करके निम्न नाम मन्त्रों से उनका पूजन यजमान से करावें—**१. ॐ लक्ष्म्यै नमः, २. ॐ यशोवत्यै नमः, ३. ॐ कान्तायै नमः, ४. ॐ सुप्रियायै नमः, ५. ॐ विमलायै नमः, ६. ॐ शिवायै नमः, ७. ॐ सुभगायै नमः, ८. ॐ सुमत्यै नमः, ९. ॐ इडायै नमः।**

तत उदगग्राः प्राक्संस्था नवरेखाकार्याः—१. **ॐ धान्यायै नमः, २. ॐ प्राणायै नमः, ३. ॐ विशालायै नमः, ४. ॐ स्थिरायै नमः, ५. ॐ भद्रायै नमः, ६. ॐ जयायै नमः, ७. ॐ निशायै नमः, ८. ॐ विरजायै नमः, ९. ॐ विभवायै नमः।**

'**ॐ रेखादिभ्यो नमः**' इति पंचोपचारैः पूजयेदिति प्रतिष्ठासरणौ विशेषः। मध्य के चार पदों को एक-एक करके उनके कोणों में रेखा देकर वर्णित किये गये रंगों से पद भरें। फिर उनके देवताओं का आवाहन निम्न क्रम से करें।

वास्तुदेवतास्थापनविधिः

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए वास्तुदेवता की स्थापना यजमान से करावें—

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थषुस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधेरक्षिता पायुरब्धः स्वस्तये॥
ॐ शिखिने नमः, शिखिनमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

शन्नो वातः पवतार्ठ० शं नस्तपतु सूर्यः।
शं नः कनिक्रद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु॥
ॐ पर्जन्याय नमः, पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजा मृतेनानुवस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥
ॐ जयन्ताय नमः, जयन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँर्ठ० २॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः॥
ॐ कुलिशायुधाय नमः, कुलशायुधमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

बण्महाँ२॥ असि सूर्य बडादित्य महाँ२॥ असि।
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२॥ असि॥
ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

ॐ सत्याय नमः, सत्यमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥

ॐ भृशाय नमः, भृशमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती।
तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥

ॐ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥

ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

पूषन तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि॥

ॐ पूष्णे नमः, पूपणमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततर्ठ० संजभार।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै॥

ॐ वितथाय नमः, वितथमावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभा नवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्रते हरी॥

ॐ गृहक्षताय नमः, गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्र॥

ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ १३॥

गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै

यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधतां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः॥

ॐ गन्धर्वाय नमः, गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

सौरी बलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक्।
श्वाविद्भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे रस्वते शुकः पुरुषवाक्॥

ॐ भृङ्गराजाय नमः, भृङ्गराजमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगथा परस्याः।
सृकठ० सठ० शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥

ॐ मृगाय नमः, मृगमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आवह पितृन्हविषे अत्तवे॥

ॐ पितृगणेभ्यो नमः, पितृगणान् आवाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुपधापयेते।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः॥

ॐ दौवारिकाय नमः, दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवठ० रुद्रा उपश्रिताः।
तेषाठ० सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्नमसि॥

ॐ सुग्रीवाय नमः, सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि॥ १९॥

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥

ॐ पुष्पदन्ताय नमः, पुष्पदन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ २०॥

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥

ॐ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ २१॥

यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय।
इमं तठ० शुक्रं मधुमन्तमिन्दुठ० सोमठ० राजानमिह भक्षयामि॥

ॐ असुराय नमः, असुरमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः॥

ॐ शेषाय नमः शेषमावाहयामि स्थापयामि॥ २३॥

एतत्ते रुद्राऽवसं तेन परो मूजवतोऽतीहि।
अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिर्ठ० सन्नः शिवोतीहि॥

ॐ पापाय नमः, पापमावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रं नीललोहित।
आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत्॥

ॐ रोगाय नमः, रोगमावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥

अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया॥ हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ठ० सं परिपातु विश्वतः॥

ॐ अहये नमः, अहयेमावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥

अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्यशल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥

ॐ मुख्याय नमः, मुख्यमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः।
यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥

ॐ भल्लाटाय नमः भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि॥ २८॥

सोमो धेनुर्ठ० सोमो अर्वन्तमाशुर्ठ० सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।
सादन्यं विदथ्यर्ठ० सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥

ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ २९॥

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

ॐ सर्पेभ्यो नमः, सर्पान्मावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥
ॐ अदित्यै नमः, अदितिमावाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥

इड एह्यदित एहि काम्या एत।
मयि वः कामधरणं भूयात्॥
ॐ दित्यै नमः, दितिमावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नं ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥
ॐ अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि॥ ३३॥

हस्त आधाय सविता बिभ्रदभ्रिर्ठ० हिरण्ययीम्।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्॥
ॐ सावित्राय नमः, सावित्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥

अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रिर्ठ० स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम्।
भरेषुजार्ठ० सुक्षितिर्ठ० सुश्रवसं जयन्तं त्वामनुमदेम सोम॥
ॐ जयाय नमः, जयमावाहयामि स्थापयामि॥ ३५॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः॥
ॐ रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ३६॥

यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः॥
ॐ अर्यम्णे नमः, अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि॥ ३७॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव॥
ॐ सवित्रे नमः, सवितारमावाहयामि स्थापयामि॥ ३८॥

विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिनमत्स्व।
श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः।
पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारप एधते गृहे॥
ॐ विवस्वते नमः, विवस्वतमावाहयामि स्थापयामि॥ ३९॥

सबोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन्।
य़ुयोध्यस्मद्वेषार्ठ० सि विश्वकर्मणे स्वाहा॥
ॐ विवुधाधिपाय नमः, विवुधाधिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४०॥

मित्रस्य चर्षणीधृतो वो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥
ॐ मित्राय नमः, मित्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥

नाशयित्री बलासस्यार्शंस उपचितामसि।
अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी॥
ॐ राजयक्ष्मणे नमः, राजयक्ष्मणमावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥

स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनीय़च्छा नः शर्म सप्रथाः॥
ॐ पृथ्वीधराय नमः, पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥

आ ते वत्सो मनो य़मत्परमाच्चित्सधस्थात्।
अग्ने त्वां कामया गिरा॥
ॐ आपवत्साय नमः, आपवत्समावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्याउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च य़ोनिमसतश्च विवः॥
ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ४५॥

य़ं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम्।
तं ते विष्याम्यायुषो न मध्यादथैतं पितुमद्धि प्रसूतः॥
नमो भूत्यै य़ेदं चकार॥
ॐ चरक्यै नमः, चरकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४६॥

अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम्॥
ॐ विदार्यै नमः, विदारीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४७॥

इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यैपाजस्य दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृकाभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्ना वल्मीकान्क्लोमभिग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्ती ह्रदान्कुक्षिभ्यार्ठ० समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥

ॐ पूतनायै नमः, पूतनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४८ ॥

यस्यास्ते घोरऽ आसन्जुहोम्येषां बन्धानामवसर्जनाय।
यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वाहं परिवेद विश्वतः ॥

ॐ पापराक्षस्यै नमः, पापराक्षसीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥

यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्य्यमा। सुवाति सविता भगः ॥

ॐ अर्यम्णे नमः, अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५१ ॥

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सर्ठ० हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥

ॐ जृम्भकाय नमः, जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५२ ॥

का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किर्ठ० स्विदासीद् बृहद्वयः।
का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला॥

ॐ पिलिपिच्छाय नमः, पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५३ ॥

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥
ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५४॥

त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥
ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ ५५॥

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥
ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ५६॥

असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य।
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥
ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ५७॥

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः॥
ॐ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५८॥

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।
वायो ऽअस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ५९॥

वयर्ठ०सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥
ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ ६०॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥
ॐ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ६१॥

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः।
यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥
ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ६२॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥
ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६३ ॥

वास्तुप्रतिमाग्न्युत्तारणम्

आचार्य और ब्राह्मण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए वास्तुपुरुप की सुवर्ण प्रतिमा का अग्न्युत्तारण करावें—

ॐ समुद्रस्य त्त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि।
पावको ऽअस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ १ ॥
हिमस्य त्त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि।
पावको ऽअस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ २ ॥
उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि।
सेमं नो यज्ञं पावकवर्णर्ठ० शिवं कृधि ॥ ३ ॥
अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम्।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ४ ॥
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२ ॥ इहावह उप यज्ञर्ठ० हविश्च नः ॥ ६ ॥
पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः ॥ ७ ॥
नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥ ८ ॥
नृपदे वेडप्सुपदे व्वेड् वर्हिषदे वेड्वनसदे वेट् स्वर्विदेवेट् ॥ ९ ॥
ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीणमु पभागमासते।
अहुतादो हविपो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्न्ये ब्ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य।
येब्भ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु॥ ११॥
प्प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ १२॥

आचार्य वास्तुप्रतिमा को यजमान के बाएँ हाथ में रखवाकर उसके दायें हाथ से प्रतिमा का आच्छादन करवावें। तदुपरान्त निम्न प्राणसंचार मन्त्रों का उच्चारण कर प्राणप्रतिष्ठा करावें—ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः जीव इह स्थितः। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्र-जिह्वाघ्राणपाणिपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

आचार्य प्राणप्रतिष्ठा के लिए निम्न मंत्र और पौराणिक श्लोक का उच्चारण करें—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

आचार्य वास्तुपुरुप की प्रतिमा को कलश के ऊपर स्थापित करवाके निम्न क्रमानुसार उनका पूजन यजमान से करावें—

आवाहनम्

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमी वो भवा नः।
यत्वेमहे प्रति तन्नो जुपस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥
समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशकाः श्रीप्रदवास्तुदेवाः।
आवाहनं तो वितनोमि भक्त्या शिरव्यादिका भव्यकरा भवन्तु॥

ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, वास्तुपुरुपायमावाहयामि स्थापयामि।

आसनम्

चित्रप्रभाभासुरमच्छशोभं मयार्पितं शोभितमासनं च।
शिख्यादिका भव्यकरा भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहाङ्गैः॥
ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

कस्तुरिकासुरभिचन्दनयुक्तमेलाचम्पालवङ्गघनसारसुवासितं च।
पाद्यं ददामि जगदेकनिवास वास्तुदेवाः सदा सुखकराः प्रतिमानयन्तु॥
ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननीजननीजनानां येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी मे।
ते सर्वदेवगुण पूरितवास्तुदेवा अर्घं सुखेन विलं मम धारयन्तु॥
ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दनपुष्पयुक्त मेलालवङ्गलवलीघनसारसारम्।
दत्तं सदैव हृदये कुरुणाःशयेऽस्मिन् देवा भजन्तु शुभमाचनीयमम्भः॥
ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

विमलगाङ्गजलेन युतं पयो घृतासितादधिसर्पिरूपान्वितम्।
प्रियतरं भवतां परिगृह्णत यदि कृपा भवतां मयि सेवके॥
ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

जले समादाय विचित्र पुष्पाण्यच्छानि नव्यानि निपातितानि।
स्नानं विधेयं विवुधाः समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे।।

ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्घ्यरत्नैरतिभासितानि चेतोहराण्यद्भूतचिन्तितानि।
शुभानि वस्त्राणि निवेदितानि गृह्णन्तु हार्देन च वास्तुदेवाः।।

ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

कोशेयसूत्रविहितं विमलं सुचारुवेदोक्तरीतिविहितं परिपावनं च।
साङ्गा निवेदितमिदं लघुवास्तुदेवा यज्ञोपवीत मुररी क्रियतां प्रसन्नाः।।

ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

त्रिविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना।।

ॐ वास्तुपुरुपाय नमः. उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

शिख्यादयो मलयजातसुगन्धराशिं सप्रेमगृह्णत सुशीतलम्छशोभम्।
सन्तापविस्ततिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथपूरकाः स्युः।।

ॐ वास्तुपुरुपाय नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

शिख्यादयः केसरकुंकुमाक्तान् भक्तया मया स्नेहसमर्पितांश्च।
गृह्णन्तु देवा द्रुतमक्षतान्मे सर्वान्तरायान् विनिवर्तयध्वम्।।

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयानञ्जलैः॥
ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, पुष्पं समर्पयामि।

रक्तसूत्रम्

सौभाग्यसौन्दर्यविवर्द्धनानि शोणश्रियाऽऽनन्दविवर्धनानि।
श्रीरक्तचूर्णानि मयाऽर्पितानि शिख्यादयोगृह्णत वास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, रक्तसूत्रं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीरसुगन्धपूर्णं नरासुराणामपि सौख्यदं च।
लोकत्रये गन्धमयं मनोज्ञं गृह्णन्तु धूपं मम वास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, धूपं माघ्रापयामि।

दीपम्

सद्वर्तिको घोरतमोपहन्ता दीपो मया सत्वरमर्पितो वः।
प्रज्वालितो वह्निशिखासमेतः शिख्यादयो वेदविधानयुक्तः॥
ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

सिद्धान्तकर्पूरविराजमानं सौरभ्यसान्द्रेण सुशोभमानम्।
नैवेद्यमेतस्सरसं पवित्रं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥
ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, नैवेद्यं सम०। (नैवेद्यान्ते आचमनीयजलं समर्पयामि)

ताम्बूलम् (एला लवंगसहितम्)

शिख्यादिकाः खलु समेत्य गृहं मदीयं भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम्।
एलालवङ्गबहुलं क्रमुकादियुक्तं ताम्बूलकं भजत मंडपवास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा:

दैवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयगानाः प्रभवः पुराणाः।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे ध्यानेन भक्ते मयि वर्तितव्यम्॥

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारानपि दूरकर्त्री।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानवस्य॥

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणास्तथा पदे-पदे दुखविनाशिका अपि।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

शिख्यादिका मे खलु वास्तुदेवा गृह्णन्तु पुष्पांजलिमव शीघ्रम्।
पीडाहरा भव्यकरा विशाला भवन्तु भूपालनतत्पराश्च॥

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं क्षपयन्तु नित्यम्।
शिख्यादिकाः सुविमलाः सुखमाकिरन्तु कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितान् समन्तात्॥

पायसबलिदानम्

आचार्य निम्न नाममंत्रों का उच्चारण करते हुए क्रमानुसार पायसबलि यजमान से प्रदान करावें—

१. ॐ शिखिने एष पायस बलिर्न मम। २. ॐ पर्जन्याय एष पायस बलिर्न मम। ३. ॐ जयन्ताय एष पायस बलिर्न मम। ४. ॐ कुलिशा-

युधाय एष पायस बलिर्न मम। ५. ॐ सूर्याय एष पायस बलिर्न मम। ६. ॐ सत्याय एष पायस बलिर्न मम। ७. ॐ भृशाय एष पायस बलिर्न मम। ८. ॐ आकाशाय एष पायस बलिर्न मम। ९. ॐ वायवे एष पायस बलिर्न मम। १०. ॐ पूषणे एष पायस बलिर्न मम। ११. ॐ वितथाय एष पायस बलिर्न मम। १२. ॐ गृहक्षताय एष पायस बलिर्न मम। १३. ॐ यमाय एष पायस बलिर्न मम। १४. ॐ गन्धर्वाय एष पायस बलिर्न मम। १५. ॐ भृङ्गराजाय एष पायस बलिर्न मम। १६. ॐ मृगाय एष पायस बलिर्न मम। १७. ॐ पितृभ्यो एष पायस बलिर्न मम। १८. ॐ दौवारिका एष पायस बलिर्न मम। १९. ॐ सुग्रीवाय एष पायस बलिर्न मम। २०. ॐ पुष्पदन्ताय एष पायस बलिर्न मम। २१. ॐ वरुणाय एष पायस बलिर्न मम। २२. ॐ असुराय एष पायस बलिर्न मम। २३. ॐ शेषाय एष पायस बलिर्न मम। २४. ॐ पापाय एष पायस बलिर्न मम। २५. ॐ रोगाय एष पायस बलिर्न मम। २६. ॐ अहये एष पायस बलिर्न मम। २७. ॐ मुख्याय एष पायस बलिर्न मम। २८. ॐ भल्लाटाय एष पायस बलिर्न मम। २९. ॐ सोमाय एष पायस बलिर्न मम। ३०. ॐ सर्पेभ्यो एष पायस बलिर्न मम। ३१. ॐ आदित्यै एष पायस बलिर्न मम। ३२. ॐ दित्यै एष पायस बलिर्न मम। ३३. ॐ अद्भ्यो एष पायस बलिर्न मम। ३४. ॐ आपवत्साय एष पायस बलिर्न मम। ३५. ॐ अर्य्यमणे एष पायस बलिर्न मम। ३६. ॐ सावित्राय एष पायस बलिर्न मम। ३७. ॐ सवित्रे एष पायस बलिर्न मम। ३८. ॐ विवस्वते एष पायस बलिर्न मम। ३९. ॐ वबुधाधिपाय एष पायस बलिर्न मम। ४०. ॐ जयन्ताय एष पायस बलिर्न मम। ४१. ॐ मित्राय एष पायस बलिर्न मम। ४२. ॐ राजयक्ष्मणे एष पायस बलिर्न मम। ४३. ॐ रुद्राय एष पायस बलिर्न मम। ४४. ॐ पृथ्वीधराय एष पायस बलिर्न मम। ४५. ॐ ब्रह्मणे एष पायस बलिर्न मम। ४६. ॐ चरक्यै एष पायस बलिर्न मम। ४७. ॐ विदार्य्यै एष पायस बलिर्न मम। ४८. ॐ पूतनायै एष पायस बलिर्न मम। ४९. ॐ पापराक्षस्यै एष पायस बलिर्न मम। ५०. ॐ स्कन्दाय एष पायस बलिर्न मम। ५१. ॐ

अर्य्यमणे एष पायस बलिर्न मम। ५२. ॐ जृम्भकाय एष पायस बलिर्न मम। ५३. ॐ पिलिपिच्छाय एष पायस बलिर्न मम। ५४. ॐ इन्द्राय एष पायस बलिर्न मम। ५५. ॐ अग्नये एष पायस बलिर्न मम। ५६. ॐ यमाय एष पायस बलिर्न मम। ५७. ॐ निर्ऋतये एष पायस बलिर्न मम। ५८. ॐ वरुणाय एष पायस बलिर्न मम। ५९. ॐ वायवे एष पायस बलिर्न मम। ६०. ॐ सोमाय एष पायस बलिर्न मम। ६१. ॐ ईश्वराय एष पायस बलिर्न मम। ६२. ॐ ब्रह्मणे एष पायस बलिर्न मम। ६३. ॐ अनन्ताय एष पायस बलिर्न मम।

आचार्य प्रधानपुरुष को निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से बलि प्रदान करावें—

नानापक्वान्नसंयुक्तं नानागन्धसमन्वितम्।
बलिं गृहाण देवेश वास्तुदोषप्रणाशक॥

ॐ वास्तुपुरुषाय एष बलिर्न मम।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके वास्तुदेवता की प्रार्थना करावें—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके नारिकेल और सुवर्ण वास्तुपुरुष को यजमान से समर्पित करावें—

नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोषहरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे॥

आचार्य और ब्राह्मण निम्न रक्षोघ्नसूक्त और आगे दिए हुए पवमानसूक्त का उच्चारण करते हुए यजमान व उसकी पत्नी से दुग्धयुक्त जलधारा अलग-अलग कमण्डलु के द्वारा प्रदान करावें—

रक्षोघ्नसूक्तम्

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजे वामवाँ२॥ ऽइभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥ १॥

तव भ्रमासआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः।
तपूर्ठ०ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो विसृज विष्वागुल्क्का:॥ २॥
प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः।
यो नो दूरेअघशर्ठ०सो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत्॥ ३॥
उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यऽँमित्राओषतात्तिग्महेते।
यो नो अरातिर्ठ० समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्॥ ४॥
ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि।
शत्रून् अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥ ५॥

पवमानसूक्तम्

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः
पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा।
पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः
पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै॥ १॥
अग्न आयुर्ठ०षि पवस आसुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥ २॥
पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ३॥
पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतुँ२॥ रनु ॥ ४॥
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा॥ ५॥
पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ ६॥
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः॥ ७॥
वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्वयस्तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया मदन्तः सधमादेषु वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम्॥ ८॥

मण्डपपूजनम्

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाङ्गभूतं मण्डपदेवानां स्थापनं पूजनं करिष्ये।

प्रथम-ब्रह्मा—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ ऊद्‌र्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता। ऊद्‌र्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्क्रमीद-सदन्मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योऽभयं नः पशुब्भ्यः॥

द्वितीय-विष्णु—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठ०सुरे स्वाहा॥ ॐ ऊद्‌र्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

तृतीय-रुद्र—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ऊद्‌र्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

चतुर्थ-इन्द्र—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्क्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ ऊद्‌र्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

पञ्चम्-सूर्य—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ ऊद्‌र्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

पष्ठम्-गणेश—ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ ऊद्‌र्ध्व ऽऊपु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

सप्तम्-यम—ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सठ० स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

अष्टम्-सर्प—नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

नवम्-स्कन्द—ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

दशम-वायु—ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

एकादश-चन्द्र—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

द्वादश-वरुण—ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

त्रयोदश-अष्टवसु—ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। वयन्तु वयोऽक्तठ० रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशापृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

चतुर्दश-**कुबेर—ॐ सोमो धेनुठं० सोमो अर्वन्तमाशुठं० सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यठं० सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥**

पञ्चदश-**बृहस्पति—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥**

षोडश-**विश्वकर्मा—ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥**

सर्वासु वलिकासु—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

प्रार्थना

शेषादिनागराजानः समस्ता मम मण्डपे।
पूजां गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि॥

ततो **भूमिस्पर्शः—ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृठं० ह पृथिवीं मा हिठं० सीः॥**

भूमिभूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात्।
भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम्॥

सपत्नीक यजमान दोनों हाथों में रक्तवर्ण के पुष्पों को लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें-

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज॥

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा। ॐ नमः शिवाय—इन नामों का यजमान उच्चारण करके पुष्पाञ्जलि को मण्डप की भूमि में छोड़े।

तोरणपूजनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि पूर्वादितोरणादि-पूजां करिष्ये।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से मौलीबन्धन करावें—

सुदृढं तोरणं पूर्वे अश्वत्थं काञ्चनप्रभम्।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्॥

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः।

उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का आचार्य उच्चारण करके गन्धादि के द्वारा यजमान से पूजा करवाके महात्रिशूल के शृंगों (नोंक) पर प्रदक्षिणा क्रम से निम्न नाममन्त्रों द्वारा पूजन करावें—

ॐ इन्द्राहुभ्यां नमः। ॐ धात्रे नमः। ॐ भगबृहस्पतिभ्यां नमः।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

वहाँ कलशस्थापनविधि से कलश की प्रतिष्ठा करवाके आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण यजमान से करवाके पूजन करावें—

ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ अध्वराय नमः। ॐ मध्ये-मेधापतये नमः।

यजमान को दक्षिण की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य मौलीबन्धन करावें—

औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम्।
रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः॥

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठ तमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा

वस्तेन ईशत माघशर्ठ० सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्विर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सुभद्रतोरणाय नमः, सुभद्रतोरणमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः विकटतोरणाय नमः, विकटतोरणमावाहयामि स्थापयामि।

यहाँ भी त्रिशूल के शृंगों (नोंक) पर प्रदक्षिण क्रम से आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजन करावें—

ॐ सूर्यपूषाभ्यां, सूर्यपूषाणौ। मध्येमित्राय०। ॐ वरुणाङ्गारकाभ्यां०।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

वहाँ पर भी पूर्वविधि से कलश स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण यजमान से करवाते हुए आचार्य पूजन करावें—

ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ अशोकाय नमः। मध्ये—ॐ धरायै नमः।

यजमान को पश्चिम दिशा की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य उससे मौलीबन्धन करावें—

प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्णसन्निभं।
रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः॥

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ सुभीमतोरणाय नमः। ॐ सुकर्मतोरणाय नमः।

इस प्रकार से पूजन करवाके वहाँ भी त्रिशूल के शृङ्गों (नोंक) पर प्रदक्षिण क्रम से आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से पूजन करावें—**ॐ अर्यमशुक्राभ्यां नमः। अर्यमशुक्रौ०। मध्ये—ॐ अंशवे नमः। अंशुम्०। ॐ विवस्वद्बुधाभ्यां नमः। विवस्वद्बुधौ०।**

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

आचार्य वहाँ भी एक कलश यजमान से स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके पूजन करावें—

ॐ अनिलाय०। ॐ अनलाय०। मध्ये—ॐ वाक्पतये नमः।

यजमान को उत्तर दिशा की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य उससे मौलीबन्धन करावें—

न्यग्रोधतोरणमिव उत्तरे च शशिप्रभम्।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥

ॐ सुहोत्रतोरणाय नमः। ॐ सुप्रभतोरणाय नमः।

इस प्रकार से पूजन करवाके आचार्य वहाँ भी त्रिशूल के शृंगों (नोक) पर प्रदक्षिण क्रम से निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजन करावें—**ॐ त्वष्टृसोमाभ्यां नमः। ॐ सवितृकेतुभ्यां नमः। ॐ विष्णुशनिभ्यां नमः।**

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

आचार्य वहाँ भी एक कलश यजमान से स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके उससे पूजन करवावें—

ॐ प्रत्यूषाय नमः। ॐ प्रभासाय नमः। मध्ये—ॐ विघ्नेशाय नमः।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

तोरणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः।
ते सर्वे मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा॥

द्वारपूजनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि पूर्वादिद्वारपूजां करिष्ये।

आयाहि वज्रसङ्घातपूर्वद्वारकृपाधिप।
ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तु ते॥

आचार्य दो कलशों को समीप में ही यजमान से स्थापित करवाके, पहले दक्षिण कलश के ऊपर–'**ॐ प्रशान्ताय नमः**' दूसरे वामकलश के ऊपर–'**ॐ शिशिराय नमः**' उसके बाद मध्य में तीसरे कलश के ऊपर–'**ॐ ऐरावताय नमः**' का उच्चारण करवाके गन्धादि से पूजन करावें। तदुपरान्त निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्॥

तदुपरान्त आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ द्वारश्रियै नमः॥ १॥ इति ऊर्ध्वं अधःदेहल्यै नमः॥ २॥ दक्षिण-शाखायाम्—ॐ गणेशाय नमः॥ ३॥ वामशाखायाम्—ॐ स्कन्दाय नमः॥ ४॥ द्वारकलशयोः—ॐ गंगायै नमः॥ १॥ ॐ यमुनायै नमः॥ २॥** पुनः दोनों ऋग्वेदियों की पूजा इस मन्त्र से करें—**ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥**

ॐ कर्मनिष्ठा तपोयुक्ता ब्राह्मणाः वेदपारगाः।
जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवतऋत्विजौ॥

मध्य कलश के ऊपर—

एह्येहि सर्वामरसिद्धिसाद्ध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश।
संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवेहवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

आचार्य निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से पीतध्वज एवं पताका का स्पर्श करवावें—

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतर्ठ० सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥

इमां पताकां पितां च ध्वजं पीतं सुशोभम्।
आलभामिसुरेशाय शचीप्रित्यै नमो नमः॥

आचार्य ध्वजपताका के मध्य में निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजन करावें—**ॐ हेतुकराय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्रः शचीपतेः।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः इमं सदीपदधि-माषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम।

आचार्य अग्निकोण में यजमान को लाकर पहले की तरह स्थापन करवाके तथा आचमन करवाके कलश के ऊपर निम्न वाक्यों का उच्चारण करके पूजन करावें—**ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ अमृताय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे नमस्कार करावें—

एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्य्यैरभितोऽभिजुष्टः।
तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सप्तार्चिषं च विभ्राणमक्षमालां कमण्डलुं।
ज्वालमालां कुरु रक्तं शक्तिहस्तमजासनम्॥

ॐ त्वन्नो अग्ने तव देवपायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषठं॰ रक्षमाणस्तव व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

उपरोक्त मन्त्र और वाक्य से पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण आचार्य करें—

पताकामग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम्।
स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह॥

आचार्य ध्वज और पताका की निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से नमस्कार करावें—

आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः।
धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन।
यज्ञसरक्षाणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता

वरदो भव। अनेन बलिदानेन अग्निः साङ्गः सपरिवारः सशक्तिकः प्रीयताम्।

आचार्य यजमान को दक्षिण की ओर ले जाकर आचमन करावें और उसी से द्वारकलशों को स्थापित करावें तथा पूजा करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे नमस्कार करावें—

नमस्ते धर्मराजाय त्रेतायुगाधिपाय च।
यजुर्वेदादिदेवाय सुभद्रं द्वारदक्षिणे॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाम वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ अशोकाय नमः।** मध्य कलश पर—**ॐ वामनाख्यदिग्गजाय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्वसंयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्॥

ततो द्वारोर्ध्वे—ॐ द्वारश्रियै नमः। अधः—ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। द्वारकलशयोः—ॐ गोदावर्य्यै नमः। ॐ कृष्णायै नमः।

उपरोक्त नाममन्त्रों से पूजा करवावें। पुनः आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक।
शिवाज्ञयाऽपिहितो देवः दिशः रक्ष भवानिह॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके दोनों यजुर्वेदियों की पूजा यजमान से करावें—

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्त्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्यां इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ० सो ध्रुवा अस्मिन्मोपतौ स्यात बह्वियजमानस्य पशून्पाहि॥

उसके वाद मध्यकलश के ऊपर—

एह्येहि वैवस्वत धर्मराजः सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते।
शुभाशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमं साङ्गं सपरिवारमावाहयामि।

आचार्य उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करके ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें—

कृष्णवर्णां पताकाञ्च कृष्णवर्णध्वजं तथा।
अंतकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम्।
यमदेव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यमस्तु महिषारूढः दण्डहस्तो महाबलः।
धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मैः नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम।
यज्ञ सरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन यमः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

नैर्ऋत्यकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करवाके उसके ऊपर निर्ऋति का आवाहन आगे दिए हुए मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

निर्ऋत्तिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकपावनम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजयेम् प्रतिगृह्यताम्॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ दुर्ज्जयाय नमः।**

कलश की पूजा करके—

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः।
ममाध्वं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतिं साङ्गं सपरिवारं सा० आवाहयामि।

आचार्य उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पताकानिर्ऋतिश्चैव नीलवर्णं ध्वजं तथा।
पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से ध्वजपताका की पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे प्रार्थना करावें—

सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिर्नीलविग्रहः।
करे खड्गधारौ नित्यं निर्ऋतये नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं यक्षो गृहाण निर्ऋतिप्रभो।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो भव॥

ॐ निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

पश्चिम दिशा में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके पुनः कलश की स्थापना व पूजा करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके प्रार्थना करावें—

नमोऽस्तु कामरूपाय पश्चिमद्वारश्रिताय च।
सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ भूतसञ्जीवनाय नमः। ॐ अमृताय नमः। मध्यकलशे—ॐ अनन्ताख्य दिग्गजाय नमः। द्वारोर्ध्वं—द्वारश्रियै नमः। अधः—देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ नन्दिन्यै नमः। ॐ चण्डायै नमः। द्वारकलशयोः—ॐ रेवायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।**

आचार्य दो सामवेदियों की पूजा निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से करावें—**ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥**

इस प्रकार पूजा करके मध्य कलश में—

एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः।

आचार्य ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके आगे दिए हुए श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें—

श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम्।
वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसाम्पतिरीश्वरः।
शमन्नयाप्सु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं देवः गृहाण जलधीश्वर।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते सकलजनानामधिपतये न मम।

वायव्यकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करवाके आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके गन्धादि से पूजन करावें—ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सिद्धार्थाय नमः।

कलश के ऊपर—

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः।
प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुं आवाहयामि स्थापयामि।

आचार्य ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा।
आलभाम्यनुरूपाय प्राणदाय हिताय च॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्धवः प्रभु।
तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च॥

बलिदानम्

माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वायु बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुः-कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते वायवे सकलप्राणानामधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य उत्तर दिशा में यजमान को ले जाकर आचमन करावें और दोनों द्वारकलशों की स्थापना व पूजा करवाकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके नमस्कार करावें—

नमस्ते दिव्यरूपत्वमथर्वाधिपते प्रभो।
कलावधिपतिर्नाम्ना मङ्गलश्चोत्तरानन्॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ धनदाय नमः। ॐ श्रीप्रदाय नमः। मध्यकलशे सार्वभौमदिग्गजाय नमः। इति सम्पूज्य द्वारोद्ध्र्वे—ॐ द्वारश्रियै नमः।**

अधः—ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ महाकालाय नमः। ॐ भृङ्गिणे नमः। द्वारकलशयोः—ॐ नर्मदायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से दोनों अथर्ववेदियों की पूजा करावें—**ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥**

मध्य कलश में—

एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्वा नक्षत्रगणेन सार्धम्।
सर्वौषधिःभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥
ॐ वयठं० सोम व्रते तव मनस्तनू षु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

हरितवर्णां पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम्।
कुबेराय लभाम्येव पूजये च सदार्थिना॥
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

गौरोपमपुमान्स्थूलः सर्वौषधिरसादयः।
नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रदः।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो सोम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो

भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते सोमाय सकलकोशाधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य ईशानकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश स्थापित करावें—**ॐ सुप्रतीकाय नमः। ॐ मङ्गलाय नमः।**

पूजन करवाके कलश के ऊपर—

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम्।
लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

ॐ ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम्।
आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः।
शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं देव गृहाणेशानशङ्करः।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ईशानं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो

भव। अनेन बलिदानेन ईशानः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

ईशानकोण और पूर्व दिशा के मध्य में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके उससे कलश को स्थापित करवाके कलश के ऊपर—

एह्येहि विष्णवाधिपते सुरेन्द्रलोकेन सार्द्धं पितृदेवताभिः।
सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरन्नः सततं शिवाय॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं मावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पद्मवर्णां पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा।
आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेनन्तशक्तये॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्त्ति वेदव्यासपितामहः।
यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मन् बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन नमो भगवते ब्रह्मणे सकलवेदशास्त्रतत्वज्ञानाधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य नैर्ऋत्यकोण और पश्चिम दिशा के मध्य में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करावें तथा इस नाममन्त्र से वरुण की पूजा करावें—**ॐ वरुणाय नमः।** इस प्रकार से पूजा करवाके पुनः कलश के ऊपर—

एह्येहि पातालधरामरेन्द्रनागाङ्गनाकिन्नरगीयमान।
यक्षोरगेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम्॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छानः शर्म सप्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः। अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णां ध्वजन्तथा।
आलभामि ह्यनन्ताय धरणीधारिणे नमः॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम्।
स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं शेष गृहाणानन्तपन्नग।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम।

आचार्य ईशानकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाकर उससे महाध्वज का पूजन करावें। अत्यन्त ऊँचा दण्ड हो दस हाथ या सोलह हाथ लम्बा महाध्वज हो, विचित्र वर्ण हो, किनारे पर छोटे-छोटे घुँघरू लगे हों, तीन हाथ चौड़ा, सात हाथ लम्बा अथवा पाँच हाथ चौड़ा, दस हाथ लम्बा महाध्वज बनावें।

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

ततो मण्डपषोडशवलिकासु—ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। वंशे—ॐ किन्नरेभ्यो नमः। मण्डपपृष्ठदेशे—ॐ पन्नगेभ्यो नमः।

उपरोक्त मन्त्र व नाममन्त्रों से पूजा करवाके आचार्य निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से उसका स्पर्श करावें—

इमं विचित्रवर्णन्तु महाध्वजविनिर्मितम्।
महाध्वजञ्चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

अमुं महाध्वजं चित्रं सर्वविघ्नविनाशकम्।
महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने॥

ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतार्ठ० शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां धोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥

अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम्।

इसके पश्चात् सोलह वल्लियों पर—**ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः**। बाँसों पर—**ॐ किन्नरेभ्यो नमः**। मण्डप पृष्ठ पर—**ॐ पन्नगेभ्यो नमः**। (सम्पूज्य

आलभेत्) का उच्चारण करवाके पूजा करवाके पुनः उसके पश्चात् मण्डप से बाहर पूर्व में लेप करवाके भूमि पर यजमान को बैठाकर आचार्य वहाँ अष्टदल बनावें। इन्हीं आठों दलों पर आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें—

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानैव॥ १॥
देवदानवगन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च॥ २॥
सर्वे ममाधरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालौ गणैः सह।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः॥ ३॥

आचार्य अक्षत पुञ्जों पर पूर्व आदि क्रम से निम्न वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से आवाहन करावें—

ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो नमः त्रैलोक्यस्थावरानावाहयामि। ॐ त्रैलोक्यस्थरेभ्यश्चरेभ्यो नमः त्रैलोक्यस्थरेभ्यश्चरानावाहयामि। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि। ॐ शिवाय नमः शिवमावाहयामि। ॐ देवेभ्यो नमः देवानावाहयामि। ॐ दानवेभ्यो नमः दानवानावाहयामि। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वानावाहयामि। ॐ यक्षेभ्यो नमः यक्षनावाहयामि। ॐ राक्षसेभ्यो नमः राक्षसानावाहयामि। ॐ पन्नगेभ्यो नमः पन्नगानावाहयामि। ॐ ऋषिभ्यो नमः ऋषीनावाहयामि। ॐ मुनिभ्यो नमः मुनिनावाहयामि। ॐ गोभ्यो नमः गावः आवाहयामि। ॐ देवमातृभ्यो नमः देवमातृः आवाहयामि।

तदुपरान्त आचार्य इन्द्रादि लोकपालों के लिए घृत व भात की बलि निम्न वाक्य का उच्चारण करके उससे प्रदान करें—**ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्वदिग्वासिभ्यः इन्द्रपार्षदेभ्योदिगीशमातृगणक्षेत्रपालादिभ्योबलिरयमुपतिष्ठतु स्वाहा।**

यजमान अपने दोनों हाथों में लाल पुष्पों को लेवें और आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए उससे पुष्पाञ्जलि प्रदान करावें—

नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
जय भार्गवदायादे प्रजानां विजयावह॥ १॥
पूर्णे गिरिशदायादे पूर्णकर्म कुरुष्व माम्।
भद्रे काश्यपिदायादे कुरु भद्रां मतिं मम॥ २॥
सर्वबीजौषधियुक्ते सर्वरत्नौषधिवृते।
रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे नन्दतामिह॥ ३॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्त्रे महीयसि।
सुव्रते सुभगे देवि गृहे काश्यपि रम्यताम्।
पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृते॥ ४॥
भवभूतिकरे देवि गृहे भार्गवि रम्यताम्।
अव्यये चाक्षते पूर्णे मुनेरङ्गिरसः सुते।
मनुष्यधेनुहस्त्यश्व पशुवृद्धिकरी भव॥ ५॥

आचार्य आग्नेयादि लोकपालों का बलिदान करावें। इसके पश्चात् बाँस के पात्र पर सभी भूतों के लिए निम्न संकल्प का उच्चारण करके यजमान से बलि प्रदान करावें—

देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्मिन् सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणि मण्डपपूजाङ्गविहितं मातृगण-क्षेत्रपालप्रीतये भूत-प्रेत-पिशाचादि निवृत्त्यर्थं सार्वभौतिक-बलिदानं करिष्ये।

तदुपरान्त नवीन बाँस के सूप में अधिक मात्रा में उड़द और भात की बलि रक्खें और निम्न मन्त्र से सभी भूतों की गन्धादि से पूजा यजमान से करावें—

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥ १॥
नक्षत्राधिपतिश्चैव नक्षत्रैः परिवारितः।
स्थानं चैव पितृणां तु सर्वे गृह्णन्त्विमं बलिम्॥ २॥
ये केचित्त्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः॥ ३॥
बलिं गृहणन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः॥ ४॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचामातरोगणाः।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥ ५॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥ ६॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्ना मा च ये पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥ ७॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च देवाभूतगणास्तथा।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम्॥ ८॥

(अनेन सार्वभौतिकबलिदानेन सार्वभौतिकाधिपती रुद्रः प्रीयतां न मम।)

तदुपरान्त प्रक्षालित हाथ-पैर धोकर पूर्व द्वार से मण्डप में प्रवेश करके यजमान दक्षिण दिशा की ओर आसन पर बैठकर यथाविहित कर्म करें।

लिङ्गतोभद्रदेवतास्थापनं पूजनं च

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-सनवग्रहमख-सप्रासाद-भैरव-प्रतिष्ठाकर्मणि महावेद्यां लिङ्गतोभद्रमण्डले (भद्रमण्डले) वा ब्रह्मादिदेवतानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

तद्यथा—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ मध्ये कर्णिकायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ वयर्ठ० सोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ उत्तरे वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्यम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ ईशान्यां खण्डेन्दौ-ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्र पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ पूर्वे वाप्याम्- ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

आचार्य ‘ॐ ब्रह्मयज्ञानं०’ से ‘ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि’ तक का उच्चारण करके सर्वतोभद्र के मध्यकर्णिका पर ब्रह्मा का, ‘ॐ वयर्ठ० सोम०’ से ‘सोममा० स्था०’ तक का उच्चारण करके उत्तर दिशा की वापी में सोम का, ‘ॐ तमीशान जगतः०’ से लेकर ‘ईशानमा० स्था०’ तक कहकर ईशान कोणस्थित खण्डेन्दु पर ईशान का, ‘ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र०’ से ‘इन्द्रमावाहयामि स्थाप०’ तक कहकर पूर्व दिशा की वापी में इन्द्र का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥ आग्नेयां खण्डेन्दौ—**ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥** दक्षिणे वाप्याम्—**ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥** नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ—**ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशठ०स मा न आयुः प्रमोषीः॥** पश्चिमे वाप्याम्-**ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥** वायव्यां खण्डेन्दौ-**ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥**

‘ॐ त्वन्नोऽअग्ने०’ से ‘अग्निमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर अग्निकोण के खण्डेन्दु में अग्नि का, ‘ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते०’ से आरम्भ कर ‘यममावाहयामि स्थापयामि’ पर्यन्त उच्चारण कर दक्षिण वापी में यम का आवाहन एवं स्थापन करे। इसी प्रकार—‘असुन्वतमयजमानमिच्छ०’ से ‘निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि’ तक कहकर नैर्ऋत्यकोणस्थित खण्डेन्दु पर निर्ऋति का, ‘ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा०’ से ‘वरुणमावाहयामि स्थापयामि’ तक का उच्चारण कर पश्चिम दिशा की वापी में वरुण का, ‘ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरठ०’ से ‘वायुमावाहयामि स्थापयामि’ तक कहकर वायव्य दिशा स्थित खण्डेन्दु में वायु का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्मेर्ठ० सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवींर्ठ०ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा॥ वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसुनामावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥ ॐ रुद्राः सर्ठ० सृज्य पृथिवीं बृहज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्त्रऽइच्छुक्रो देवेषुरोचते॥** सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥ ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः। आवोर्वाचीसुमतिर्ववृत्त्यादर्ठ० होश्चिद्यावरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा॥** ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥ ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥** इन्द्राग्निमध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौमावाहयामि स्थापयामि॥ १३॥ ॐ विश्वेदेवासऽआगतशृणुतामऽइमर्ठ०हवम्। एदं बर्हिनिषीदत। उपयामगृहीतोऽसिविश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएषते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः॥** अग्नियममध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृकविश्वान् देवानावावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥**

'ॐ सुगा वो देवाः०' से 'अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर वायुकोण एवं उत्तर दिशा के मध्य रक्तभद्र में अष्टवसु का, 'ॐ रुद्रा सर्ठ०'—'एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर उत्तर और ईशान के मध्य (रक्तवर्ण) भद्र में एकादश रुद्रों का, 'ॐ यज्ञो देवानां०'—'द्वादशादित्याना-वाहयामि स्थापयामि' से ईशानकोण एवं पूर्वदिशा के मध्यं भद्र में द्वादशादित्यों का, 'ॐ अश्विना तेजसा०'—'अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पूर्व एवं अग्निकोण के मध्य रक्त वर्ण के भद्र में अश्विनी का, 'ॐ विश्वेदेवास ऽआगत०'—'स-पैतृक-विश्वान् देवानावाहयामि स्थांपयामि' तक कहकर अग्निकोण एवं (यम) दक्षिण दिशा के बीच रक्तवर्ण स्थित भद्र में स-पैतृक विश्वेदेव का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ अभित्यन्देवर्ठ० सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ० रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वायस्याऽमतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्य पाणिरमिमीतसुक्रतुः कृपास्वः। प्रजाभ्यसत्वाप्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनु प्राणिहि॥ यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥ ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ निर्ऋतिवरुणमध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥ ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्व स्तस्यौषधयोप्सरसोमुदो नाम। स नऽइदं ब्रह्मक्षत्रंपातुतस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥ वरुणवायुमध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि॥ १७॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्। श्येनस्य पक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्त्युत्यम्महिजातन्तेऽअर्वन्॥ ब्रह्मसोममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा-ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥

'ॐ अभित्यन्देवर्ठ० सविता रमोण्यो०' से लेकर 'सप्तयक्षान् आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर दक्षिण और नैर्ऋत्यकोण के मध्य रक्त भद्र पर सप्त यक्षों का, 'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च०' से 'अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर नैर्ऋत्यकोण तथा वरुण (पश्चिम) दिशा स्थित भद्र पर अष्टकुलनागों का, 'ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्नि०' से 'गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर वरुण (पश्चिम) और वायुकोण स्थित रक्तभद्र से गन्धर्वाप्सरसः का आवाहन एवं स्थापन करे। इसी क्रम से 'ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान०' मन्त्र से 'स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य पर्यन्त पढ़कर ब्रह्मा तथा उत्तर दिशा के मध्य स्थित वापी में स्कन्द का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥ तदुत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि ॥ १९ ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्त्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ तदुत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि ॥ २० ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्त्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ तदुत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि ॥ २१ ॥ ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यꣳहाः ॥ ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिभ्यो नमः, दक्षादिमावाहयामि स्थापयामि ॥ २२ ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ॥ २३ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ तत्पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥ २४ ॥

‘ॐ आशुः शिशानो०’ से लेकर ‘वृषभमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर वहीं पर, उसके आगे वृषभ का, ‘ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य०’ मन्त्र से ‘ॐ भू० शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर, उसके आगे शूल का, ‘ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य०’ मन्त्र और ‘ॐ भू० महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर उसके उत्तर की ओर महाकाल का, ‘ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च०’ से ‘दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि’ कहकर ब्रह्मा और ईशानकोण के मध्य कृष्ण शृंखला पर दक्षादिसप्तगण का, ‘ॐ अम्बेऽम्बिके०’ मन्त्र और ‘दुर्गामावाहयामि स्थापयामि’ उच्चारण कर ब्रह्मा तथा इन्द्र के मध्य स्थित वापी पर दुर्गा का, ‘ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०’ तथा ‘ॐ भू० विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि’ कहकर, वहीं पर, उसके आगे विष्णु का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥ ॐ परं मृत्यो अनुपरेहिपन्थां यस्ते अन्यऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वत ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान्॥ ब्रह्मयममध्ये वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥ ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥ ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनुरुध्यसे। गर्भे सन् जायसे पुनः॥ ब्रह्मवरुण-मध्ये वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि॥ २८॥ ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमो जनः॥ ब्रह्मवायुमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि॥ २९॥

‘ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः’ से ‘—स्वधामावाहयामि स्थापयामि’ पर्यन्त कहकर ब्रह्मा और अग्निकोण के मध्य कृष्ण शृंखला में स्वधा का, ‘ॐ परं मृत्योऽअनु परेहि०’ से ‘मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि’ तक का उच्चारण कर ब्रह्मा और दक्षिण दिशा के मध्य वापी पर मृत्युरोग का, ‘ॐ गणानां त्वा०’ से लेकर ‘गणपतिमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर ब्रह्मा एवं नैर्ऋत्य कोण के मध्य शृंखला में गणपति का आवाहन-स्थापन करें। ‘ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव०’ से ‘—अपः आवाहयामि स्थापयामि’ तक कहकर ब्रह्मा और पश्चिम दिशा के मध्य स्थित वापी पर अप् का, ‘ॐ मरुतो यस्य०’ से ‘मरुतः आवाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर ब्रह्मा और वायुकोण की मध्य शृंखला पर मरुत् देवता का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ ब्रह्मणपादमूले–ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३० ॥ ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित् ॥ तदुत्तरे–ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि ॥ ३१ ॥ ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा । मारुतोऽसि मरुतां गणः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छुंभूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा ॥ तदुत्तरे–ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि ॥ ३२ ॥ ॐ परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥ कर्णिकापरिधौ–ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३३ ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम आहमजानि गर्धमात्वमजासि गर्भधम् ॥ सोमादिक्रमेण सत्त्वबाह्यपरिधौ–ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३४ ॥

इसी प्रकार 'ॐ स्योना पृथिवी नो०' मन्त्र तथा 'ॐ भू० पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य का उच्चारण कर ब्रह्मा के पाद मूल स्थित कर्णिका के नीचे पृथ्वी का, 'ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति०'— 'ॐ भू० गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि' से ब्रह्मा के पादमूल स्थिथ कर्णिका के आगे गंगा आदि नदियों का, 'ॐ समुद्रोऽसि नभस्वाना०' से '—सप्तसागरान्मावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वहीं पर, ब्रह्मा के पाद मूल स्थित कर्णिका के उत्तर भाग में सप्त सागरों का, 'ॐ परि त्वा०' से लेकर 'ॐ भू० मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर कर्णिकास्थित परिधि के ऊपर मेरु का आवाहन एवं स्थापन करे। तत्पश्चात् सर्वतोभद्रमण्डलस्थित सत्त्वपरिधि के बाहर उत्तर आदि दिशाओं के क्रम से आयुधों का आवाहन और स्थापन करे। जैसे—'ॐ गणानां त्वां०' मन्त्र तथा 'ॐ भू० गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि' से उत्तर दिशा में गदा का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ त्रिर्ठ० शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रतिवस्तोरहद्युभिः ॥ ईशान्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३५ ॥ ॐ महाँ२ ॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥ पूर्वे–ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३६ ॥ ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्चम एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ आग्नेय्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३७ ॥ ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः काम धरणं भूयात् ॥ दक्षिणे–ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३८ ॥ ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥ नैर्ऋत्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३९ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥ पश्चिमे–ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४० ॥

‘ॐ त्रिर्ठ० शद्धाम विराजति०’ से ‘भू० त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर ईशान कोण में त्रिशूल का, ‘ॐ महाँ२ ॥ इन्द्रो वज्रहस्तः०’ से ‘ॐ भू० वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर पूर्व दिशा में वज्र का, ‘ॐ वसु च मे०’ से ‘ॐ भू० शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि’ पर्यन्त कहकर अग्निकोण में शक्ति का, ‘ॐ इड ऽएह्यदित०’ से ‘ॐ भू० दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर दक्षिण दिशा में दण्ड का, ‘ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्ण०’—‘ॐ भू० खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि’ से नैर्ऋत्यकोण में खड्ग का, ‘ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं०’ से ‘ॐ पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि’ तक कहकर पश्चिम में पाश का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ अर्ठ० शुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपार्ठ० शुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ वायव्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ तदबाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण-ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥ ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मौ त्रिष्टुभः स्वारर्ठ० स्वारादन्तर्यामोन्तर्यामात्पंचदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाज ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः॥ ईशान्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥ ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रर्ठ० सौवर्ठ० शरच्छौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एकविर्ठ०श एकविर्ठ०शाद्वैराजं विश्वामित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाब्भ्यः॥ पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥

'ॐ अर्ठ० शुश्च मे रश्मिश्च०'—'ॐ भू० अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि' से वायव्य कोण में अंकुश का आवाहन और स्थापन करें। पुनः सर्वतोभद्रमण्डल के बाहर उत्तर में रक्तवर्णवाली परिधि पर गौतमादि ऋपियों का आवाहन एवं स्थापन इस प्रकार करें—'ॐ आयं गौः०' से 'ॐ भू० गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर उत्तर में गौतम, 'ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा०' से 'ॐ भू० भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ईशान कोण में भरद्वाज का, 'ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य०'—'ॐ भू० विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि' से पूर्वदिशा में विश्वामित्र का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्॥ आग्नेय्याम्–**ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः, कश्यपमावा० स्थापयामि॥ ४५॥ ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः॥** दक्षिणे–**ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ ४६॥ ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रादुपार्ठ०शुरुपार्ठ० शोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः॥** नैर्ऋत्याम्–**ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि॥ ४७॥ ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत॥** पश्चिमे–**ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४८॥ ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः॥**

'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः०' से '–ॐ भू० कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर अग्निकोण में कश्यप का, 'ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य०'—'ॐ भू० जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि' से दक्षिण में जमदग्नि का, 'ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो०' से 'ॐ भू० वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि' से नैर्ऋत्यकोण में वसिष्ठ का आवाहन और स्थापन करे। 'ॐ अत्र पितरो मादयध्वम्०' से 'ॐ भू० अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर पश्चिम में अत्रि और 'ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः०' से लेकर 'ॐ भू० अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर

वायव्याम्-**ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धती-मावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥** तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेणऐन्द्र्यादीनां स्थापनम्—**ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥** पूर्वे-**ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥ ॐ अम्बे-ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥** आग्नेय्याम्-**ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः, कौमारी-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५१॥ ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः॥** दक्षिणे-**ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५२॥ ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहा वल्मीकान्क्लोमभिग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्त्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्याᳬं समुद्र-मुदरेण वैश्वानरं भस्मना॥** नैर्ऋत्याम्-**ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५३॥**

वायव्यकोण में अरुन्धती का आवाहन एवं स्थापन आचार्य करें। तदनन्तर, उसके बाहर तृतीय कृष्ण परिधि पर, पूर्व आदि दिशा के क्रम से ऐन्द्र्यादि-देवियों को आवाहन और स्थापन करे। जैसे—'ॐ आदित्यै रास्ना॰' से 'ॐ भू॰ ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पूर्व में ऐन्द्री का, 'ॐ अम्बेऽम्बिके॰'—'ॐ भू॰ कौमार्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर अग्निकोण में कौमारी का, 'ॐ इन्द्रायाहि धियेपितो॰' मन्त्र और 'ॐ भू॰ ब्राह्मयै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य का उच्चारण कर दक्षिण में ब्राह्मी का, 'ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै॰' से 'ॐ भू॰ वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर नैर्ऋत्यकोण में वाराही का आवाहन और स्थापन करें।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ पश्चिमे–ॐ भूर्भुव: स्व: चामुण्डायै नम:, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ५४॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वत: सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ वायव्ये–ॐ भूर्भुव: स्व: वैष्णव्यै नम:, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५५॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ उत्तरे–ॐ भूर्भुव: स्व: माहेश्वर्यै नम:, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५६॥ ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मा म आयु: प्रमीषीर्मो अहं तव वीरं विदेय तव देवि संदृशि॥ ईशान्याम्–ॐ भूर्भुव: स्व: वैनायक्यै नम:, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५७॥ पूर्वे–ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नम:। बाहुभ्यामुत ते नम:॥ ॐ असिताङ्ग भैरवाय नम:, असिताङ्गभैरवमावाहयामि स्थापयामि॥ ५८॥ अग्निकोणे—ॐ श्वित्रआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्या अरण्याय सृमरो रुरू रौद्र: क्वयि: कुटरुर्द्रात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिक:॥ ॐ रुरुभैरवाय नम:, रुरुभैरवमावाहयामि स्थापयामि॥ ५९॥ दक्षिणे—ॐ नम: शंभवाय च मयोभवाय च नम:, शङ्कराय च मयस्कराय च नम:। शिवाय च शिवतराय च॥

‘ॐ अम्बेऽअम्बिके०’ से ‘ॐ भू० चामुण्डायै नम:, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि’ तक कहकर पश्चिम दिशा में चामुण्डा का, ‘ॐ आप्यायस्व समेतु०’ से ‘ॐ भू० वैष्णव्यै नम:, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि’ से वायव्यकोण में वैष्णवी का, ‘ॐ या ते रुद्र शिवा०’ से ‘ॐ माहेश्वर्यै नम:, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि’ पर्यन्त मन्त्र एवं वाक्य का उच्चारण कर उत्तर दिशा में माहेश्वरी तथा ‘ॐ समख्ये देव्या०’ से लेकर ‘ॐ भू० वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि’ तक उच्चारण कर ईशानकोण में वैनायकी का आवाहन और स्थापन करे। ‘ॐ नमस्ते रुद्र०’ इस मंत्र से पूर्व दिशा की कृष्णपरिधि पर असितांगभैरव का आवाहन और स्थापन करें। ‘ॐ श्वित्रआदित्यानामुष्ट्रो०’ इस मंत्र से अग्निकोण में रुरुभैरव का आवाहन और स्थापन करें। ‘ॐ नम: शंभवाय०’ इस मंत्र से

ॐ चण्डभैरवाय नम:, चण्डभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६० ॥ नैर्ऋत्ये—ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्तभिचाकशीहि ॥ ॐ क्रोधभैरवाय नम:। क्रोधभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६१ ॥ पश्चिमे—ॐ उन्नतऋषभो वामनस्तऐन्द्रावैष्णवाउन्नत: शितिबाहु: शितिपृष्ठस्तऐन्द्राबार्हस्पत्या: शुकरूपा वाजिना: कल्माषाआग्निमारुता: श्यामा: पौष्णा: ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नम:। उन्मत्तभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६२ ॥ वायव्ये—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापोअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधी: ॥ ॐ कपालभैरवाय नम:। कपालभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६३ ॥ उत्तरदिशि—ॐ उग्रश्च भीमश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिप: स्वाहा ॥ ॐ भीषणभैरवाय नम:। भीषणभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६४ ॥ ईशानदिशि—ॐ रुद्रा: सर्ठ० सृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योति: समीधिरे ॥ तेषां भानुरजस्त्र इच्छुक्रो देवेषु रोचते ॥ ॐ संहारभैरवाय नम:। संहारभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६५ ॥

प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता।
प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मण्डले दैवतै: सह ॥

'ब्रह्माद्यावाहितदेवा: सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत'।

'ॐ ब्रह्मादिदेवेभ्यो नम:'।

दक्षिण दिशा में चण्डभैरव का आवाहन और स्थापन करें। 'ॐ या ते रुद्र शिवा०' इस मंत्र से नैर्ऋत्यकोण में क्रोधभैरव का आवाहन और स्थापन करें। 'ॐ उन्नतऋषभ:०' इस मंत्र से पश्चिमदिशा में उन्मत्तभैरव का आवाहन और स्थापन करें। 'ॐ कार्षिरसि०' इस मंत्र से वायव्यकोण में कपालभैरव का आवाहन और स्थापन करें। 'ॐ उग्रश्च०' इस मंत्र से उत्तर दिशा में भीषण भैरव का आवाहन और स्थापन करें, इसके पश्चात् ही 'ॐ रुद्रा: सर्ठ०' इस मंत्र से ईशानकोण में संहार भैरव का आवाहन और स्थापन करें।

इस प्रकार आवाहन कर 'प्रतिष्ठा सर्वदेवानां०' से 'वरदा भवत' तक कहकर प्रतिष्ठा एवं 'ॐ ब्रह्मादिदेवेभ्यो नम:' से पूजन करें।

प्रधानकलशस्थापनम्

ततः कुङ्कुमादिना भूमौ पद्मं कृत्वा—**ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥** इति भूमिं स्पृष्ट्वा। **ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि॥** इति सप्तधान्यं विकिरेत्। **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्द्रयिः॥** इति सप्तधान्योपरि कलशं स्थापयेत्। **ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्नयसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद॥** इति कलशे जलं पूरयेत्। **ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥** इति कलशे गन्धं क्षिपेत्। **ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च॥** इति मन्त्रेण कलशे सर्वौषधी प्रक्षिपेत्। **ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥** इति कलशे दूर्वाङ्कुरान् क्षिपेत्। **ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम्॥** इति पञ्चपल्लवान्। **ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥** इति मन्त्रेण कलशे पवित्रं क्षिपेत्। **ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः॥** इति सप्तमृदः क्षिपेत्। **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥** इति कलशे पूगीफलं प्रक्षिपेत्। **ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥** इति पञ्चरत्नानि। **ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्त ताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥** इति कलशे हिरण्यं क्षिपेत्।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमा-सदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो॥ इति युग्मवस्त्रेण कलशं वेष्टयेत्। ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो॥ इति कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत्। ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥ इति मन्त्रेण कलशोपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य। ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। 'ॐ अपांपतये वरुणाय नमः। इति पञ्चोपचारैर्वरुणदेवता सम्पूज्य।

पीठदेवतान्यासः

ॐ मं मंडूकाय नमः-मूलाधारे। ॐ कां कालाग्नि रुद्राय नमः-स्वाधिष्ठाने। ॐ कूं कूर्माय नमः-नाभौ। ॐ अं अनन्ताय नमः, ॐ आं आधारशक्तये नमः, ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः, ॐ रं रत्नदीपाय नमः, ॐ सुं सुधाम्बुधये नमः, ॐ मं मणिमण्डपाय नमः, ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः, ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः-इति हृदये।

ॐ धं धर्माय नमः-दक्षांसे। ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः-वामांसे। ॐ वं वैराग्याय नमः-वामोरौ। ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः-दक्षोरौ। ॐ अं अर्धमाय नमः-बदने। ॐ अं अज्ञानाय नमः-वामपार्श्वे। ॐ अं अवैराज्ञायै नमः-नाभौ। ॐ अं अनैश्वर्याय नमः-दक्षपार्श्वे।

ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः। ॐ सं संविन्नालाय नमः। ॐ सं सर्वतत्त्वपद्माय नमः। ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः। ॐ पं पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यकर्णिकायै नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। ॐ चं चन्द्रमण्डलाय षोडश-

कलात्मने नमः। ॐ रं अग्निमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। ॐ सं सत्त्वबोधात्मने नमः। ॐ रं रजःप्रकृत्यात्मने नमः। ॐ तं तमोमोहात्मने नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः। ॐ मां मायातत्त्वात्मने नमः। ॐ कं कलातत्त्वात्मने नमः। ॐ विं विद्यातत्त्वात्मने नमः। ॐ पं परतत्त्वात्मने नमः। ॐ शिं शिवतत्त्वात्मने नमः। इति हृदये।

ततः-हृद्येव पूर्वाद्यष्टदिक्षु नवपीठशक्तिर्न्यसेत्-ॐ वां वामायै नमः- पूर्वभागे। ज्यें ज्येष्ठायै नमः-आग्नेये। ॐ श्रें श्रेष्ठायै नमः-दक्षिणे। रौं रौद्रायै नमः-नैर्ऋत्ये। ॐ कां काल्यै नमः-पश्चिमे। ॐ कं कलविकरण्यै नमः-वायव्ये। ॐ बं बलविकरण्यै नमः-उत्तरे। ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः-ऐशान्ये। ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः-उर्ध्वभागे। ॐ मनोन्मन्थै नमः-हृदयमध्ये।

पीठपूजनम्

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाठ॰ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

पुष्पाक्षतानादाय स्ववामभागे—**श्रीगुरुभ्यो नमः**। दक्षिणे—**गणपतये नमः**। मध्ये—**स्वेष्टदेवतायै नमः**।

तदुपरान्त—पीठमध्ये-**ॐ मं मंडूकाय नमः। ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ आं आधारशक्तये नमः। ॐ कूं कूर्माय नमः। ॐ अं अनन्ताय नमः। ॐ पृं पृथिव्यै नमः। ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः। ॐ रं रत्नदीपाय नमः। ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः। ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः। ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः। ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः।**

पुनः—आग्नेय्याम्-**ॐ धं धर्माय नमः**। नैर्ऋत्याम्-**ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः**। वायव्याम्-**ॐ वैं वैराग्याय नमः**। ऐशान्याम्-**ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः**।

पूर्वे–ॐ अं अधर्माय नमः। दक्षिणे–ॐ अं अज्ञानाय नमः। पश्चिमे–ॐ अं अवैराग्याय नमः। उत्तरे–ॐ अं अनैश्वर्याय नमः।

पुनः—पीठमध्ये-ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः। ॐ सं संविन्नालाय नमः। ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः। ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः। ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। ॐ बं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः। ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। ॐ मां मायातत्त्वाय नमः। ॐ कं कलातत्त्वाय नमः। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः। ॐ पं परतत्त्वाय नमः।

नवपीठशक्तिपूजनम्—पूर्वे-ॐ वां वामायै नमः। आग्नेय्याम्-ज्यें ज्येष्ठायै नमः। दक्षिणे-रौं रौद्र्यै नमः। नैर्ऋत्ये-ॐ कां काल्यै नमः। पश्चिमे-ॐ कं कलविकरण्यै नमः। वायव्ये-ॐ बं बलविकरण्यै नमः। उत्तरे-ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः। ऐशान्ये-ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः। पीठमध्ये-ॐ मनोन्मन्यै नमः। ततः-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ॰ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण पीठदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु इति प्रतिष्ठाप्य हस्ते पुष्पांजलि गृहीत्वा-ॐ नमो भगवते भैरवाय सकलगुणात्मशक्तियुक्तायानन्ताय योगपीठात्मने नमः।

अथाग्न्युत्तारणम्

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अस्याः सुवर्णमयभैरवप्रतिमायाः अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यर्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये।

किसी शुद्ध पात्र में भैरव देवता की सुवर्ण प्रतिमा को पंचामृत से लेपित करके पान के ऊपर रखकर आचार्य और ब्राह्मण आगे दिए हुए वैदिक मन्त्रों

का उच्चारण करते हुए यजमान और उसकी धर्मपत्नी से दुग्धयुक्त जलधारा अलग-अलग कमण्डलु से प्रदत्त करावें—

ॐ समुद्रस्य त्त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि।
पावको ऽअस्मभ्यर्ठं० शिवो भव॥ १॥
हिमस्य त्त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि।
पावको ऽअस्मभ्यर्ठं० शिवो भव॥ २॥
उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि।
सेमं नो यज्ञं पावकवर्णर्ठं० शिवं कृधि॥ ३॥
अपामिदं न्ययनर्ठं० समुद्रस्य निवेशनम्।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठं० शिवो भव ॥ ४॥
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ इहावह उप यज्ञर्ठं० हविश्च नः॥ ६॥
पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः॥ ७॥
नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठं० शिवो भव॥ ८॥
नृषदे वेडप्सुषदे व्वेड् वर्हिषदे वेड्वनसदे वेट् स्वर्विदेवेट्॥ ९॥
ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानार्ठं० संवत्सरीणमु पभागमासते।
अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥ १०॥
ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य।
येब्भ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु॥ ११॥
प्प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठं० शिवो भव॥ १२॥

इति सुवर्णभैरवप्रतिमां करेण संस्पृश्य—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः भैरवदेवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः भैरवदेवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः भैरवदेवस्य सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः भैरवदेवस्य वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुःश्रोत्र-जिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ततस्तां भैरवदेवता प्रतिमां रजतादि-सिंहासनोपरि संस्थाप्य अर्चयेत्।

अग्निस्थापनम्

ततः कुण्डे उपरि मेखलायां श्वेतवर्णालङ्कृतायां विष्णुं पूजयेत्। तद्यथा—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥

ततो मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां ब्रह्माणं पूजयेत्। ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

ततः अधोमेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां रुद्रं पूजयेत्। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि॥

ततो योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायां गौरीं पूजयेत्। ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्य्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥

कण्ठे—ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ठ० रुद्रा उपश्रिताः। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ कण्ठे नमः कण्ठमावाहयामि स्थापयामि॥

नाभिम्—ॐ नार्भिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥ ॐ नाभ्यै नमः नाभिमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

ततः आचार्यः अग्न्यायतनस्य पश्चात्प्राङ्मुखोपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन् सनवग्रहमखे-सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं शतमङ्गलनामाग्निस्थापनं करिष्ये।

पञ्चभूसंस्कार—कुशों से परिसमूहन करके उन कुशाओं को ईशानकोण में छोड़कर गोमय और उदक (जल) से लेपित कर स्फय अथवा स्रुव के मूल से लिखकर उल्लेखन क्रम से अनामिका और अंगुष्ठ से मिट्टी को निकालकर बाहर फेंक दे। फिर जल से प्रोक्षण करके, उसके बाद कुण्ड में सुवर्ण खण्ड छोड़कर वस्त्र से ढँककर तदुपरान्त अरणी प्रदान करें।

तद्यथा—स्मार्त्ताग्निसाधनभूते योनिरूपे इमे अरणी युवाभ्यां प्रतिगृह्यताम्। इयमधरा। इयमुत्तरा। ततः यजमानः तौ स्मार्ताग्निसाधनभूते इमे अरणी आवाभ्यां परिगृहाण। ततः ब्रह्मा। इदं चात्र। इदमोवलीं इदं नेत्रम्। इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृहाण। ततः यजमानः। इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृह्णामि। पत्नी तु यजमानहस्तादधरारणिमंके निदधाति। यजमानोऽप्यंके उत्तरारणिं निदधाति। उभावप्यरणयोः पूजां कुरुतः।

तद्यथा—प्राग्ग्रीवामुत्तरलोम कृष्णाजिनं कम्बलोपरि आस्तीर्य तस्योपरि उदगग्रामधरारणिं निधाय। तत्पूर्व उत्तरारणिं च निधाय ॐ युवाभ्यामरणीभ्यां नमः इति संपूज्य। ततो अधरारण्यामुक्तप्रदेशे प्रमंथमूलं निधान चात्राग्रे चोवलिमुदगग्रां च नेत्रेण चात्रं त्रिर्वेष्टयित्वा गाढं धृत्वा पश्चिमाभिमुखोपविष्टया पत्न्या मन्थयेत्। यावदग्नेरुत्पत्तिः।

पत्न्या मन्थनासामर्थ्ये अन्ये ब्राह्मणाः शुचयो मध्नन्ति। एवं यजमानासामर्थ्ये अन्यो यन्त्रं धारयति। ततो यातमग्निं मृण्मयपात्रे शुष्कगोमयचूर्णं नारिकेलजटां च स्थापयित्वा तस्मिन्पात्रे अग्निमाहृत्य वेणुनलिकया प्रज्वालयेत्। ततोऽग्निं कांस्यपात्रे धृत्वा कांस्यपात्रेणाच्छाद्य कुण्डाद्बहिराग्नेय्यां संस्थाप्य आचार्यस्तमग्निं गृहीत्वा आग्नेयकोणमार्गेण कुण्डमध्ये नीत्वा। ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह। इति मन्त्रान्ते शतमङ्गलनामाग्निमुपसमादधे इत्यग्निं स्वाभिमुखं निधाय।

इसके बाद आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करके यजमान से अग्नि का आवाहन करावें—

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य। त्रिधा बद्धो वृषभोरोरवीतिमहोदेवो मर्त्याँऽआविवेश॥

आचार्य '**ॐ मनो जूति०**' इस मंत्र का उच्चारण करके अग्नि की प्रतिष्ठा करावें और आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण कर अग्निदेवता का ध्यान यजमान से करावें—

**सप्तहस्तश्चतुःशृङ्गः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः।
त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः॥
मेषारूढो - जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥
शिखाभिर्दीप्यमानाभिरूर्ध्वगाभिस्तु संयुतः।
स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा॥
विभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्नं स्रुचं स्रुवम्।
तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन्॥
आत्माभिमुखमासीन एवंरूपो हुताशनः॥**

तदुपरान्त कुण्ड में अग्नि स्थापित कर यजमान संक्षिप्त पुण्याहवाचन एवं गोदानपूर्वक आचार्य और ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

ग्रहादिस्थापनं पूजनं च

ततः पूर्वनिर्मितहस्तमात्रं चतुरस्त्रं ग्रहवेद्यां श्वेतवस्त्रं प्रसार्य, नवग्रहमण्डलं विलिख्य मध्यादिकोष्ठेषु उक्तदिक्षु विदिक्षु सूर्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च कुर्यात्। तद्यथा—

नवग्रहस्थापनम्

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

तत्पश्चात् चौकोर एक हाथभर की बनी ग्रहवेदी पर श्वेत वस्त्र बिछावें और उसपर नवग्रह मण्डल का निर्माण कर मध्य आदि कोष्ठों में कथित आठों दिशाओं में सूर्यादि ग्रहों का स्थापन और पूजन करें।

सूर्याद्यावाहन—तदनन्तर 'ॐ आ कृष्णेन०' से 'सूर्यमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर सूर्य का, 'ॐ इमं देवा०' से 'सोममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर सोम का आवाहन और स्थापन करे।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छेह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

'ॐ अग्निर्मूर्धा०' से 'भौममावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर भौम का, 'ॐ उद्वुध्यस्वाग्ने०' से लेकर 'बुधमावाहयामि स्थापयामि' से बुध का, 'ॐ बृहस्पते अति०' से लेकर 'बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर बृहस्पति का आवाहन और स्थापन करे।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानठं॰ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो मृतं मधु॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भैरवाय नमः, शनिश्चरमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोद्भव पैठीनसिगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः॥

पालाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्रे धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

'ॐ अन्नात्परिस्रुतो॰' से 'शुक्रमा॰ स्थां॰' तक कहकर शुक्र का, 'ॐ शं नो देवीरभिष्टय॰' से 'शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमा॰ स्था॰' पर्यन्त कहकर भैरव का। 'ॐ कया नश्चित्र॰' से 'राहवे नमः, राहुमा॰ स्था॰' तक पढ़कर राहु का और 'ॐ केतुं कृण्वन्न॰' से 'केतुमा॰ स्था॰' तक पढ़कर केतु का आवाहन और स्थापन करें।

अधिदेवतास्थापनम्

ततो ग्रहदक्षिणपार्श्वेऽधिदेवतास्थापनं कुर्यात्—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनाग्रजं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

अधिदेवता स्थापन—तत्पश्चात् सूर्यादि ग्रहों के दाहिनी ओर अधिदेवता का स्थापन करें। यथा—'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०' से लेकर 'ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर ईश्वर, 'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च०'-'उमामावाहयामि स्थापयामि' से उमा का। 'ॐ यदक्रन्दः०'-'स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि' से स्कन्द का आवाहन और स्थापन करें।

ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः॥

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

'ॐ विष्णोर राटमसि०'-'विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त श्लोक तथा मन्त्र-वाक्य पढ़कर विष्णु का आवाहन एवं स्थापन करें। इसी तरह 'ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ०' से 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' तक से ब्रह्मा, 'ॐ सजोषा इन्द्र०' से 'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' तक इन्द्र का।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः काल इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय॥

धर्मराजसभासंस्थं कृताऽकृतविवेकिनम्।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्त इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

'ॐ यमाय त्वाङ्गि०'–'यममावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारण करते हुए यम देवता का, 'ॐ कार्षिरसि०' से आरम्भ कर 'कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारण करके काल का आवाहन व स्थापन करें। इसके उपरान्त 'ॐ चित्रावसो०' से आरम्भ कर 'चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर चित्रगुप्त का आवाहन एवं स्थापन करें।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

ततो ग्रहवामपार्श्वेप्रत्यधिदेवतास्थापनं कुर्यात्—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ ॥ आसादयादिह ॥

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥

आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकरा शुभाः।
औषध्याप्यायनकरा अपामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आपः इहागच्छत इह तिष्ठत ॐ अद्भ्यो नमः, अपआवाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवि इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥

प्रत्यधिदेवता स्थापन—तदनन्तर ग्रहों के बायीं ओर प्रत्यधिदेवता का आवाहन पूर्वक स्थापन करें। 'ॐ अग्निं दूतं०' से 'अग्निमावाहयामि स्थापयामि' तक से अग्नि का। 'ॐ आपो हि ०'–'अपआवाहयामि स्थापयामि' से अप, 'ॐ स्योना पृथिवी०'–'पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि' तक से पृथिवी, 'ॐ इदं विष्णु०'–'विष्णवे नमः,

शङ्खचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम्।
किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञःपुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥

ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रश्चावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानाऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयठ० स्याम पतयो रयीणाम्॥

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' से विष्णु का, 'ॐ इन्द्र आसां०' से 'इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' तक इन्द्र का, 'ॐ अदित्यै०'–'इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि' कर कहकर इन्द्राणो का। 'ॐ प्रजापते न०' से 'प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि' तक से प्रजापति,

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छत इह तिष्ठ ॐ सर्पेभ्यो नमः, सर्पानामावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

पंचलोकपालादिस्थापनम्

ततो विनायकादिपञ्चलोकपालदेवता वास्तोष्पतिं क्षेत्रपालं चाऽऽवाहयेत्—

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

‘ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो०’ से ‘सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि स्थापयामि’ तक बोलकर सर्प, ‘ॐ ब्रह्म जज्ञानं०’ से ‘ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि’ तक पढ़कर ब्रह्मा का आवाहन और स्थापन करें।

पंचलोकपाल स्थापन—इसके बाद विनायक आदि पंचलोकपाल, वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहनपूर्वक स्थापन करे। ‘ॐ गणानां त्वा०’ से ‘गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि’ तक से गणपति का।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छताम् इह तिष्ठताम् ॐ अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

'ॐ अम्बे अम्बिकेऽ०' से लेकर 'दुर्गामा० स्थाप०' तक से दुर्गा, 'ॐ वायो ये ते०' से 'वायुमा० स्थाप०' तक पढ़कर वायु, 'ॐ घृतं घृतपावनः०' से 'आकाशमा० स्थाप०' तक कहकर आकाश और 'ॐ या वां कशा०' से 'अश्विनौ आवाह० स्थाप०' तक पढ़कर अश्विनी का आवाहन और स्थापन करें।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

वास्तोष्पतिं विदिक्कायं भूशय्याभिरतं प्रभुम्।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ६ ॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। ऐमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः॥

भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्त्राधिपतये इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७ ॥

दशदिक्पालस्थापनम्

ततो मण्डलाद् बहिःदशदिक्पालानामावाहनं कुर्यात्—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १ ॥

'ॐ वास्तोष्पते०' से 'वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वास्तोष्पति, 'ॐ नहि स्पशमविदन्नं०'–'क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि' तक से क्षेत्राधिपति का आवाहनपूर्वक स्थापन करें।

दशदिक्पालस्थापन—तत्पश्चात् ग्रहमण्डल के बाहर पूर्व दिशा से प्रदक्षिण क्रम से दशदिक्पालों का आवाहनपूर्वक स्थापन करें। यथा—'ॐ त्रातारमिन्द्रम०' –'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' तक इन्द्र का,

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते॥

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छह इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न आयुः प्रमोषीः॥

'ॐ त्वं नो अग्ने०'–'अग्रिमावाहयामि स्थापयामि' से अग्नि का। 'ॐ यमाय त्वाङ्गि०' से लेकर 'यममावाहयामि स्थापयामि' तक से यम, 'ॐ असुन्वन्तमय०' से लेकर 'निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि' से निर्ऋति, 'ॐ तत्त्वा यामि०' से आरम्भ कर

शुद्धस्फटिकसङ्काशं जलेशं यादशां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ६ ॥

ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ ७ ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इशानेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ८ ॥

'वरुणमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर वरुण का आवाहन एवं स्थापन करें। इसी तरह 'ॐ आ नो नियुद्भिः०' से 'वायुमावाहयामि स्थापयामि' तक से वायु का। 'ॐ वयर्ठ० सोम०' से लेकर 'सोममावाहयामि स्थापयामि' से सोम, 'ॐ तमीशानं०' 'ईशानमावाहयामि स्थापयामि' से ईशान का,

ॐ अस्मे रुद्रा मे हना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ२ ॥ अवन्तु देवाः ॥

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे ॥

पूर्वेशानयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥

निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥ १० ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों३प्रतिष्ठ ॥

सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु। 'सूर्यद्यनन्तान्तदेवताभ्यो नमः' इति मन्त्रेण आसनादि षोडशोपचारैः प्रत्येकमेकत्र वा सम्पूज्य प्रार्थयेत्।॥

'ॐ अस्मे रुद्रा०' से लेकर 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' से पूर्व और ईशान के ठीक मध्य में ब्रह्मा और 'ॐ स्योना पृथिवी०' से लेकर 'अनन्तमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर निर्ऋति एवं पश्चिम दिशा के ठीक बीच में अनन्त का आवाहन एवं स्थापन करें। तत्पश्चात् 'ॐ मनो जूतिर्जुपता०' से आरम्भ कर 'सूर्याद्यनन्तान्तदेवताभ्यो नमः' तक श्लोक एवं मन्त्र वाक्य पढ़कर आसनादिषोडशोपचार द्वारा सूर्यादि प्रत्येक नाम अथवा एक तन्त्र से ही सूर्यादिअनन्तान्त देवताओं का पूजन कर प्रार्थना करें।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज्जठं० समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्॥

अनया पूजया सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः प्रीयन्ताम्।

असङ्ख्यात रुद्रकलश स्थापनं पूजनं च

तदनन्तरं ग्रहस्येशानदिग्भागे कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य, कलशे वरुणमसंख्यातरुद्रांश्चाऽऽवाह्य पूजयेत्। तद्यथा—

ॐ असङ्ख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्याम्। तेषाठं० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ भूर्भुवः स्व असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः असङ्ख्यातरुद्रानामावाहयामि स्थापयामि। ॐ मनो जूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य 'ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः' इति लब्धोपचारेण सम्पूजयेत्।

तदनन्तर 'ब्रह्मा मुरारि०' श्लोक और 'ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो०' मन्त्र का उच्चारण कर सूर्यादि ग्रहों की प्रार्थना करें और 'अनया पूजया०' पढ़कर जल छोड़ दें।

असङ्ख्यातरुद्रकलश स्थापन और पूजन—तदनन्तर ग्रहमण्डल के ईशानकोण में पहले बताई गई कलशस्थापनविधि के द्वारा असङ्ख्यात रुद्र के कलश की स्थापना करवाकर उसमें वरुण और असङ्ख्यात रुद्र का 'ॐ असङ्ख्याता सहस्त्राणि०' से लेकर 'ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः' तक का उच्चारण कर पूजन सामग्री द्वारा यजमान से पूजन करावें।

योगिनीस्थापनम्

एक हाथ चौड़ी वेदी पर परिखायुक्त वेदी पर लालवस्त्र से वेदी को ढककर उस पर नौ-नौ रेखाएँ पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण की ओर आचार्य बनावें। फिर चौसठ खानों में चतुष्ठीपद योगिनी के बनावें। जिनमें रंगीन अक्षत भरकर योगिनी का आवाहन करें, इनमें कुछ लोग त्रिकोण आकृति का भी निर्माण करते हैं। स्वस्तिवाचन मंत्रों की आवृति से मध्य में तीन कलश स्थापित कर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का आवाहन कर पूजन करें, योगिनीवेदी के समीप बैठकर आचार्य निम्न संकल्प को यजमान से करावें-

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्य सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः समृद्धये महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहितानां चतुःषष्टियोगिनीनां स्थापनं करिष्ये।

उपरोक्त संकल्प के पश्चात् महाकाली की प्रतिमा योगिनी की प्रतिमा में '**ॐ अश्मन्नूर्जम्०**' इस वाक्य के द्वारा अग्नयुत्तारण करके प्रतिमा को यथास्थान स्थापित कर आवाहनादि करें—

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

अयमेव मन्त्रः सर्वेषूपचारेषु महाकालीपूजने आवर्तनीयः। एवं महालक्ष्मी-महासरस्वतीपूजने—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥ ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टुधियावसुः॥ इति मन्त्रावावर्तनीयौ।

प्रथमाष्टकपंक्तिः

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ गजाननायै नमः। गजाननामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ ॐ सिंहमुख्यै नमः। सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा॥ ॐ गृध्रास्यायै नमः। गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहा कृतर्ठ० हविरदन्तु देवाः॥ काकतुण्डिकायै नमः। काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमर्ठ०स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः॥ ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः। उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ स्वर्ण घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥ ॐ हयग्रीवायै नमः। हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टप्रायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारर्ठ० सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमवऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्॥ ॐ शरभाननायै नमः। शरभाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

द्वितीयाष्टकपंक्तिः

ॐ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड्भामः ॥ मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः ॥ ॐ उलूकिकायै नमः। उलूकिकामावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायाणाय स्वाहा ॥ ॐ शिवारावायै नमः। शिवारावामावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ मयूरायै नमः। मयूरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

ॐ पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि ॥ ॐ विकटाननायै नमः। विकटाननामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना ॥ ॐ अष्टवक्त्रायै नमः। अष्टवक्त्रामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम् ॥ ॐ कोटराक्ष्यै नमः। कोटराक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥ ॐ कुब्जायै नमः। कुब्जामावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥ ॐ विकटलोचनायै नमः। विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

तृतीयाष्टकपंक्तिः

ॐ यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्। गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट॥ ॐ शुष्कोदर्यै नमः। शुष्कोदरीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ ॐ ललजिह्वायै नमः। ललजिह्वामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दृꣳह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिवं दृꣳह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य उपदधामि चितः स्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम्॥ ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः। श्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥ ॐ वानराननायै नमः। वानराननामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥ ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः। ऋक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ केकराक्ष्यै नमः। केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ बृहत्तुण्डायै नमः। बृहत्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः॥ ॐ सुरप्रियायै नमः। सुरप्रियामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

चतुर्थाष्टकपंक्तिः

ॐ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदव्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ ॐ कपालहस्तायै नमः। कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि। प्र नूनं पूर्णबन्धुरः स्तुतो यासि वशाँ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी॥ ॐ रक्ताक्ष्यै नमः। रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा॥ ॐ शुष्क्यै नमः। शुष्कीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ देवीरापो अपां न पाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रिया वान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा॥ ॐ श्येन्यै नमः। शेनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ २ आ विवासति। हविष्यमान्देवो अध्वरो हविषमाँ २॥ अस्तु सूर्यः॥ ॐ कपोतिकायै नमः। कपोतिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ ॐ पाशहस्तायै नमः। पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्॥ ॐ दण्डहस्तायै नमः। दण्डहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ कदाचनः स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा॥ ॐ प्रचण्डायै नमः। प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

पञ्चमाष्टकपंक्तिः

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ॰सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॐ चण्डविक्रमायै नमः। चण्डविक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ॰सो ध्रुवा अस्मिगोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि॥ ॐ शिशुघ्न्यै नमः। शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥ ॐ पापहन्त्र्यै नमः। पाहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥ ॐ काल्यै नमः। कालीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ रुधिरपायिन्यै नमः। रुधिरपायिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ वसाधयायै नमः। वसाधयामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥ ॐ गर्भभक्षायै नमः। गर्भभक्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ शवहस्तायै नमः। शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

षष्ठाष्टकपंक्तिः

ॐ ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः। आन्त्रमालिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठ० संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्॥ ॐ स्थूलकेश्यै नमः। स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना॥ ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः। बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ॐ सर्पास्यायै नमः। सर्पास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ अस्कन्नमद्य देवेभ्य आज्यर्ठ०संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णोः स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोध्वर आस्थात्॥ ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः। प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सहवाजयन्तः। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्तिशत्रूं१। रनपव्ययन्तः॥ ॐ दन्तशूककरायै नमः। दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ ॐ क्रौञ्च्यै नमः। क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे॥ ॐ मृगशीर्षायै नमः। मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

सप्तमाष्टकपंक्तिः

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ ॐ वृषाननायै नमः। वृषानामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥ ॐ व्यात्तास्यायै नमः। व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ ॐ धूमनिःश्वासायै नमः। धूमनिःश्वासामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाम्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ ॐ तापिन्यै नमः। तापिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयर्ठ० सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवता गच्छत प्रदातारमाविशत॥ ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः। शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ ॐ कोटर्यै नमः। कोटरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे

त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ०शतिश्च म एकविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च म एकत्रिर्ठ०शच्च म एकत्रिर्ठ०शच्च मे त्रयस्त्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ स्थूलनासिकायै नमः। स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

अष्टमाष्टकपंक्तिः

ॐ ब्रह्माणि मे मतयः शर्ठ० सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ॥ ॐ विद्युत्प्रभायै नमः। विद्युतप्रभामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ बलाकास्यायै नमः। बलाकास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ठ०सं परिपातु विश्वतः॥ ॐ मार्जार्यै नमः। मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ तिस्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा। तीव्रं परिस्रुता सोममिन्द्राय सुषुवुर्मदम्॥ ॐ कटपूतनायै नमः। कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपार्ठ० रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रर्ठ० श्रियै जनयन्नप्सु राजा॥ ॐ अट्टाट्टहासायै नमः। अट्टाट्टहासामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥ ॐ कामाक्ष्यै नमः। कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसिराष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि॥ ॐ मृगाक्ष्यै नमः। मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकठ॰सठ॰शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ॐ मृगलोचनायै नमः। मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ईशाने—ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि॥ पूर्वे—ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि॥ आग्नेये—ॐ अजितायै नमः, अजितामावाहयामि स्थापयामि॥ दक्षिणे—ॐ अपराजितायै नमः, अपराजितामावाहयामि स्थापयामि॥ नैर्ऋत्ये—ॐ क्षेमकर्त्र्यै नमः, क्षेमकर्त्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ पश्चिमे—ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ वायव्ये—ॐ वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि॥ उत्तरे—ॐ पार्वत्यै नमः, पार्वतीमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ॰ समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

आचार्य निम्न श्लोक द्वारा यजमान से प्रार्थना करावें—

ॐ सम्पूजिता मयादेव्यो योगिन्यः सगणाः शुभा।
मम यज्ञन्तु निर्विघ्नं कुर्वन्तु गणक्षेत्रपैः॥

ततः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादि-चतुः षष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु। ततः षोडशोपचारैः पूजयेत्।

योगिनीपूजनम्

ध्यानम्

स्मरामि चित्ते सततं सुरम्याः सुयोगिनीर्वोऽत्र गजाननाद्याः।
देवीश्चतुः षष्टिसुधांशुशुभ्राः स्वच्छं धरामण्डलमाशुकार्यम्॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः सुभव्याः।
गजाननाद्या वितनोमि देव्य आवाहनं वोऽत्र समागताः स्युः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्

दत्तं चतुष्षष्टि गजाननाद्या योगिन्य आरादिदमासनं च।
शुभप्रदाः सौख्यकरा भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सुवेषाः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

योगिन्य आशुपरमानिगमप्रसिद्धाः प्रक्षालनायपदपङ्कजयोरुदारम्।
स्वच्छं सुशीतलमिदं भयकाहृतं च गृह्णन्त्वशेषमिदमिष्टकरं च वारि॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननीजननीजनानां यासां कृपैव वसुधा वसुधारिणी मे।
ताः सर्वदैवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं च गृह्णतमुदाऽऽशु गजाननाद्याः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दन - पुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवली - घनसारसारम्।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेस्मिन्देव्यो भजन्तु शुभमाचमनीयम्मभः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आचमनीयजलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

गङ्गाजलेन सहितेन पयःसिताज्यैर्दध्नाऽमलेन मधुना तुलसीदलैश्च।
पञ्चामृतेन वरवेशगजाननाद्याः स्नानं मुदा कुरुत योगरतावरेण्याः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकम्

जलेऽमलेमञ्जुविचित्र पुष्पाण्यच्छानि चानीय निपातितानि।
स्नानं विधेयं हि गजाननाद्या आगत्य युष्माभिरिहाङ्गणे ते॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, शुद्धोदकजलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्घरत्नैरतिशोभमानं शुभं प्रियं मङ्गलकारकं च।
मयार्पितं वस्त्रमिदं विचित्रं कृते भवेद् वै वरयोगिनीनाम्॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

त्रिविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

योगिन्य आशु वनजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम्।
सन्तापविस्तृतिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथदा भवेयुः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

योगिन्य एतात्र सुगन्धितांश्च भक्त्या मया मोदसमर्पितांश्च।
गृह्णन्तु देव्यो द्रुतमक्षतान्मे समग्रविघ्नान् विनिवारयन्तु॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, अक्षतं समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्जलैः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पुष्पं समर्पयामि।

रक्तचूर्णम्

धूपादिकेनातिसुवासितानि शोणश्रियानन्दविवर्धितानि।
श्रीरक्तचूर्णानि मनोहराणि गजाननाद्या मनसाऽर्पयामि॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, रक्तचूर्णं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीरकचूर्णवर्धितं नरासुराणामपि सौख्यदायकम्।
गजाननाद्याः सुरभिप्रसारकं गृह्णन्तु धूपं सुखदं सुदेव्यः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि समर्पयामि।

दीपम्

सद्वर्तिकां ज्ञानविवर्धिकामिमां निपात्यदीयं विनिवेदितं मया।
प्रज्वालितं ध्वान्तविनाशकं च गृह्णन्तु देव्यं सततं शिवाय॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षाल्यं)

नैवेद्यम्

सिद्धान्नकर्पूरविराजितं द्राक्सौरभ्यसान्द्रेण विभूषितं च।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धि स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।

(हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि।)

ताम्बूलम्

योगिन्य आशु गृहमेत्य शुभं मदीयं भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम्।
एलालवङ्गबहुलं क्रमकादियुक्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत मञ्जुहासाः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्

देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयमानाः सततं सहासाः
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां च गजाननाद्याः सुखदाभवन्तु॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारानपि दूरयन्ती।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानवस्य॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति गजाननाद्याः पदे पदे दुःखविनाशिका अपि।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

गजाननाद्यारुचिरं मदीयं गृह्णन्तु पुष्पाञ्जलिमत्र देव्यः।
योगिन्य आशूद्भटशङ्कराश्च भवन्तु भूपालनतत्पराश्च॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्तुतिम्

जनामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं विनिपातयन्त्यः।
योगिन्य आशु मम मङ्गलमातनुध्वं कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितात्समस्तात्॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

इति सम्पूज्य 'अनया पूजया चतुः षष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम्।'

क्षेत्रपालस्थापनम्

वायव्यकोण में सफेद वस्त्र से ढकी हुई पीठ पर चारो ओर रेखाओं को देकर मध्य में पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण दो-दो रेखाएँ दें, नवग्रह की तरह नौ कोष्ठकों का निर्माण कर पूर्व दिशाओं में छः पट्दल और उत्तर व ईशान के मध्य के कोष्ठों में सप्तदल का निर्माण आचार्य करें, तत्पश्चात् यजमान अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठकर आचमन एवं प्राणायाम करें। तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें-

देशकालौ संङ्कीर्त्य, अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्मिन् सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणि क्षेत्रपालस्थापनं करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् आचार्य क्षेत्रपाल का स्थापन निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से करावें-

ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्यार्ठ० रक्षार्ठ०स्य पहर्ठ० स्यग्ने। ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः॥ ॐ अजराय नमः। अजरमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ प्रथमा वार्ठ० सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा। अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥ ॐ व्यापकाय नमः। व्यापकमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः। सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रतिहव्या गृभाय॥ ॐ इन्द्रचौराय नमः। इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः। स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः। इन्द्रमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश। मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ॥ ॐ उक्ष्णे नमः। उक्षाणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वर्ठ०हसः॥ ॐ कूष्माण्डाय नमः। कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आग्नेयेषट्सुदलेषु

ॐ स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्त्रव॥ ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियर्ठ० हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥ ॐ वटुकाय नमः। वटुकमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य षड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात्॥ ॐ विमुक्ताय नमः। विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतर्ठ० समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ ॐ लिप्तकाय नमः। लिप्तकमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजोर्ठ०सि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा। या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन्वरुणा पूर्वहूतौ॥ ॐ लीलालोकाय नमः। लीलालोकमावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विश्वरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥ ॐ एकदंष्ट्राय नमः। एकादंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

दक्षिणषट्के

ॐ अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपर्ठ०श्रेयसे

वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्॥ ॐ ऐरावताय नमः। ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि ॥ १३ ॥

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहर्ठ०शतं धामानि सप्त च॥ ॐ ओषधीघ्नाय नमः। ओषधीघ्नमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ ॐ बन्धनाय नमः। बन्धनमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

ॐ देवसवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा॥ ॐ दिव्यकरणाय नमः। दिव्यकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञर्ठ० सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषजयन्॥ ॐ कम्बलाय नमः। कम्बलमावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमष एकवीरः शतर्ठ० सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥ ॐ भीषणाय नमः। भीषणमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥

नैर्ऋत्यषट्के

ॐ इमर्ठ० साहस्त्रर्ठ० शतधारमुत्सं व्यच्यमानर्ठ० सरिरस्य मध्ये। घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिर्ठ०सीः परमे व्योमन्। गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद। गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥ ॐ गवयाय नमः। गववमावाहयामि स्थापयामि॥ १९॥

ॐ कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधार उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः॥ ॐ घण्टाय नमः। घण्टामावाहयामि स्थापयामि॥ २०॥

ॐ आक्रन्दय बलमोजो न आधा निष्टनिहि दुरिताबाधमानः। अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व॥ ॐ व्यालाय नमः। व्यालमावाहयामि स्थापयामि॥ २१॥

ॐ इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥ ॐ अंशवे नमः। अंशुमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥

ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहर्ठ० हरिरेति कनिक्रदत्॥ ॐ चन्द्रवारुणाय नमः। चन्द्रवारुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ २३॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ घटाटोपाय नमः। घटाटोपमावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥

पश्चिमेषट्सुदलेषु

ॐ उग्रं लोहितेन मित्रर्ठ० सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यर्ठ० रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥ ॐ जटिलाय नमः। जटिलमावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥

ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२नु॥ रनु॥ ॐ क्रतवे नमः। क्रतुमावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥ ॐ घण्टेश्वराय नमः। घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥

ॐ वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता॥ ॐ विटकाय नमः। विटकमावाहयामि स्थापयामि॥ २८॥

ॐ दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभिगृणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम्॥ ॐ मणिमानाय नमः। मणिमानमावाहयामि स्थापयामि॥ २९॥

ॐ त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तःसमुद्रे। उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन् यत्रा त आहुः परमं जनित्रम्॥ ॐ गणवन्धाय नमः। गणवन्धमावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥

वायव्यादिकोष्ठेषट्सुदलेपुक्रमेण

ॐ प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकर्ठ० शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम्॥ ॐ मुण्डाय नमः। मुण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥ ॐ बर्बूकराय नमः। बर्बूकरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥

ॐ वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखाप्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो असिवीडय स्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि॥ ॐ सुधापाय नमः। सुधापमावाहयामि स्थापयामि॥ ३३ ॥

ॐ सुपर्णां वस्ते मृगो अस्यादन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता। यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यर्ठ०सन्॥ ॐ वैनाय नमः। वैनमावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥

ॐ अग्ने अच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव। प्र नो यच्छ सहस्रजित्त्वर्ठ०हि धनदा असि स्वाहा॥ ॐ पवनाय नमः। पवनमावाहयामि स्थापयामि॥ ३५॥

ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनुभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः॥ ॐ ढुण्ढकरणाय नमः। ढुण्ढकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ ३६॥

ॐ अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः॥ ॐ स्थविराय नमः। स्थविरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३७॥

ॐ वातं प्राणेनापानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयित्नुं निर्बाधेनाशनिं

मस्तिष्केण विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यार्ठ० श्रोतर्ठ० श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदनीमधरकण्ठेनापः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभिरदितिर्ठ० शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जल्पेन शीर्ष्णा संक्रोशैः प्राणान् रेष्माणर्ठ० स्तुपेन॥ ॐ दन्तुराय नमः। दन्तुरामावाहयामि स्थापयामि॥ ३८॥

उत्तरादिकोष्ठेसप्तसुदलेषु

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥ ॐ धनदाय नमः। धनदमावाहयामि स्थापयामि॥ ३९॥

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः॥ ॐ नागकर्णाय नमः। नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि॥ ४०॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ॐ महाबलाय नमः। महाबलमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥

ॐ इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः। महान् सधस्थे ध्रुव आ निपत्तो नमस्ते अस्तु मा मा हिर्ठ०सीः॥ ॐ फेत्काराय नमः। फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥

ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे। अनाविद्धया तन्वा जय त्वर्ठ० स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु॥ ॐ वीरकाय नमः। वीरकमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥

ईशानादिकोष्ठेसप्तसुदलेषुक्रमेण

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्त। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूं १॥ रनपव्ययन्तः॥ ॐ सिंहाय नमः। सिंहमावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२ ॥ आसादयादिह॥ ॐ मृगाय नमः। मृगमावाहयामि स्थापयामि॥ ४५ ॥

ॐ अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धत्री विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम्। ऊर्मिर्द्रप्सो अपामसि विश्वकर्मा त ऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा॥ ॐ यक्षाय नमः। यक्षमावाहयामि स्थापयामि॥ ४६ ॥

ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते। सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया॥ ॐ मेघवाहनाय नमः। मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि॥ ४७ ॥

ॐ संबर्हिरङ्क्तार्ठ०हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः संमरुद्भिः। समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्ता दिव्यं नभो गच्छतु यत्स्वाहा॥ ॐ तीक्ष्णाय नमः। तीक्ष्णमावाहयामि स्थापयामि॥ ४८ ॥

ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ ॐ अमलाय नमः। अमलमावाहयामि स्थापयामि॥ ४९ ॥

ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ ॐ शुक्राय नमः। शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५० ॥

ततः—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति अजरादिक्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। ततः षोडशोपचारैः पूजयेत्।

क्षेत्रपालपूजनम्

ध्यानम्

श्रीक्षेत्रपालान्सुरपुष्पमालान्सर्वान्तरायाशु विनाशकालान्।
दत्ताखिलाभीप्सितवर्गजालान्ध्यायेऽधुना चन्दनलिप्तभालान्॥

ॐ साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सशक्तिकेभ्यः सवाहनेभ्यः सायुधेभ्यः क्षेत्रपालेभ्यो नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः सुभव्याः।
आवाहनं क्षेत्रसुपालका वः करोम्यहं भव्यकरा भवन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्

चित्रप्रभाभासुरमच्छभक्त्यार्पितं मया साम्प्रतमासनं च।
श्रीक्षेत्रपालाः सुतरां भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहाङ्गैः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

विबुधा निगमप्रसिद्धाः प्रक्षालनाय पदपङ्कजयोरुदारम्।
स्वच्छं सुशीतलमिदं मयकाहृतं च गृह्णन्त्वशेषमिदमिष्टकरं च वारि॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननी जननी जनानां येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी वै।
ते सर्वदेवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं मुदा हि च सुरा मम धारयन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दन - पुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवलीघनसारसारम्।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेऽस्मिन्देवा भजन्तु शुभमाचमनीयमम्भः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

विमलगाङ्गजलेन युतं पयोघृतसितादधिसर्पिसमन्वितम्।
प्रियतरं भवतां परिगृह्णत यदि कृपाप्रभवो मयि सेवके॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

जले समादाय विचित्रपुष्पाण्यच्छानि चानीय निपातितानि।
स्नानं विधेयं विबुधाः समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्घ्यरत्नैरतिभासितं शुभं सदा प्रियं मङ्गलकारकं वरम्।
स्वच्छं च वस्त्रं विनिवेदितं मया प्रमोददं वै भवतां कृते भवेत्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

कौशेयसूत्रविहितं विमलां सुचारु वेदोक्तरीतिविहितं परिपावनञ्च।
क्षेत्राधिपाः सुमनसः सुनिवेदितं च यज्ञोपवीतमुररीक्रियतां सुदेवाः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

विविधता पविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

क्षेत्राधिपा मलयजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम्।
सन्तापसन्ततिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथपूरकाः स्युः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

विमलगाङ्गजलैः परिमार्जितं सुरभिकुङ्कुमरागसुरञ्जितम्।
सततमक्षतमादरचेतसा सकलसौम्यमयं शुभकारकम्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्जलैः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पुष्पं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीवरचूर्णवर्द्धितं सर्वासुराणामपि सौख्यकारि।
लोकत्रये गन्धकरं प्रशस्तं क्षेत्राधिपा जिघ्रत धूपगन्धम्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि समर्पयामि।

दीपम्

सद्वर्त्तिकां ज्ञानविवर्द्धिकां परां निर्वाण दीपं विनिवेदितं मुदा।
प्रज्वालितं ध्वान्तिविनाशकारकं गृह्णन्तु ज्ञानस्य विशालरूपम्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

सिद्धान्नकर्पूरविराजितं पुरः सौरभ्यसान्द्रेण विवर्धितं तथा।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धितं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।

(हस्तप्रक्षालनार्थे, मुखप्रक्षालनार्थे च जलं सम०। पुनराचमनीयं जलं स०।)

ताम्बूलम्

श्रीक्षेत्रपालविबुधाः सदने मदीये भक्त्यार्पितं परमगन्धमयं मनोज्ञम्।
एलालवङ्गलसितं क्रमुकादिकान्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत हे सुरेन्द्राः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्

देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयमानाः प्रभवः पुराणाः।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे ध्यायेन भक्ते लघु वर्तितव्यम्॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारादपि दूरकर्त्री।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानसत्य॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, नीराजनं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणा अपि पदे पदे दुःखविनाशिकास्तथा।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

क्षेत्राधिपाविमलपुष्पवराञ्जलिं मे भक्त्यार्पितं सरसमच्छरसैःप्रपूर्णम्।
दीने विधाय करुणां मयि हेसुरेन्द्राः स्वीकृत्य दीनजनवत्सलतां किरन्तु॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्तुतिम्

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं हंरतारमेव।
क्षेत्राधिपालविबुधाः सुखमाकिरन्तु कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितात्समस्तात्॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

आचार्य यजमान से पूजन करवाके पुनः मध्य भाग में अष्टदल का मिर्माण करके वहाँ कलश की स्थापना करावें। तदुपरान्त सुवर्ण से निर्मित क्षेत्रपाल की प्रतिमा का अग्न्युत्तारण करवाके निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से आवाहन करवाके क्षेत्रपाल प्रतिमा को स्थापित करावें—**ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥**

कुशकण्डिकाविधिः

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्व ब्रह्मा भव 'भवामि' इति। पठित्वा तत्रोपवेशनम्। 'भवामि' इति ब्रह्मणः प्रत्युक्तिः। ब्रह्मा वाग्यतश्च भवेत्। ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तगृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशैषु दक्षिणहस्तेन निधाय (कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रह्मणाऽनुज्ञातः उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात्। ततो द्वादशानां परिस्तरण कुशानां चतुरो भागान् वामहस्ते कृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथा वृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषु द्विशः पात्राणि यथा सम्भवं न्युब्जानि उदक्संस्थानि प्राक्संस्थानि वा आसादयेत्। पवित्रे छेदनकुशाः। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जनकुशाः

अग्निदेव के दक्षिणदिशा की ओर ब्रह्मा के लिए कुशासन रखे। अग्नि के उत्तर दिशा में 'प्रणीता पात्र' के लिये दो आसन रखे। ब्रह्मा के ही आसन पर ब्रह्मा को बैठा दे और कहे—हे ब्रह्मन्! जब तक कर्म की समाप्ति न हो तब तक आप ब्रह्म के पद पर आसीन हो। ब्रह्मा मैं होता हूँ—यो कह कर पूर्व स्थापित आसन पर बैठे, तदनन्तर ब्रह्मा मौन हो जाये, फिर प्रणीता पात्र को बायें हाथ में धारण कर दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए जलपात्र से उस प्रणीता पात्र में जल को भरकर पहले से विछी हुई कुशाओं पर दाहिने हाथ से रखकर कुशों द्वारा आच्छादन कर उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देखकर ईक्षण मात्र से ब्रह्मा की आज्ञा लेकर उत्तर दिशा की तरफ बिछी कुशाओं पर रख दे, तदनन्तर वाहर परिस्तरण कुशाओं के चार भागों को बायें हाथ में रखे उसमें से एक-एक भाग से परिस्तरण अग्निकोण से ईशानादि में ही करें। तदनन्तर-पश्चिम दिशा से उत्तर दिशा की ओर बिछी कुशाओं पर दो-दो पात्रों को यथासम्भव न्युब्ज-उदक् संस्थ या प्राक्संस्थ आसादन करें। दो पवित्र छेदन करने के लिए कुशा, प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशा

पञ्च।उपयमनकुशाः सप्त।समिधस्तिस्त्रः।स्त्रुवः।आज्यम्।तण्डुला।पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानिद्रव्याणि निधाय तत्तद्ग्रहवस्त्राणि। अधिदेवताद्यर्थं श्वेतानि। तत्तद्ग्रहवर्णाः। तत्तद्ग्रहपुष्पाणि। तत्तद्ग्रहधूपाः तत्तदग्रहनैवेद्यानि। फलानि। दक्षिणाः वितानम्। अर्कादिसमिधः। सयवतिलाः पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेलवस्त्रादि। ततः पवित्रकरणम्। आसादितकुशपत्रद्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्यरहितं वामहस्ते कृत्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परिमाय मूले तयोरुपरि कुशत्रयमुदग्रं निधाय तत्कुशत्रयं तयोर्मूलभागेन प्रादक्षिण्येन परिवेष्ट्य तयोः प्रादेशपरिमणामग्रभागं वामस्ते कृत्वा अवशिष्टं मूलभागं कुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं पवित्रम्। तस्मिन्पत्रद्वयेऽविश्लेषाय ग्रथिं कुर्यात्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकं त्रिरासिच्य प्रोक्षणीपात्रं सव्ये कृत्वा दक्षिणेन वामहस्तधृत-मेव कर्णसमुत्थाय नीचैः कृत्वा प्रणीतोदकेनं पवित्रानोतेनोत्तानहस्तेन

पाँच, उपयनकुशा सात, तीन समीधा, स्त्रुव-घृत-चावल पूर्णपात्र आदि रखें, सूर्यादि ग्रहों के अनेक वर्ण के वस्त्र, अधिदेवता, देवता आदि के लिये सफेद वस्त्र, सूर्यादि ग्रहों के लिए अनेक प्रकार के चन्दन, तत्-तत् वर्ण के ग्रहों की धूप, ग्रहों के नैवेद्य-फल-दक्षिणा वितान सूर्यादि की समिधा यव और तिल, पूर्णाहुत्यर्थ नारिकेल और वस्त्र का आसादन करें। तदन्तर पवित्र बनाये जैसे-स्थापित मध्य (बीच कुशा से रहित) शल्यरहित दो कुशपत्र-द्वय को आगे से बराबर नापकर बायें हाथ में कर कुशा के अग्रभाग से प्रादेशमात्र नापकर उसके मूलपर उन दोनों कुशा के ऊपर तीन कुशाओं को उद्ग्र रखकर उन कुशाओं को उस दो कुशा के मूल भाग से प्रादक्षिण्य क्रम से वेष्टन कर उन दो कुशपत्रों को प्रादेशमात्र परिमाण के अग्रभाग को बायें हाथ में कर बचे हुए मूल भाग को और तीन कुशाओं को दाहिने हाथ से तोड़ दें फिर उसका त्याग कर दें, शिष्ट पत्रद्वय ही पवित्र है। उस पत्रद्वय में अविश्लेपण के लिए गाँठ दे। तदनन्तर प्रागग्र प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता के समीप रख दे वहाँ से सपवित्र पात्रान्तर हाथ से प्रणीता पात्र से जल को तीन बार आसेचन कर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में कर दाहिने से बायें हाथ से धारण किये हुए ही कान की तरफ उठाकर नीचे की तरफ कर प्रणीतापात्र के जल से पवित्र द्वारा ग्रहण किये हुए, उत्तानहाथ से

प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत्। ततः प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थालीं प्रोक्षणम्। चरुस्थालीं प्रोक्षणम्। समार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुंशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। ततस्ते पवित्रे प्रोक्षणीपात्रे संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रमग्निप्रणतयोर्मध्ये निदध्यात्। ततोऽग्नेः पश्चादाज्यस्थालीं निधाय तत्राज्यं प्रक्षिपेत्। एवं चरुस्थालीमग्नेः पश्चिमतो निधाय तत्र सपवित्रायां त्रिः प्रक्षालितान् तण्डुलान् प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्योपयुक्तं जलं तत्र निनीय ब्रह्मदक्षिणत आज्यं आचार्य उत्तरतश्चरुमदग्धमस्त्रावितमण्डमन्तरूष्मपक्वं सुशृतं पचेत्। (केवलाज्ये तु उत्तराश्रितामाज्य स्थालीमग्नावारोपयेत्।) ततोऽग्नेर्ज्वलदुल्मुकमादाय ईशानादिप्रदक्षिणमीशान पर्यन्तमग्निमाज्यचर्वोः परितं भ्रामयित्वोल्मुकमग्नौ प्रक्षिप्य अप्रदक्षिणं हस्तमीशानकोणपर्यन्तं पर्यावर्तयेत्। अर्द्धश्रिते चरौ स्रुवं गृहीत्वाऽधोबिलं सकृत् प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतः

प्रोक्षणीपात्र का प्रोक्षण करें। प्रोक्षणी जल से आज्यस्थाली का प्रोक्षण करे। चरुस्थाली का प्रोक्षण करें। संमार्जन कुशाओं का प्रोक्षण करें। उपयमन कुशाओं का, समिधा का, स्रुवका आज्यका और पूर्णपात्रका प्रोक्षण करें। तदन्तर उन दोनों पवित्रों को प्रोक्षणी पात्र में स्थापन कर उस प्रोक्षणी पात्र को अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में रख दे। फिर अग्नि के पीछे आज्यस्थाली रख उसमें आज्य का प्रक्षेप करें। इसी प्रकार अग्नि के पश्चिम में चरुस्थाली रख सपवित्र वाली उसमें तीन बार धोये हुए चावलों को छोड़ प्रणीता पात्र के जल से आसेचन कर उपयुक्त जल को उसमें छोड़कर ब्रह्मा के दक्षिण तरफ घी को आचार्य उत्तरदिशा से अदग्ध अश्रावित पक्वचरु को पका दे। तदन्तर अग्निकुंड या स्थण्डिल से जलते हुए, उल्मुक को लेकर ईशान कोण आदि से प्रदक्षिण कर ईशानकोण पर्यन्त अग्नि स्थित आज्य और चरु के चारों ओर घुमकर उस उल्मुक को अग्नि में छोड़ दे। फिर अप्रदक्षिण क्रम से अपने हाथ को ईशान कोण पर्यन्त घुमा दे। चरु के आधे पक जाने पर स्रुव को हाथ में ग्रहण कर उस स्रुव के बिल को नीचे की ओर कर एक बार अग्नि में तपाकर समार्जन कुशाओं के

उपरि मूलादारभ्याग्रपर्यन्तं प्राञ्चं संमृज्य कुशमूलैर्बहिरधः प्रदेशे अग्रादारभ्य प्रत्यञ्चं समृज्य संमार्जन कुशानग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन स्त्रुवमभ्युक्ष्य पुनःस्त्रुवं प्रयप्य दक्षिणस्यां दिशि तं तस्थापयेत्। तत् शृतं चरुं स्त्रुवेण गृहीतेनाज्येनाभिघार्य आज्यस्थालीं चरोः पूर्वेणानीयोत्तरत उद्वास्याग्नेः पश्चिमतः स्थापयेत्। ततश्चरुमादाय उत्तरत उद्वास्य आज्यस्य पूर्वेणानीय आज्यस्योत्तरतः स्थापयेत्। ततो दक्षिणहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं सङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं संङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठा नामिकाभ्यां तयोरग्रं संङ्गृह्य ऊर्ध्वाग्रेऽनम्रीकृत्य धारयन्नेवाज्ये प्रक्षिप्याज्यस्यात्पवनं कुर्यादुच्छालयेत्। तत आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्येत्। ततः पूर्ववत् पवित्रे गृहीत्वाप्रोक्षणीनामपामुत्पवनं कुर्यात्। ततो वामहस्ते उपयमनमादाय दक्षिणेन प्रादेशमात्रीः पालाशीस्तिस्त्रः समिधो घृताक्ता द्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मध्यमानामिकांगुष्ठैर्मूलभागे धृतास्तर्जन्यग्रवत्स्थूलास्तन्त्रेणग्नौतूष्णीं प्रक्षिप्य सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन

अग्रभाग से भीतर की ओर से मूल भाग से आरम्भ कर अग्रभाग पर्यन्त पूर्व की तरफ संमार्जन कर कुश मूलों से बाहर और नीचे के हिस्से में अग्रभाग से आरम्भ कर शुद्ध कर सर्माजन कुशाओं को अग्नि में फेककर प्रणीत जल से स्रुव का अभ्युक्षण तथा स्रुव का प्रतपन कर दक्षिण दिशा की ओर उस स्रुव को रख दे। तदनन्तर पके हुए चरु में स्रुव के द्वारा घी को छोड़ आज्यस्थाली को चरु के पूर्व से लेकर उत्तरदिशा की ओर रख फिर अग्नि के पश्चिम दिशा की तरफ स्थापन करें। फिर चरु को लेकर उत्तर दिशा से उतारे हुए घृत के पूर्व से ले आकर घृत के उत्तर की ओर स्थापना करें। तदनन्तर–दाहिने हाथ के अंगूठे और अनामिका से उस दोनों कुशाओं (पवित्र) के अग्रभाग को पकड़कर ऊपर के अग्रभाग को नम्र बनाकर धारण करते हुए ही घृत में प्रक्षेप कर आज्य को उत्पवन करें। फिर घृत को देख कर उसमें जो अपद्रव्य हो उसे निकाल दे। तदनन्तर फिर पवित्रों को ग्रहण कर प्रोक्षणी स्थित जल का उत्पवन करें फिर बायें हाँथ में उपयमन कुशा को लेकर दाहिने हाथ में प्रादेश प्रमाण की तीन समिधाओं को घी में भिगोकर दो अंगुल ऊपर मध्यमा अनामिका अँगूठे के मूलभाग में धारण की हुई, तर्जनी की तरह मोटी समिधा को एक साथ चुपचाप अग्नि में प्रक्षेप कर सपवित्र वाली प्रोक्षणी पात्र के जल से

चुलुकगृहीतेन ईशानादि—प्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं पर्युक्ष्य अप्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं हस्तं पर्यावर्तयेत्। ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध उपयमनकुशसहितं प्रसारिताङ्गुलि हस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुल त्यक्त्वा शङ्खसन्निभमुद्रया स्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौ वायव्य कोणादारभ्याग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्तघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्रुवेण तुष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात्। नात्र स्वाहाकारः। इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः। होमत्यागानन्तरं स्रुवावशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः। इति जुहुयात्। 'इदमिन्द्राय न मम' इति त्यजेत्। तत उत्तरपूर्वार्द्धे–ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम इति हुत्वा दक्षिण-पूर्वार्द्धे-ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम इति जुहुयात्।

संकल्पः—अस्मिन् सप्रासाद-भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु॥

चुल्लु द्वारा ग्रहण कर ईशान कोण से प्रक्षेप कर फिर ईशान पर्यन्त प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण कर अप्रदक्षिण क्रम से ईशानकोण पर्यन्त अपने दाहिने हाथ को केवल घुमा दे। उन पवित्र को प्रणीता पात्र में रख अपने दाहिने जानु को मोड़कर ब्रह्मा से कुशों द्वार स्पर्श कर उपयमन कुशा के सहित अपने हाथ की अँगुलियों को फैलाकर उस हाथ को हृदय में लगा दाहिने हाथ से स्रुव के मूल से चार अंगुल छोड़कर शंखमुद्रा से स्रुव को ग्रहण कर प्रदीप्त अग्नि में पूर्व दिशा की ओर निरन्तर घृत की धारा द्वारा ब्रह्मा का मन से ध्यान कर स्रुव से मौन रहकर हवन करें, इसमें स्वाहाकार नहीं है। 'इदं प्रजापतये न मम' इस वाक्य का यजमान त्याग करें। होम त्याग के बाद स्रुव स्थित आज्य का सर्वत प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करें। तदनन्तर-निर्ऋतिकोण से आरम्भ कर ईशान कोण पर्यन्त या पूर्व की तरफ 'इन्द्राय स्वाहा' इससे हवन करें। इद्रमिन्द्राय न मम, इससे त्याग करें फिर उत्तर पूर्वार्ध में 'अग्नये स्वाहा' से हवन करें। दक्षिण पूर्वार्ध में 'सोमाय स्वाहा' से हवन करें।

संकल्प—पुनः यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर 'अस्मिन् सप्रासाद-भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि' से 'परित्यक्तं न मम' तक का उच्चारण करके जल को भूमि में छोड़ दें, फिर 'यथा दैवतानि सन्तु' इस वाक्य का भी उच्चारण करें।

वराहुतिः

आचार्य निम्न 'ॐ गणानां त्वा०' से गणेश और 'ॐ अम्बेऽअम्बिके०' से अम्बा के लिए एक-एक घृताहुति हवनकुण्ड में यजमान से प्रदान करावें—

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधीपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

ग्रहादिहवनम्

आचार्य 'ॐ आ कृष्णेन०' से 'ॐ स्योना पृथिवि०' पर्यन्त एक-एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से हवनकुण्ड में आहुति प्रदान करावें—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ १॥

ॐ इमं देवाऽअसपत्नर्ठ० सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममपुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा स्वाहा॥ २॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति स्वाहा॥ ३॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा कर्ताश्च सीदत स्वाहा॥ ४॥

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ ५॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा॥ ६॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्नमृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात् स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णनिषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्ये नस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुयं महि जातं ते ऽअर्वन् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्धुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूंर्ठ०२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा ॥ १७ ॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा ॥ १८ ॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ ॥ आसादयादिह स्वाहा ॥ १९ ॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा ॥ २० ॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा ॥ २१ ॥

ॐ तद्विष्णोः परमं पदर्ठ० सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा ॥ २३ ॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व स्वाहा ॥ २४ ॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा ॥ २५ ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा ॥ २६ ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा ॥ २७ ॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा ॥ २८ ॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥ २९ ॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये स्वाहा ॥ ३० ॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ ३१॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा॥ ३२॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥ ३३॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः स्वाहा॥ ३४॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ३५॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा॥ ३६॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥ ३७॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥ ३८॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ ३९॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ ४०॥

ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा॥ ४१॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ ४२॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः स्वाहा॥ ४३॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म स प्रथाः स्वाहा॥ ४४॥

अथवा

केवलं नामाऽनुक्रमेण ग्रहादिहवनम्

ॐ सूर्याय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, भौमाय स्वाहा, बुधाय स्वाहा, बृहस्पतये स्वाहा, शुक्राय स्वाहा, शनैश्चराय स्वाहा, राहवे स्वाहा, केतवे स्वाहा, ईश्वराय स्वाहा, उमायै स्वाहा, स्कन्दाय स्वाहा, विष्णवे स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, यमाय स्वाहा, कालाय स्वाहा, चित्रगुप्ताय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, अद्भ्यो स्वाहा, पृथिव्यै स्वाहा, विष्णवे स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राण्यै स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, सर्पेभ्यो स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, गणपतये स्वाहा, दुर्गायै स्वाहा, वायवे स्वाहा, आकाशाय स्वाहा, अश्विनौ स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, क्षेत्राधिपतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, यमाय स्वाहा, निर्ऋतये स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, वायवे स्वाहा, सोमाय स्वाहा, ईशानाय स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अनन्ताय स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण वास्तुमण्डलहोमः

ॐ शिखिने स्वाहा। ॐ पर्जन्याय स्वाहा। ॐ जयन्ताय स्वाहा। ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा। ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा। ॐ भृशाय स्वाहा। ॐ आकाशाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ पूष्णे स्वाहा। ॐ वितथाय स्वाहा। ॐ गृहक्षताय स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ गन्धर्वाय स्वाहा। ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ पितृभ्यः स्वाहा। ॐ दौवारिकाय स्वाहा। ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ असुराय स्वाहा। ॐ शेषाय

स्वाहा। ॐ पापाय स्वाहा। ॐ रोगाय स्वाहा। ॐ अहये स्वाहा। ॐ मुख्याय स्वाहा। ॐ भल्लाटाय स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ सर्प्पेभ्यः स्वाहा। ॐ अदित्यै स्वाहा। ॐ दित्यै स्वाहा। ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ सावित्राय स्वाहा। ॐ जयाय स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ विवस्वते स्वाहा। ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा। ॐ मित्राय स्वाहा। ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा। ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा। ॐ आपवत्साय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ चरक्यै स्वाहा। ॐ विदार्यै स्वाहा। ॐ पूतनायै स्वाहा। ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ॐ जृम्भकाय स्वाहा। ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ कुबेराय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा।

आचार्य निम्न पाँच मन्त्रों का उच्चारण करते हुए बिल्वादि पत्रों से कुण्ड में एक सौ आठ, एक सौ आठ, एक-एक हवन करने वाला ब्राह्मण से हवन करावें। यहाँ भी विभाग नहीं है। इस प्रकार एक सौ आठ आहुति कुण्ड में प्रदान करावें—

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥ १॥ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो। अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति तन्नो जुषस्व स्वाहा॥ २॥ वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या। पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ ३॥ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन्। सखासुशेव एधि नः स्वाहा॥ ४॥ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांऽसत्रं सोम्यानाम्। द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा स्वाहा॥ ५॥

अघोरहोमः

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके एक सौ आठ आहुति यजमान से प्रदान करावें। यहाँ भी विभाग नहीं है। अतः एक सौ आठ आहुति कुण्ड में प्रदान करें—

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्व्वेभ्यः सर्वशर्व्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥

केवलं नामाऽनुक्रमेण लिङ्गतोभद्रदेवताहोमः

आचार्य और ब्राह्मण निम्न नाम मंत्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से लिङ्गतोभद्र के देवताओं के लिए कुण्ड में हवन करावें—

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २. ॐ सोमाय स्वाहा। ३. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्राय स्वाहा। ५. ॐ अग्नये स्वाहा। ६. ॐ यमाय स्वाहा। ७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ८. ॐ वरुणाय स्वाहा। ९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ अष्टवसुभ्यो स्वाहा। ११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा। १२. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा। १३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। १४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। १५. ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। १६. ॐ नागेभ्यः स्वाहा। १७. ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। १८. ॐ स्कन्दाय स्वाहा। १९. ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। २०. ॐ शूलाय स्वाहा। २१. ॐ महाकालाय स्वाहा। २२. ॐ दक्षादिभ्यः स्वाहा। २३. ॐ दुर्गायै स्वाहा। २४. ॐ विष्णवे स्वाहा। २५. स्वधायै स्वाहा। २६. ॐ मृत्युरोगेभ्य स्वाहा। २७. ॐ गणपतये स्वाहा। २८. ॐ अद्भ्य स्वाहा। २९. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा। ३०. ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ३१. ॐ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा। ३२. ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ३३. ॐ मेरवे स्वाहा। ३४. ॐ गदायै स्वाहा। ३५. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ३६. ॐ व्रजाय स्वाहा। ३७. ॐ शक्तये स्वाहा। ३८. ॐ दण्डा स्वाहा। ३९. ॐ खड्गाय स्वाहा। ४०. ॐ पाशाय स्वाहा। ४१. ॐ अङ्कुशाय स्वाहा।

४२. ॐ गौतमाय स्वाहा। ४३. ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। ४४. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ४५. ॐ कश्यपाय स्वाहा। ४६. ॐ जमदग्नये स्वाहा। ४७. ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ४८. ॐ अत्रये स्वाहा। ४९. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ५०. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। ५१. ॐ कौमार्यै स्वाहा। ५२. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। ५३. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ५४. ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ५५. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ५६. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ५७. ॐ वैनायक्यै स्वाहा। ॐ असिताङ्गभैरवाय स्वाहा। ॐ रुरुभैरवाय स्वाहा। ॐ चण्डभैरवाय स्वाहा। ॐ क्रोधभैरवाय स्वाहा। ॐ उन्मत्तभैरवाय स्वाहा। ॐ कपालभैरवाय स्वाहा। ॐ भीषणभैरवाय स्वाहा। ॐ संहारभैरवाय स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीहोमः

आचार्य निम्न चौंसठ नाम मन्त्रों का क्रमानुसार उच्चारण करते हुए यजमान से कुण्ड में योगिनीहोम करावें—

ॐ गजाननायै स्वाहा। ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा। ॐ गृध्रास्यायै स्वाहा। ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा। ॐ उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा। ॐ हयग्रीवायै स्वाहा। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ शरभाननायै स्वाहा। ॐ उलूकिकायै स्वाहा। ॐ शिवारावायै स्वाहा। ॐ मयूरायै स्वाहा। ॐ विकटाननायै स्वाहा। ॐ अष्टवक्त्रायै स्वाहा। ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा। ॐ कुब्जायै स्वाहा। ॐ विकटलोचनायै स्वाहा। ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा। ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा। ॐ श्वदष्ट्रायै स्वाहा। ॐ वानराननायै स्वाहा। ॐ ऋक्षाभ्यै स्वाहा। ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा। ॐ बृहत्तुण्डायै स्वाहा। ॐ सुराप्रियायै स्वाहा। ॐ कपालहस्तायै स्वाहा। ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा। ॐ शुक्यै स्वाहा। ॐ श्येन्यै स्वाहा। ॐ कपोतिकायै स्वाहा। ॐ पाशहस्तायै स्वाहा। ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा। ॐ प्रचण्डायै स्वाहा। ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा। ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा। ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा। ॐ काल्यै स्वाहा। ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा। ॐ वसाधयायै स्वाहा। ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा। ॐ शवहस्तायै स्वाहा। ॐ आन्त्रमालिन्यै

स्वाहा। ॐ स्थूलकेश्यै स्वाहा। ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा। ॐ सर्पास्यायै स्वाहा। ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा। ॐ दन्दशूकरायै स्वाहा। ॐ क्रौञ्च्यै स्वाहा। ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा। ॐ वृषाननायै स्वाहा। ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा। ॐ धूम्रनिश्वासायै स्वाहा। ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा। ॐ तापिन्यै स्वाहा। ॐ शोषिणीदृष्ट्यै स्वाहा। ॐ कोटर्यै स्वाहा। ॐ स्थूलनासिकायै स्वाहा। ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा। ॐ बलाकास्यायै स्वाहा। ॐ मार्जार्यै स्वाहा। ॐ कटपूतनायै स्वाहा। ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा। ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालहोमः

आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से हवन करावें—

ॐ अजराय स्वाहा। ॐ व्यापकाय स्वाहा। ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा। ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा। ॐ उक्ष्णे स्वाहा। ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वटुकाय स्वाहा। ॐ विमुक्ताय स्वाहा। ॐ लिप्तकाय स्वाहा। ॐ नीललोकाय स्वाहा। ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा। ॐ ऐरावताय स्वाहा। ॐ ओषधीघ्नाय स्वाहा। ॐ बन्धनाय स्वाहा। ॐ दिव्यकरणाय स्वाहा। ॐ कम्बलाय स्वाहा। ॐ भीषणाय स्वाहा। ॐ गवयाय स्वाहा। ॐ घंटाय स्वाहा। ॐ व्यालाय स्वाहा। ॐ अंशवे स्वाहा। ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा। ॐ घटाटोपाय स्वाहा। ॐ जटिलाय स्वाहा। ॐ क्रतवे स्वाहा। ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। ॐ विकटाय स्वाहा। ॐ मणिमाणाय स्वाहा। ॐ गणबन्धाय स्वाहा। ॐ मुण्डाय स्वाहा। ॐ वर्वूकराय स्वाहा। ॐ सुधापाय स्वाहा। ॐ वैनाय स्वाहा। ॐ पवनाय स्वाहा। ॐ ढुण्ढकरणाय स्वाहा। ॐ स्थविराय स्वाहा। ॐ दन्तुराय स्वाहा। ॐ धनदाय स्वाहा। ॐ नागकर्णाय स्वाहा। ॐ महाबलाय स्वाहा। ॐ फेत्काराय स्वाहा। ॐ वीरकाय स्वाहा। ॐ सिंहाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ यक्षाय स्वाहा। ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ॐ तीक्ष्णाय स्वाहा। ॐ अमराय स्वाहा। ॐ शुक्राय स्वाहा।

प्रधानाहुतिः

आचार्य भैरव देवता की प्रतिष्ठा में प्रधानाहुति निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक सौ आठ बार कुण्ड में यजमान से प्रदान करावें—

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥

भैरवाष्टोत्तरशतनामहवनम्

ॐ भैरवाय स्वाहा।
ॐ भूतनाथाय स्वाहा।
ॐ भूतात्मने स्वाहा।
ॐ भूतभावनाय स्वाहा।
ॐ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा।
ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
ॐ क्षेत्रदाय स्वाहा।
ॐ क्षत्रियाय स्वाहा।
ॐ विराजे स्वाहा।
ॐ श्मशानवासिने स्वाहा।
ॐ मांसाशिने स्वाहा।
ॐ खर्पराशिने स्वाहा।
ॐ स्मरान्तकाय स्वाहा।
ॐ रक्तपाय स्वाहा।
ॐ पानपाय स्वाहा।
ॐ सिद्धाय स्वाहा।
ॐ सिद्धिदाय स्वाहा।
ॐ सिद्धिसेविताय स्वाहा।
ॐ कङ्कालाय स्वाहा।
ॐ कालशमनाय स्वाहा।
ॐ कलाकाष्ठातनवे स्वाहा।
ॐ कवये स्वाहा।
ॐ त्रिनेत्राय स्वाहा।
ॐ बहुनेत्राय स्वाहा।
ॐ पिङ्गललोचनाय स्वाहा।
ॐ शूलपाणये स्वाहा।
ॐ खड्गपाणये स्वाहा।
ॐ कङ्कालिने स्वाहा।
ॐ धूम्रलोचनाय स्वाहा।
ॐ अभीरवे स्वाहा।
ॐ भैरवीनाथाय स्वाहा।
ॐ भूतपाय स्वाहा।
ॐ योगिनीपतये स्वाहा।
ॐ धनदाय स्वाहा।
ॐ धनहारिणे स्वाहा।
ॐ धनवते स्वाहा।
ॐ प्रतिभानवते स्वाहा।
ॐ नागहाराय स्वाहा।
ॐ नागकेशाय स्वाहा।
ॐ व्योमकेशाय स्वाहा।
ॐ कपालभृते स्वाहा।
ॐ कालाय स्वाहा।
ॐ कपालमालिने स्वाहा।
ॐ कमनीयाय स्वाहा।
ॐ कलानिधये स्वाहा।
ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा।

ॐ ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
ॐ त्रिशिखिने स्वाहा।
ॐ त्रिलोकपाय स्वाहा।
ॐ त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
ॐ डिम्भाय स्वाहा।
ॐ शान्ताय स्वाहा।
ॐ शान्तजनप्रियाय स्वाहा।
ॐ बटुकाय स्वाहा।
ॐ बहुवेषाय स्वाहा।
ॐ खट्वाङ्गवरधारकाय स्वाहा।
ॐ भूताध्यक्षाय स्वाहा।
ॐ पशुपतये स्वाहा।
ॐ भिक्षुकाय स्वाहा।
ॐ परिचारकाय स्वाहा।
ॐ धूर्ताय स्वाहा।
ॐ दिगम्बराय स्वाहा।
ॐ शौरिणे स्वाहा।
ॐ हरिणाय स्वाहा।
ॐ पाण्डुलोचनाय स्वाहा।
ॐ प्रशान्ताय स्वाहा।
ॐ शान्तिदाय स्वाहा।
ॐ सिद्धाय स्वाहा।
ॐ शङ्करप्रियबान्धवाय स्वाहा।
ॐ अष्टमूर्तये स्वाहा।
ॐ निधीशाय स्वाहा।
ॐ ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
ॐ तपोमयाय स्वाहा।
ॐ अष्टाधाराय स्वाहा।
ॐ षडाधाराय स्वाहा।
ॐ सर्पयुक्ताय स्वाहा।
ॐ शिखीसख्ये स्वाहा।
ॐ भूधराय स्वाहा।
ॐ भूधराधीशाय स्वाहा।
ॐ भूपतये स्वाहा।
ॐ भूधरात्मजाय स्वाहा।
ॐ कङ्कालधारिणे स्वाहा।
ॐ मुण्डिने स्वाहा।
ॐ नागयज्ञोपवीतकाय स्वाहा।
ॐ जृम्भणाय स्वाहा।
ॐ मोहनाय स्वाहा।
ॐ स्तम्भिने स्वाहा।
ॐ मारणाय स्वाहा।
ॐ क्षोभणाय स्वाहा।
ॐ शुद्धाय स्वाहा।
ॐ नीलाञ्जनप्रख्याय स्वाहा।
ॐ दैत्यघ्ने स्वाहा।
ॐ मुण्डभूषिताय स्वाहा।
ॐ बलिभुजे स्वाहा।
ॐ बलिभुङ्नाथाय स्वाहा।
ॐ बालाय स्वाहा।
ॐ बालपराक्रमाय स्वाहा।
ॐ सर्वापत्तारणाय स्वाहा।
ॐ दुर्गाय स्वाहा।
ॐ दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा।
ॐ कामिने स्वाहा।
ॐ कलानिधये स्वाहा।
ॐ कान्ताय स्वाहा।
ॐ कामिनीवशकृद्वशिने स्वाहा।
ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।
ॐ वैद्याय स्वाहा।
ॐ प्रभवे स्वाहा।
ॐ विष्णवे स्वाहा।

कर्मकुटी

यजमान अपनी धर्मपत्नी, आचार्य और ब्राह्मणों के साथ वाद्यघोष से युक्त होकर शिल्पशाला में जाकर भैरवजी की मूर्ति के सम्मुख प्राणायामादि करके निम्न संकल्प करे—**संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) भैरवप्रतिमानिर्माणे प्राणिदोषनिरासार्थं घृतेन तिलैर्वा होमं करिष्ये।**

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से तीर्थों का आवाहन करावें—

काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्योध्या मधोः पुरी।
शालिग्रामः स-गोकर्णः नर्मदा च सरस्वती॥ १॥
गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च।
वृषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा॥ २॥
आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गापापप्रणाशिनी।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा॥ ३॥
आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा॥ ४॥
उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा।
एता नद्याश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः।
तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥ ५॥

इति तीर्थान्यावाह्य सम्पूज्य कुम्भस्य चतुर्दिक्षु विदिक्षु च— ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। इत्यष्टलोकपालान् गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रतिमादिषु न्यूनातिरिक्तपाषाणदोषोपशमनार्थं प्रतिमायोग्यं स्थण्डिलं कृत्वा पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनपूर्वकं कुशकण्डिकादिकं समाप्य भैरवदेवतामन्त्रेण प्रत्येकं शत संख्यया हुत्वा पूर्णपात्रविमोकान्ते कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा भूयसीं दद्यात्। शिल्पिनेऽपि रत्नादिकं च दद्यात्।

जलाधिवासः

सपत्नीक यजमान कारुशाला में जाकर वहाँ कम्बल के आसन पर बैठकर आचमन और प्राणायाम करके निम्न संकल्प करे—

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) भैरवदेवतायोग्यताधिष्ठानसिद्ध्यर्थं जलाधिवासाख्यं कर्म करिष्ये॥

यजमान के बायें हाथ में आचार्य पीली सरसों देकर निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए चारों दिशाओं में उससे छिड़कवाकर भूतादिकों को हटावें—

**यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ २॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठां हि समारभे॥ ३॥
भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यावत्कर्म करोम्यहम्॥ ४॥**

आचार्य पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर भैरवजी की मूर्ति का स्थापन यजमान से करावें। इसके उपरान्त ही सप्तमृत्तिकादि से भैरवजी की मूर्ति को स्नान कराकर उनका ब्रणभंग करके अग्न्युत्तारण करें। तदुपरान्त भैरवजी के निम्न वैदिक मन्त्र और पौराणिक श्लोकों का आचार्य उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें—

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाठ॰ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

**ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जयदाय नमो नमः॥ १॥**

नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः।
नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः॥ २ ॥
नमः कङ्कालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते।
नमः त्र्यम्बकरूपाय महाकालाय ते नमः॥ ३ ॥
नमः संसारसाराय सारदाय नमो नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ ४ ॥
नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः।
क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः॥ ५ ॥
नमो नागविनाशाय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातङ्गरूपाय भाररूप नमोऽस्तु ते॥ ६ ॥
नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने॥ ७ ॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमः सङ्कटनाशाय शङ्कराय नमो नमः॥ ८ ॥
नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः।
नमोऽनन्तस्वरूपाय एकरूप नमोऽस्तुते॥ ९ ॥

तदुपरान्त जलद्रोणी में भैरवजी की मूर्ति का अधिवासन करें, यह अधिवासन स्नान मण्डप में भी किया जा सकता है।

धान्याधिवासम्

यजमान अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठकर देशकाल का स्मरण करते हुए यह संकल्प करें—**मम गृहे प्रचुरधान्यपुत्रपौत्रादिसुख-सम्पत्त्यादिनिवासार्थं धान्याधिवासं करिष्ये।**

इति सङ्कल्प्य गोमयोपलिप्ते वस्त्राच्छादिते शुद्धभूमौ किञ्चित् धान्यं विकीर्य भूम्यादिपूजनं कृत्वा शनैः शनैः ज्येष्ठक्रमेण देवान्स्वापयेत्। ततः भैरवमूर्त्युपरि पुनः प्रचुरधान्यं सकुटुम्बं प्रक्षिपेत्।

ततः तत्तमन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैः वा पूजयेत्।

घृताधिवासः

घृतं गव्यं तेजो बलिमतिकरं सत्त्वगुणदं
पवित्रं चायुष्यं त्रिदशदयितं मङ्गलकरम्।
घृतानां सर्वेषां सुखदमधिवासो श्रुतिमतं
सदा देवा हृष्ट्या विपुलवरदा याज्ञिकजने॥ १॥
रसेषु सर्वेषु प्रधानरूपं गुणं सुराणां मधुरं मखाङ्गम्।
घृताधिवासात्सुरतामुपेता भवन्ति देवा बहुमोदमानाः॥ २॥

भावार्थ—घृत अत्यन्त तेज और बल को देनेवाला है, सत्त्वगुण देनेवाला है, पवित्र है और आयुष्य है, देवताओं को प्रिय है। मंगल करनेवाला है। सभी घी का अधिवास सुखद होता है और श्रुति से समर्पित है। (इस अधिवास से) देवता लोग प्रसन्न हो करके यज्ञ करनेवाले को सदैव वर देते हैं॥ १॥ घी सभी रसों में प्रधान है, देवताओं के लिए गुण (प्रसन्नता) देनेवाला है, मधुर है और यज्ञ का अंग है। घृताधिवास से सुख प्राप्त करके देवता लोग अत्यन्त प्रसन्न होते हैं॥ २॥

गन्धाधिवासः

अगरतगरपूर्णमष्टगन्धं कपूरं बहुकुसुमसुगन्धी अत्तरं केशरं च।
नृपतिधनिकलोकैः सप्ततन्तौ सुयोज्यं सकलसुरहितार्थं धर्मकामार्थमूलम्॥

भावार्थ—सभी देवताओं की प्रसन्नता के लिए तथा धर्म, काम एवं अर्थ को देनेवाला अगर-तगर से पूर्ण अष्टगंध, कपूर, अनेक प्रकार के सुगन्धित पुष्प, अतर और केसर को राजा एवं धनिकों के द्वारा सात डोरे में ठीक से गूंथना चाहिए।

पुष्पाधिवासः

चम्पाचमेलीकमलानि जूहीगुलाबवेलारजनीसुगन्धा
दुर्वाशमीजीवकगन्धराजं गेन्दाधतूरागुलमेहदीं च।

अगस्तिकां सूर्यमुखीकनेरं शेफालिकानामकपारिजातं
तिलस्य पुष्पं हरशृङ्गहारं मालारपत्रं तुलसीमदारम्॥

भावार्थ—चम्पा, चमेली, कमल, जूही, गुलाब, वेला, रजनीगन्धा, दूर्वा, शमी, जीवक, गन्धराज, अगस्तिका, सूर्यमुखी, कनेर, शैफालिका और पारिजात, तिल का फूल, हरशृंगार, मालार का पत्ता, तुलसी और मदार।

धूपाधिवासः

दशाङ्गयुग्गुग्गुललोहवानं ज्वालामुखी धूपवती सुवत्ती।
सुगन्धबालाखसदेवदारु धूपाधिवासे विहितं च वेदे॥

भावार्थ—दशाङ्ग, दोनों गुग्गुल, लोहबान, ज्वालामुखी, सुबत्ती, सुगन्धबाला, खस, देवदार ये वेद में धूपाधिवास में लिखे गये हैं।

फलाधिवासः

सुपक्वमङ्गूरं कटहरपपीता अमरुतमनारं जम्बूरमरुणसदृशं सततत्तराम्।
अनानासं केला सरसहकारं सहतुतं विजोरामोसमीवरदवदरीसेवमुरई॥
सिघाडाजामूनं प्रचुरनसपातिं सिरफलम्।
सुराणां वासार्थं फलवरमिदं वेदलिखितम्॥
यथा सुसाध्यं सुखतः सदैव स्वदेशकालोद्भवजं सुवस्तु।
संगृह्यतां भूपतिभिः सुयज्ञे फलाधिवासे कथितं सुरेष्टम्॥
वादामं छोहाडाकिसमिसचिरौञ्जी अखरुटं
मखाना खर्जूरं हरितपिसता सद्मुमफली।
मुनक्का आवजोसं शुभचिरगुजा सक्करयुतं
सुराणां सन्मेवादयितमधिवासे च कथितम्॥

भावार्थ—पका हुआ अंगूर, कटहर, पपीता, अमरूद, अनार, नींबू, संतरा, अनानास, केला, आम, शहतूत, बिजौरा, मुसम्मी, बेर, मूली, सिघाड़ा, जामुन, नाशपाती, श्रीफल ये श्रेष्ठ फल देवताओं के अधिवास के लिये वेद में

लिखे गये हैं। उस देश और उस काल में होनेवाले आसानी से सुखपूर्वक संग्रहीत होनेवाले फलों का संग्रह देवताओं की प्रसन्नता के लिए फलाधिवास में राजाओं के द्वारा किया जाना चाहिए। बादाम, छुहारा, किशमिश, चिरौंजी, अखरोट, मखाना, खजूर, पिस्ता, मूँगफली, मुनक्का, चिलगोजा आदि मेवा देवताओं की प्रसन्नता के लिये अधिवास में कहे गये हैं।

मिष्ठान्नाधिवासः

बालस्याहीजलेवीचमचमवरफीमोहनंलप्सिमुख्यं
कुष्माण्डैः पाकपेडासरसरगुलासोहनं पापडीकम्।
खोवापूडी इमर्तीबहुलगुणगुलाजामुनं खीरमोहम्
लड्डूबुन्दीमिठाईसुरगणप्रियदं यज्ञकार्ये सुयोज्यम्॥
पूआ पूडी कचौडी उरदजवटकं गन्धितं हिङ्गजीरैः
नानाप्रकारपूर्णमगणितरसभृद् व्यञ्जनं चारुलेह्यम्।
सन्तोषप्रेमकारी शिखरनदधि युग्वासहेतोः सुराणां
श्रेष्ठे यज्ञे कवीन्द्रैर्बहुविधकथितं यत्नतो योजनीयम्॥

भावार्थ—बालू स्याही, जलेबी, चमचम, बरफी, मोहनभोग ये प्रधान हैं। इनके साथ भतुआपाक (पेठा), पेड़ा, रसगुल्ला, सोहनहलुआ, पपड़ी, खोवापूड़ी (मालपूआ), इमरती, गुलाबजामुन, खीरमोहन, लड्डू, बूंदी आदि मिठाई देवताओं की प्रसन्नता के लिए मिष्ठान्नाधिवास में संग्रह करनी चाहिए। पूआ, पूड़ी, कचौड़ी, उड़द का बाड़ा, हींग और जीरा से सुवासित नाना प्रकार के रस से भरे हुए व्यंजन और चटनी, सिखरन दही आदि देवताओं के प्रेम एवं प्रसन्नता के लिये श्रेष्ठ यज्ञ (प्रतिष्ठा) में अधिवास के लिये बहुविध प्रयत्न से जुटाना चाहिए। ऐसा विद्वानों का कथन है।

मिष्ठानाधिवास के उपरान्त आचार्य औषध्याधिवास भी करावें।

देवस्नपनम्

स्नान मण्डप में आचार्य प्रधानस्थापन मन्त्र द्वारा पञ्चगव्य को अभिमन्त्रित कर उससे स्नान मण्डप का प्रोक्षण कर बालू की तीन वेदियों पर अक्षत से 'स्वस्तिक' बनाकर उसमें तीन महापीठ को रखकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके विश्वकर्मा का ध्यान यजमान से करावे—

ॐ विश्वकर्मा तु कर्तव्यः श्मश्रुलोमांशलाधरः।
स्नदंशपाणिर्द्विभुजस्तेजोमूर्तिः प्रतापवान्॥

आचार्य सप्तधान्यों पर त्रिसूत्रीय से बँधे हुए पञ्चपल्लव और जलों से पूर्ण कलशों का स्थापन यजमान से करावे। इसमें दक्षिण वेदी के पीछे बारह कलश उदक्संस्थ अथवा प्राक्संस्थ रखे। इसमें बारह 'स्थपतिसंज्ञक' कलश होते हैं। उन कलशों में क्रमानुसार द्रव्यों का प्रयोग करे। पाँच कलशों में क्रम से—१. मृत्तिका, २. पञ्चपल्लव वृक्षीयकषाय, ३. गोमूत्र, ४. गोबर, ५. भस्म। डालकर शेप सात में गन्धोदक डालें, इस प्रकार मध्यवेदी के पश्चिम की ओर ग्यारह कलश पूर्वोक्त द्रव्यों से युक्त स्थापित करें।

यहाँ पर स्थापित कलश बारह नहीं हैं, उत्तर वेदी से पश्चिम—**प्रथमपङ्क्तौपञ्च शुद्धोदककलशाः। द्वितीयपङ्क्तौविंशतिकलशाः। तत्र विषमेपु अष्टपलमृत्तिका—१. सप्तपलगोमयम्, २. द्वादशपलं गोमूत्रम्, ३. मुष्टिमितं भस्म, ४. त्रिपल्लवपञ्चगव्यम्, ५. षोडशपलं क्षीरम्, ६. विंशतिपलं दधि, ७. सप्तपलं घृतम्, ८. त्रिपलं मधु, ९. त्रिपलं शर्करा, १०. इति क्षिपेत्। समेपु शुद्धोदकमेव। तृतीयपङ्क्तौ—द्वौ शुद्धोदकयुतौ। चतुर्थपङ्क्तौ—षट् तत्राद्ये पञ्चामृतम्, अन्येपु शुद्धोदकम्। पञ्चमपङ्क्तौ—द्वौ चतुर्दश-कलशाः—तेषु क्रमेण—गन्धः १, पञ्चपल्लवकषायः २, सर्वौषध्यः ३, सितपुष्पाणि ४, शान्त्युदकम् ५, अष्टौ फलानि ६, सुवर्णम् ७, गोशृङ्गोदकम् ८, सप्तधान्यानि ९, सहस्त्रछिद्रकलशः तत्सहायार्थोऽप्येकः १०, पुनः दिव्यौसर्वौषध्यः ११, पञ्चपल्लवाः १२, रक्षानि नव १३, तीर्थोदकम् १४, इति प्रक्षिपेत।**

वेदी के पूर्वादि आठ दिशाओं में समुद्र संज्ञक कलश स्थापित करें। आचार्य निम्न आठ मन्त्रों का क्रमानुसार उच्चारण करके आठ कलशों की स्थापना यजमान से करावें।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ १ ॥ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २ ॥ यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ३ ॥ य आत्मदा वलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृत्तं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ४॥ आपो ह यद्वृहती विश्वमायन् गर्भ दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरे कः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ५ ॥ यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधानां जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ६ ॥ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च हडहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ७॥ वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्। तस्मिन्निदर्ठ०सं च वि चैति सर्वर्ठ० स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु॥ ८॥

ततः—तेषु क्षारोदकम् १, क्षीरम् २, दधि ३, घृतम् ४, इक्षुरसः ५, सुरोदकम् ६, स्वादूदकम् ७, गर्भोदकम् ८, इति प्रक्षिपेत्।

षष्ठपङ्क्तौ—दश, तेषु—कदम्ब १, शाल्मली २, जम्बू ३, अशोक ४, प्लक्ष ५, चूत ६, वट ७, विल्व ८, नाग ९, पलाश १० पत्राणि निक्षिपेत्।

उपरोक्त कलशों में क्रमशः लोकपालों का आवाहन करें, सातवीं पंक्ति में चार बड़े-बड़े अथवा एक कलश सूक्ष्म उजला वस्त्र, सुगन्धित तेल, यव,

अक्षत, गेहूँ, मसूर, बेल, आँवले का चूर्ण उबटन के लिए। अन्य सुगन्धित वस्तु कस्तूरी दो भाग, कुमकुम दो भाग, चन्दन तीन भाग, कपूर एक भाग और यक्षकर्दम और जटामांसी डालें। इसके पश्चात् आचार्य पाँचवीं पंक्ति में स्थित अन्तिम चौदहवें तीर्थोदक कलश में निम्न श्लोक का उच्चारण करके तीर्थों का आवाहन यजमान से करावें—

सर्वेसमुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारिकाः॥

आचार्य जल से भैरव देवता की मूर्ति को बाहर निकलवाकर निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जयदाय नमो नमः॥ १ ॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः।
नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः॥ २ ॥
नमः कङ्कालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते।
नमः त्र्यम्वकरूपाय महाकालाय ते नमः॥ ३ ॥
नमः संसारसाराय सारदाय नमो नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ ४ ॥
नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः।
क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः॥ ५ ॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से भैरव देवता को जगवावें—

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

आचार्य अग्न्युत्तारण करके भैरव देवता की मूर्ति का कुशों से सम्मार्जन कर मधु और घृत लपेटे, तदुपरान्त भैरव के व्रण को भंग करके पंचगव्य से पूजा करके अलग-अलग जल में डुबा कर स्नान करावें, पुनः पूजा करके शंख आदि बजाते हुए रथादि के द्वारा महामण्डप के प्रदक्षिण से स्नान मण्डप

पर ले आवें। गुरु दक्षिण वेदी पर कुशा बिछाकर पूर्वाभिमुख भैरव देवता की मूर्ति को बैठाकर अर्थात् रखकर स्थपति संज्ञक कलश को हिरण्य, वस्त्र, रत्न आदि सहित भैरव देवता के समीप आचार्य निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से रखवायें—

ॐ स्तीर्ण बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्।
देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु॥ १॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ २॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए तीर्थों का आवाहन यजमान से करावें—

ॐ काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोः पुरी।
शालग्रामं सगोकर्ण नर्मदा च सरस्वती॥ १ ॥
तीर्थान्येतानि कुम्भेऽस्मिन्विशन्तु ब्रह्मशासनात्।
झषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा॥ २ ॥
आगच्छतु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गापापप्रणाशिनी।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्तांऽबुजेक्षणा॥ ३ ॥
आयातु यमुनादेवी कूर्मयानस्थिता सदा।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा॥ ४ ॥
ऊर्मिला चन्द्रभागा च सरयूर्गण्डकी तथा।
जम्बुका च शतद्रूश्च कलिङ्गा सुप्रभा तथा॥ ५ ॥
वितस्ता च विपाशा च शर्मदा च पुनः पुनः।
गोदावरी महावर्ता शर्करावर्त्तमार्जनी॥ ६ ॥
कावेरी कौशिकी चैव तृतीया च महानदी।
विटङ्गा प्रतिकूला च सोमनन्दा च विश्रुता॥ ७ ॥
करतोया वेत्रवती देविका वेणुका च या।
आत्रेयगङ्गा वैतरणी काश्मीरी ह्लादिनी च या॥ ८ ॥

प्लाविनी च शवित्रा सा कल्माषा संशिनी तथा।
वसिष्ठा च अपापा च सिन्धुवत्यारुणी तथा॥ ९ ॥
ताम्रा चैव त्रिसन्ध्या च तथा मन्दाकिनी परा।
तैलकाह्नी च पारा च दुन्दुभीर्नकुली तथा॥ १० ॥
नीलगन्धा च बोधा च पूर्णचन्द्रा शशिप्रभा।
अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करं तथा॥ ११ ॥
आषाढीं डिण्डिभारत्नं भारभूतं बलाकुलम्।
हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं मध्यं मध्यमकेश्वरम्॥ १२ ॥
श्रीपर्वतं समाख्यातं जलेश्वरमतः परम्।
आम्नातकेश्वरं चैव महाकालं तथैव च॥ १३ ॥
केदारमुत्तमं गुह्यं, महाभैरवमेव च।
गयां चैव कुरुक्षेत्रं गुह्यं कनखलं तथा॥ १४॥
विमलं चन्द्रहासं च माहेन्द्रं भीममष्टकम्।
वस्त्रापदं रुद्रकोटिमविमुक्तं महाबलम्॥ १५ ॥
गोकर्णं भद्रकर्णं च महेशस्थानमुत्तमम्।
छागलाह्वं द्विरण्डं च कर्कोटं मण्डलेश्वरम्॥ १६ ॥
कालञ्जरवनं चैव देवदारुवनं तथा।
शङ्कुकर्णं तथैवेह स्थलेश्वरमतः परम्॥ १७॥
एता नद्यश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः।
तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन्विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥ १८ ॥

इसके बाद उसी जल से भैरव देवता की मूर्ति को स्नान करावें और यजमान शिल्पीवर्ग को यथाशक्ति सम्मानित करें। तदुपरान्त गुरु बाहर निकलकर रुद्र बलि के लिए निम्न संकल्प यजमान से करावें—

देशकालौ संकीर्त्य, करिष्यमाण-भैरवदेवतास्नपनाङ्गभूतं सिद्धार्थ-घृतपायसैः रुद्राय बलिदानं करिष्ये।

इस प्रयोग से सर्वत्र रुद्र के लिए बलि यजमान देकर आचमन करके स्नान मण्डप में प्रवेश कर देवता के पास बैठें और निम्न मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य रुद्र के लिए यजमान से बलि प्रदान करावें—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ इति मन्त्रावृत्या रुद्राय एष सिद्धार्थ घृतपायसबलिर्नमः।

ततः— ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिद्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ १॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥ २॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ३॥ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ४॥ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषी॥ ५॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ७॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये॥ ८॥ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥ ९॥ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ १०॥ इति दशमन्त्रैर्दशदिक्षु भो इन्द्र प्राचीं रक्ष। भो आग्नेयीं रक्ष।

उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करके रक्षा करे और भैरव देवता की मूर्ति के आगे चार ब्राह्मण स्वस्तिवाचन करें।

तद्यथा—भो ब्राह्मणाः भैरवदेवार्चाशुद्धिस्नपननेत्रोन्मीलनकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ १॥

भो ब्राह्मणाः भैरवदेवार्चाशुद्धिस्नपननेत्रोन्मीलनकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ कल्याणाम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु॥ २॥

भो ब्राह्मणाः भैरवदेवार्चाशुद्धिस्नपननेत्रोन्मीलनकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ कर्मऋध्यताम्।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम।
दिवं पृथिव्या अध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥ ३॥

भो ब्राह्मणाः भैरवप्रतिष्ठाकर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। ते च—अस्मै भैरवदेवार्चाशुद्धिस्नपनाय नेत्रोन्मीलनकर्मणे च स्वस्ति इति वदेयुः।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ४॥

संकल्पः—ततः कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

आचार्य और सभी ब्राह्मणों का यजमान गन्ध, अक्षत से पूजन कर उन्हें दक्षिणा देकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करे।

तदुपरान्त निम्न ग्यारह मन्त्रों का क्रमानुसार उच्चारण करते हुए अलग-अलग गन्धोदक से भैरव देवता की मूर्ति को आचार्य स्नान करावें—

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति॥ इति मृत्तिकाकलशेन॥ १॥ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये

गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥ इति कषायोदकेन॥ २॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ गोमूत्रेण॥ ३॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ इति गोमयोदकेन॥ ४॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ इति भस्मोदकेन॥ ५॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ इति गन्धोदकेन॥ ६॥ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ इति गन्धोदकेन॥ ७॥ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ इति गन्धोदकेन॥ ८॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ इति गन्धोदकेन॥ ९॥ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ इति गन्धोदकेन॥ १०॥ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ इति गन्धोदकेन॥ ११॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके दूर्वा, अक्षत और अड़हुल के पुष्प द्वारा यजमान से पूजन करावें—

ॐ शतं वो ऽअम्ब धामानि सहस्त्रमुत वो रुहः।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे ऽअगदङ्कृत॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके श्वेत सूक्ष्म वस्त्र से भैरव देवता की मूर्ति का आच्छादन यजमान से करावें—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो॥ इति प्रथमवेदिनस्नपनम्॥

एवं संस्नाप्य ततः—ॐ ततो मध्यवेद्याम्—ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ०सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ १॥ स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्। देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु॥ २॥

इससे पूर्वाग्र बिछाये हुए कुश वाले (पीढ़े) पर भैरव देवता की मूर्ति को पूर्वाभिमुख रखकर स्वयं उत्तराभिमुख होकर रोली लिपटे हुए सूते से भैरव देवता की मूर्ति को लपेट कर उनके मुख में मधु और घृत लगी हुई सोने की शलाका से निम्न मन्त्र का उच्चारण करके नेत्रों को बनावें—**ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः॥**

उपरोक्त आधी ऋचा से नेत्रों को बनावें, उसी प्रकार शलाका (सलाई) से ऊपर एवं नीचे की पलकों को बनावें।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

पुनः नेत्र के मध्य में त्रिभाग में पुतली (तारा) भी बनावें, उस समय कोई भी सामने न रहे। तदुपरान्त सुवर्ण, पायस, भक्ष्य, भोज्य और दर्पण शीघ्र ही भैरव देवता की मूर्ति को दिखावें और शिल्पी लोहा से लिखें। इसके बाद गुरु मधु एवं घृत लपेटें, तदुपरान्त निम्न मन्त्र से और लौकिक मन्त्रों से अभ्युक्षण (प्रोक्षण) करें—**ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥**

आचार्य पुनः स्थापित ग्यारह कलशों के जल से पूर्व की भाँति निम्न मन्त्रों का उच्चारण करके भैरव देवतादेव की मूर्ति को स्नान करावें—**ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति। इति मृत्तिकाकलशेन॥ १॥ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥ इति कषायोदकेन॥ २॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ गोमूत्रेण॥ ३॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप**

ह्वये श्रियम् ॥ इति गोमयोदकेन ॥ ४ ॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ इति भस्मोदकेन ॥ ५ ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ इति गन्धोदकेन ॥ ६ ॥ ॐ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ इति गन्धोदकेन ॥ ७ ॥ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ इति गन्धोदकेन ॥ ८ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी । तया नस्तन्त्वा शन्तमया गिरिशन् ताभिचाकशीहि ॥ इति गन्धोदकेन ॥ ९ ॥ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ इति गन्धोदकेन ॥ १० ॥ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ इति गन्धोदकेन ॥ ११ ॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके दूर्वा, अक्षत और सुगन्धित पुष्प के द्वारा भैरव देवता की पूजा यजमान से करावें—

ॐ शतं वो ऽअम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः ।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे ऽअगदङ्कृत ॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से वस्त्र के द्वारा भैरव देवता की मूर्ति का आच्छादन करावें—

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो ॥

तदुपरान्त सुवर्ण शलाका आदि को मूर्ति निर्माण करनेवाले शिल्पी को या उसके न रहने पर आचार्य को ही दे देना चाहिए। यजमान निम्न संकल्प करके गोनिष्क्रयद्रव्य आचार्य को देवें—**इदं सहिरण्यं गोनिष्क्रयद्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।** अन्य ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें। **इति द्वितीयवेदिस्नपनम् ॥**

आचार्य और ब्राह्मण गुरु उत्तर वेदी पर पूर्व की ओर भैरव देवता की मूर्ति को स्नान कराकर निम्न मन्त्र द्वारा आद्य पंक्ति में स्थापित कलश के द्वारा स्नान करावें—**ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा। अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहाऽशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा।**

निम्न मन्त्र का उच्चारण करके दूर्वा और अक्षत भैरव देवता की मूर्ति के मस्तक पर लगावें—

ॐ शतं वो ऽअम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे ऽअगदङ्कृत॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमानं से प्रणाम करावें—

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जयदाय नमो नमः॥ १ ॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः।
नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः॥ २ ॥
नमः कङ्कालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते।
नमः त्र्यम्बकरूपाय महाकालाय ते नमः॥ ३ ॥
नमः संसारसाराय सारदाय नमो नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ ४ ॥
नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः।
क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः॥ ५ ॥
नमो नागविनाशाय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातङ्गरूपाय भाररूप नमोऽस्तु ते॥ ६ ॥
नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने॥ ७ ॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमः सङ्कटनाशाय शङ्कराय नमो नमः॥ ८ ॥

आचार्य भैरव देवता की मूर्ति के दायें हाथ में प्रतिमा के बित्ते के बराबर ऊन के सूत को निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से बँधवायें—

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म ऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

आचार्य शेष बचे हुए पहली पंक्ति में स्थित चार कलशों के शुद्धोदक जल से निम्न चार मन्त्रों का उच्चारण करके भैरव देवता की मूर्ति को स्नान करावें—

ॐ इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत्। यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु॥ इति शुद्धोदकेन॥ १॥ आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्वर्ठ० सुरभा उ लोके। तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत्॥ इति शुद्धोदकेन॥ २॥ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ इति शुद्धोदकेन॥ ३॥ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः॥ इति शुद्धोदकेन॥ ४॥

ततो द्वितीयपङ्क्तिस्थविंशतिकलशैः क्रमेण—ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति॥ इति मृत्तिकाकलशेन॥ १॥ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥ इति शुद्धोदकेन॥ २॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ इति गोमयेन॥ ३॥ देवीरापो अपांनपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा॥ इति शुद्धोदकेन॥ ४॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ इति गोमूत्रेण॥ ५॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ इति शुद्धोदकेन॥ ६॥ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।

सर्ठ०सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान्पुनरासदः॥ इति भस्मोदकेन॥ ७॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः॥ इति शुद्धोदकेन॥ ८॥ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ इति पञ्चगव्येन॥ ९॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ इति शुद्धोदकेन॥ १०॥ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ इति क्षीरजलेन॥ ११॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ इति शुद्धोदकेन॥ १२॥ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूर्ठ०षि तारिषत्॥ इति दधिजलेन॥ १३॥ युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्वाय सविता धियः। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत्॥ इति शुद्धोदकेन॥ १४॥ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥ इति घृतेन॥ १५॥ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ इति शुद्धोदकेन॥ १६॥ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ०रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ इति मधुना॥ १७॥ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वर्ठ०हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि॥ इति शुद्धोदकेन॥ १८॥ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ इति शर्करया॥ १९॥ आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानार्ठ० समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ इति शुद्धोदकेन॥ २०॥

निम्न मन्त्र का उच्चारण करके भैरव देवता की मूर्ति को वस्त्र से पोछकर सुगन्धित तेल लगावें—

ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे।
प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥

निम्न मन्त्र से यव, चावल, गेहूँ, मसूर और आँवला के चूर्ण का उबटन भैरव देवता की मूर्ति को लगावें—

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥

निम्न मन्त्र से यक्षकर्दम और जटामासी के द्वारा भैरव देवता की मूर्ति का अनुलेपन करें—

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

ततस्तृतीयपङ्क्तिस्थकलशद्वयेन—ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा त्तो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १॥ प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेश्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥ २॥

चतुर्थपङ्क्तिस्थैः षड्भिः क्रमेण—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ इति पञ्चामृतेन॥ १॥ उरुर्ठ०हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ। अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित्। नमो वरुणायाधिष्ठितो वरुणस्य पाशः॥ २॥ सं ते पयार्ठ०सि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्या न्यभितातिषाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवार्ठ० स्युत्तमानि धिष्व॥ इति शुद्धोदकेन॥ ३॥ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरर्ठ० शुभिः। भवा नः सप्रथस्तमः सखा वृधे॥ इति शुद्धोदकेन॥ ४॥

अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सन् जायसे पुनः॥ इति शुद्धोदकेन॥ ५॥ अपार्ठ० रसमुद्वयसर्ठ०सूर्ये सन्तर्ठ० समाहितम्। अपार्ठ० रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥ इति शुद्धोदकेन॥ ६॥

पञ्चमपङ्क्तिस्थैश्चतुर्दशभिः क्रमेण—ॐ गन्धद्वारां दुराघर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ इति गन्धोदकेन॥ १॥ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥ इति कपायोदकेन॥ २॥ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु वभ्रूणामहर्ठ०शतं धामानि सप्त च॥ इति सर्वौषधिजलेन॥ ३॥ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥ इति पुष्पोदकेन॥ ४॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ इति शान्त्युदकेन॥ ५॥ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥ इति फलोदकेन॥ ६॥ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ इति सुवर्णोदकेन॥ ७॥ हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ२ आ विवासति। हविष्मान्देवो अध्वरो हविष्माँ२॥ अस्तु सूर्यः॥ इति गोशृङ्गोदकेन॥ ८॥ ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिनाचक्षुषे त्वामहीनां पयोऽसि॥ इति सप्तधान्योदकेन॥ ९॥ अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य। दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चोधा यज्ञ वाहसि॥ इति सहस्रछिद्रकलशेन॥ १०॥ या ओपधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवीमनु।

बृहस्पतिप्रसूता अस्यै संदत्त वीर्यम् ॥ इति पुनः सर्वौषधिकलशेन ॥ ११ ॥ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ इति पञ्चपल्लवोदकेन ॥ १२ ॥ अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्रीधन्व योजना सप्त सिन्धून्। हिरण्याक्षः सविता देव आगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ॥ इति नवरत्नोदकेन ॥ १३ ॥ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचके ॥ इति तीर्थोदकजलेन ॥ १४ ॥

आचार्य वेदी के चारो ओर स्थित समुद्र संज्ञक आठ कलशों के जल से भैरव देवता की मूर्ति को निम्न आठ मन्त्रों का क्रमानुसार उच्चारण करके स्नान करावें—ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयाऽवृता ॥ इति क्षारोदधिकलशेन ॥ १ ॥ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे ॥ इति क्षीरोदधिकलशेन ॥ २ ॥ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत् ॥ इति दध्युदधिकलशेन ॥ ३ ॥ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥ इति घृतोदधिकलशेन ॥ ४ ॥ पयः पृथिव्यां पयः ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ इति इक्षुरसोदकेन ॥ ५ ॥ देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णम्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र ते सदः। ईशायै मन्युꣳ राजानं बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥ इति सुरोदधिकलशेन ॥ ६ ॥ स्वादिष्ठया मर्दिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः ॥ इति स्वादूदधिकलशस्थितजलेन ॥ ७ ॥ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपाꣳरसेनवरुणो न साम्नेन्द्रꣳ श्रियै जनयन्नप्सु राजा ॥ इति गर्भोदधिजलेन ॥ ८ ॥

अथ षष्ठपङ्क्तिस्थैर्दशभिः क्रमेण स्नापयेत्—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवेसुहवꣳ शूरमिन्द्रम्।ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ

स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।। इति कदम्बजलेन ।। १ ।। त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते ।।इति शाल्मलिजलेन ।। २ ।।यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। इति जम्बूजलेन ।। ३ ।। असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।। इति अशोकजलेन ।। ४ ।। तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०समानआयुः प्रमोषीः ।।इतिप्लक्षजलेन ।। ५ ।।आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।इति चूतजलेन ।। ६ ।।वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमहि ।। इति वटजलेन ।। ७ ।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये।। इति बिल्वजलेन ।। ८ ।। नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। इति नागवल्लीजलेन ।। ९ ।। ब्रह्म जज्ञानं प्रधमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ।। इति पलाशजलेन ।। १० ।।

आचार्य सातवीं पंक्ति में स्थित चार अथवा एक कलश के जल से निम्न मन्त्र का उच्चारण करके भैरव देवता की मूर्ति को स्नान करावें—

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो ऽअपरीतास ऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।

आचार्य सूक्ष्म वस्त्र से भैरव देवता की मूर्ति को यजमान से पोछवाकर रुद्र सूक्त का उच्चारण करने के उपरान्त निम्न मन्त्र का उच्चारण कर तीर्थोदक के द्वारा भैरव देवता की मूर्ति को स्नान करवाके श्वेत वस्त्र से पोंछे—

ॐ इमं मे वरुणा श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

आचार्य निम्न मन्त्र से अंगन्यास करके भैरव देवता का आवाहन यजमान से करावें—ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः। इति मन्त्रेण सकलीकृत्यदेवमावाहयेत्—

आवाहनम्—ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाठं० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ भैरवाय नमः, आवाहनं करोमि। आसनम्—ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ भैरवाय नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। पाद्यम्—ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिठं०सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ भैरवाय नमः, पादयो पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यम्—ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मठं० सुमना असत्॥ ॐ भैरवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं जलं समर्पयामि। मधुपर्कम्—ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमठं० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नद्येनपरमो मधव्योऽन्नादोऽसानि॥ ॐ भैरवाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानम्—ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनठं० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषाठं० हेड ईमहे॥ ॐ भैरवाय नमः, स्नानं समर्पयामि। पंचामृतस्नानम्—ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे ऽभवत्सरित्॥ ॐ भैरवाय नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि। पंचामृतस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। सुगन्धिद्रव्यम्—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥ ॐ भैरवाय नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। सुगन्धिद्रव्यस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। शुद्धोकस्नानम्—ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रोद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥ ॐ भैरवाय नमः,

शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। वस्त्रमुपवस्त्रम्—ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ भैरवाय नमः, वस्त्रमुपवस्त्रं समर्पयामि। यज्ञोपवीतम्—ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ भैरवाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। गन्धम्—ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ॐ भैरवाय नमः, गन्धं समर्पयामि। भस्मम्—ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। सꣳ सृज्यमातृभिष्ट्वञ्ज्योतिष्मान्पुनरासदः॥ ॐ भैरवाय नमः, भस्मं समर्पयामि। अक्षतान्—ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत्। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥ ॐ भैरवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालाम्—ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः॥ ॐ भैरवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। दूर्वाम्—ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥ ॐ भैरवाय नमः, दूर्वां समर्पयामि। तुलसीदलम्—ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधेपद्म। समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा॥ ॐ भैरवाय नमः, तुलसीदलं समर्पयामि। नानापरिमलद्रव्यम्—ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳसं परि पातु विश्वतः॥ ॐ भैरवाय नमः, नानापरिमलद्रव्यं समर्पयामि। धूपम्—ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ॐ भैरवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि। दीपम्—ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥ ॐ भैरवाय नमः, दीपं दर्शयामि। नैवेद्यम्—ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां

मुखा शिवो नः सुमना भव॥ ॐ भैरवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। फलानि—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥ ॐ भैरवाय नमः, फलानि समर्पयामि। ताम्बूलम्—ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यां तव धन्वने॥ ॐ भैरवाय नमः, ताम्बूलपत्रं पुङ्गफलं च समर्पयामि। दक्षिणाः—ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ ॐ भैरवाय नमः, दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि। नीराजनम्—ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतो अस्म्मासु धत्त। ॐ भैरवाय नमः, नीराजनं समर्पयामि। पुष्पाञ्जलिम्—ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ ॐ भैरवाय नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणाम्—ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ भैरवाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

स्नानवस्त्र, नैवेद्यादि और सभी वस्तुएँ भैरव देवता की मूर्ति बनानेवाले शिल्पी को यजमान देवे। इसके उपरान्त ही आचार्य रथयात्रा कर्म को करावें।

शय्यायामर्चाधिवासः

आचार्य और ब्राह्मण स्नान मण्डप में स्थित भैरव देवता की प्रार्थना निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से करावें—

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जयदाय नमो नमः॥ १ ॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः।
नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः॥ २ ॥

नमः कङ्कालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते।
नमः त्र्यम्बकरूपाय महाकालाय ते नमः॥ ३ ॥
नमः संसारसाराय सारदाय नमो नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ ४ ॥
नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः।
क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः॥ ५ ॥
नमो नागविनाशाय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातङ्गरूपाय भाररूप नमोऽस्तु ते॥ ६ ॥
नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने॥ ७ ॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमः सङ्कटनाशाय शङ्कराय नमो नमः॥ ८ ॥
नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः।
नमोऽनन्तस्वरूपाय एकरूप नमोऽस्तुते॥ ९ ॥

भैरव देवता को निद्रा से जगाने के लिए निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भो! देव! त्यज निद्रां जगत्पते।
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत्॥

आचार्य निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करते हुए भैरव देवता की मूर्ति को यजमान से उठवायें—

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥ १॥
आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद् दुन्दुभिर्वावदीति।
समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु॥ २॥

आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए भैरव देवता की मूर्ति को उठवाकर रथ के ऊपर यजमान से रखवायें--

ॐ रथे तिष्ठन्नयति वाजि नः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायतमनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः॥

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानार्ठ० रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानार्ठ० सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणर्ठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥
तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथे षु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ७॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११॥
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ १२॥

इति भद्रसूक्तेन मङ्गलतूर्यघोषेण च सह मण्डप-प्रासाद-ग्रामप्रादक्षिण्येन आनीय प्रतिष्ठामण्डपपश्चिमद्वारे रथादवतार्य तेनैव द्वारेण—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

मण्डप में प्रवेश करने के बाद वेदी के पश्चिम भाग में भद्रपीठ पर प्राङ्मुख भैरवजी की मूर्ति को रखकर व स्वयं उत्तराभिमुख हो यजमान अपनी शाखा से मधुपर्क करें। आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके मधुपर्क निवेदित करावें—

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

यजमान के दायें हाथ में जल, अक्षत, पुष्प व द्रव्य रखवाकर आचार्य निम्न संकल्प करावे—**देशकालौ स्मृत्वा, सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणि अर्चाधिवासनं करिष्ये।**

आचार्य वेदी पर कुशों को बिछाकर उसके ऊपर पूर्व अथवा दक्षिण शिरवाली शय्या को स्थापित करके देवलिंगक मन्त्र से ही रखवायें।

भैरव देवता देवता के लिंगक मन्त्र से उनको शय्या पर यजमान से रखवाकर तथा स्थापित करवाकर उन्हें शयन करावें पुनः तीन वस्त्रों से भैरव देवता की मूर्ति को आच्छादित करवाके, उनके सिर की ओर पृथ्वी पर खण्डखाद्य से युक्त सुवर्ण के साथ निद्राकलश की आचार्य निम्न मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करवावें—

ॐ अपो देवी रुपसृजमधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः।
तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से शहद और घृत को एक में मिलवाकर भैरव देवता की मूर्ति के सभी अंगों में लगवायें—

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से तेल और सरसों के उबटन से भैरव देवता की मूर्ति को लेपित करवाकर गन्धादि से पूजा करावें— **ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्त्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके भैरव देवता की मूर्ति को यजमान से परिसर प्रदान करावें—**ॐ बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहा-मित्राँअपबाधमानः। प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से भैरव देवता की मूर्ति के पैर, नाभि, वक्षःस्थल और सिर का स्पर्श करावें—**ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥** प्रत्येक आलम्भन (स्पर्श) के समय आचार्य को उपरोक्त मन्त्र की आवृत्ति करनी चाहिए।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से भैरव देवता की मूर्ति के दाहिनी ओर बगल में छत्र रखवायें—**ॐ बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहा-मित्राँअपबाधमानः। प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से भैरव देवता की मूर्ति के बायीं ओर पंखा और चामर रखवायें—**ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविर्ठ० शतिः। अग्रेऽश्वमयुञ्जस्ते अस्मिञ्जवमादधुः॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से भैरव देवता की मूर्ति के चरण के पास पादुका रखवायें—**ॐ त्रिणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से भैरव देवता की मूर्ति के दायीं और बायीं ओर दो शान्ति-कलश रखवायें—**ॐ आजिघ्र कलशं**

मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से भैरव देवता की मूर्ति के सम्मुख पात्र, आसन, दर्पण, घण्टा, भक्ष्य-भोज्य-पदार्थ और जलपात्र, भोजनपात्र, वस्त्र, भूपणादिक, ताम्बूल आदि सामग्रियों को रखवा दें—**ॐ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाः इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥**

तदुपरान्त आचार्य भस्म, दर्भ और तिलों से भैरव देवता की मूर्ति के चारो ओर रक्षा के लिए तीन घेरा ईशानकोण से आरम्भ करवाके ईशानकोण तक यजमान से बनवायें।

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) भैरवदेवार्चाधिवासनाङ्गभूतमिन्द्रादिदशलोकपालेभ्यः भूतेभ्यश्च बलिदानमहं करिष्ये।

आचार्य मण्डप के बाहर निकलकर निम्न मन्त्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए गन्धादि के द्वारा पञ्चोपचार से इन्द्रादि की पूजा यजमान से करावें—**ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिद्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ १॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते॥ २॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। धर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ३॥ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ४॥ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न आयुः प्रमोषी॥ ५॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥ वयꣳ सोम व्रते तव**

मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ७ ॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये ॥ ८ ॥ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ२ ॥ अवन्तु देवाः ॥ ९ ॥ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ १० ॥

उपरोक्त दस मन्त्रों की पुनः आवृत्ति करके आचार्य उड़द और भात की बलि यजमान से प्रदान करावें । तदुपरान्त आचार्य—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

इस मन्त्र का उच्चारण करके तथा मन्त्र की समाप्ति के पश्चात् यजमान से '**ॐ भूतेभ्यो बलिरयमुपतिष्ठतु**' इस वाक्य का उच्चारण करवाके सभी भूतों को बलि प्रदान करावें । तत्पश्चात् यजमान से आचमन करवाकर निम्न वाक्य का उच्चारण करवाके सभी दिशाओं में बलि प्रदान करावें—**ॐ नमः पूर्वादिग् वासिभ्योदिक्पति-दिग्भूताधिपति-दिग्गणपति-दिग्-रुद्रदिङ्मातृदिक्-क्षेत्रपालेभ्यो नमः** । बलि प्रदान के पश्चात् ही आचार्य इस उहित मन्त्र '**ॐ पराय भैरवात्मने स्वाहा**' से भैरव देवता के लिए एक हजार आठ अथवा एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ बार तिल या यव से कुण्ड में हवन करावें ।

भैरवप्रतिष्ठायां विहितन्यासाः

इसके बाद वेदी पर उत्तराभिमुख अथवा पूर्वाभिमुख भैरव देवता की मूर्ति के सम्मुख होकर देशकाल काल संकीर्त्यन (नाम लेकर) निम्न संकल्प करें—

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् सप्रासादभैरवदेवार्चाधिवासनकर्मणि देवकलासान्निध्यार्थं प्रणवादिन्यासान् करिष्ये ।

इस प्रकार संकल्प करके हाथों में लाल पुष्प लेकर निम्न क्रम से न्यास करें—

प्रणवन्यासः

१. ॐ अं नमः पादयोर्न्यसामि। २. ॐ उं नमः हृदये न्यसामि। ३. ॐ मं नमः ललाटे न्यसामि।

व्याहृतिन्यासः

१. ॐ भूः नमः पादयोः न्यसामि। २. ॐ भुवः नमः हृदये न्यसामि। ३. ॐ स्वः नमः ललाटे न्यसामि।

मातृकान्यासः

१. ॐ अं नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ आं नमः मुखे न्यसामि। ३. ॐ इं नम : दक्षिणनेत्रे न्यसामि। ४. ॐ ईं नमः वामनेत्रे न्यसामि। ५. ॐ उं नमः दक्षिणश्रवणे न्यसामि। ६. ॐ ऊं नमः वामश्रवणे न्यसामि। ७. ॐ ऋं नमः दक्षिणगण्डे न्यसामि। ८. ॐ ऋं वामगण्डे न्यसामि। ९. ॐ लृं नमः दक्षिणनासापुटे न्यसामि। १०. ॐ लृं नमः वामनासापुटे न्यसामि। ११. ॐ एं नमः ऊर्ध्वदंशनेषु न्यसामि। १२. ॐ ऐं अधोदशनेषु न्यसामि। १३. ॐ ओं नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यसामि। १४. औं नमः अधोरोष्ठे न्यसामि। १५. ॐ अं नमः ललाटे न्यसामि। १६. ॐ अः नमः जिह्वायां न्यसामि। १७. ॐ यं नमः त्वचि न्यसामि। १८. ॐ रं नमः चक्षुषोर्न्यसामि। १९. ॐ लं नमः नासिकायां न्यसामि। २०. ॐ वं नमः दशनेषु न्यसामि। २१. ॐ शं नमः श्रोत्रयोर्न्यसामि। २२. ॐ षं नमः उदरे न्यसामि। २३. ॐ सं नमः कटिदेशे न्यसामि। २४. ॐ हं नमः हृदये न्यसामि। २५. ॐ क्षं नमः नाभौ न्यसामि। २६. ॐ लं लिङ्गे न्यसामि। २७. ॐ पं फं बं भं मं दक्षिणबाहौ न्यसामि। २८. ॐ तं थं दं धं नं वामबाहौ न्यसामि। २९. ॐ टं ठं डं ढं णं दक्षिणजङ्घायां न्यसामि। ३०. ॐ चं छं जं झं ञं वामजङ्घायां न्यसामि। ३१. ॐ कं खं गं घं ङंसर्वाङ्गुलिषु न्यसामि।

ऋक्षन्यासः

१. ॐ रविचन्द्राभ्यां नमः नेत्रे न्यसामि। २. ॐ भौमाय नमः हृदये न्यसामि। ३. ॐ बुधाय नमः स्कन्धे न्यसामि। ४. ॐ बृहस्पतये नमः

जिह्वायां न्यसामि। ५. ॐ शुक्राय नमः लिङ्गे न्यसामि। ६. ॐ शनैश्चराय नमः ललाटे न्यसामि। ७. ॐ राहवे नमः पादयोर्न्यसामि। ८. ॐ केतुभ्यो नमः केशेषु न्यसामि। ९. ॐ रोहिणोभ्यो नमः हृदये न्यसामि। १०. ॐ मृगशिरसे नमः शिरसि न्यसामि। ११. ॐ आर्द्रायै नमः केशेषु न्यसामि। १२. पुनर्वसुभ्यां नमः ललाटे न्यसामि। १३. ॐ पुष्याय नमः मुखे न्यसामि। १४. ॐ आश्लेषाभ्यो नमः नासिकायां न्यसामि। १५. ॐ मघाभ्यो नमः दन्तेषु न्यसामि। १६. ॐ पूर्वाफाल्गुनोभ्यो नमः दक्षिणश्रवणे न्यसामि। १७. ॐ उत्तराफाल्गुनीभ्यो नमः वामश्रवणे न्यसामि। १८. ॐ हस्ताय नमः हस्तयो न्यसामि। १९. ॐ चित्रायै नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। २०. ॐ स्वात्यै नमः वामभुजे न्यसामि। २१. ॐ विशाखाभ्यां नमः हृदि न्यसामि। २२. ॐ अनुराधाभ्यो नमः स्तनयो न्यसामि। २३. जेष्ठाभ्यो नमः दक्षिणकुक्षौ न्यसामि। २४. ॐ मूलाय नमः वामकुक्षौ न्यसामि। २५. ॐ पूर्वाषाढाभ्यो नमः कटिपार्श्वे न्यसामि। २६. ॐ उत्तराषाढाभ्यो नमः लिङ्गे न्यसामि। २७. ॐ श्रवणधनिष्ठाभ्यो नमः वृषणयो न्यसामि। २८. ॐ शतभिषाभ्यो नमः नेत्रे न्यसामि। २९. ॐ पूर्वाभाद्रपदाभ्यो नमः दक्षिणोरौ न्यसामि। ३०. ॐ उत्तराभाद्रपदाभ्यो नमः वामोरौ न्यसामि। ३१. ॐ रेवतीभ्यो दक्षिणजङ्घाया न्यसामि। ३२. ॐ अश्विनीभ्यां नमः वामजङ्घाया न्यसामि। ३३. ॐ भरणीभ्यो नमः दक्षिणपादे न्यसामि। ३४. ॐ कृत्तिकाभ्यो नमः वामपादे न्यसामि। ३५. ॐ ध्रुवाय नमः नाभ्यां न्यसामि। ३६. ॐ सप्तर्षिभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि। ३७. ॐ मातृमण्डलाय नमः कटिदेशे न्यसामि। ३८. ॐ विष्णुपदेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। ३९. ॐ नागवीथ्यै नमः, ॐ अङ्गवीथ्यै नमः, वनमालादेशे न्यसामि। ४०. ॐ ताराभ्यो नमः रोमकूपेषू न्यसामि। ४१. ॐ अगस्त्याय नमः कौस्तुभदेशे न्यसामि।

कालन्यासः

१. ॐ चैत्राय नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ वैशाखाय नमः मुखे न्यसामि। ३. ॐ ज्यैष्ठ्याय नमः हृदये न्यसामि। ४. ॐ आषाढाय नमः दक्षिणस्तने न्यसामि। ५. ॐ श्रवणाय नमः वामस्तने न्यसामि। ६. ॐ भाद्रपदाय नमः उदरे न्यसमि। ७. ॐ आश्विनाय नमः कट्यां न्यसामि। ८. ॐ कार्तिकाय नमः दक्षिणोरौ न्यसामि। ९. ॐ मार्गशीर्षाय नमः वामोरौ न्यसामि। १०. ॐ पौषाय नमः दक्षिणजङ्घायां न्यसामि। ११. ॐ माघाय नमः वामजङ्घायां न्यसामि। १२. ॐ फाल्गुनाय नमः पादयो न्यसामि। १३. ॐ सम्वत्सराय नमः दक्षिणोर्ध्वबाहौ न्यसामि। १४. ॐ परिवत्वसराय नमः दक्षिणाधोबाहौ न्यसामि। १५. ॐ इद्वत्सराय नमः वामोधोबाहौ न्यसामि। १६. ॐ अनुवत्सराय नमः वामोर्ध्वबाहौ न्यसामि। १७. ॐ पर्वतेभ्यो नमः सन्धिषु न्यसामि। १८. ॐ ऋतुभ्यो नमः लिङ्गे न्यसामि। १९. ॐ अहोरात्रेभ्यो नमः अस्थिुष न्यसामि। २०. ॐ क्षणाय नमः, ॐ लवाय नमः, ॐ कामायै नमः, ॐ काष्ठायै नमः रोमसु न्यसामि। २१. ॐ कृतयुगाय नमः मुखे न्यसामि। २२. ॐ त्रेतायुगाय नमः हृदये न्यसामि। २३. ॐ द्वापराय नमः नितम्बे न्यसामि। २४. ॐ कलियुगाय नमः पादयो न्यसामि। २५. ॐ चतुर्दशमन्वन्तरेभ्यो नमः बाह्वो न्यसामि। २६. ॐ पराय नमः, ॐ पराद्धाय नमः, ॐ जङ्घयो न्यसामि। २७. ॐ महाकलपाय नमः शरीरे न्यसामि। २८. ॐ उदगयनाय नमः, ॐ दक्षिणाय नमः पादयो न्यसामि। २९. ॐ विषुवद्भ्यो नमः सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि।

वर्णन्यासः

१. ॐ ब्राह्मणाय नमः मुखे न्यसामि। २. ॐ क्षत्रियाय नमः बाह्वो न्यसामि। ३. ॐ वैश्याय नमः ऊर्वो न्यसामि। ४. ॐ शूद्राय नमः पादयो न्यसामि। ५. शङ्करजेभ्यो नमः पादाग्रे न्यसामि। ६. ॐ अनुलोमजेभ्यो नमः सर्वाङ्गसन्धिषु न्यसामि। ७. ॐ गोभ्यो नमः मुखे न्यसामि। ८. ॐ अजाभ्यो नमः, ॐ आविकाभ्यो नमः हस्तयो न्यसामि। ९. ॐ ग्रामपशुभ्यो नमः, आरण्यपशुभ्यो नमः ऊ ः न्यसामि।

तोयन्यासः

१. ॐ मेघेभ्यो नमः केशेषु न्यसामि। २. ॐ अभ्रेभ्यो नमः रोमसु न्यसामि। ३. ॐ नदीभ्यो नमः सर्वगात्रेषु न्यसामि। ४. ॐ समुद्रेभ्यो नमः कुक्षिदेशे न्यसामि।

वेदन्यासः

१. ॐ ऋग्वेदाय नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ यजुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। ३. ॐ सामवेदाय नमः वामभुजे न्यसामि। ४. ॐ सर्वोपनिषद्भ्यो नमः हृदये न्यसामि। ५. ॐ इतिहासपुराणेभ्यो नमः जङ्घयो न्यसामि। ६. ॐ अर्थर्वाङ्गिरसेभ्यो नमः नाभौ न्यसामि। ७. ॐ कल्पसूत्रेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। ८. ॐ व्याकरणेभ्यो नमः वक्त्रे न्यसामि। ९. ॐ तर्केभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि। १०. ॐ मीमांसायै नमः, ॐ निरुक्ताय नमः हृदये न्यसामि। ११. ॐ छन्दःशास्त्रेभ्यो नमः, ॐ ज्योतिःशास्त्रेभ्यो नमः नेत्रे न्यसामि। १२. ॐ गीताशास्त्रेभ्यो नमः, ॐ भूतशास्त्रेभ्यो नमः श्रोत्रयो न्यसामि। १३. ॐ आयुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। १४. ॐ धननुर्वेदाय नमः वामभुजे न्यसामि। १५. ॐ योगशास्त्रेभ्यो नमः हृदये न्यसामि। १६. ॐ नीतिशास्त्रेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। १७. ॐ वश्यतन्त्राय नमः ओष्ठयो न्यसामि।

वैराजन्यासः

१. ॐ दिवे नमः मूर्ध्नि न्यसामि। २. ॐ सूर्यलोकाय नमः, चन्द्रालोकाय नमः नेत्रयो न्यसामि। ३. ॐ वायुलोकाय नमः घ्राणे न्यसामि। ४. ॐ व्योम्ने नमः नाभौ न्यसामि। ५. ॐ समुद्रेभ्यो नमः वस्तिदेशे न्यसामि ६. ॐ पृथिव्यै नमः पादयो न्यसामि।

मूर्तिन्यासः

१. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ कृष्णाय नमः केशेषु न्यसामि। ३. ॐ रुद्राय नमः ललाटे न्यसामि। ४. ॐ यमाय

नमः भ्रुवो न्यसामि। ५. ॐ अश्विभ्यां नमः कर्णयो न्यसामि। ६. ॐ वैश्वानराय नमः मुखे न्यसामि। ७. ॐ मरुद्भ्यो नमः घ्राणं न्यसामि। ८. ॐ वसुभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि। ९. ॐ रुद्रेभ्यो नमः दन्तेषु न्यसामि। १०. ॐ सरस्वत्यै नमः जिह्वायां न्यसामि। ११. ॐ इन्द्राय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। १२. ॐ वलये नमः वामभुजे न्यसामि। १३. ॐ प्रह्लादाय नमः दक्षिणस्तने न्यसामि। १४. ॐ विश्वकर्मणे नमः वामस्तने न्यसामि। १५. ॐ नारदाय नमः दक्षिणकुक्षौ न्यसामि। १६. ॐ अनन्तादिभ्यो वामकुक्षौ न्यसामि। १७. ॐ वरुणाय नमः हस्तयो न्यसामि। १८. ॐ मित्राय नमः पादयो न्यसामि। १९. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ऊर्वो न्यसामि। २०. ॐ पितृभ्यो नमः जान्वो न्यसामि। २१. ॐ यक्षेभ्यो नमः जङ्यो न्यसामि। २२. ॐ राक्षसेभ्यो नमः गुल्फयो न्यसामि। २३. ॐ पिशाचेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। २४. ॐ असुरेभ्यो नमः पादाङ्गुङ्गुलिषु न्यसामि। २५. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः पार्ष्ण्यो न्यसामि। २६. ॐ ग्रहेभ्यो नमः पादतलयो न्यसामि। २७. ॐ गुह्यकेभ्यो नमः गुह्ये न्यसामि। २८. ॐ पूतनादिभ्यो नमः नखेषु न्यसामि। २९. ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः ओष्ठयो न्यसामि। ३०. ॐ कार्तिकेताय नमः दक्षिणपार्श्वे न्यसामि। ३१. ॐ गणेशाय नमः वामपार्श्वे न्यसामि। ३२. ॐ मत्स्याय नमः मूर्ध्नि न्यसामि। ३३. ॐ कूर्माय नमः पादयो न्यसामि। ३४. ॐ नृसिंहाय नमः ललाटे न्यसामि। ३५. ॐ वराहाय नमः जङ्घयो न्यसामि। ३६. ॐ वामनाय नमः मुखे न्यसामि। ३७. ॐ परशुराम नमः हृदये न्यसामि। ३८. ॐ रामाय नमः वाहुषु न्यसामि। ३९. ॐ कृष्णाय नमः नाभ्यां न्यसामि। ४०. ॐ बुद्धाय नमः बुद्धौ न्यसामि। ४१. ॐ कलङ्किने नमः जानवोः न्यसामि। ४२. ॐ केशवाय नमः शिरसि न्यसामि। ४३. ॐ नारायणाय नम : मुखे न्यसामि। ४४. ॐ माधवाय नमः ग्रीवायां न्यसामि। ४५. ॐ गोविन्दाय नमः बाह्वोः न्यसामि। ४६. ॐ विष्णवे नमः

हृदये न्यसामि। ४७. ॐ मधुसूदनाय नमः पृष्ठे न्यसामि। ४८. ॐ त्रिविक्रमाय नमः कट्यां न्यसामि। ४९. ॐ वामनाय नमः जठरे न्यसामि। ५०. ॐ श्रीधरहृषीकेशाय नमः जङ्घयो न्यसामि। ५१. ॐ पद्मनाभाय नमः गुल्फयो न्यसामि। ५२. ॐ दामोदराय नमः पादयो न्यसामि।

क्रतुन्यासः

१. ॐ अश्वमेधाय नमः मूर्ध्नि न्यसामि। २. ॐ नरमेधाय नमः ललाटे न्यसामि। ३. ॐ राजसूयाय नमः मुखे न्यसामि। ४. ॐ गोसवाय नमः कण्ठे न्यसामि। ५. ॐ द्वादशाय नमः हृदि न्यसामि। ६. ॐ आधीनेभ्यो नमः नाभौ न्यसामि। ७. ॐ सर्वजितेभ्यो नमः दक्षिणकट्यां न्यसामि। ८. ॐ सर्वमेधाय नमः वामकट्यां न्यसामि। ९. ॐ अग्निष्टोमाय नमः लिङ्गे न्यसामि। १०. ॐ अतिराग्रय नमः वृषणयोः न्यसामि। ११. ॐ आप्तोर्यामाय नमः ऊर्वो न्यसामि। १२. ॐ षोडशिने नमः जान्वो न्यसामि १३. ॐ उक्त्थ्याय नमः दक्षिणजङ्घाया न्यसामि। १४. ॐ वाजपेयाय नमः वामजङ्घायां न्यसामि। १५. ॐ अत्यग्निष्टोमाय नमः दक्षिबाहौ न्यसामि। १६. ॐ चातुर्मास्याय नमः वामबाहौ न्यसामि। १७. ॐ सौत्रामणये नमः हस्तेषु न्यसामि। १८. ॐ पश्विष्टिभ्यो नमः अङ्गुलिषु न्यसामि। १९. ॐ दर्शपौर्णमासाभ्यां नमः नेत्रयो न्यसामि। २०. ॐ सर्वेष्टिभ्यो नमः रोमकूपेषु न्यसामि। २१. ॐ स्वाहाकाराय नमः, ॐ वषट्काराय नमः स्तनयो न्यसामि। २२. ॐ पञ्चमहायज्ञेभ्यो नमः पादाङ्गुलीषु न्यसामि। २३. ॐ आहवनीयाय नमः मुखे न्यसामि। २४. ॐ दक्षिणाग्नये नमः हृदये न्यसामि। २५. ॐ गार्हपत्याय नमः नाभौ न्यसामि। २६. ॐ वेद्यै नमः उदरे न्यसामि। २७. ॐ प्रवर्ग्याय नमः भूषणे न्यसामि। २८. ॐ सवनेभ्यो नमः पादयो न्यसामि। २९. ॐ एधोभ्यो नमः बाहुषु न्यसामि। ३०. ॐ दर्भेभ्यो नमः केशेषु न्यसामि।

गुणन्यासः

ॐ धर्माय नमः मूर्ध्नि न्य० ॥ १ ॥ ॐ ज्ञानाय नमः हृदि न्य० ॥ २ ॥ ॐ वैराग्याय नमः गुह्ये न्य० ॥ ३ ॥ ॐ ऐश्वर्याय नमः पादयोर्न्य० ॥ ४ ॥

भैरवायुधन्यासः

१. ॐ वज्राय नमः शिरसि न्यसामि। २. ॐ दण्डाय नमः मस्तके न्यसामि। ३. ॐ खड्गाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि। ४. ॐ पाशाय नमः वामभुजे न्यसामि। ५. ॐ ध्वजाय नमः नाभ्याम् न्यसामि। ६. ॐ अङ्कुशाय नमः लिङ्गे वृषणयोश्च न्यसामि। ७. ॐ त्रिशूलाय नमः जङ्घयोर्जान्वोश्च न्यसामि। ८. ॐ पद्माय नमः गुल्फपादयोः न्यसामि।

शक्तिन्यासः

ॐ वां वामायै नमः-ललाटे। ज्यें ज्येष्ठायै नमः-मुखे। रौं रौद्र्यै नमः-गुह्ये। ॐ क्नं काल्यै नमः-कण्ठे। ॐ कं कलविकरण्यै नमः-दन्तेषु। ॐ बं बलविकरण्यै नमः-हृदये। ॐ बं बलप्रमथिन्यै नमः-नाभौ। ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः-ऊदरे। ॐ मनोन्मन्यै नमः-सर्वाङ्गेषु।

विशिष्टन्यासाः

ऋष्यादिन्यासः—ॐ वृहदारण्यकऋषये नमः—शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः—मुखे। ॐ श्रीभैरवदेवतायै नमः—हृदये। ॐ कीलकाय नमः—नाभौ। ॐ त्रिनयनेति शक्तये नमः—पादयोः। ॐ अष्टबाहुमिति बीजाय नमः—गुह्ये। ॐ विनियोगाय नमः—सर्वांगे।

करन्यासः—ॐ ह्रां वां ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्—अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं वीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्—तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं वूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः—मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं वैं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो

रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः, सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं वौं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः॥ भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः। कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रः वः पंचवक्राय महादेवाय नमः॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

हृदयादिषडङ्गन्यासः—ॐ ह्रां वां ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्—हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं वीं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्—शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं वूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः—शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं वैं वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः, श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः—कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं वौं सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः—नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः वः पंचवक्राय महादेवाय नमः—अस्त्राय फट्।

देहन्यासः—ॐ ह्रीं भैरवाय नमः—मूर्ध्नि। ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः—ललाटे। ॐ ह्रीं भूताश्रयाय नमः—नेत्रयोः। ॐ ह्रीं भूतनायकाय नमः—कर्णयोः। ॐ ह्रीं त्रिशूलाय नमः—नासिकायाम्। ॐ ह्रीं रक्तपाय नमः—जिह्वायाम्। ॐ ह्रीं नागहारनागयज्ञोपवीतिकाय नमः—कंठे। ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः—करयोः। ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः—हृदये। ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय नमः—नाभौ। ॐ ह्रीं अबोधनाशनाय नमः—कट्याम्। ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः—ऊर्वोः। ॐ ह्रीं रक्तपायिने नमः—जंघयोः। ॐ ह्रीं देवदेवेशाय नमः—सर्वांगे।

करन्यासो द्वितीयः—ॐ ह्रीं भैरवाय नमः—अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः—तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रीं भूतश्रेष्ठाय नमः—

मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं भूतनायकाय नमः—अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं क्षत्रियाय नमः—कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः—करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय दिग्विदिशायाम्। ॐ ह्रीं भैरवाय नमः—सर्वांगे।

व्यापकन्यासः—ॐ ह्रीं भैरवाय नमः—शिरसि। ॐ ह्रीं भीमदर्शनाय नमः—ललाटे। ॐ ह्रीं भूतहननाय नमः—नेत्रयोः। ॐ ह्रीं सारमेयानुगाय नमः—भ्रुवोः। ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः—कर्णयोः। ॐ ह्रीं प्रेतवाहनाथाय नमः—कपोलयोः। ॐ ह्रीं भस्मांगाय नमः—नासापुटे। ॐ ह्रीं सर्पभूषणाय नमः—ओष्ठयोः। ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः—मुखे। ॐ ह्रीं शक्तिहस्ताय नमः—कण्ठे। ॐ ह्रीं दैत्यशमनाय नमः—स्कंधयोः। ॐ ह्रीं अतुलतेजसे नमः—बाह्वोः। ॐ ह्रीं कपालिने नमः—करयोः। ॐ ह्रीं ह्रीं मुण्डमालिने नमः—हृदये। ॐ ह्रीं शांताय नमः—वक्षःस्थले। ॐ ह्रीं कामचारिणे नमः—स्तनयोः। ॐ ह्रीं सदातुष्टाय नमः—उदरे। ॐ ह्रीं क्षेत्रेशाय नमः—पार्श्वयोः। ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नमः—पृष्ठे। ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः—नाभौ। ॐ ह्रीं पापौघनाशाय नमः—कट्याम्। ॐ ह्रीं कालभैरवाय नमः—लिङ्गे। ॐ ह्रीं रक्षाकराय नमः—गुदे। ॐ ह्रीं रक्तलोचनाय नमः—ऊर्वोः। ॐ ह्रीं घुर्घुराय नमः—जानुनि। ॐ ह्रीं रक्तपायिने नमः—जंघयोः। ॐ ह्रीं सिद्धपादुकाय नमः—गुल्फयोः। ॐ ह्रीं सुरेश्वराय नमः—पादपृष्ठे। ॐ ह्रीं आपदुद्धारकाय नमः—आपादतलमस्तकपर्यंतं न्यसेत्। ॐ ह्रीं क्ष्रौंः ब्लौं ह्रीं ॐ स्वाहा आपदुद्धारण-भैरवाय नमः। अनेन सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात्॥

दिङ्न्यासः—ॐ ह्रीं डमरूहस्ताय नमः—पूर्वे। ॐ ह्रीं दंडधारिणे नमः—दक्षिणे। ॐ ह्रीं खड्गहस्ताय नमः—पश्चिमे। ॐ ह्रीं घंटावादिने नमः—उत्तरे। ॐ ह्रीं अग्निवर्णाय नमः—अग्नये। ॐ ह्रीं दिगम्बराय

नमः—नैर्ऋत्ये। ॐ ह्रीं सर्वभूतस्थाय नमः—वायव्ये। ॐ ह्रीं अष्टसिद्धिदाय नमः—ऐशान्याम्। ॐ ह्रीं खेचारिणे नमः—ऊर्ध्वम्। ॐ ह्रीं रौद्ररूपिणे नमः—पाताले।

विलोमरूपेण करन्यास:—ॐ ह्रीं रुद्राय नमः—अंगुष्ठयो। ॐ ह्रीं शिखिसखाय नमः—तर्जन्याम्। ॐ ह्रीं शिवाय नमः—मध्यमायाम्। ॐ ह्रीं त्रिशूलिने नमः—अनामिकायाम्। ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः—कनिष्ठिकायाम्। ॐ ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः—करतलयोः। ॐ ह्रीं मांसाशिने नमः—कराग्रेषु। ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः—करपृष्ठयोः।

हृदयादिषडङ्गन्यास:—ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः—हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः—शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं आनन्दनाथाय नमः—शिखायै वषट्। ॐ ह्रीं सिद्धशाबरनाथाय नमः—कवचाय हुम्। ॐ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः—नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रीं श्री आनन्दनाथाय नमः—अस्त्राय फट्।

भैरवमन्त्रस्य न्यास:

विनियोग:—ॐ ये भूतानामित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, भैरवो देवता न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास:—ॐ परमेष्ठिप्रजपतिऋषये नमः शिरसि। ॐ आष्यनुप् छन्दसे नमः मुखे। ॐ भैरवाय नमः हृदि, ॐ न्यासाय नमः गुह्ये। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास:—ॐ ये भूतानामधिपतयो अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ विशिखासः तर्जनीभ्यां नमः, ॐ कपर्दिनः मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽव अनामिकाभ्यां नमः, ॐ धन्वानि कनिष्ठाकाभ्यां नमः, ॐ तन्मसि करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास:—ॐ ये भूतानामधिपतयो हृदयाय नमः, ॐ विशिखासः शिरसे स्वाहा, ॐ कपर्दिनः शिखायै वषट्, ॐ तेषाꣳ

सहस्त्रयोजनेऽव कवचाय हुम्, ॐ धन्वानि नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ तन्मसि शिरसि।

मन्त्रन्यासः—ॐ ये भूतानाम् ललाटे, ॐ अधिपतयो मुखे, ॐ विशिखासः हृदये, ॐ कपर्दिनः नाभौ, ॐ तेषाᳬ० ऊर्वोः, ॐ सहस्त्रयोजनेऽव जानुनोः, ॐ धन्वानि गुल्फयोः, ॐ तन्मसि पादयोः।

(कृता कृतम्)

पञ्चदशन्यासाः

प्रेतबीजन्यासः—ॐ हसहौं हृदयाय नमः। ॐ हसहौं शिरसे स्वाहा। ॐ हसहौं शिखायै वषट्। ॐ हसहौं कवचाय हुम्। ॐ हसहौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हसहौं अस्त्राय फट्।

सिंहबीजन्यासः—ॐ हसक्ष्‍ं नमः—शिरसि। ॐ हसक्ष्‍ं नमः—बाह्वोः। ॐ हसक्ष्‍ं नमः—लिङ्गे। ॐ हसक्ष्‍ं—नाभौ। ॐ हसक्ष्‍ं नमः—हस्ताङ्गुलीषु। ॐ हसक्ष्‍ं नमः—पादाङ्गुलीषु।

काणबीजन्यासः—ॐ इत्रौं नमः—ब्रह्मरंध्रे। ॐ इत्रौं नमः—मुखे। ॐ इत्रौं नमः—नेत्रद्वये। ॐ इत्रौं नमः—ग्रीवायाम्। ॐ इत्रौं नमः—नासापुटयोः। ॐ इत्रौं नमः—कपोलयोः। ॐ इत्रौं नमः—चिबुके। ॐ इत्रौं नमः—ब्रह्मरंध्रे।

सत्याबीजन्यासः—ॐ मलहों नमः—पादयोः। ॐ मलहों नमः—हस्तयोः। ॐ मलहों नमः—करयोः। ॐ मलहों नमः—नेत्रयोः। ॐ मलहों नमः—कर्णयोः। ॐ मलहों नमः—मुखे। ॐ मलहों नमः—कुक्षिद्वये। ॐ मलहों नमः—लिङ्गे।

महाबीजन्यासः—ॐ श्रूं नमः—चिबुके। ॐ श्रूं नमः—पादयोः। ॐ श्रूं नमः—कर्णयोः। ॐ श्रूं नमः—हृदये। ॐ श्रूं नमः—मुखे। ॐ श्रूं नमः—पादयोः। ॐ श्रूं नमः—नाभौः। ॐ श्रूं नमः—पादयोः।

प्राणबीजन्यासः—ॐ प्रूं नमः—हृदये। ॐ प्रूं नमः—सव्यकुक्षौ। ॐ प्रूं नमः—हृदये। ॐ प्रूं नमः—वामकुक्षौ। ॐ प्रूं नमः—हृदये। ॐ प्रूं नमः—दक्षपादतले। ॐ प्रूं नमः—हृदये। ॐ प्रूं नमः—वामपादतले। ॐ प्रूं नमः—हृदये।

घण्टाबीजन्यासः—ॐ घ्रूं नमः—गलघंटिकायाम्। ॐ घ्रूं नमः—नाभौ। ॐ घ्रूं नमः—घंटिकायाम्। ॐ घ्रूं नमः—हृदये।

ख्यातिबीजन्यासः—ॐ ख्यूं नमः—मस्तके। ॐ ख्यूं नमः—पादयोः। ॐ ख्यूं नमः—ग्रीवायाम्। ॐ ख्यूं नमः—नाभिमण्डले। ॐ ख्यूं नमः—कण्ठे। ॐ ख्यूं नमः—हृदये। ॐ ख्यूं नमः—जंघयोः। ॐ ख्यूं नमः—नेत्रयोः। ॐ ख्यूं नमः—कर्णयोः। ॐ ख्यूं नमः—बाह्वोः। ॐ ख्यूं नमः—स्तनयोः।

मूलबीजन्यासः—ॐ ॐ नमः—हृदये। ॐ ॐ नमः—मुखे। ॐ ॐ नमः—पादयोः। ॐ ॐ नमः—हस्तयोः। ॐ ॐ नमः—कर्णयोः। ॐ ॐ नमः—नासापुटयोः।

भ्रामरीबीजन्यासः—ॐ भरलसहीं नमः—मुखे। ॐ भरलसहीं नमः—नेत्रद्वयोः। ॐ भरलसहीं नमः—कर्णद्वये। ॐ भरलसहीं नमः—कपोलयोः। ॐ भरलसहीं नमः—गण्डयोः। ॐ भरलसहीं नमः—कण्ठदेशे। ॐ भरलसहीं नमः—स्तनयोः। ॐ भरलसहीं नमः—हृदये। ॐ भरलसहीं नमः—पादयोः। ॐ भरलसहीं नमः—चिबुके। ॐ भरलसहीं नमः—मस्तके। ॐ भरलसहीं नमः—बाह्वोः। ॐ भरलसहीं नमः—स्कन्धयोः। ॐ भरलसहीं नमः—दंतपंक्त्योः। ॐ भरलसहीं नमः—ब्रह्मरंध्रे। ॐ भरलसहीं नमः—आधारे। ॐ भरलसहीं नमः—भ्रूमध्ये।

आकूतीबीजन्यासः—ॐ नमरलमरक्षरशरहसीं नमः—शिरसि। ॐ नमरलमरक्षरशरहसीं नमः—गण्डयोः। ॐ नमरलमरक्षरशरहसीं नमः—वक्त्रे।

कालबीजन्यास:—ॐ करलसरमरीं नम:—नेत्रयो:। ॐ करलसरमरीं नम:—कर्णयो:। ॐ करलसरमरीं नम:—नाभौ:। ॐ करलसरमरीं नम:—लिङ्गे। ॐ करलसरमरीं नम:—गुदे।

विद्याबीजन्यास:—ॐ क्षरशरहसीं नम:—कपोलयो:। ॐ क्षरशरहसीं नम:—ब्रह्मरन्धे। ॐ क्षरशरहसीं नम:—दन्तपंक्त्यो:।

शृंखलामहापराख्यबीजन्यास:—ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—मस्तके। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षनेत्रे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—वामनेत्रे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षिणकर्णे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—वामकर्णे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षिणकपोले। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—वामकपोले। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षगंडके। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—चिबुके। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—गले। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षिणस्कन्धे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—वामस्कन्धे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षिणस्तने। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—वामस्तने। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—हृदये। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षिणकुक्षौ। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—वामकुक्षौ। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—नाभौ। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—वक्षसि। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षिणजंघायाम्। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—वामजंघायाम्। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—लिङ्गे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नम:—दक्षिणमेढ्रे। ॐ

सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—वाममेढ्रे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—मूलाधारे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—दक्षिणगुल्फे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—वामगुल्फे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—दक्षिणपादे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—वामपादे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—दक्षिणपादाङ्गुलीषु। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—वामपादाङ्गुलीषु। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ सहसहलकलइशरवरवलवऊईं नमः—मूलाधारे। ॐ सहसह-लकलइशरवरवलवऊईं नमः—ब्रह्मरन्ध्रे।

महासरस्वतीबीजमातृकान्यासः—ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—ललाटे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—मुखवृत्ते। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणनेत्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामनेत्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणकर्णे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामकर्णे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणनासापुटे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामनासापुटे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणगंडे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामगंडे। ॐ कलडरसहरहक्षशरई नमः—ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—अधरोष्ठे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—ऊर्ध्वदंतपंक्तौ। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—अधोदंतपंक्तौ। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—शिरसि। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—मुखाभ्यन्तरे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणबाहुमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणकर्पूरे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणमणिबन्धे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणकरांगुलिमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणकरांगुल्यग्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामबाहुमूले। ॐ कलडर-

सहरहक्षशरईं नमः—वामकर्पूरे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वाममणिबंधे। ॐ कलडर-सहरहक्षशरईं नमः—वामकरांगुलिमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामकरांगुल्यग्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणपादमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणजानुनि। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणगुल्फे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणपादांगुलिमूले। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामपादांगुल्यग्रे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणपार्श्वे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामपार्श्वे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—पृष्ठवंशे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—नाभौ। ॐ कल-डरसहरहक्षशरईं नमः—जठरे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—हृदि। ॐ कल-डरसहरहक्षशरईं नमः—दक्षिणांसे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—वामांसे। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—ककुदि। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—हृदादिदक्षकरांगुल्यग्रपर्यंतम्। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—हृदयादिवामकरांगुल्यग्रपर्यंतम्। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—हदयादिदक्षपादांगुल्यग्रपर्यंतम्। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—हृदयादिवामपादांगुल्यग्रपर्यंतम्। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—नाभ्यादिहृदयपर्यन्तम्। ॐ कलडरसहरहक्षशरईं नमः—हृदयादिमुखपर्यन्तं न्यसेत्।

सर्वदेववैदिकमन्त्रन्यासः

१. ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातम्॥ पादयो न्यसामि॥ २. इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भायं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघसर्ठ०सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्यपशून्पाहि॥ गुल्फयो न्यसामि॥ ३. अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥ जङ्घयो न्यसामि॥ ४. शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।

जान्वो न्यसामि॥ ५. एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ॰ शतिश्च म एकविर्ठ॰ शतिश्च मे त्रयोविर्ठ॰ शतिश्च मे त्रयोविर्ठ॰ शतिश्च म पञ्चविर्ठ॰ शतिश्च मे पञ्चविर्ठ॰ शतिश्च मे सप्तविर्ठ॰ शतिश्च मे सप्तविर्ठ॰ शतिश्च मे नवविर्ठ॰ शतिश्च मे नवविर्ठ॰ शतिश्च म एकत्रिर्ठ॰ शच्च म एकत्रिर्ठ॰ शच्च मे त्रयस्त्रिर्ठ॰ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ६. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ जठरे न्यसामि॥ ७. दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्॥ हृदये न्यसामि॥ ८. विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥ कण्ठे न्यसामि॥ ९. त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ॰ हवे हवे सुहवर्ठ॰ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ॰ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ वक्त्रे न्यसामि॥ १०. त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ स्तनयोर्नेत्रयोश्च न्यसामि॥ ११. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविर्ठ॰ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ मूर्ध्नि न्यसामि॥

षोडशन्यास सभी देवताओं के लिए एक ही हैं, वह यद्यपि मयूख आदि में वर्णित हैं और प्रसंगात् यहाँ भी लिखा है। तथापि स्थापित देवता में भी किया जा सकता है। (करना चाहिए) ऐसा आगमिकों का कहना है। **शयने स्थापयित्वा तां ततो होमं समारभेत्। हुत्वा षोडशधा न्यासः कार्यश्चैव पृथक् पृथक्। अधिवासते सदा कार्या न्यासाः पञ्चदशैव तु। सञ्जीवकरणं कुर्यास्थापिते तु जगत्पतौ। एवं न्यासविधिं यस्तु न जानाति द्विजोत्तमः॥ आचार्यों स न मन्तव्यो निग्राह्यस्तस्करो यथे'ति वचनात्।**

वह इस प्रकार से है—अपने हृदय-कमल से तेजःपुञ्ज स्वरूप ऐश्वर्य को वामनाड़ी से निकालकर, ब्रह्मरन्ध्र से प्रतिमा की बुद्धि एवं मन के सहित कर्मेन्द्रियों को हृदय-कमल में यथास्थान न्यास करना चाहिए—**ॐ मं जीवात्मने नमः ॐ भं प्राणात्मने नमः शनिदेवशरीरे व्यापकं न्यसामि॥ १॥ ॐ बं बुद्ध्यात्मने ॐ फं अहङ्कारात्मने० ॐ पं मन आत्मने नमः हृदि न्यसामि॥ २॥ ॐ नं शब्दतन्मात्रात्मने नमः शिरसि न्यसामि॥ ३॥ ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः मुखे न्यसामि॥ ४॥ ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने नमः हृदये न्यसामि॥ ५॥ ॐ थं रसतन्मात्रात्मने नमः हस्तयो न्यसामि॥ ६॥ ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने नमः पादयो न्यसामि॥ ७॥ ॐ णं श्रोत्रात्मने नमः श्रोत्रयो न्यसामि ॥ ८॥ ॐ ढं त्वगात्मने नमः त्वचि न्यसामि॥ ९॥ ॐ डं चक्षुरात्मने नमः नेत्रयो न्यसामि॥ १०॥ ॐ ठं जिह्वात्मने नमः जिह्वायां न्यसामि॥ ११॥ ॐ टं घ्राणात्मने नमः घ्राणे न्यसामि॥ १२॥ ॐ ञं वागात्मने नमः वाचि न्यसामि॥ १३॥ ॐ झं पाण्यात्मने नमः पाण्यो न्यसामि॥ १४॥ ॐ जं पदात्मने नमः पादयो न्यसामि॥ १५॥ ॐ छं पाय्वात्मने नमः पायौ न्यसामि॥ १६॥ ॐ चं उपस्थात्मने नमः उपस्थे न्यसामि॥ १७॥ ॐ ङं पृथिव्यात्मने नमः पादयो न्यसामि॥ १८॥ ॐ घं अवात्मने नमः वस्तौ न्यसामि॥ १९॥ ॐ गं तेजात्मने नमः हृदि न्यसामि॥ २०॥ ॐ खं प्राणात्मने नमः घ्राणे न्यसामि॥ २१॥ ॐ कं आकाशात्मने नमः शिरसि न्यसामि॥ २२॥ ॐ षं सूर्यात्मने नमः हृत्पुण्डरीकमध्ये न्यसामि॥ २३॥ ॐ सोमात्मने हृत्पुण्डरीकमध्ये न्यसामि॥ २४॥ ॐ वं वह्न्यात्मने नमः हृत्पुण्डरीकमध्ये न्यसामि॥ २५॥ ततः अर्चाबीजं स्वाभिमतं मूर्त्यास्वमन्त्रेण संयोज्य, ''विशेषबी जाद्यनुपलब्धौ तु देवतानाम्नः आद्यमक्षरं रसानुस्वारं चतुर्थ्यन्तं तत्तद्देवतानाम्ना संयोज्य'' तद्यथा—ॐ शिं शिवात्मने नमः॥ १॥ ॐ विं विष्णवात्मने नमः॥ २॥ ॐ रां रामात्मने नमः॥ ३॥ इत्यादिप्रकारेण देवं भावयित्वा॥ २६॥ ॐ यं**

सर्वात्मने नमः—इति सर्वसाक्षिणं भावयित्वा॥ २७॥ ॐ गं सर्वात्मने नमः इति देवं सर्वतोमुख भावयित्वा॥ २८॥ ॐ वः अनुग्राहकात्मने नमः इति अनुग्राहकं भावयित्वा॥ २९॥ ॐ यं सर्वभूतात्मने नमः इति सर्वभूतकारणं ध्यात्वा ॥३०॥ ॐ लं सर्वसंहारात्मने नमः इति सर्वसंहारात्मकं भावयित्वा॥ ३१॥ ॐ कोषात्मने नमः इति सर्वक्षयकारं ध्यात्वा—॥ ३२॥ तत्त्वत्रयं न्यसेत्—ॐ आत्मतत्वाय नमः॥ १॥ ॐ आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे नमः॥ २॥ ॐ पादयोर्न्यसामि॥ ३३॥ ॐ विद्यातत्वाय नमः॥ १॥ ॐ विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे नमः॥ २॥ हृदये न्यसामि॥ ३४॥ ॐ शिवतत्वाय नमः॥ १॥ ॐ शिवतत्वाधिपतये रुद्राय नमः॥ २॥ शिरसि न्यसामि॥ ३५॥ इति जीवन्यासः षोडशः सर्वदेवसाधारणः। एते षोडश न्यासाः सर्वदेवसाधारणाः।

एककुण्डीयपक्षे होमः

आचार्य कुण्ड के ईशानकोण में दक्षिणोत्तर क्रम से मूर्ति मूर्तिप लोकेश के स्थापन के लिए कलशद्वय का स्थापन कर आचार्य कलश में पृथ्वी आदि का स्थापन और पूजन निम्न मन्त्रों और उनके आगे दिए हुए वाक्यों का क्रम से उच्चारण करते हुए यजमान से करावें—

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ ॐ पृथिवीमूर्तये नमः। पृथिवीमूर्तिमावाहयामि॥ १॥ ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः। शर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥ ॐ पृथिवीमूर्त्यधिपतये शर्वाय नमः। पृथिवीमूर्त्यधिपतिं शर्वमावाहयामि॥ २॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिद्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि॥ ३॥ ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह॥ ॐ अग्निमूर्तये नमः। अग्निमूर्तिमावाहयामि॥ ४॥ ॐ तेजः पशूनार्ठ० हविरिन्द्रियावत्परिस्रुता पयसा

सारधं मधु। अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोम इन्दुः॥ ॐ अग्निमूर्त्यधिपतये पशुपतये नमः। अग्निमूर्त्यधिपति पशुपतिमावाहयामि॥ ५॥ ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषठं० रक्षमाणस्तव व्रते॥ ॐ अग्नये नमः। अग्निमावाहयामि॥ ६॥ ॐ सुवीरो वीरान्प्रजनयन्परीह्यभिरायस्पोषेण यजमानम्। संजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः शुक्रस्याधिष्ठानमसि॥ ॐ यजमानमूर्तये नमः। यजमानमूर्तिमावाहयामि॥ ७॥ ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा॥ ॐ यजमानमूर्त्यधिपतये उग्राय नमः। यजमानमूर्त्यधिपतिमुग्रमावाहयामि॥ ८॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः। यममावाहयामि॥ ९॥ ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यठं० स्वाहा॥ ॐ सूर्यमूर्तये नमः। सूर्यमूर्तिमावाहयामि॥ १०॥ ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ ॐ सूर्यमूर्त्यधिपतये रुद्राय नमः। सूर्यमूर्त्यधिपतिं रुद्रमावाहयामि॥ ११॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि॥ १२॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ॐ जलमूर्तये नमः। जलमूर्तिमावाहयामि॥ १३॥ ॐ नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः॥ ॐ जलमूर्त्यधिपतये भवाय नमः। जलमूर्त्यधिपतिं भवमावाहयामि॥ १४॥ ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि॥ १५॥ ॐ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवार्ठं० स्यावृणीमहे॥ ॐ वायुमूर्तये

नमः। वायुमूर्तिमावाहयामि॥ १६॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये॥ ॐ वायुमूर्त्यधिपतये ईशानाय नमः। वायुमूर्त्यधिपतिमीशानमावाहयामि॥ १७॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ वायवे नमः। वायुमावाहयामि॥ १८॥ ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ॐ सोममूर्तये नमः। सोममूर्तिमावाहयामि॥ १९॥ ॐ उग्रं लोहितेन मित्रर्ठ० सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यर्ठ० रुद्रस्यान्तःपार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥ ॐ सोममूर्त्यधिपतये महादेवाय नमः। सोममूर्त्यधिपतिं महादेवमावाहयामि॥ २०॥ ॐ अभि त्यं देवर्ठ०सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ०रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वा यस्याऽमतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजात्वमनुप्राणिहि॥ ॐ कुबेराय नमः। कुबेरमावाहयामि॥ २१॥ ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमर्ठ०स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानाः॥ ॐ आकाशमूर्तये नमः। आकाशमूर्तिमावाहयामि॥ २२॥ ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नदस्व॥ ॐ आकाशमूर्त्यधिपतये भीमाय नमः। आकाशमूर्त्यधिपतिं भीममावाहयामि॥ २३॥ ॐ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ ॐ ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि॥ २४॥ एता देवता आवाह्य सम्पूजयेत्।

आचार्य उपरोक्त देवताओं का यजमान से आवाहन करवाने के उपरान्त पूजन करावें।

शान्तिक-पौष्टिकहोमः

आचार्य पलाश, उदुम्बर, अश्वत्थ, अपामार्ग और शमी आदि समिधाओं को निम्न मन्त्र से क्रमानुसार संख्या से युक्त क्रमशः कुण्ड के समीप स्थापित करें—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

पुनः आचार्य घृताक्त-समिधा के द्वारा निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रत्येक मन्त्र एवं प्रत्येक द्रव्य द्वारा दो हजार, एक हजार, पाँच सौ, एक सौ अड़सठ अथवा अट्ठारह बार हवन करावें—

ॐ शन्नोवातः पवताꣳ शन्नस्तपतुसूर्यः। शन्नः कनिक्रद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु॥ अहानिशं भवन्तुनः शꣳ रात्री प्रतिधीयताम्। शन्न-ऽइन्द्राग्नीभवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रा वरुणारातहव्या॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥ इति शान्तिकैः॥

ॐ अयमग्निः पुरीष्योरयिमान्पुष्टिवर्द्धनः। अग्ने पुरीष्याभिद्युम्नमभि-सहऽआयच्छस्व॥ त्वष्टातुरीपोऽअद्भुतऽइन्द्राग्नी पुष्टि वर्द्धना। द्विपदा-च्छन्द ऽइन्द्रियमुक्षा गौर्न्नवयोदधुः॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ इति पौष्टिकैश्च॥

वेदादिहोमः

पलाशसमिधा-तिल-घृतान्यतम द्रव्य से आचार्य निम्न आठ वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से एक हजार आठ या एक सौ आठ बार हवन करावें—

१. ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् स्वाहा॥ २. ॐ वौषट् स्वाहा॥ ३. ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविताप्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा

अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि स्वाहा॥ ४. ॐ तत्सवितु वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥ ५. ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि स्वाहा॥ ६. ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतोऽनि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः स्वाहा॥ ७. ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा॥ ८. ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥

मूर्त्यादिहोमः

पलाशसमिधा, तिल या घृत में से किसी एक द्रव्य से आचार्य भैरव देवता की मूर्ति मूर्तिप लोकपाल को एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ आहुतियाँ किसी भी पक्ष द्वारा यजमान से प्रदान करावें।

महाव्याहृतिहोमः

तिल, यव, ब्रीहि, चरु, घृत आदि द्रव्यों द्वारा आचार्य क्रम से प्रत्येक द्रव्य से एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ व्याहृति की आहुतियाँ किसी भी पक्ष से 'ॐ भूर्भुवः स्वाहा' द्वारा यजमान से प्रदान करावें।

स्थाप्यभैरवदेवतालिङ्गकमन्त्रहोमः

एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ बार तिल या घृत से आचार्य हवन करके '**होमकृत**' इस मन्त्र द्वारा भैरव देवता के दाहिने कान में होम निवेदित करें। आचार्य भैरव देवता के '**ॐ भैं भैरवाय स्वाहा**' इस मूलमन्त्र का उच्चारण करके आठ आहुति घृत द्वारा यजमान से प्रदान करावें। पुनः इसी क्रम से इनके चरणों का स्पर्श करें और उसी मन्त्र से आठ

बार हाथ से दधि द्वारा हवन करके फिर भैरव देवता के नाभि में क्षीर से हवने करें, पुनः हृदय में मधु से हवन कर आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण कर घृतादि चतुष्ट्य द्रव्य मिश्रित के द्वारा यजमान से हवन करावें—

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
कविर्ठ० सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा॥

भैरव देवता के सभी अंगों का स्पर्श कराकर आचार्य निम्न मन्त्र द्वारा भैरव देवता का १०८ बार हवन यजमान से करावें—

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥

कूर्मशिलादिस्थापनम्

तदनन्तर कूर्मशिला, ब्रह्मशिला और पिण्डिकावाहन का आचार्य वैदिक या नाममन्त्रों द्वारा यजमान से पूजा करवाकर प्रतिमा के बाद पार्श्व के सभी का वस्त्र आदि से अधिवासन करावें। उसमें—**ॐ यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै देवा ऽअधिब्रवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः॥ ॐ कूर्मशिलायै नमः, कूर्मशिलामावाहयामि पूजयामि॥ १॥**

ॐ ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुभ्द्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमाक्रयाया ऽअयोगूं कामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्॥ ॐ ब्रह्मशिलायै नमः, ब्रह्मशिलामावाहयामि पूजयामि॥ २॥

भैरवपिण्डिका—ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ भैरवपिण्डिकायै नमः। भैरवपिण्डिकाम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

स्थापन देश में पूर्व ही मन्त्रों के द्वारा संस्कार करके पुनः भैरव देवता के लिए आगे दिए हुए उनके मन्त्र न्यास को करें।

विनियोगः—ॐ ये भूतानामित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः, भैरवो देवता न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ परमेष्ठिप्रजपतिऋषये नमः शिरसि। ॐ आष्यनुप् छन्दसे नमः मुखे। ॐ भैरवाय नमः हृदि, ॐ न्यासाय नमः गुह्ये। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—ॐ खे भूतानामधिपतयो अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ विशिखासः तर्जनीभ्यां नमः, ॐ कपर्दिनः मध्यमाभ्यां नमः, ॐ तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव अनामिकाभ्यां नमः, ॐ धन्वानि कनिष्ठाकाभ्यां नमः, ॐ तन्मसि करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—ॐ खे भूतानामधिपतयो हृदयाय नमः, ॐ विशिखासः शिरसे स्वाहा, ॐ कपर्दिनः शिखायै वषट्, ॐ तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव कवचाय हुम्, ॐ धन्वानि नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ तन्मसि शिरसि।

मन्त्रन्यासः—ॐ खे भूतानाम् ललाटे, ॐ अधिपतयो मुखे, ॐ विशिखासः हृदये, ॐ कपर्दिनः नाभौ, ॐ तेषार्ठ० ऊर्वोः, ॐ सहस्त्रयोजनेऽव जानुनोः, ॐ धन्वानि गुल्फयोः, ॐ तन्मसि पादयोः।

ध्यानम्

वन्दे नाथं स्फटिक-सदृशं भैरवं भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी-नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं
हस्ताग्राभ्यां सुदृढवपुषं शूल-दण्डोपधानम्॥ १॥
करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्य्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति विरुदनाथः सिद्धिदो भैरवाख्यः॥ २॥

स्थापन देश में पूर्व ही मन्त्रों के द्वारा संस्कार करके भैरव देवता के लिए पञ्चाङ्गन्यास करें।

इस प्रकार वैदिक मन्त्रों से पूजन कर अधिवासन करें। तदुपरान्त निम्न वाक्यों का उच्चारण करके भैरव देवता की पिण्डिका में न्यास करे—**ॐ आत्मतत्वाय नमः आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे नमः॥ १॥ ॐ विद्यातत्वाय नमः विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे नमः॥ २॥ ॐ शिवतत्वाय नमः शिवतत्वाधिपतये विष्णवे नमः॥ ३॥**

तदुपरान्त—**ॐ पृथिवीमूर्तये नमः पृथिवीमूर्तिधिपतिं शर्वाय नमः॥ १॥ ॐ अग्निमूर्तये नमः अग्निमूर्त्यधिपतिं पशुपतये नमः॥ २॥ ॐ यजमानमूर्तये नमः यजमानमूर्त्यधिपतिमुग्राय नमः॥ ३॥ ॐ अर्कमूर्तये नमः अर्कमूर्त्यधिपतिं रुद्राय नमः॥ ४॥ ॐ जलमूर्तये नमः जलमूर्त्यधिपतिं भवाय नमः॥ ५॥ ॐ वायुमूर्तये नमः वायुमूर्त्यधिपतिं ईशानाय नमः॥ ६॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः इन्द्रमूर्त्यधिपतिं महादेवाय नमः॥ ७॥ ॐ खमूर्तये नमः खमूर्त्यधिपतिं धीमाय नमः॥ ८॥** पुनः निम्न दो वाक्यों का उच्चारण करके कूर्मादिशिलाओं का अधिवासन करे—**ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां क्षः परब्रह्मणे सर्वाधाराय नमः॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां दिव्यतेजो धारिणी शुभगे नमः॥ २॥**

प्रासादाधिवासन कलशस्थापनक्रमः

(प्रथम वेदी)

स्वपनवेदी के दक्षिण वाली वेदी के पीछे बाहर कलश गंगा आदि जल से भरे उदक्संस्थ या प्राक्संस्थ पंक्तिरूप से रख जाते हैं। उनमें बारहवाँ 'स्थपतिसंज्ञक' कलश रखा जाता है। उनमें क्रम से द्रव्यों के प्रक्षेप का विधान मिलता है—

१. मृत्तिका	अग्निर्मूर्धा १५/२०
२. पञ्चपल्लववृक्षीयकषाय	यज्ञा यज्ञावः २७/४२
३. गोमूत्र	तत्सवितुः ३०/२
४. गोमय	गन्धद्वाराम् (ऋ० प० ११/९)
५. भस्म (प्रसद्य भस्मना)	मा नस्तोके १६/१६
६. गन्धोदक	तत्सवितुः ३०/२
७. गन्धोदक	नमः शंभवाय १६/४१
८. गन्धोदक	हँसः शुचिपत् १०/२४
९. गन्धोदक	या ते रुद्र शिवा तनूः १६/२
१०. गन्धोदक	विष्णो रराटम् ५/२१
११. गन्धोदक	ब्रह्म यज्ञानम् १३/३
१२. गन्धोदक	शतं वोऽ अम्ब १२/७६

(अन्तिम कलश स्थपतिसंज्ञक)

(दूसरी वेदी)

पूर्वोक्त बारहवें कलश को छोड़कर मध्यवेदी के पीछे (पश्चिम भाग में) ग्यारह कलशों के स्थापन का विधान निम्न प्रकार से है—

१. मृत्तिका	मृत्तिका
२. पञ्चपल्लववृक्षीयकषाय	अग्निर्मूर्धा १५/२०

३. गोमूत्र	यज्ञा यज्ञावः २७/४२
४. गोमय	तत्सवितुः ३/३५
५. भस्म	गन्धद्वारां दुरा (ऋ० प० ११/९)
६. गन्धोदक	मानस्तोके १६/१६
७. गन्धोदक	नमः शंभवाय १६/४१
८. गन्धोदक	हर्ठ० सः शुचिषत् १०/२४
९. गन्धोदक	या ते रुद्र शिवातनुः १६/२
१०. गन्धोदक	विष्णोरराटम् ५/२९
११. गन्धोदक	ब्रह्मज्ञानम् १३/३

(उत्तर वेदी के पीछे स्थापित कलशों में द्रव्य विधान)

प्रथम पंक्ति में कलशों की संख्या ५

१. शुद्धोदक	समुदायत्वा वाताय ३८/७
२. शुद्धोदक	इदमापः ६/१७
३. शुद्धोदक	आपो देवीः प्रति गृभ्णीत १२/३५
४. शुद्धोदक	इमं मे वरुण २१/१
५. शुद्धोदक	तत्त्वा यामि २१/२

(द्वितीय पंक्ति में कलशों की संख्या २०)

१. अष्टपलमृत्तिका	अग्निर्मूर्धा १५/२०
२. सप्तपलगोवर	वरुणस्योत्तंभनम् ५/३६
३. द्वादशपल गोमूत्र	गन्धद्वारां दुराधर्षाम्
४. मुष्टिपरिमित भस्म	देवीरापो अपान्न पाद्यो ६/२०
५. त्रिपल पञ्चगव्य	तत्सवितुः ३/३५
६. षोडशपल दूध	आपो हि ११/५०
७. बीसपल दधि	प्रसद्य भस्मना १२/३८

८. सातपल घृत	शन्नो देवीः ३६/१२
९. तीनपल सहत	पयः पृथिव्याम् १८/१२
१०. तीनपल शर्करा	यो वः शिवतमः ११/५९
११. शुद्धोदक (केवल)	आप्यायस्व स मे १२/११२
१२. शुद्धोदक ,,	तस्माऽ अरङ्गमा ३६/१६
१३. शुद्धोदक ,,	दधिक्राब्णः २३/३२
१४. शुद्धोदक ,,	युञ्जानः प्रथमम् ११/१
१५. शुद्धोदक ,,	घृतवती भुवनानाम् ३४/४५
१६. शुद्धोदक ,,	देवस्य त्वा
१७. शुद्धोदक ,,	मधुवाताऽ ऋतायते १३/३७
१८. शुद्धोदक ,,	आपोऽअस्मान् ४/२
१९. शुद्धोदक ,,	आयंगौः ३/६
२०. शुद्धोदक ,,	आपो हयद् २७/२५

(तृतीय पंक्ति के कलशों की संख्या २)

१. शुद्धोदक	मा नस्तोके १६/१६
२. शुद्धोदक	प्रतद्विष्णुस्तवते ५/२०

(चतुर्थ पंक्ति के कलशों की संख्या ६)

१. पञ्चामृत	आप्यायस्व समेतु ते १२/११२
२. शुद्धोदक	उरुर्ठ० हि राजा ८/२३
३. शुद्धोदक	सन्ते पयार्ठ० सि ११३
४. शुद्धोदक	आप्यायस्व मन्दितम् १२/१४४
५. शुद्धोदक	अप्स्वग्ने सधि १२/३६
६. शुद्धोदक	अपार्ठ० रसमुद्वसम् ९/३

(पञ्चम पंक्ति में कलशों की संख्या १४)

१. गन्ध	गन्धद्वारां दुराधर्षाम्
२. पञ्चपल्लवकपाय	यज्ञा यज्ञाव २७/४२
३. सर्वौषधि	याऽओषधीः पूर्वा जाता १२/७५
४. सफेद पुष्प	ओषधीः प्रतिमो १२/७७
५. शान्तिजल	द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ३६/१७
६. आठ फल	याः फलिनीः १२/८९
७. सुवर्ण	हिरण्यगर्भः सम २५/१०
८. गोश्रृंगोदक	हविष्मतीरिमाः ६/२३
९. सप्तधान्य	धान्यमसि ९/२०
१०. सहस्रछिद्रकलश (उसके सहायतार्थ एक कलश)	अग्ने सहस्व पृतनाः ९/३७
११. दिव्यसर्वौषधि	याऽ ओषधीः सोमराज्ञीः ३१२/६३
१२. पञ्चपल्लव	नमोऽस्तु सर्पेभ्यः १२/६
१३. नवरत्न	अष्टौ व्यख्यत्यकुम्भः ३४/२४
१४. तीर्थोदक	इमं मे वरुण २१/१

(वेदी के पूर्वादि दिशा और विदिशाओं में समुद्रसंज्ञक अष्ट कलशों की संख्या का कथन)

१. आक्षोदक	कयानश्चित्र ३६/४९
२. दूध	आप्यायस्व १२/११२
३. दधि	दधिक्राब्णः २३/३२
४. घृत	घृतवती भुवनानाम् ३४/४५
५. ईखरस	पयः पृथिव्याम् १८/३६
६. सुरोदक	देवं बर्हिर्वारितीनां दैवम् २४/५७

७. ग्वादुदक	स्वादिष्ठया मदिष्ठया २६/२५
८. गर्भोदक (दर्भोदक या नारी केलोदल)	सरस्वती योन्याम् १९/९

(षष्ठ पंक्ति के कलशों की संख्या १०)

१. कदम्ब	त्रातरमिन्द्रम् २०/५०
२. आल्मली	त्वन्नो अग्ने ३४/१३
३. जंब	यमाय त्वाङ्गिरस्वते ३८/९
४. अशोक	असुन्वन्तम् १२/६२
५. प्लक्ष	तत्त्वा यामि २१/२
६. चूत	आ नो नियुद्भिः २७/२८
७. वट	वयर्ठ० सोम ३/५६
८. विल्व	तमीशानम् २५/१८
९. नागपल्लव	नमोऽस्तु सर्पेभ्यः १३/६
१०. पलाश	ब्रह्म यज्ञानम् १३/३

(सप्तम पंक्ति के कलशों की संख्या ४)

(१) बड़े-बड़े चार कलश अथवा एक कलश जल से भरे होंगे।

१.	आ नो भद्राः— (यजु० अ० २५/१४-२३) इस अनुवाक से।
२.	
३.	
४.	

प्रासादाधिवासनम्

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् प्रासादे-भैरवदेवताधिष्ठानयोग्यतासिद्ध्यर्थं स्नपन-पूर्वकं प्रासादाधिवासनं करिष्ये।

ततः प्रासादे तदग्रे वा दशरेखाभिः पूर्वोत्तराग्राभिरेकाशीतिपदं मण्डलमक्षतैः कृत्वा तेषु सप्तधान्यपुञ्जान् कृत्वा तत्र नवनवकानां मध्यमं कोष्ठं ज्ञात्वा तेषु नवकुम्भानि मध्ये पूर्वादिक्रमेण च ' ॐ महीद्यौ० ' रित्यादिना विन्यस्य।

मध्यकुम्भे—शमी-उदुम्बर-अश्वत्थ-चम्पक-अशोक-पलाश-प्लक्ष-न्यग्रोध-कदम्ब-आम्र-बिल्व-अर्जुन इति पल्लवान् ' ॐ सोमायवनस्यत्यन्तर्गताय नमः ' इति मन्त्रेण क्षिपेत्।

पूर्वमध्यकुम्भे—पद्मकाष्ठ-गोरोचन-दूर्वाङ्कुरदर्भपिञ्जल-श्वेतसर्षप (पीतसर्षप) श्वेतचन्दन-रक्तचन्दन-जाती (चमेली) पुष्प-नद्यावर्तक (सेवार) मिति ' ॐ सोमायवनस्यत्यन्तर्गताय नमः ' उक्तमन्त्रेण क्षिपेत्।

आग्नेयमध्यकुम्भे—यव-व्रीहि-तिल-सुवर्ण-रजत-समुद्रगामिनदी-कूलमृत्तिकाभूम्यसंस्पृष्टगोमयमिति ' ॐ सोमायवनस्यत्यन्तर्गताय नमः ' इतिमन्त्रेण क्षिपेत्।

याम्ये—सहदेवी-विष्णुक्रान्ता-भृङ्गराज-महौषधी-शमी-शतावरी-श्यामाकमिति ' ॐ सोमायवनस्यत्यन्तर्गताय नमः ' इति मन्त्रेण क्षिपेत्।

नैऋत्ये—कदली-पूगीफल-नारिकेल-बिल्व-नारिंग-मातुलिङ्ग-बदरी-आमलकमिति।

पश्चिमे—मन्त्रसाधितं पञ्चगव्यम्।

वायव्ये—शमी-उदुम्बर-अश्वस्थन्यग्रोधपलाशत्वक् कषायपञ्चकम्।

उत्तरे—सहदेवी-शतावरी-शंखपुष्पी-वलाकुमारी-गुडूची-वचा-व्याघ्रीति। ईशाने—अश्वस्थानादि सप्तमृदः।

ततः—हिरण्यवर्णामित्यादि[१]षोडशमन्त्रैः मध्यकुम्भानभिमन्त्र्य शेषान् गन्धोदकपूरितान् त्रिशूत्रावेष्टितान् मध्यमादिकलशानां समन्तान् पूर्वादिक्रमेण अष्टौ अष्टौ कलशान् विन्यस्य सर्वान्ते एकाशीतिकलशान् संस्थाप्य शनिमूलमन्त्रेणाभिमन्त्र्य—अन्तबर्हिरधस्तादूर्ध्वे च प्रासादं पञ्चगव्येनाभ्युक्ष्य 'ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥' इति मन्त्रेण वल्मीकमृदाप्रासादं विलिप्य।

ईशानादि वाले कुम्भ से आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके भैरव देवता की मूर्ति को स्नान करावे—**ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा। अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहाऽशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा॥**

श्रीसूक्तम्—ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १ ॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ २ ॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ ३ ॥ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्त्वं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ९ ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥ कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११ ॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२ ॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १३ ॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १४॥ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ १६ ॥

(ऋग्वेद-परिशिष्ट-भागः)

इसी प्रकार सभी कलशों के जल से भैरव देवता की मूर्ति को स्नान करावें। पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करके वायव्यकोणस्थ कषाय कुम्भ से स्नान करावें—**ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥** पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करके वारुणसंज्ञक पञ्चगव्य से स्नान करावें—**ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥** पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके नैर्ऋत्य कोणस्थ कुम्भ से स्नान करावें—**ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥** पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके उत्तर दिशा की ओर स्थित कुम्भ से स्नान करावें—**ॐ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥** पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके पहले वाले कलश से स्नान करावें—**ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोः श्नप्त्रे स्थोविष्णोः स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसिविष्णवेत्त्वा॥** पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके अग्निकोण कुम्भ से स्नान करावें—**ॐ सोमर्ठ० राजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे। आदित्यान्विष्णुर्ठ० सूर्य ब्रह्माणं च बृहस्पतिर्ठ० स्वाहा॥** पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके याम्य कुम्भ से स्नान करावें—**ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥** पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करके मध्य कुम्भ से स्नान करावें—**ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥** तदुपरान्त निम्न मन्त्र का उच्चारण करके प्रागादि क्रम से आठ-आठ प्रतिकोष्ठ कलशों के जल से शिखर के सहित प्रासाद को स्नान करावें—**ॐ इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत्। यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु॥**

ततः प्रासादं रक्तवस्त्रेण रक्तसूत्रेण वा आवेष्ट्य स्नापयित्वा चिन्तीयित्वा पताकाध्वजादिभिः समन्ताच्छादयित्वा गन्धादिना संपूज्य तस्याधस्तात् देवरूपं प्रासादं चिन्तयित्वा—

ॐ ह्रीं सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वरत्नौज्वालाकृते।
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव॥

इति मन्त्रेणाधिवासेत्। ततः—ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ इति मन्त्रेण भैरवपिण्डिकावाहनपरिवारदेवतानां प्रतिमन्त्रमष्टाविंशतिसंख्याकं होमं तिलैराचार्यः स्वकुण्डे एव हुत्वा चतस्रो गा (मण्डपदक्षिणतः स्थिता इत कमलाकरः) श्रीभैरवं च विद्महे भीमदेवं च धीमहि। भैरवो नः प्रचोदयात्॥ इति भैरवगायत्र्या चरुं श्रपयित्वा (भैरवगायत्र्यैव श्रपणं निवेदनं चोक्तम्) देवाय निवेद्य (भैरवप्रीत्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयित्वा भैरवो मे प्रीयतामिति वदेत्।) ततः आचार्याय धेनूर्दद्यात्। ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात्। ततः प्रतिष्ठामण्डपाद् बहिर्निर्गत्य प्रासादाभिमुखो भूत्वा देवरूपं ध्यायेत्। तथाहि—

ॐ पादौ पादशिलास्तस्य जंघापादोर्ध्वमुच्यते।
गर्भश्चैवोदरं ज्ञेयं कटिश्च कटिमेखला॥ १ ॥
स्तम्भाश्च बाहवो ज्ञेया घण्टाजिह्वाप्रकीर्तिता।
दीपः प्राणोऽस्य विज्ञेयो ह्यपानो जलनिर्गमः॥ २ ॥
ब्रह्मस्थान यदेतच्च तन्नाभिः परिकीर्तिता।
हृत्पद्मपिण्डिका ज्ञेया प्रतिमा पुरुषः स्मृताः॥ ३ ॥
पादचारस्त्वहङ्कारो ज्योतिस्तच्चक्षुरुच्यते।
तदूर्ध्वं प्रकृतिस्तस्य प्रतिमात्मा स्मृतो बुधैः॥ ४ ॥
तलकुम्भादधोद्वार तस्य प्रजननं स्मृतम्।
शुकनासा भवेन्नासा गवाक्षः कर्ण उच्यते॥ ५ ॥

कायपालो स्मृतः स्कन्धो ग्रीवाचामलसारिका।
कलशस्तु शिरो ज्ञेयं मज्जादिप्रसरं हितम्॥ ६ ॥
मेदश्चैव सुधां विद्यात्प्रलेपो मांस उच्यते।
अस्थीनि च शिलास्तस्य स्नायुः कीलादयः स्मृता॥ ७ ॥
चक्षुषीशिखरास्तस्य ध्वजाः केशाः प्रकीर्तिताः।
एव पुरुषरूपं ते ध्यात्वा च मनसा सुधीः॥ ८ ॥
जगत्या सह प्रासाद सन्ध्यायां स्थापयेत्ततः।
प्रासादं पूजयेत्पश्चाद् गन्ध-पुष्पध्वजादिभिः॥ ९ ॥
सूत्रेण वेष्टयेद्देवे वासस्तत्परिकल्पयेत्।
प्रसादमेवमभ्यर्च्य वाहनं चाग्रमण्डपे॥ १०॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण कर एक सौ आठ बार घृत अथवा तिल से यजमान से हवन करावें—**ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवोभवा नः। यत्वे महे प्रति तं नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥**

जो स्थापित भैरव देवता हैं, आचार्य उन्हीं के मन्त्र द्वारा एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ बार घृत या तिल से हवन कराकर यजमान को प्रतिष्ठा मण्डप से बाहर लाकर इन्द्रादि दशदिक्पालों को आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करके बलि प्रदान करावें—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिद्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ १॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥ २॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ३॥ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ४॥ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः

प्रमोषी ॥ ५ ॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ७ ॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये ॥ ८ ॥ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ२ ॥ ऽअवन्तु देवाः ॥ ९ ॥ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ १० ॥

यजमान अपनी धर्मपत्नी के साथ भैरव देवता की मूर्ति के पास आकर अपनी शक्ति के अनुसार सुवर्णादि चढ़ा कर प्रणाम करे।

तदुपरान्त आचार्य और ब्राह्मण मण्डप के उत्तर भाग में भद्रासन पर बैठकर यजमान और उसकी धर्मपत्नी का सम्पातकलशों के जल से अभिषेक करे। इस अभिषेक में यजमान की पत्नी को अपने पति के बायीं ओर बैठना चाहिए। इसके बाद ही यजमान आचार्य, मूर्तिप और ब्राह्मणस्थपति आदि को प्रसन्न करे।

प्रासादवास्तुपूजनम्

गुरुप्रासाद के ईशानकोण या नैर्ऋत्यकोण में आचार्य एक हाथ की तीन वप्र अथवा बिना वप्र के चौसठ पद का वास्तुपीठ का निर्माण कर यजमान को उसकी पत्नी के साथ आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठावे। तदुपरान्त यजमान के दायें हाथ में जल, अक्षत, पुष्प और द्रव्य देकर उससे निम्न संकल्प करावें—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्य वास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थं भैरवप्रतिष्ठाङ्गभूतं वास्तुदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥

पीछे दिए गए श्लोक से आचार्य प्रारम्भ करके पायसबलिदानान्मण्डपवास्तुवत् कर्म करावें।

तदुपरान्त—**ॐ शिखिने इदं सुवर्णं न मम।** इस वाक्य का उच्चार करवाके सुवर्ण की बलि यजमान से प्रदान करवाकर कुशकण्डिका करें तदुपरान्त आचार्य निम्न रक्षोघ्न और पावमान सूक्त का उच्चारण करते हुए यजमान से त्रिसूत्री द्वारा प्रासाद का वेष्टन और जलयुक्त दुग्ध की धार अलग-अलग कमण्डलु से प्रदान करावें।

रक्षोघ्नसूक्तम्

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजे वामवाँ२॥ ऽइभेन।
तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥ १।
तव भ्रमासआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः।
तपूर्ठ०ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो विसृज विष्वागुल्क्काः॥ २।
प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः।
यो नो दूरेअघशर्ठ०सो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत्॥ ३।
उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यऽँमित्राओषतात्तिग्महेते।
यो नो अरातिर्ठ० समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्॥ ४।
ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि।
शत्रून् अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥ ५।

पवमानसूक्तम्

ॐ पुनन्तु मां पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः
पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा।
पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः
पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै॥ १॥

अग्न आयुर्ठ०षि पवस आसुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥ २॥
पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ३॥
पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतुँ२॥ रनु ॥ ४॥
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा॥ ५॥
पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ ६॥
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः॥ ७॥
वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्वयस्तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया मदन्तः सधमादेषु वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम्॥ ८॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से पृथ्वी का ध्यान करावें—

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं भूमिदेवि नमोस्तु ते॥

ॐ पृथिव्यै नमः इति सम्पूज्य—ॐ सर्वदेवमयं वास्तु सर्वदेवमयं परम्। इति पठित्वा मात्स्यादौ वास्तु निक्षेपस्यानुक्तत्वाद्विकल्पेन करणपक्षे पीठे पूजितां सौवर्णीं वृषवास्तु प्रतिमां दधिदूर्वासप्तधान्यशैवालगन्धाक्षतयुतेऽपक्वमृद्भाण्डे संस्थाप्य तत्पिधाय प्रासादस्याग्रये ईशानकोणादष्टमे आकाशपदे जानुमात्रं गर्तं खनित्वा 'ॐ नमो वरुणाय' इति जलमापूर्य गन्धपुष्पाणि प्रक्षिप्य मृद्भाण्डं तत्र निधाय पठेत्—

पूजितोऽसि मया वास्तो होमाद्यैरर्चनैः शुभैः।
प्रसीद पाहि विश्वेश देहि प्रासादजं सुखम्॥ १॥
वास्तुपुरुष नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मृद्गृहं धनधान्यादिसमृद्धं कुरु सर्वदा॥ २॥
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा ब्रह्मादिदेवानां मम यज्ञे स्थिरो भव॥ ३॥

भगवन्देवदेवेश ब्रह्मादिदेवात्मक।
तवार्चनं कृतं वास्तो प्रासादं कुरु मे प्रभो॥ ४॥
प्रार्थयामित्यहं देवं प्रासादस्याधिपस्तु यः।
प्रायश्चित्तं प्रसङ्गेन प्रासादार्थे तु यत्कृतम्॥ ५॥
मूलच्छेद - तृणच्छेदः - कृमि - कीटनिपातनं।
हवनं जलजीवानां भूमौ शत्रेण घातनम्॥ ६॥
अनृतं भूषितं यच्च किञ्चिद्वृक्षस्य पातनम्।
एतत्सर्वं क्षमस्वैनो यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥ ७॥
प्रासादार्थे कृतं पापमज्ञानेनाप्य चेतसां।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवः प्रासादं च शुभं कुरु॥ ८॥
सशैलसागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्द्धनि।
तथा मां वः कल्याणसम्पत्सन्ततिभिः सह॥ ९॥

मिट्टी के उस खोदे हुए गड्ढे को यजमान भरकर गोबर के द्वारा लेपित करे। तदुपरान्त आचार्य पूजनादि करावें।

प्रासादोत्सर्गविधिः

यजमान अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठ कर आचमन क्रिया करे। तदुपरान्त यजमान के दायें हाथ में कुश, यव और जल देकर निम्न संकल्प आचार्य करावें—

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) इमं शिलेष्टकादार्वादिनिर्मितं बलभीजगती-प्राकारगोपुरपरिवारदेवतालयादिसंयुतं श्रीभैरवलोकावाप्तिकामो भैरव-प्रीतयेहमुत्सृजामि॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण यजमान से करावें—

ॐ उत्सृष्टः कामदः श्रेष्ठः प्रासादोऽयं मयार्जितः।
भैरवो देवता साक्षादत्र वासं करोतु हि॥

इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करवाकर, सायंकालीन बलिदान करके, वेदघोष व पुराण आदि पढ़कर, यजमान अपनी पत्नी, परिवार के लोगों एवं आचार्य और ब्राह्मणों के साथ रात्रि में जागरण करे और भैरव देवता के प्रासाद का अधिवासन करे।

स्थापनादिवसकर्म

आचार्य भैरव देवता के '**ॐ भैं भैरवाय स्वाहा**' इस मूलमन्त्र से एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ बार यजमान से घृत द्वारा हवन करवाके पुनः मूर्तिप, लोकपालों के लिए पूर्वोक्त मन्त्रों द्वारा समिधा, तिल और घृत में से किसी भी द्रव्य से आचार्य कुण्ड में हवन करावें। वे मन्त्र निम्न हैं—

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा॥ १॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥ २॥ त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ३॥ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह स्वाहा॥ ४॥ तेजःपशूनार्ठ० हविरिन्द्रियावत्परिस्रुता पयसा सारघं मधु। अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोम इन्दुः स्वाहा॥ ५॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा॥ ६॥ सुवीरो वीरान्प्रजनयन्परीह्यभिरायस्पोषेण यजमानम्। संजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः शुक्रस्याधिष्ठानमसि स्वाहा॥ ७॥ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चभियुग्वा च विक्षपः स्वाहा॥ ८॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥ ९॥ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृषे विश्वाय सूर्यर्ठ० स्वाहा॥ १०॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः।

यथा समसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा॥ ११ ॥ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥ १२ ॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा॥ १३ ॥ नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भुवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतावाहन्त्यै वनानां पतये नमः स्वाहा॥ १४॥ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा॥ १५॥ तव वायव तस्पतेत्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवार्ठ०स्या वृणीमहे स्वाहा॥ १६॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ १७॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ १८॥ वयर्ठ०सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा॥ १९॥ उग्रं लोहितेन मित्रर्ठ० सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यर्ठ० रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् स्वाहा॥ २०॥ अभि त्यं देवर्ठ०सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ०रत्नधाममि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वा यस्याऽमतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजात्वमनुप्राणिहि स्वाहा॥ २१॥ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमर्ठ०स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः स्वाहा॥ २२॥ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व स्वाहा॥ २३॥ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः स्वाहा॥ २४॥

ततोऽधिवासितां कूर्मशिलां ब्रह्मशिलां पिण्डिकां च—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

पुनः विघ्नों को हटाने के लिए आचार्य—'**ॐ अस्त्राय फट्।**' इस अस्त्र मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से पुष्पोदक धारा द्वारा प्रासादगर्भ का अभ्युक्षण करावें। इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रासादगर्भ में अस्त्र से लिखें—

ॐ महाँ२ ऽइन्द्रो य ऽओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ२ ऽइव। स्तोमैर्वत्स्यस्य वावृधे। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा॥

आचार्य '**ॐ अस्त्राय फट्**' इस मन्त्र का उच्चारण करके अभिमन्त्रित जल से पुनः प्रासादद्वार गर्भ का (कूर्म) शिला का प्रोक्षण यजमान से करवाके पुनः निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए प्रार्थना करावें—

ॐ त्वमेव परमाशक्तिस्त्वमेवासनधारिका।
शिवाज्ञया त्वया देवि स्थातव्यमिह सर्वदा॥

तदुपरान्त—**१. ॐ वर्णाध्वने नमः। २. ॐ पादाध्वने नमः। ३. ॐ मन्त्राध्वने नमः। ४. ॐ भुवनाध्वने नमः। ५. ॐ तत्त्वाध्वने नमः। ६. ॐ सकलाध्वने नमः।**

इस प्रकार यजमान से नमस्कार करवाते हुए ब्रह्मशिला का ध्यान उससे करवाके आचार्य और ब्राह्मण पुण्याहवाचन करे।

तद्यथा—अस्य स्थाप्यभैरवदेवस्य पिण्डिकास्थापनाख्यस्यकर्मणः पुण्याहं० कल्याणं० ऋद्धिं०। स्वस्ति भ०।

तदुपरान्त ही प्रतिष्ठामण्डप में आचार्य आकर कुण्ड में एक हजार आठ या एक सौ आठ अथवा अट्ठाईस बार घृत के द्वारा स्थापित भैरव देवता का हवन उन्हीं के आगे दिए हुए मन्त्र द्वारा यजमान से करावें—

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाठं० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥

अथ सश्वभ्रब्रह्मशिलापक्षे ब्रह्मशिलायां सहेम्ना हस्तेन रत्नन्यासं कुर्यात्। तद्यथा हस्तेन शिलां स्पृष्टां मध्ये—ॐ नमः। तद्बाह्ये—ॐ अँ नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ लॄं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः। इति षोडशस्वरान्विन्यसेत्।

पुनः पूर्वादिछिद्रों में यवादि औषधियों का प्रक्षेप कर यवपिष्ट से पूर्ण करें और देवमन्त्रों द्वारा भैरव देवता की पिण्डिका का अभिमन्त्रण करें।

तेषां परितो व्यञ्जनानि विन्यसेत्—**ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः। ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः। ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः। ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।**

आचार्य उसके बाहर बाह्य परिधि पर उसके अन्दर चारो परिधियों पर पूर्व आदि से आठो दिशाओं में पूर्व से ईशान के मध्य में क्रमशः नौ छिद्रों में इस कर्म को यजमान से करावें—

पूर्व में—**यव, वज्र, मनःशिला, सुवर्ण, श्वेतचन्दन**। अग्निकोण में—**व्रीहि, मौक्तिक, हरिताल, रौप्य, रक्तचन्दन**। दक्षिण में—**निष्पाव, वैडूर्य, अञ्जन, ताम्र, अगरु**। नैर्ऋत्यकोण में—**प्रियङ्गु, शङ्ख, श्यामाञ्जन, आयस, अर्जुन**। पश्चिम में—**तिल, स्फटिक, कौसीस, त्रपु, उशीर**। वायव्यकोण में—**माष, पुष्पराग, सौराष्ट्री, सीस, वैष्णवी**। उत्तर में—**नीवार, चन्द्रकान्त, गोरोचना, कांस्य, सहदेवी**। ईशानकोण में—**शालि,**

इन्द्रनील, गैरिक, आरकूट, लक्ष्मणा। पूर्व ईशान के मध्य में—**सिद्धार्थकान्, पद्मरागान्, पारदान्, तीक्ष्णलोहानि।(अत्र बीजानामभावे यवान्, रत्नानामभावे—वज्रं, धातूनामभावे हरितालम्, ताम्राद्यभावे सुवर्णम्, ओषधीनामभावे सहदेवीं न्यसेत्।**

आचार्य पूर्व में दिये गये दशदिक्पालों के दस मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से आलम्भन करवाकर उन छिद्रों को यव के आटे से बन्द करवा दे। पुनः ब्रह्मशिला के ऊपर या कूर्मशिला के ऊपर ही पूर्व-पश्चिम मुख के प्रासाद में उत्तर प्रणाली तथा दक्षिण-उत्तर मुख के प्रासाद में पूर्व प्रणाली को स्वीकार करे। पुनः इस मन्त्र का आचार्य उच्चारण करें—

ॐ ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमनोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्।
घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया॥

भैरव देवता की पिण्डिका के लिए आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

पिण्डिकायां तत्त्वन्यासः

ॐ आत्मतत्त्वाय नमः। ॐ आत्मतत्त्वाधिपतये क्रियाशक्त्यै नमः। ॐ शिवतत्त्वाय नमः। शिवतत्त्वाधिपतये इच्छाशक्त्यै नमः। ॐ विद्यातत्त्वाय नमः। विद्यातत्त्वाधिपतये ज्ञानशक्त्यै नमः।

पिण्डिकायां मूर्तिप-लोकेशन्यासः

ॐ पृथिवीमूर्त्तये नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्निमूर्त्तये नमः। ॐ अग्निमूर्त्यधिपतये पशुपतये नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यजमानमूर्तये नमः। ॐ यजमानमूर्त्यधिपतये उग्राय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ सूर्यमूर्तये नमः। ॐ सूर्यमूर्त्यधिपतये रुद्राय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ जलमूर्तये नमः। ॐ जलमूर्त्यधिपतये भवाय नमः। ॐ वरुणाय नमः।

ॐ वायुमूर्तये नमः। ॐ वायुमूर्त्यधिपतये ईशानाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोममूर्तये नमः। ॐ सोममूर्त्यधिपतये महादेवाय नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ आकाशमूर्तये नमः। ॐ आकाशमूर्त्यधिपतये भीमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः।

पिण्डिकास्थापनम्

आचार्य—**ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ अनन्तासनतत्त्वेभ्यो नमः। ॐ आसनशक्तिभ्यो नमः।** इन नाममन्त्रों का यजमान से उच्चारण करवाकर गन्ध, अक्षत और पुष्प से पूजन करवाके निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए प्रार्थना करावें—

ॐ सर्वदेवमयीशाने त्रैलोक्याह्लादकारिणि।
त्वां प्रतिष्ठापयाम्यत्र मन्दिरे विश्वनिर्मिते॥
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेषा वसुन्धरा।
तावत्त्वं देव-देवेशि मन्दिरेऽस्मिन्स्थिरा भव॥
पुत्रानायुष्मतो लक्ष्मीमचलामजरामृताम्।
अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तुर्नित्यं विधेहि भो॥
विजयं नृपतेः सर्वलोकानां क्षेममेव च।
सुभिक्षं सर्ववस्तूनां कुरु देवि नमो नमः॥

आचार्य पिण्डिकागर्त में पञ्चरत्न और नवरत्न यजमान से छोड़वा दे या पैंतालिस पूर्व के गर्तों में रत्नादि यजमान से छुड़वाकर पुनः पारद छोड़वाकर गुग्गुल रस आदि से रत्नों को स्थिर कर शहद व पायस से अनुलेपन कर—'**ॐ कवचाय हुम्।**' इस नाममन्त्र का यजमान से उच्चारण करवाके अवगुण्ठन करावें। पुनः '**ॐ अस्त्राय फट्।**' इस वाक्य का यजमान से उच्चारण करवाके संरक्षण करावें। तदुपरान्त आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्राणप्रतिष्ठा करावें।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ॰ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

तदुपरान्त कुशाओं के द्वारा पञ्चगव्य से प्रासाद का अभ्युक्षण कर प्रासाद के बाहर पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि-लोकपालों के लिए आचार्य यजमान से बलि उन्हीं के मन्त्रों से प्रदान करवाकर आचमन करावें।

प्रासादबहिरष्टदिक्षु स्थण्डिलादिकृत्यम्

प्रासाद के बाहर आठों दिशाओं में एक-एक हाथ के आठ स्थण्डिलों का आचार्य निर्माण कर ईशानादि भागों में आठ कलशों का स्थापन कर पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्नियों का प्रणयनादि कर सभी स्थण्डिल में पलाश की समिधा से एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ बार किसी पक्ष से मूलमन्त्र द्वारा यजमान से हवन करवाके आचार्य भैरव देवता के निम्न गायत्री मन्त्र द्वारा घृत से एक हजार आठ अथवा एक सौ आठ बार या अट्ठाईस अथवा आठ बार यजमान से कुण्ड में हवन करावें—

श्रीभैरवं च विद्महे भीमदेवं च धीमहि। भैरवो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥

आचार्य पूर्वस्थापित आठ कलशों में से थोड़ा-थोड़ा जल एक पात्र में लेकर भैरव देवता के मूलमन्त्र '**ॐ भैं भैरवाय नमः**' इस वाक्य का उच्चारण करते हुए सौ बार अभिमन्त्रण कर भैरव देवता की मूर्ति के पास यजमान को ले जाकर—'**ॐ सर्वतीर्थमयमिदं जलम्**' इस वाक्य का उच्चारण करवाते हुए भैरव देवता की मूर्ति के मस्तक पर दुग्ध मिश्रित जल और उसमें अड़हुल के पुष्पों को गेरकर यजमान से अभिषेक करावे।

आचार्य इसी क्रम द्वारा देवतान्तर में भैरव देवता के मन्त्र द्वारा ही प्रबोधन कराकर पुनः जल, क्षीर, कुशा, तिल, अक्षत, यव, पीली सरसों और सुगन्धित पुष्प को शंख में रखकर शंखमुद्रा द्वारा यजमान से अर्घ्य प्रदान करावें। पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से पार्श्व में भैरव देवता की मूर्ति को रथ पर रखवायें—

ॐ रथे तिष्ठन्नयति वाजि नः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायतमनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः॥

आगे आचार्य और पीछे सपत्नीक यजमान रहे तथा आचार्य और ब्राह्मण निम्न भद्रसूक्त का उच्चारण करते हुएं भैरव देवता की मूर्ति को प्रासाद की प्रदक्षिणा करावें—

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १ ॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाठ० रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाठ० सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २ ॥
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३ ॥
तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४ ॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५ ॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६ ॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथे षु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ७ ॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८ ॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९ ॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १० ॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षठ० शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११ ॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ १२॥

तदुपरान्त प्रासाद की प्रदक्षिणा करवाकर रथ से भैरव देवता की मूर्ति को उतरवाकर, प्रासाद के दरवाजे पर प्रासाद के द्वार के सम्मुख पीठ देवता का स्थापन कराकर अर्घ्य प्रदान करावें, पुनः प्रासाद में दक्षिण द्वार से प्रवेश कर पिण्डिका के समीप में यजमान से पिण्डिका पर भैरव देवता की मूर्ति को आचार्य स्थापित करावें।

आचार्य पायस आदि से पिण्डिका की शुद्धि करवाने के उपरान्त सुवर्ण के कमल को श्वभ्र में रखकर शुभ समय प्राप्त होने पर भैरव देवता का ध्यान यजमान से निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए करावें—

वन्दे नाथं स्फटिक-सदृशं भैरवं भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी-नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं
हस्ताग्राभ्यां सुदृढवपुषं शूल-दण्डोपधानम्॥ १॥
करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्य्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति विरुदनाथः सिद्धिदो भैरवाख्यः॥ २॥

यव अथवा यवार्ध या उत्तराश्रित सुवर्णादि शलाकान्तरित मूर्ति को पिण्डिका में स्थापित करें। पुनः वज्र लेपादि से उसे दृढ़ करते हुए आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

आचार्य आगे दिए हुए श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें—

लोकानुग्रहहेत्वर्थं स्थिरः स्याच्च सुखाय नः।
सान्निध्यं प्रकरोत्वत्र प्रत्यक्षं परिपाल्य हि॥
प्रधानपुरुषो यावद्यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
स्थिरो भवतु शीघ्रं हि युक्तश्चात्र स्वशक्तिभिः॥

आचार्य इन दो वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करें—**ॐ ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमनोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथा-मिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया॥ १॥**

आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥ २॥

आचार्य—'**ॐ स्थिरो भव शाश्वतो भव।**' इस वाक्य का यजमान से उच्चारण करवाके पिण्डिका को वज्रलेपादियों से दृढ़ करावें, अब चालन न करें।

प्राणप्रतिष्ठा

विनियोगः—अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं श्रीभैरवदेवतायाः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

तदनन्तर ऋष्यादियों का क्रम से शिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्य और पैरों में न्यास करे।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ ऋग्यजुः सामछन्दोभ्यो नमः मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः हृदये। ॐ आं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः। ॐ क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यासः—**ॐ अं कं खं गं घं ङं आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राणात्मने ॐ. मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्-पाणि-पाद-पायूप-स्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादान-**

विहरणोत्सर्गानन्दाऽत्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं ठं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—ॐ अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ॐ शिखायै वषट्। ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्। ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं ठं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट्। एवमात्मनि मूर्तौ च न्यासं कुर्यात्।

ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, श, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः श्रीभैरवदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः श्रीभैरवदेवतायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः श्रीभैरवदेवतायाः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं, क्षं, हं, सः श्रीभैरवदेवतायाः वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य स्वस्तये सुखेन सुस्थिरं सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

वैदिकमन्त्राः

ॐ मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून्मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन्॥ १॥ ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः। देवत्वष्टर्भूरि ते सꣳ समेतु सलक्ष्मा यद्विपुरूषं भवाति। देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु॥ २॥ प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पनन्ताम्॥ ३॥ प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहिव्यानं मे पाहिचक्षुर्म उर्व्या विभाहि श्रोत्रं मे श्लोकय।

अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात्पाहि दिवो वृष्टिमेरय॥ ४॥ प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्॥ ५॥ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥ ६॥

ध्यानम्

वन्दे नाथं स्फटिक-सदृशं भैरवं भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी-नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं
हस्ताग्राभ्यां सुदृढवपुषं शूल-दण्डोपधानम्॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

आचार्य निम्न मन्त्र और पौराणिक श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

पिण्डिकामन्त्रहोमः

आचार्य पूर्व में बताये गए पिण्डिका मन्त्र से (वाहन मन्त्र से और परिवार' देवता मन्त्रों से) प्रत्येक के लिए अट्ठाईस बार तिल द्वारा कुण्ड में हवन करवाके भैरव देवता के लिए निम्न वैदिक मन्त्र से एक सौ आठ बार चरु द्वारा कुण्ड में हवन करावें। **ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥**

वाहनहोमः

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए भैरव देवता के वाहन श्वान का हवन यजमान से करावें—

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिꣳहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः स्वाहा॥

भैरवायुधहोमः

ॐ वज्राय स्वाहा। ॐ दण्डाय स्वाहा। ॐ खड्गाय स्वाहा। ॐ पाशाय स्वाहा। ॐ ध्वजाय स्वाहा। ॐ अङ्कुशाय स्वाहा। ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ॐ पद्माय स्वाहा।

वाहनपूजनम्

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें—

ॐ लोकानुग्रहहेत्त्वर्थं स्थिरो भव सुखासनः।
सान्निध्यं हि सदा देव प्रत्यहं परिकल्पय॥ १॥
माभूत्पूजा विरामोऽस्मिन् यजमानः समृद्ध्यताम्।
संपालय सतां राष्ट्रं सर्वोपद्रववर्जितम्।
क्षेमेण वृद्धिमतुलां सुखमक्षय्यमश्नुताम्॥ २॥

आचार्य प्रासाद के बाहर इन्द्रादियों का अक्षतपुंजों पर यजमान से आवाहन करवाके पूजन करावें तथा प्रासाद के बाहर अक्षतपुंजों पर भैरव देवता के वाहन श्वान का यजमान से आवाहन करवाके उनका पूजन करावें।

भैरवदेवस्य पादनाभिवक्षःस्थलादिस्पर्शने अष्टौ मन्त्राः

आचार्य ‘[१]यज्जाग्रतो, [२]तस्माद्विराडजायत, [३]सहस्रशीर्षा, [४]अभित्वा शूर [५]पुरुष एवेदं, [६]त्रिपादूर्ध्व, [७]येनेदं भूतं, [८]न त्वावाँ अन्यो’ इन आठ मन्त्रों क उच्चारण करके जल से भैरव देवता की मूर्ति के चरणों का स्पर्श यजमान से करावें, यह पहला पर्याय है। पुनः इन्हीं आठ मन्त्रों का उच्चारण कर भैरव देवता की मूर्ति के नाभि का जल द्वारा यजमान से स्पर्श करावें, यह दूसरा पर्याय है। तीसरी बार इन्हीं आठ मन्त्रों उच्चारण कर भैरव देवता की मूर्ति के वक्षःस्थल का जल द्वारा यजमान से स्पर्श करावें। यह तीसरा पर्याय है और चौथी बार पुनः इन्हीं आठ मन्त्रों का उच्चारण कर भैरव देवता की मूर्ति के सिर का स्पर्श जल द्वारा यजमान से करावें। यह चौथा पर्याय है। इस प्रकार चार बार इन आठों मन्त्रों का जप करें, कुल जप बत्तीस बार ही होता है।

---

१. यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं यदु सुप्तस्य तथैवेति। दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

२. तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥

३. सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

४. अभित्वा शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥

५. पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

६. त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥

७. येनेदं भूतं भवनं भविष्यत्परि गृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ येनेदं सर्व जगतो बभूव यद्देवा अपि महतो जातवेदाः। यदेवाग्यं तपसो ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

८. न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते। अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे॥

भैरवपूजनम्

ध्यानम्

वन्दे नाथं स्फटिक-सदृशं भैरवं भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी-नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं
हस्ताग्राभ्यां सुदृढवपुषं शूल-दण्डोपधानम्॥ १॥
करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्य्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति विरुदनाथः सिद्धिदो भैरवाख्यः॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
हे देव भैरव स्थाने इष्टे चात्र स्थितो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

पाद्यम्

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिर्ठ० सीः पुरुषं जगत्॥
गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। पादयो पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना ऽअसत्॥

नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। अर्घ्यं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषार्ठ० हेड ऽईमहे॥

गङ्गा - सरस्वती - रेवा - पयोष्णी - नर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। पयःस्नानं समर्पयामि।
पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्

ॐ दधिक्राब्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूर्ठ०षि तारिषत्॥

पयसस्त समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। दधिस्नानं समर्पयामि।
दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानम्

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।
घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्

ॐ मधु वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वाद मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। मधुस्नानं समर्पयामि।
मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्

ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्ये सन्तꣳसमाहितम्। अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि।
शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

पंचामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानम्

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः.
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।'
मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धादकस्नानं समर्पयामि। आचमनायं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। वस्त्रं च समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथ मा सदत्स्वः।
वासो ऽअग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो॥
उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। उपवस्त्रं च समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरं नमः॥
ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतयेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
यज्ञोपवितान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि।

गन्धम्

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो वप॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। कनिष्ठामूलगताङ्गुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

भस्मम्

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सर्ठ० सृज्यमातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः॥
सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। भस्मं समर्पयामि।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्रते हरी॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन पुष्पमालां सम०।

बिल्वपत्राणि

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। बिल्पत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाम्

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

तुलसीमञ्जरीम्

ॐ शिवो भव प्रजाब्भ्यो मानुषीब्भ्यस्त्वमङ्गिरः।
मा द्यावापृथिवी अभिशोचीर्मान्तरिक्षं मा वनस्पतीन्॥
मिलत्परिमलामोदभृङ्गसङ्गीतसंस्तुताम्।
तुलसीमञ्जरीं मञ्जु अञ्जसा स्वीकुरु प्रभो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। तुलसीमञ्जरीं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यम्

ॐ अहिंरिव भोगैः पर्ब्बेति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमार्ठ०सं परि पातु विश्वतः॥
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शुघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा ऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दनूर्मिभिः पिन्वमानः॥
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यसुखवर्द्धनम्।
शुभदं चैव माङ्गल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

आवरणपूजनम्

१. प्रथमावरणम्—ह्रां वां हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा शिरःपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥ ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट् शिखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥ ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुम् कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥ ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ६॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥

प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया प्रथमावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

२. द्वितीयावरणम्—ततः कर्णिकाद्बहिरष्टदले प्राच्यादिक्रमेण—

ॐ ह्रीं आं असिताङ्गभैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १॥ ॐ ह्रीं ईं रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ २॥ ॐ ह्रीं ऊं चण्डभैरवाय नमः, चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ३॥ ॐ ह्रीं ॠं क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ४॥ ॐ ह्रीं लृं उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ५॥ ॐ ह्रीं ऐं कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ६॥ ॐ ह्रीं औं भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ७॥

ॐ ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ८ ॥ ॐ इत्यष्टौ भैरवान् संपूज्य त्रिकोणे पूर्वादिकोणेषु—ॐ सत्त्वाय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥ २॥

द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया द्वितीयावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

३. तृतीयावरणम्—त्रिकोणाद्बहिः षट्कोणे पूर्वादिक्रमेण—ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः, भूतनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः, आदिनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ २॥ ॐ ह्रीं आनन्दनाथाय नमः, आनन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ३॥ ॐ ह्रीं सिद्धशाबरनाथाय नमः, सिद्धशाबरनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ४॥ ॐ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः, सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ५॥ ॐ ह्रीं निः सीमानन्दनाथाय नमः, सीमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ६॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥ ३॥

तृतीयावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया तृतीयावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

४. चतुर्थावरणम्—ततो वर्तुले पूर्वादिक्रमेण—ॐ ह्रीं डाकिनीपुत्रेभ्यो नमः, डाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १॥ ॐ ह्रीं राकिनीपुत्रेभ्यो नमः, राकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ २॥ ॐ ह्रीं लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः, लाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ३॥ ॐ ह्रीं काकिनीपुत्रेभ्यो नमः, काकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ४॥ ॐ ह्रीं शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः, शाकिनीपुत्रश्रीपादुकां

पूजयामि तर्पयामि ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः, हाकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं याकिनीपुत्रेभ्यो नमः, याकिनीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं देवीपुत्रेभ्यो नमः, देवीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ८ ॥ देवदक्षिणतः । ॐ ह्रीं उमापुत्रेभ्यो नमः, उमापुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः, रुद्रपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं मातृपुत्रेभ्यो नमः, मातृपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ११ ॥ पश्चिमनैर्ऋत्यर्मध्ये । ॐ ह्रीं ऊर्ध्वमुखीपुत्रेभ्यो नमः, ऊर्ध्वमुखीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १२ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये । ॐ ह्रीं अधोमुखीपुत्रेभ्यो नमः, अधोमुखीपुत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १३ ॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ ४ ॥

चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः । पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । अनया पूजया चतुर्थावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

५. पञ्चमावरणम्—वर्तुलाद्बहिः पूर्वाद्याग्नेयान्तं क्रमेण वामावर्तेन च पूर्वे—ॐ ह्रीं ब्रह्माणीपुत्रभैरवाय नमः, ब्रह्माणीपुत्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १ ॥ ऐशान्ये—ॐ ह्रीं माहेश्वरीपुत्रभैरवाय नमः, माहेश्वरीपुत्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ २ ॥ उत्तरे—ॐ ह्रीं वैष्णवीपुत्रभैरवाय नमः, वैष्णवीपुत्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ३ ॥ वायव्ये—ॐ ह्रीं कौमारीपुत्रभैरवाय नमः, कौमारीपुत्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ४ ॥ पश्चिमे—ॐ ह्रीं ब्रह्माणीपुत्रभैरवाय नमः, ब्रह्माणीपुत्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये—ॐ ह्रीं महालक्ष्मीपुत्रभैरवाय नमः, महालक्ष्मीपुत्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ६ ॥ दक्षिणे—ॐ ह्रीं वाराहीपुत्रभैरवाय नमः, वाराहीपुत्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ७ ॥ आग्नेये—ॐ ह्रीं

चामुण्डापुत्रभैरवाय नमः, चामुण्डापुत्रभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ८॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥ ५॥

पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया पञ्चमावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

६. षष्ठावरणम्—अष्टदलाद्बहिः चतुरस्राभ्यन्तरे इंद्रादिक्रमेण प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिदशदिक्षु च पूर्वे—ॐ ह्रीं हेतुकाय नमः, हेतुकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १॥ आग्नेये—ॐ ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः, त्रिपुरान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ २॥ दक्षिणे—ॐ ह्रीं वैतालाय नमः, वैतालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ३॥ नैर्ऋत्ये—ॐ ह्रीं अग्निजिह्वाय नमः, अग्निजिह्वाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ४॥ पश्चिमे—ॐ ह्रीं कालान्तकाय नमः, कालान्तकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ५॥ वायव्ये—ॐ ह्रीं कारालाय नमः, करालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ६॥ उत्तरे—ॐ ह्रीं एकपादाय नमः, एकपादश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ७॥ ऐशान्ये—ॐ ह्रीं भीमरूपाय नमः, भीमरूपश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये—ॐ ह्रीं अचलाय नमः, अचलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ९॥ नैर्ऋत्य-दक्षिणयोर्मध्ये—ॐ ह्रीं हाटकेशाय नमः, हाटकेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १०॥ पुष्पांजलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्॥ ६॥

षष्ठावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया षष्ठावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

७. सप्तमावरणम्—तत्र त्रिरेखात्मकभूपुरस्य प्रथमरेखायां दिग्विदिगंतरालेषु षोडशस्थानेषु श्रीकंठादिमहासेनान्तान्यजेत्॥

तत्र क्रमः—पूर्वे—ॐ ह्रीं अं श्रीकंठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः, श्रीकंठेशपूर्णोदरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १ ॥ दक्षिणे—ॐ ह्रीं आं अनन्तेशविरजाभ्यां नमः, अनन्तेशविरजाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ २ ॥ पश्चिमे—ॐ ह्रीं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः, सूक्ष्मेशशाल्मलीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ३ ॥ उत्तरे—ॐ ह्रीं ईं त्रिमूर्तीशलोलाक्षीभ्यां नमः, त्रिमूर्तीशलोलाक्षीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ४ ॥ आग्नेय्याम्—ॐ ह्रीं उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः, अमरेशवर्तुलाक्षीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ५ ॥ नैर्ऋत्ये—ॐ ह्रीं ऊं अर्धीशदीर्घघोणाभ्यां नमः, अर्धीशदीर्घघोणाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ६ ॥ वायव्ये—ॐ ह्रीं ऋं भारभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमः, भारभूतीशदीर्घमुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ७ ॥ ऐशान्ये—ॐ ह्रीं ॠं अतिथिशगोमुखीभ्यां नमः, अतिथिशगोमुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ८ ॥ पूर्वाग्निमध्ये—ॐ ह्रीं लृं स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः, स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ९ ॥ दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये—ॐ ह्रीं लॄं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः, हरेशकुण्डोदरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १० ॥ पश्चिमवायुमध्ये—ॐ ह्रीं एं झिंटीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः, झिंटीशोर्ध्वकेशीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ११ ॥ उत्तरेशानमध्ये—ॐ ह्रीं ऐं भौतिककेशविकृतमुखीभ्यां नमः, भौतिककेशविकृतमुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १२ ॥ अग्निदक्षिणमध्ये—ॐ ह्रीं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः, सद्योजातेशज्वालामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १३ ॥ निर्ऋतिवरुणमध्ये—ॐ ह्रीं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः, अनुग्रहेशोल्कामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १४ ॥ वायुसोममध्ये—ह्रीं अं अक्रूरेशमुखीभ्यां नमः, अक्रूरेशमुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १५ ॥ ईशानपूर्वमध्ये—ॐ ह्रीं अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः, महासेनेशविद्यामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १६ ॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥ ७॥

सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया सप्तमावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

८. अष्टमावरणम्—तत्र क्रमः—पूर्वे—**ॐ ह्रीं कं क्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः, क्रोधीशमहाकालीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १॥** दक्षिणे—**ॐ ह्रीं खं चण्डीशसरस्वतीभ्यां नमः, चण्डीशसरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ २॥** पश्चिमे—**ॐ ह्रीं गं पञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः, पञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ३॥** उत्तरे—**ॐ ह्रीं घं शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाभ्यां नमः, शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ४॥** आग्नेय्याम्—**ॐ ह्रीं ङं एकरुद्रशेमंत्रशक्तिभ्यां नमः, एकरुद्रशेमंत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ५॥** नैर्ऋत्ये—**ॐ ह्रीं चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः, कूर्मेशात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ६॥** वायव्ये—**ॐ ह्रीं छं एकनेत्रेशभूतमातृकाभ्यां नमः, एकनेत्रेशभूतमातृकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ७॥** ऐशान्ये—**ॐ ह्रीं जं चतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः, चतुराननेशलम्बोदरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ८॥** पूर्वाग्निमध्ये—**ॐ ह्रीं झं अजेशद्राविणभ्यां नमः, अजेशद्राविणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ९॥** दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये—**ॐ ह्रीं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः, सर्वेशनागरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १०॥** पश्चिमवायुमध्ये—**ॐ ह्रीं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः, सोमेशखेचरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ११॥** उत्तरेशानमध्ये—**ॐ ह्रीं ठं लांगलीशमञ्जरीभ्यां नमः, लांगलीशमञ्जरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १२॥** आग्नेययाम्यमध्ये—**ॐ ह्रीं डं दारुकेशरूपिणीभ्यां नमः, दारुकेशरूपिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १३॥** नैर्ऋतपश्चिममध्ये—**ॐ ह्रीं ढं**

अर्धनारीशवीरणीभ्यां नमः, अर्धनारीशवीरणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १४॥ वायुसोममध्ये—ॐ ह्रीं णं उमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः, उमाकान्तेशकाकोदरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १५॥ ईशानपूर्वमध्ये—ॐ ह्रीं तं आषाढेशपूतनाभ्यां नमः, आषाढेशपूतना-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १६॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्॥ ८॥

अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया अष्टमावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

९. नवमावरणम्—ततो भूपुरस्य तृतीयरेखायां दिग्विदिगन्तरालेषु षोडशस्थानेषु दण्डीश्वरादिभृग्वीशांतान् पूजयेत्। तत्र क्रमः—पूर्वे—ॐ ह्रीं थं दण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः, दंडीशभद्रकालीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १॥ दक्षिणे—ॐ ह्रीं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः, अत्रीश-योगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ २॥ पश्चिमे—ॐ ह्रीं धं मीनेशशंखिनीभ्यां नमः, मीनेशशंखिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ३॥ उत्तरे—ॐ ह्रीं नं मेषेशगर्जनीभ्यां नमः, मेषेशगर्जनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ४॥ आग्नेयाम्—ॐ ह्रीं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः, लोहितेशकालरात्रिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ५॥ नैर्ऋत्ये—ॐ ह्रीं फं शिखीशकुब्जिकाभ्यां नमः, शिखीशकुब्जिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ६॥ वायव्ये—ॐ ह्रीं बं छागलेशकपर्दिनीभ्यां नमः, छागलेशकपर्दिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ७॥ ऐशान्ये—ॐ ह्रीं भं द्विरण्डशवज्रिणीभ्यां नमः, द्विरण्डशवज्रिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ८॥ पूर्वाग्निमध्ये—ॐ ह्रीं मं महाकालेशजयाभ्यां नमः, महाकालेशजयाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ९॥ दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये—ॐ ह्रीं यं त्वगात्मभ्यां बालेशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः, बालेशसुमुखेश्वरी-

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १० ॥ पश्चिमवायव्यमध्ये—ॐ ह्रीं रं असृगात्मभ्यां भुजङ्गेशरेवतीभ्यां नमः, भुजंगेशरेवतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ११ ॥ उत्तरेशानयोर्मध्ये—ॐ ह्रीं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः, पिनाकीशमाधवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १२ ॥ आग्नेयदक्षिणमध्ये—ॐ ह्रीं वं वेदात्मभ्यां खड्गीशवारीणीभ्यां नमः, खड्गीशवारीणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १३ ॥ नैर्ऋत्यपश्चिममध्ये—ॐ ह्रीं शं अस्थ्यात्मभ्यां बकेशवायवीभ्यां नमः, बकेशवायवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १४ ॥ वायुसोममध्ये—ॐ ह्रीं षं मज्जात्मभ्यां नमः । श्वेतेशरक्षोवधारिणीभ्यां नमः, श्वेतेशरक्षोवधारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १५ ॥ ईशानपूर्वमध्ये—ॐ ह्रीं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः, भृग्वीशसहजाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १६ ॥

ततो भूपुराद्बहिः देवदक्षिणतः लकुलीशादित्रयं पूजयेत् । तत्र क्रमः—ॐ ह्रीं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः, लकुलीशलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशव्यापिनीभ्यां नमः, शिवेशव्यापिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेशमहामायाभ्यां नमः, संवर्तकेशमहामयाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति पूजयेत् ।

ऐशान्ये—ॐ ह्रीं योगिनीसहितेभ्यो दिव्ययोगीश्वरेभ्यां नमः, योगिनीसहितदिव्ययोगीश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ १ ॥ आग्नेये—ॐ ह्रीं योगिनीसहितेभ्योऽन्तरिक्षस्थयोगीश्वरेभ्यो नमः, योगिनीसहितान्तरिक्षस्थयोगीश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ २ ॥ नैर्ऋत्ये—ॐ ह्रीं योगिनीसहितभूमिस्थयोगीश्वरेभ्यो नमः, योगिनी सहितभूमिस्थयोगीश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ३ ॥ पूर्वे—गं गणपतये नमः, गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ४ ॥ दक्षिणे—भैं भैरवाय नमः, भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ५ ॥ पश्चिमे—क्षं क्षेत्रपालाय नमः,

क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ६॥ उत्तरे—दुं दुर्गायै नमः दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ७॥ पुष्पांजलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥ ९॥

नवमावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया नवमावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

१०. दशमावरणम्—ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण दशदिक्षु इन्द्रादीन् दशदिक्पालान् पूजयेत्। तत्र क्रम—ॐ ह्रीं लं इंद्राय नमः, इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १॥ ॐ ह्रीं रं अग्नये नमः, अग्निश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ २॥ ॐ ह्रीं मं यमाय नमः, यमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ३॥ ॐ ह्रीं क्षं निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ४॥ ॐ ह्रीं वं वरुणाय नमः, वरुणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ५॥ ॐ ह्रीं यं वायवे नमः, वायुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ६॥ ॐ ह्रीं सों सोमाय नमः, सोमश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ७॥ ॐ ह्रीं हं ईशानाय नमः, ईशानश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये—ॐ ह्रीं आं ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ ९॥ वरुणनिर्ऋतयोर्मध्ये—ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः, अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि॥ १०॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्॥ १०॥

दशमावरणदेवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया दशमावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

११. एकादशावरणम्—ततः इन्द्रादि समीपे—ॐ वं वज्राय नमः॥ १॥ ॐ शं शक्तये नमः॥ २॥ ॐ दं दण्डाय नमः॥ ३॥ ॐ खं खड्गाय नमः॥ ४॥ ॐ पां पाशाय नमः॥ ५॥ ॐ अं अंकुशाय नमः॥ ६॥ ॐ गं

गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशावरणार्चनम्॥ ११ ॥

समस्तवरणदेवताभ्यो नमः (एकादशावरणदेवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि)।

अनया पूजया एकादशावरणदेवताभ्यो नमः (समस्तावरण) देवताः प्रीयन्तां न मम।

भैरवाष्टोत्तरशतनामभिस्तुलसी-दूर्वा-अक्षतादिभिः पूजयेत्—

ॐ भैरवाय नमः। ॐ भूतनाथाय नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ क्षेत्रदाय नमः। ॐ क्षत्रियाय नमः। ॐ विराजे नमः। ॐ श्मशानवासिने नमः। ॐ मांसाशिने नमः। ॐ खर्पराशिने नमः। ॐ स्मरान्तकाय नमः। ॐ रक्तपाय नमः। ॐ पानपाय नमः। ॐ सिद्धाय नमः। ॐ सिद्धिदाय नमः। ॐ सिद्धिसेविताय नमः। ॐ कङ्कालाय नमः। ॐ कालशमनाय नमः। ॐ कलाकाष्ठातनवे नमः। ॐ कवये नमः। ॐ त्रिनेत्राय नमः। ॐ बहुनेत्राय नमः। ॐ पिङ्गललोचनाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ खड्गपाणये नमः। ॐ कङ्कालिने नमः। ॐ धूम्रलोचनाय नमः। ॐ अभीरवे नमः। ॐ भैरवीनाथाय नमः। ॐ भूतपाय नमः। ॐ योगिनीपतये नमः। ॐ धनदाय नमः। ॐ धनहारिणे नमः। ॐ धनवते नमः। ॐ प्रतिभानवते नमः। ॐ नागहाराय नमः। ॐ नागकेशाय नमः। ॐ व्योमकेशाय नमः। ॐ कपालभृते नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ कपालमालिने नमः। ॐ कमनीयाय नमः। ॐ कलानिधये नभः। ॐ त्रिलोचनाय नमः। ॐ ज्वलन्नेत्राय नमः। ॐ त्रिशिखिने नमः। ॐ त्रिलोकपाय नमः। ॐ त्रिनेत्रतनयाय नमः। ॐ डिम्भाय नमः। ॐ शान्ताय नमः।

ॐ शान्तजनप्रियाय नमः । ॐ बटुकाय नमः । ॐ बहुवेषाय नमः । ॐ खट्वाङ्गवरधारकाय नमः । ॐ भूताध्यक्षाय नमः । ॐ पशुपतये नमः । ॐ भिक्षुकाय नमः । ॐ परिचारकाय नमः । ॐ धूर्ताय नमः । ॐ दिगम्बराय नमः । ॐ शौरिणे नमः । ॐ हरिणाय नमः । ॐ पाण्डुलोचनाय नमः । ॐ प्रशान्ताय नमः । ॐ शान्तिदाय नमः । ॐ सिद्धाय नमः । ॐ शङ्करप्रियबान्धवाय नमः । ॐ अष्टमूर्तये नमः । ॐ निधीशाय नमः । ॐ ज्ञानचक्षुषे नमः । ॐ तपोमयाय नमः । ॐ अष्टाधाराय नमः । ॐ षडाधाराय नमः । ॐ सर्पयुक्ताय नमः । ॐ शिखीसख्ये नमः । ॐ भूधराय नमः । ॐ भूधराधीशाय नमः । ॐ भूपतये नमः । ॐ भूधरात्मजाय नमः । ॐ कङ्कालधारिणे नमः । ॐ मुण्डिने नमः । ॐ नागयज्ञोपवीतकाय नमः । ॐ जृम्भणाय नमः । ॐ मोहनाय नमः । ॐ स्तम्भिने नमः । ॐ मारणाय नमः । ॐ क्षोभणाय नमः । ॐ शुद्धाय नमः । ॐ नीलाञ्जनप्रख्याय नमः । ॐ दैत्यघ्ने नमः । ॐ मुण्डभूषिताय नमः । ॐ बलिभुजे नमः । ॐ बलिभुङ्नाथाय नमः । ॐ बालाय नमः । ॐ बालपराक्रमाय नमः । ॐ सर्वापत्तारणाय नमः । ॐ दुर्गाय नमः । ॐ दुष्टभूतनिषेविताय नमः । ॐ कामिने नमः । ॐ कलानिधये नमः । ॐ कान्ताय नमः । ॐ कामिनीवशकृद्वशिने नमः । ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः । ॐ वैद्याय नमः । ॐ प्रभवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

धूपम्

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टमहस्ते वभूव ते धनुः ।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्यया परिभुज ॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः । तर्जनीमूलरङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्मिन्निधेहि तम्॥
साज्यं च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं च गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्।

नैवेद्यम्

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥
नैवेद्यं गृह्यता देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारो भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि।

ऋतुफलम्

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः॥
नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।
भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम्

ॐ नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यां तव धन्वने॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूणसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। दक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनम्

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्यकादश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्॥ १॥
आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदार्ठ०सि बृहती वि तिष्ठस ऽआ त्वेषं वर्त्तते तमः॥ २॥
इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसनयभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वनं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥ ३॥

ॐ जै भैरव स्वामी, प्रभु तुम अन्तर्यामी।
काल कपाली कलानिधि, तुम त्रिभुवनगामी॥
ॐ जै भैरव स्वामी
तुम त्रिलोक के मालिक, खण्ड चन्द्रधारी।
शिव स्वरूप कपाली-कपाली भक्तन अघहारी॥
ॐ जै भैरव स्वामी

कर त्रिशूल अरु डमरु, खप्पर मन मोहे।
मणिमय किङ्गिण नूपूर, चरण कमल सोहे॥
ॐ जै भैरव स्वामी

स्वच्छ स्फटिक सम कुण्डल, कानन मह राजो।
स्वान सुशोभित डमरु, डिम डिम डिम बाजै॥
ॐ जै भैरव स्वामी

भूतप्रेत सब नाचत, गावत बैताला।
मदमाते मतवाले, पीते मधु प्याला॥
ॐ जै भैरव स्वामी

भैरवजी की, आरती जो नर-नारी गावे।
पाप ताप मिट जावै सुख सम्पत्ति पावे॥
ॐ जै भैरव स्वामी

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

मंत्रपुष्पाञ्जलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाठं॰ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मासि॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं श्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्कामकामाया मह्यं कामेश्वरो वै श्रवणो ददातु॥ कुबेराय वै श्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्य भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायि स्यात् सार्वभौमस्सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति तदप्येष-श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं ब्राहुभ्यां धमति सं पतत्त्रैर्द्यावाभूर्मा जनयन्देव एकः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तो गृहाण परमेश्वर॥

भैरव गायत्री—**श्रीभैरवं च विद्महे भीमदेवं च धीमहि। भैरवो नः प्रचोदयात्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वसिद्धिकराय भैरवाय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

नमस्कारान्

नमो भैरवरूपाय भैरवाय्र नमोः नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जयदाय नमो नमः॥ १॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः।
नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः॥ २॥
नमः कंकालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते।
नमस्त्र्यंबककरूपाय महाकालाय ते नमः॥ ३॥

नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः।
क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः॥ ४॥
नमो नागविनाशाय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातङ्गरूपाय भाररूप नमोऽस्तु ते॥ ५॥
नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने॥ ६॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमः सङ्कटनाशाय शङ्कराय नमो नमः॥ ७॥
नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः।
नमोऽनन्तस्वरूपाय एकरूप नमोऽस्तुते॥ ८॥
नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिकार नमोऽस्तुते।
नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः॥ ९॥

क्षमापनम्

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥
कर्मणा मनसा वाचा पूजनं यन्मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वर॥

॥ इति भैरवपूजनम्॥

पूजनसामग्रीदानम्

नामकरणसंस्कारोपरान्ते—ततः—भैरवदेवस्य करिष्यमाण—नित्यपूजोपकरणानि ताम्रकलशम्, शङ्खम्, धूप-दीप-नैवेद्य-पात्राणि, पुष्पपात्रम्, ताम्बूलपात्रम्, रुद्राक्षमालाम्, पादुके, ग्रैवेयकम्, करचरणभूषणादिकम्, नित्यपूजोत्सवभोगरागाद्यर्थं ग्रामक्षेत्रद्रव्यादिकं, घण्टां, व्यजनं, उपधानादिसामग्रीसहितां शय्यां च देवोद्देशेनोत्सृजेत्।

शान्त्यादिहोमः

आचार्य और ब्राह्मण सर्वशान्ति के लिए निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान से एक सौ आठ बार कुण्ड में गौ-घृत से हवन करावें—**ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्व्वेभ्यः सर्वशर्व्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥**

अग्निपूजनम्

आचार्य और ब्राह्मण निम्न वैदिक मंत्र और वाक्य का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता का पूजन करावें—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युधोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम॥

वाक्य—**ॐ स्वाहा-स्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः। इत्यनेनाऽग्निं सम्पूजयेत्।**

स्विष्टकृद्धवनम्

यजमान और उसकी धर्मपत्नी को खड़ा करवाके आचार्य बचे हुए शाकल का हवन निम्न वाक्य का उच्चारण करवाके कुण्ड में करावें—**ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।** यजमान निम्न वाक्य का उच्चारण करके स्रुव में बचे हुए घृत को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ दे—**इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।**

भूरादिनवाहुतिः

आचार्य और ब्राह्मण निम्न नाम मन्त्रों तथा मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से कुण्ड में आहुति प्रदान करावें—

ॐ भूः स्वाहा— इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳫंसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।

ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणᳫं रराणो वीहि मृडीकᳫं सुहवो न एधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजᳫं स्वाहा।। इदमग्नये अयसे न मम।।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्न्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायादित्यादितये न मम।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।।

बलिदानम्

यजमानः दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—
देशकालौ संकीर्त्य, अस्य कृतस्य भैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं सदीपमाषभक्तबलिदानं पायसबलिदानं वा करिष्ये।

वास्तुदेवानां पूर्वं बलिर्न कृतश्चेदत्र कुर्यात्। वस्तुतस्तु वास्तुदेवताभ्योऽत्रैव बलिदानं युक्तम्, पूर्वं मयूखादावनुक्तत्वात्। स

चेत्थम्—'शिखिने एव पायसबलिर्नमः। इत्येवं तत्तन्नाम्ना बलिं दद्यात्। यद्वाशिरव्यादिवास्तुदेवताभ्यो नमः' अमुं पायसबलिं समर्पयामि। भो! वास्तुदेवता पायसबलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्किर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन वास्तुदेवताः प्रीयन्ताम्। ततः—'वास्तोष्पत्यन्तेभ्यः सूर्यादिग्रहेभ्यो नमः' पायसबलिं समर्पयामि। भो! भो! वास्तोष्पत्यन्ताः सूर्यादिग्रहाः पायसबलिं गृह्णीत मम यजमानस्य अनेन बलिदानेन वास्तोष्पत्यन्ताः सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्।

सतिसम्भवे—ॐ ब्रह्मादिमण्डलदेवताभ्यो नमः। ॐ योगिनीभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रपालेभ्यो नमः माषभक्तबलिं समर्पयामि। भो! भो! ब्रह्मादिमं० भो! भो! योगिनीदेवताः भो! भो! क्षेत्रपालदेवताः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तार, वरदा भवत। अनेन बलिदानेन०।

क्षेत्रपालबलिः

यजमानः दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्य भैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालादिप्रीत्यर्थं भूत-प्रेत-पिशाचादिनिवृत्यर्थं च सार्वभौतिक-बलिप्रदानं करिष्ये।

एक बाँस आदि के पात्र में कुशां को बिछाकर उनके ऊपर मनुष्य के आहार के चौगुना अथवा दोगुना अथवा दही, उड़द और जलपात्र रखकर चतुर्मुख दीप जलाकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः॥

‘ॐ क्षेत्रपालाय नमः’ यह कहकर क्षेत्रपाल की पोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार से पूजा करके निम्न श्लोकों का उच्चारण करके प्रार्थना करें—

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भव च सर्वदा॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥

यजमानः बलिदानार्थं स्वदक्षिणहस्ते जलं गृहीत्वा—क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्मराक्षस-गणसहिताय इमं कुङ्कुम-रक्तपुष्पादियुतं सदीपं सताम्बूलं सदक्षिणं दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि। भोः क्षेत्रपाल! सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्।

बलिं गृहणन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः (नगाः)॥ १॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगरक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥ २॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरानगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥ ३॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखावहाः॥ ४॥
भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र॥ ५॥

इसके बाद नापित क्षेत्रपालबलि को अपने दोनों हाथों में उठाकर यजमान के मस्तक पर घुमाकर चौराहे पर जाकर रख दें, अब यजमान की ओर न देखें।

निम्न मंत्र का उच्चारण करके यजमान के मस्तक पर दूर्वा के द्वारा आचार्य जल छिड़कें—

ॐ हिङ्कारराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्क्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्घ्राताय स्वाहा निविष्ट्ाय स्वाहो पविष्ट्ाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहासर्ठ० हानायस्वाहोपस्स्थिताय स्वाहा ऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥

पूर्णाहुतिः

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय संकल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्ये।

आचार्य नारियल को लाल वस्त्र में लपेटकर बारह, छः अथवा चार बार स्रुवा से घृत निकालकर, शुचि में रख उसके ऊपर नारियल के गोला को स्थापित कर ' ॐ पूर्णाहुत्यै नमः ' कहकर यजमान से षोडशोपचार से पूजन कराकर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए हवन करावें—

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ२॥ उदारदुपार्ठ०शुना सममृतत्वमानट्।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां मृतस्य नाभिः॥ १ ॥
वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः।
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्॥ २ ॥
चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २॥ आविवेश॥ ३ ॥

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्।
इन्द्र एकꣳ सूर्य एकं जजान वेनादेकꣳ स्वधया निष्टतक्षुः॥ ४ ॥
एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे।
घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्॥ ५ ॥
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः।
एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणो रीषमाणाः॥ ६ ॥
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥ ७ ॥
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥ ८ ॥
कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते॥ ९ ॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ १० ॥
धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्॥ ११ ॥
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः॥
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ १२ ॥
मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ १३ ॥
पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो॥ १४ ॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम।

वसोर्द्धाराहोमः

संकल्पः—यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय संकल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं कृतस्य सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं वसोर्द्धारां होष्यामि।

दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा नानालङ्कारभूषिताः।
वसोर्द्धारा महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा॥
शुद्धस्फटिकसंकाशा दिव्यायुधकरावृताः।
एकभोगाः साक्षसूत्राः वसोर्द्धारा नता वयम्॥

ततः कुण्डोपरि वसोर्द्धारां प्रागग्रां निधाय तदुपरि घृतपूरितेन ताम्रादिपात्रधृतेनाधोयवमात्रछिद्रेणाज्यं विमुञ्चतोऽग्नेरुपरि वसोर्द्धारां पातयेत्। वसोर्द्धारायाः मुखं सुवर्णनिर्मितजिह्वां बध्नीयात्। तस्यां च घृतधारायां पतन्त्यां स्रुक्प्रणालिकयाऽग्नौ पतन्त्यां इमान् मन्त्रान् पठेत्।

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि।
सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा॥ १ ॥
शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च।
ज्योतिष्मांश्चा शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यर्ठ० हाः॥ २ ॥
ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ्। मितश्च संमितश्च सभराः॥ ३ ॥
ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारयः॥ ४ ॥
ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च।
अन्तिमित्रश्च दूरे अमित्रश्च गणः॥ ५ ॥
ईदृक्षास एतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन।
मितासश्च संमितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्॥ ६ ॥
स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च।
क्रीडी च शाकी चोज्जेषी॥ ७ ॥

इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्।
एवमिमं यजमानं दैविश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु॥ ८ ॥
इमर्ठ० स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये।
उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्समुद्रियर्ठ० सदनमाविशस्व॥ ९ ॥
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य यो निर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥ १०॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

रुद्रसूक्तम्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो तऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ १ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिर्ठ० सीः पुरुषं जगत् ॥ ३ ॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिं जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत्॥ ४॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक। अहींश्च सर्वां जम्भयनत्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव॥ ५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषार्ठ० हेड ईमहे ॥ ६ ॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽ अदृश्रनदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥ ७ ॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करनमः ॥ ८ ॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगंवो वप॥ ९ ॥ विज्यन्धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ ॥ उत। अनेशनस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ १० ॥ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ११ ॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य

इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्॥ १२॥ अवतत्त्य धनुष्ट्वर्ठं० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीय शल्यां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ १३॥ नमस्तऽ आयुधायानाततायधृष्णवे। उमाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने॥ १४॥ मानो महान्तमुत मा नोऽ अर्भकमा नऽ उक्षितम्। मानो वधीः पितरमोत मातरमानः प्रियास्तन्वोरुद्र रीरिषः॥ १५॥ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥ १६॥ (शु.य.सं. १६/१-१६)

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः॥ ११॥

यजमान हवनोपरान्त जो घृतादि शेप हो उसे प्रोक्षणीपात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ दें—‘**ॐ इदमग्नये वैश्वानराय न मम।**’

अग्निप्रदक्षिणा:

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता की प्रदक्षिणा करवायें—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥

आचार्य पश्चिम दिशा की ओर आसन पर बैठकर निम्न पौराणक श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता की प्रार्थना करावें—

जितन्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज॥ १॥
देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवतम्।
सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव॥ २॥
एकस्त्वमसि लोकस्य स्त्रष्टा संहारकस्तथा।
अव्यक्तश्चानुमन्ता च गुणमाया समावृतः॥ ३॥

संसारसागरं घोरमनन्तक्लेशभाजनम्।
त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः॥४॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै होमात्मने नमः॥५॥

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

हवन कुण्ड से स्रुव द्वारा भस्म निकालकर आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए अनामिका अंगुली से यजमान के शरीर के अंगों में भस्म लगावे—**ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः-ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्-ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्-दक्षिण बाहुमूले। ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्-हृदि।**

तदुपरान्त प्रोक्षणीपात्र में स्थित घृत को यजमान सूँघे और दो बार आचमन करके प्रणीतापात्र में रखी हुई पवित्री से प्रणीता जल को अपने मस्तक पर छिड़के और उन दोनो कुशाओं का अग्नि में परित्याग कर दे।

पूर्णपात्रदानम्

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्तये च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।

यजमान संकल्प करके ब्रह्मा को पूर्णपात्र प्रदान करे और ब्रह्मा इस वाक्य का उच्चारण करे—**ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।** अग्नि के पीछे जलयुक्त पात्र को यजमान उलट दे।

पुनः आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करे—**ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।** इसके उपरान्त ही यजमान प्रणीतापात्र के जल से मार्जन करे, पुनः अग्नि में पवित्री को छोड़ देवें। इसके बाद ही आचार्य अवभृथस्नान कर्म यजमान से करावें।

श्रेयोदानम्

कृतस्य भैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य 'शिवा आपः सन्तु' इति यजमानदक्षिणहस्ते जलं दद्यात्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पं दद्यात्। अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति अक्षतान् दद्यात्। ततो आचार्यः हस्ते जलाक्षतपूगीफलमादाय भवन्नियोगेन मया अस्मिन् भैरवप्रतिष्ठाकर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्रह्मगाणपत्यसदस्योपद्रष्टजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं जपहवनादिकं च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे, तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वान भव।

आचार्य यह कहकर यजमान को फल आदि दे और यजमान '**भवामि**' इस वाक्य का उच्चारण कर उसे ग्रहण करे। इसके बाद ही 'अवभृथस्नान' करें।

आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम्

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

गोदानम्

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम् अमुकदासोऽहम्) कृतस्य सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

भूयसीदक्षिणासंकल्पः

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतेऽस्मिन् सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणि न्यूनांतिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो नट-नर्तक-गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

ब्राह्मणभोजनसंकल्पः

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। (भोजयिष्यामि)

उत्तरपूजनम्

ततः यजमानः प्रधानपीठादीनां विशेषतः भैरवस्य षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

प्रधानपीठादिदानसंकल्पः

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिमानि सोपस्करसहितानि प्रधानपीठादीनि आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

अभिषेकः

मण्डप में प्रधानवेदी के उत्तर की ओर यजमान के अभिषेक के लिए भद्रासन बिछावें। तदनन्तर आचार्य और अन्य ऋत्विजों के साथ वहाँ पूर्व की

ओर मुख कर बैठे हुए यजमान और उसके वामभाग में बैठी हुई उसकी धर्मपत्नी का निम्न मंत्रों से अभिषेक करें—

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ १॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ २॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ३॥

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ४॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ५॥

यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ ६॥

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ७॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ ८॥

पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ ९॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव॥ १०॥

पौराणिकमन्त्रैरभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥ १॥

प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥ २॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ ३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥ ४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजा॥ ५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः॥ ६॥
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥ ७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये॥ ८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामाऽर्थसिद्धये॥ ९॥

अभिपेक की समाप्ति के पश्चात् यजमान की पत्नी अपने पति के दाहिनी ओर बैठ जाए।

घृतच्छायापात्रदानम्

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य सप्रासादभैरवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये।

यजमान एक कांसे के चौड़े मुख के पात्र में घृत भरकर उसमें दक्षिणा सहित सुवर्ण छोड़कर अपने मुख की छाया को देखें। उस समय आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागा तुथो वो विश्ववेदा विभजतु।
ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यत्तस्व सदस्यैः॥

छायापात्र में मुख देखने के पश्चात् यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण कर उस चौड़े मुख के पात्र को ब्राह्मण को दे—

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) ममैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयसर्वग्रह-पीडा-शान्तिशरीरोत्थार्तिनाशाय प्रासादवाञ्छाऽऽयुरारोग्यादि सर्वसौभाग्य-प्राप्तये सर्वसौख्यप्राप्तये च इदं स्वमुखछायावीक्षिताज्यपूरितकांस्यपात्रं स-सुवर्णं सदक्षिणाकं श्रीरुद्रदैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।'

प्रार्थना

याऽलक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वाङ्गं समुपस्थितम्।
तत्सर्वं नाशयाऽऽज्य! त्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय॥ १॥
आज्यं सुराणामहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम्।
आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम॥ २॥

क्षमाप्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥
कर्मणा मनसा वाचा प्रतिष्ठेयं मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरः॥

विसर्जनम्

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य सप्रासाद भैरवप्रतिष्ठाकर्माङ्गत्वेन देवविसर्जनं कर्म करिष्ये। इति सङ्कल्पय स्थापितदेवानग्निं च सानुनयं पुष्पाक्षतैर्विश्रीजेत् ।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥

यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनि गच्छ स्वाहा।
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ १॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन॥ २॥

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ ३॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ ४॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥ ५॥

यजमानः—'ॐ विष्णवे नमः' इति त्रिर्वदेत्।

प्रासादे ध्वजारोपणम्

स च प्रासादसमः तदर्धं तदर्धं वा दैर्घ्ये, षोडशभागेन तदर्धेन तदर्धे वा विस्तृतो मूले। ध्वजदण्डस्तु चतुर्दशहस्तो नवहस्तो वा देवेन सहैवाधिवासनीयोऽयं ध्वजः। गन्धाद्यैः पूजयित्वा प्रासादसमीपमानीय तस्मिन् ध्वजे शैवं पाशुपतं महास्त्रं विन्यसेदेभिर्मन्त्रैः—

सूर्यकोटिसहस्राभं प्रलयाम्बुदनिस्वनम्।
प्रदीप्तदशनप्राणं प्रकाशं मुखकन्दरम्॥
त्र्यक्षं तडिल्लताजिह्वं प्रदीप्तश्मश्रुमूर्द्धजम्।
सर्वोपवीतं शूलासिशक्तिमुद्गरधारिणम्॥
चतुर्हस्तं चतुर्वक्त्रं सूर्यचन्द्रार्धशेखरम्।
देवदानवदैत्यानां दर्पितानां विनाशनम्॥

अत्र ध्वजे भैरवदेवतालिङ्गसूचनाय श्वानं[1] यस्य यद्वाहनं तत् सौवर्णं राजतं वा तस्य मध्येऽधिवास्य सम्पूज्य बन्धनीयम्। अथ तं ध्वजं प्रासादपृष्ठे नैर्ऋतभागे मारुते वा ईशाने वा सशिखरप्रासादपञ्चमांशेन

---

१. ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः॥

चतुर्थेन तृतीयेन वा ध्वजस्तम्भधारं कृत्वा तत्रारोपयित्वाऽनुमन्त्रयेदेभिर्मन्त्रैः—

शान्तिरस्तु शिवञ्चास्तु स्थानस्याय शुभं तथा।
प्राणिनः सुखिनः सन्तु राजा च विजयी भवेत्॥
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव।
दुरितं यत्समस्तानां सत् क्रियायै धुनोतु सः॥
प्रजाहानिश्च दुर्भिक्षं माभूज्जगति सर्वदा।
त्वत्प्रसादाच्च तत्सर्वं शुभं भवतु वो नमः॥

भैरवप्रतिष्ठायां चतुर्थीकर्म

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ सङ्कीर्त्य, भैरवप्रतिष्ठाङ्गत्वेन विहित श्रीभैरवचतुर्थीकर्म करिष्ये।

संकल्प के उपरान्त—प्रथमेऽहनि—कुङ्कुमेन भैरवं लेपयित्वा पूजयेत्। द्वितीयदिने—हरिद्रासिद्धार्थचूर्णेन। तृतीयदिने—पिष्टसितचन्दनचूर्णेन। चतुर्थदिने—मनःशिलाप्रियङ्गुचूर्णेन। पञ्चमे दिने—कृष्णाञ्जनतिलचूर्णेन। षष्ठे दिने—रक्तचन्दनपद्मकेशरचूर्णेन। सप्तमे दिने—गोरोचननागकेसरचूर्णेन।

उपरोक्त लेपन द्रव्यों को गौघृत में मिलावें। तदुपरान्त चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादि से भैरव देवता का पूजन करवाकर आचार्य उन्हीं के निम्न मन्त्र द्वारा अट्ठाईस बार घृत की आहुति कुण्ड में यजमान से प्रदान करावें—

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाठं० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥

जिस समय निम्न मन्त्र का उच्चारण हो, उस समय आचार्य अपने दाहिने हाथ में और वरण किए हुए ब्राह्मणों के भी दायें हाथ में यजमान से मौली बँधवावें। **ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात्॥**

इसके बाद यजमान आचार्य सहित सभी ब्रह्मणों का पूजन कर उनको दक्षिणा प्रदान करे।

यजमानरक्षाबन्धनमन्त्रः

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम्॥

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनमन्त्रः

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः॥

यजमानतिलककरणम्

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान के मस्तक पर कुमकुम के द्वारा तिलक करें—

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये॥

तदुपरान्त आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके तिलक के मध्य में अक्षत लगावें—

येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।
ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयचछामि तेन ते शं सदा भवेत्॥

आशीर्वादमन्त्राः

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ १॥

दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्॥ २॥
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ ३॥

ॐ यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे।
तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम्॥ १॥
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ २॥

श्रीर्वर्च्चस्वमायुष्यारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ १॥
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र-पौत्रस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते॥ २॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥ ३॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥ ४॥

आचार्य सहित सभी ब्राह्मणों को भैरव देवता की प्रतिष्ठा का प्रसाद खिलाकर ही सपत्नीक यजमान अपने पारिवारिकजनों, इष्टमित्रों व बन्धु-बान्धवों के साथ प्रसन्नचित्त होकर महाप्रसाद को ग्रहण करें।

॥ इति भैरवप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥

परिशिष्टो भागः

प्रायश्चित्तम्

भैरव देवता की प्रतिष्ठा करने की इच्छा रखनेवाला मनुष्य प्रथम दिन से पूर्व किसी शुभ दिन में प्रतिष्ठा के अधिकार की सिद्धि के लिये छः वर्षीय, तीन वर्षीय या डेढ़ वर्षीय क्रमशः एक सौ अस्सी, नब्बे, पैंतालीस संख्या की गायों के मूल्य के समान द्रव्य सामने रखकर सर्वप्रथम प्रायश्चित्त करे। यदि शक्ति हो तो भींगे वस्त्र में चार, सात, बारह, अट्ठारह, चौबीस अथवा अट्ठाईस धर्माधिकारी सभ्यों की प्रदक्षिणा करके निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करे—

ॐ समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितागःकुलधूमकेतवः।
अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
विप्रौघदर्शनात्सद्यः क्षीयन्ते पापराशयः।
वन्दनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम्॥
आधिव्याधिहरं नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम्।
श्रीपुष्टिकीर्तिदं वन्दे विप्रश्रीपादपङ्कजम्॥

तदुपरान्त ब्राह्मण यजमान से पूछें—

किन्ते कार्यं वदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज।
तत्त्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः॥
(सत्येन द्योतते सूर्यः सत्येन द्योतते शशी।
सत्येन द्योतते वह्निः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥)
अस्माकं चैव सर्वेषां (सत्यमेव परा गतिः) सत्यमेव परं बलम्।
यदि चेद्रक्षसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे (सुखम्) शुभम्॥
यद्यागतोऽस्यसत्येन न त्वं शुद्ध्यसि कर्हिचित्।
स्वल्पं वाऽथ प्रभूतं वा धर्मविद्भ्यो निवेदयेत्।
रहस्यकृतपापानि उपांशुं न च संस्मरेत्॥

ऐसा पूछने पर गन्ध, अक्षत और पुष्प से ब्राह्मणों की पूजा करके गौ एवं वृष के मूल्य को उनके सामने रखकर यजमान निम्न संकल्प करे—

ॐ तत्सदद्य करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन इदं गोवृषनिष्क्रयद्रव्यं सभ्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये। ब्राह्मण लोग उस द्रव्य को आपस में विभाजित कर लेवें।

ततः प्रायश्चित्तो ब्रूयात्—अमुकस्य मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम-सकृदसकृत्कृत - कायिक - वाचिक - मानसिक - सांसर्गिक - स्पृष्टास्पृष्ट - भुक्ताभुक्त - पीतापीत - सकल-पातकातिपातकोपपातकलघुपातक - सङ्करीकरण - मलिनीकरणा-पात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां निरासार्थमनुगृह्य प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः। (पुत्रादिश्चेदाचरति तदा ममास्य पित्रादेः इति वाच्यम्।)

ब्राह्मणप्रार्थना

आ ब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं भवद्वशमिदं जगत्।
यक्षरक्षःपिशाचादिसदेवासुरमानुषम् ॥
सर्वे धर्मविवेक्तारो गोप्तारः सकला द्विजाः।
मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः॥
मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम्।
प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत।
पूज्यैः कृतः पवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमैः॥

(पुत्रादिश्चेत्प्रायश्चित्तकर्ता तदा अस्मच्छब्दस्थाने 'अस्य', 'एतत्कृतम्', 'प्रसादः क्रियतामस्य', 'पवित्रोऽयं भवेच्च' इत्यादि-वाच्यम्) ततः 'मामनुगृह्णन्तु भवन्तः' इत्युक्त्वा पुनः प्रणमेत्। (मामित्यत्र 'एतम्' इत्यन्यकर्तृके) ततो गन्धाक्षतपुष्पैः पुस्तकं सम्पूज्य गोमूल्यं निबन्धपूजात्वेन निवेदयेदित्याचारः। ततोऽनुवादकं सम्पूज्य

तस्मै दक्षिणां दद्यात्। ततः—अनुवादकस्याग्रे—'अमुकशर्मणस्तव' जन्मप्रभृत्यद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकाम-सकृदसकृत्कृत-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपातकातिपातकोपपातक-लघुपातक-सङ्करीकरण-मलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं सभ्यैरुपदिष्टं षडब्द-त्र्यब्द-सार्द्धाब्दान्यतमं सर्वप्रायश्चितं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वारा पूर्वाङ्गोत्तराङ्गयतं त्वयाऽऽचरितव्यं तेन तव (पित्रादेः) शुद्धिर्भविष्यति तेन त्वं कृतार्थो भविष्यसि (तव पित्रादिः कृतार्थो भविष्यति) इति ब्रूहि इति वदेत् ततः सभ्येन प्रेरितोऽनुवादकः—(इत्येनमुपदेशं प्रायश्चित्तिनं प्रति त्रिर्ब्रूया-दिति मयूखे) 'भवदनुग्रहः' इति वदेत् पर्षदं विसृजेच्च।

प्रधानप्रतिज्ञासंकल्पम्

कुशयवतिलजलान्यादाय—श्रीमदनन्तवीर्यस्य आदित्यनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमे अव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डयोर्मध्ये आधारशक्तिवराहकूर्मानन्ताद्यष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठिते सप्तपातालोपरिभागे सप्तान्तलोकषट्कस्याधोभागे महाकालायमानशेषस्य सहस्त्रफणामणिमण्डिते दिग्दन्तिदन्तशुण्डादण्डोत्तम्भिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षुसुरासर्पिदधिक्षीरोदकार्णवपरिवृतेजम्बूप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौञ्चशाकपुष्करसप्तद्वीपमण्डिते कांस्यताम्रगभस्तिनागगन्धर्वचारणभारतादिनवखण्डखण्डिते भारतवर्षे भरतखण्डे अयोध्या - मथुरा -माया - काशी-काञ्च्यवन्ती - द्वारवती - कुरुक्षेत्र - पुष्करादिनानातीर्थयुक्तकर्मभूमौ (मध्यरेखायाः पूर्वदिग्भागे भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) जगत्स्त्रष्टुः

परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे तस्य प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते प्रथमघटिकायां सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे विक्रमशके वर्तमानेऽमुकनाम्नि संवत्सरे उत्तरायणे सूर्ये (दक्षिणायन सूर्ये) अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशिष्टे देशे काले च अमुकशर्मणो मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम-सकृदसकृत्कृत्-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपातकातिपातकोपपातक-लघुपातकसङ्करीकरणमलिनीकरणापात्रीकरण-जातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां क्षयद्वारा भैरवप्रतिष्ठाकर्माधिकारार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गोमूल्यदानरूपप्रत्याम्नायद्वाराऽहमाचरिष्ये।

संकल्पः—प्रारीप्सितप्रायश्चित्तस्याङ्गत्वेन केशश्मश्रुनखानि वापयिष्ये (वप्स्ये)।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान की शिखा को ऊपर करके नीचे और चारो ओर के केशों का वपन करावें—

ॐ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।
केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान् वपाम्यहम्॥

तदुपरान्त—

ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते॥
ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वर्ठ० सोमो राजाऽयमागमत्।
स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च॥

उपरोक्त मन्त्रों से बारह अंगुल के अपामार्ग आदि के काष्ठ के द्वारा पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर, मुख की दुर्गन्धि के नाश के लिए दन्तधावन करके चुपचाप मार्जनात्मक स्नान कर निम्न संकल्प करें—

करिष्यमाण-प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन यजमानशरीरसम्बन्धसमस्तपाप-क्षयार्थं भस्मादिभिर्दशविधस्नानानि करिष्ये। ऐसा संकल्प करके वहाँ पहले श्रौत या स्मार्त भस्म से स्नान करे अथवा उसके अभाव में अन्य भस्म को लेकर बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढँककर—**ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वठं० हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंसि भस्मानि।** इस मन्त्र से भस्म का अभिमन्त्रण करके कहें—**ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्—शिरसि। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र प्रचोदयात्—मुखे। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः शर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः—हृदये। ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः—गुह्ये। ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः—पादयोः। 'ॐ'** इस प्रणव के द्वारा मस्तक से लेकर पैर तक सभी अंगों में भस्म लपेटे। उसके बाद शुद्ध गोबर लेकर—

ॐ अग्रमग्रचरन्तीनामोषधीनां रसं वने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।
यन्मे रोगं च शोकं च नुद गोमय सर्वदा॥

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सूर्य को दिखावें—**ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।**

यजमान इस मन्त्र से दक्षिण हाथ से गृहीत गोमय के द्वारा सिर से नाभि पर्यन्त और बायें हाथ से गृहीत गोमय के द्वारा नाभि से पैर तक लेप करे। देश के भेद से मन्त्र की आहुति होती है। तदुपरान्त मिट्टी लेकर निम्न तीन श्लोकों का उच्चारण करे—

ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्ष मां त्वं पदे पदे॥ १॥
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥ २॥
मृत्तिके हर मे पापं यद्दैवं यच्च मानुषम्।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्।
त्वया हतेन पापेन जीवामि शरदां शतम्॥ ३॥

पुनः—**ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतर्ठ० सपर्यत॥ दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय सर्ठ० सत॥** इस मन्त्र से सूर्य को दिखाकर। **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥** इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए गोबर का लेपन करे। इसके बाद जल से स्नान करे। **ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वर्ठ०हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीः॥** इस मन्त्र से नदी आदि में डुबकी लगावे—**ॐ उदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि॥** इस मन्त्र से उन्मंजन करे।

नदी के अभाव में—**ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पार्ठ०सुरे स्वाहा॥** इस मन्त्र से स्नान करे। शक्ति के अभाव में—
ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ १॥
ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिवमातरः॥ २॥
तस्माऽअरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा चनः॥ ३॥

उपरोक्त तीन मन्त्रों से क्रमानुसार मार्जन करे। गायत्री मन्त्र से गोबर की तरह गोमूत्र भी शरीर में लपेटे, पुनः पूर्व की तरह गोबर लपेटे।

इस मन्त्र का उच्चारण करके दधि लपेटे—**ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके दधि लपेटे—**ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूठ०षि तारिषत्॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके घृत लपेटे—**ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥ इति घृतमनुलिप्य॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके कुशा के जल से स्नान करे—**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे शिवनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्॥** उसके बाद नाभिमात्र जल में बैठे हुए स्नान और तर्पण करें।

यजमान नवीन यज्ञोपवीत धारण करके पूर्वाभिमुख होकर अक्षत और जल लेकर—**ॐ ब्रह्मादिदेवांस्तर्पयामि। ॐ भूर्देवांस्तर्पयामि। ॐ भुवर्देवांस्तर्पयामि। ॐ स्वर्देवांस्तर्पयामि। ॐ भूर्भुवः स्वर्देवांस्तबर्पयामि।** इन मन्त्रों से एक-एक अंजलि देवतीर्थ से प्रदत्त कर, उत्तर मुख होकर माला की तरह जनेऊ को धारण कर यव और जल से प्राजापत्यतीर्थ से—**ॐ कृष्णद्वैपायनादिऋषींस्त०। ॐ भूऋर्षींस्त०। ॐ भुवः ऋषींस्त०। ॐ स्वर्ऋषींस्त०। ॐ भूर्भुवः स्वर्ऋषींस्त०।** इन मन्त्रों के द्वारा दो-दो अंजलि जल देकर, दक्षिणाभिमुख होकर, अपसव्य होकर पितृतीर्थ से तिल और जल के द्वारा—**सोमं, पितृमन्तं, यमं अग्निष्वात्तं कव्यवाहनादीस्त०। भूः पितृँस्त०। भुवः पितृँस्त०। स्वः पितृँस्त०। भूर्भुवः स्व पितृँस्त०।**

इस प्रकार से तर्पण करके तीर पर आकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके तट पर एक अंजलि जल छोड़े—

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम्॥

निम्न श्लोक का उच्चारण करके तीर पर वस्त्र निचोड़कर सव्य होवे—

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यक्ष्म का तर्पण करें—

ॐ यन्मया दूषितं तोयं शरीरमलसंभवात्।
तद्दोषपरिहारार्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम्॥

पुनः निम्न श्लोक का उच्चारण करे—

ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मया दुष्कृतं कृतम्।
तत्क्षमस्वाखिलं देवि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

यजमान धुले हुए वस्त्रों को धारण करके आसन पर बैठकर—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।** इन तीन नाममन्त्रों का उच्चारण करके आचमन करे। इसके उपरान्त—**ॐ ऋषिकेशाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः** का उच्चारण करके अपने हाथों को शुद्ध जल से धोवे।

यजमान भस्म से त्रिपुण्ड या चन्दन आदि से उर्ध्वपुण्ड करके पार्वण विधि से विष्णुश्राद्ध का संकल्प करे। या शालिग्राम शिला पर श्वेत चन्दन आदि से भगवान् विष्णु की षोडशोपचार पूजा करके निम्न संकल्प करे—'**ब्राह्मणचतुष्टयं विष्णूद्देशेन भोजयिष्ये—ब्राह्मणचतुष्टयपर्याप्तं भोजनमिष्टलड्डुकादिकम् आमान्नं तन्निष्क्रयं वा दास्ये। इति तेन श्रीभगवान् पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।**

यही प्रायश्चिताङ्ग विष्णुश्राद्ध है, ऐसा कहा जाता है।

संकल्पः—ततः प्रायश्चित्ताधिकारसिद्ध्यर्थं प्रारीप्सितप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहितगोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्ति गोमूल्यं सुवर्णादिद्रव्यं वह्न्यादिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे इति दत्वा, महाव्याहृतिभिराज्येनाष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वा होमं करिष्ये।

स्थण्डिल पर तीन कुशाओं से तीन बार परिसम्मूहन करके गोबर और जल से तीन बार लीपे, स्रुवे से उत्तरोत्तर क्रम से प्रागग्र तीन रेखा स्थण्डिल तक अथवा प्रादेशमात्र करके अनामिका व अंगूठे से, जिस क्रम से रेखा की गई है। उसी क्रम से रेखाओं पर से मिट्टी उठाकर ईशानकोण में फेके,

मणिकपात्र के रहने पर उसके जल से, उसके अभाव में कमण्डलु के जल से न्युब्ज हाथ से जल छिड़के, इस प्रकार पञ्चभूसंस्कारों को करके कांस्यपात्र में स्थित 'विधि' नामक लौकिक अग्नि को वेदी पर स्वाभिमुख स्थापित करें। स्थापित करने का मन्त्र निम्न है—

ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२॥ ऽआसादयादिह॥ इस मन्त्र से अग्नि की स्थापना करके अग्नि से उत्तर आचार्य और ब्रह्मा का यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण करके वरण करे—**अद्य अमुकोऽहं प्रायश्चित्तहोमकर्मणि आचार्यब्रह्मणोः पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये।** ऐसा संकल्प करके गन्ध, अक्षत और पुष्प से आचार्य और ब्रह्मा की पूजा करके वरण सामग्री लेकर निम्न संकल्प के द्वारा आचार्य का वरण करे—**देशकालौ संकीर्त्य, करिष्यमाणामुकहोमकर्मणि आचार्यकर्मणि आचार्यकर्मकर्तुमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोस्मीति प्रत्युक्तिर्ब्रह्मणः।**

वरण के पश्चात् यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य की प्रार्थना करे—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥

तदुपरान्त यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण करके ब्रह्मा का वरण करे—**देशकालौ संकीर्त्य, प्रायश्चित्तहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादिब्रह्मकर्मकर्तुं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।**

ब्रह्माणं प्रार्थयेत्

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरो विभुः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ १॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं यज्ञोयं विधिपूर्वकम्॥ २॥
अस्मिन् होमकर्मणि त्वं मे आचार्यो भव।
अहं भवानीति प्रत्युक्तिः त्वं मे ब्रह्मा भव॥ ३॥

भवानीति प्रत्युक्तिः। इति वरणं विधाय अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनं पीठं कुशैराच्छाद्य अग्नेरुत्तरतः पूर्वं वृत्तं ब्रह्माणं तत्रोपवेश्य प्रतिनिधिभूत आचार्य आत्मासनमग्नेः पश्चात्, यजमानासनञ्चाग्नेरुत्तरतः प्रागग्रैः कुशैः सम्पाद्य अग्नेरुत्तरतः पश्चिमभागे एकमासनं पूर्वभागे द्वितीयमासनं प्रागग्रैः कुशैः कल्पयित्वा प्रणीतापात्रं द्वादशाङ्गुलदीर्घं चतुरङ्गुलखातं सव्यहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्तोद्धृतपात्रस्थजलेनापूर्य दर्भैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य पश्चिमासने निधाय आलभ्य पूर्वासने निदध्यात्। पूर्वादिदिक्षु प्रागग्रैरुदगग्रैश्च त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिश्चतुर्भिर्वा कुशैरग्निं परिस्तरेत्। पुरस्ताद्दक्षिणतः पश्चादुत्तरतः। तत्र पुरस्तात् पश्चाच्च उदगग्रैः, दक्षिणत उत्तरतश्च प्रागग्रैः। ततः अर्थवन्ति वस्तुनो अग्नेः पश्चिमतः प्राक्संस्थानि प्राग्बिलान्युदगग्राणि, उत्तरतश्चेत् उदक्संस्थानि उदग्बिलानि प्रागग्राणि कार्यक्रमेण द्वन्द्वमासादयेत्। पवित्रच्छेदनानि त्रीणि कुशतरुणानि, द्वे पवित्रे साग्ने अनन्तर्गर्भे, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, सम्मार्जनकुशाः त्रयः पञ्च वा, उपयमनकुशास्त्रिप्रभृतयस्त्रयोदशपर्यन्ताः, समिधस्तिस्त्रः पालाश्यः प्रादेशमात्र्यः, स्रुवः खादिरः, गव्यमाज्यम्, पूर्णपात्रं षट्पञ्चाशदधिकमुष्टिशतद्वयं तण्डुलपूरितं वा, बहुभोक्तुः पुरुषाहारपरिमितं वा, कर्मोपयोगिनी दक्षिणा, गौर्ब्राह्मणस्य वरः, इत्युक्तो वरो वा। एतानि वस्तूनि अग्नेः पश्चात् प्राक्संस्थानि स्थापयेत्। पात्रासादनानन्तरमुपकल्पनीयानि सुवर्णरजत-ताम्र-पद्मपलाशादिपात्रं, यज्ञियकाष्ठं, हरितानि सप्ताधिकानि कुशपत्राणि, पञ्चगव्यं च, गोमूत्रादि पृथक् पृथगिति। तत्र पात्राणि प्रागानीतान्युदगग्राणि स्थापयेत्। त्रिभिर्दर्भैः द्वे प्रच्छिद्य प्रादेशमात्रे पवित्रे कुर्यात्। प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकमासिच्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय दक्षिणेन हस्तेन प्रोक्षणीपात्रमुत्थाय सव्ये कृत्वा तदुदकं दक्षिणेनोच्छाल्य (दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकाङ्गुल्योर्मध्यपर्वभ्यां जलस्योच्छालनं

कृत्वा) प्रणीतोदकेन प्रोक्षेदिति प्रोक्षणीसंस्कारः। पवित्राभ्यां प्रोक्षणीभिरद्भिः, आज्यस्थालीमुत्तानहस्तेन देवतीर्थेन संप्रोक्ष्य, सम्मार्जनकुशान्, उपयमनकुशान्, समिधः तिस्रः, स्रुवम्, आज्यम्, पूर्णपात्रम्, दक्षिणाश्च। सादनक्रमेणैकैकशः संप्रोक्ष्य, असञ्चरे अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं सपवित्रं स्थापयेत्। आसादितमग्नेः पश्चान्निहितायामाज्यस्थाल्यामाज्यं गृहीत्वा अग्नावारोपयेत्। अधिश्रिते आज्ये ज्वलदुल्मुकमाज्यस्य समन्ताद् भ्रामयेत्। दक्षिणेन स्रुवमधोमुखं प्राञ्चं प्रतप्य सव्ये कृत्वा सम्मार्जनकुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तम्, कुशमूलैः अधस्ताद्भागे अग्रमारभ्य मूलपर्यन्तम् सम्मार्जनकुशान् अग्नौ प्रहरेत्। ततः प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य कराभ्यां सम्मार्ज्य आत्मनो दक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात्। आज्यमुत्तार्य उत्तरतः स्थापयित्वा अग्नेः पश्चात् आनयेत्। अङ्गुष्ठाभ्याम् अनामिकाभ्यां च धृताभ्याम् उदगग्राभ्याम् पूर्वपवित्राभ्याम् आज्यं उत्पूय अवेक्ष्य अपद्रव्यनिरसनं कृत्वा प्रोक्षणीश्च पूर्वपवित्राभ्याम् उत्पूय तासु पवित्रे निदध्यात् उपयमनकुशान् दक्षिणेनादाय वामहस्ते कृत्वा पवित्रे प्रणीतासु निदध्यात्। ततः विधिनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव इति प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत्—

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम्॥ १॥
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः।
विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु॥ २॥

विधिनाम्ने अग्नये नमः। इति संपूज्य रेखाः पूजयेत्—पूर्वरेखायाम्, ॐ ब्रह्मणे नमः। मध्यरेखायाम्—ॐ विष्णवे नमः। उत्तररेखायाम्—ॐ रुद्राय नमः।

ततो अग्निजिह्वापूजनम्—ॐ करात्यै नमः। ॐ धूमिन्यै नमः। ॐ श्वेतायै नमः। ॐ लोहितायै नमः। ॐ महालोहिंतायै नमः। ॐ सुवर्णायै नमः। ॐ पद्मरागायै नमः।

इस प्रकार जिह्वाओं की पूजा करके दाहिने घुटने को मोड़कर ब्रह्मा से आरभ्य करके प्रज्वलित अग्नि में मौन होकर घृत द्वारा स्रुवे से निम्न क्रम द्वारा हवन करे—**ॐ प्रजापतये स्वाहा—इति मनसा ध्यायन् हविर्द्रव्यमग्नौ प्रक्षिप्य इदं प्रजापतये न मम—इति त्यागं मनसा कृत्वा हुतशेषं प्रोक्षणीपात्रे क्षिपेत्, एवं सर्वत्र। ततः—ॐ इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय न मम। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय न मम। इत्याज्यभागौ च हुत्वा।**

ततः—अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिः वाऽऽज्याहुतीनां व्यस्तसमस्ताभिर्महाव्याहृतिहोमः। ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा—इदं प्रजापतये न मम। एवं सप्तवारं कृते अष्टाविंशतिराहुतयः।

ब्रह्मकूर्चहोमः—सुवर्णादिपात्रे गायत्र्या गोमूत्रम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ गोमयम्॥ ॐ आप्यायस्व समे तु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ दुग्धम्॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत्॥ दधि॥ ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामना धृष्टं देवयजनमसि॥ घृतम्॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥

इस प्रकार कुशोदक का संग्रह करके 'प्रणव' से आलोडित करके यज्ञीय काष्ठ के द्वारा मथकर पुनः 'प्रणव' से अभिमन्त्रित करके सात से अधिक हरे दर्भ (कुश) पत्र से पञ्चगव्य द्वारा निम्न मन्त्रों से होम करे—**ॐ इरावती धेनुमती हि भूतः सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥ इदं पृथिव्यै न मम॥ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ इदं विष्णवे न मम॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा॥ इदं**

रुद्राय न मम॥ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा॥ इदमद्भ्यो न मम॥ ॐ अग्नये स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय न मम। भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥ इदं सवित्रे न मम। ॐ स्वाहा—इदं परमेष्ठिने न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा—इदं प्रजापतये न मम। इति हुत्वा पञ्चगव्यमिश्राज्येन—ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा—इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥ इति स्विष्टकृद्धोमः॥

उसके बाद—**भो विप्रा व्रतग्रहणं करिष्ये।** ऐसी ब्राह्मणों से यजमान प्रार्थना करे—**ॐ कुरुष्व**—ऐसी ब्राह्मणों से आज्ञा पाकर हुतशेष पञ्चगव्य को प्रणव से शब्द न करते हुए पीवें। इस दिन दूसरा आहार छोड़ दे, अशक्ति में दूध आदि का आहार करे, उसके बाद रात्रि बिताकर दूसरे दिन अथवा उसी दिन देयद्रव्य की पूजा करके कुश, यव, तिल और जल लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ स्मृत्वा, मम (पित्रादेः) जन्मप्रभृत्यद्य यावत् इत्यादि निरासार्थम् इत्यन्तमुल्लिख्य इमानि अशीत्यधिकनवतिपञ्चचत्वारिंशत् अन्यतमसङ्ख्याककृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतानां गवां मूल्यभूतानि पूर्वोक्तान्यतमसङ्ख्याकानि सुवर्णनिष्काणि, तदर्धानि, तदर्धार्धानि वा चन्द्रदैवतानि पणद्वत्रिंशत्कानि वा सूर्यदैवतानि कार्षापणानि वा ब्राह्मणेभ्यो यथाकालं दास्ये। ॐ तत्सत् न मम—इति सङ्कल्प्य दद्यात्।**

पुनः—**ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम। इति सप्तकृत्वः सप्तविंशतिकृत्वो वा हुत्वा, ततो ब्रह्मणान्वारब्धः-ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम।**

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठा अस्या

उषसा व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो नऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजर्ठ० स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्न्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्र्वैमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं प्रजापतये न मम॥

ततः—बर्हिर्होमं स्वाहा इति मन्त्रेण कुर्यात्। इदं प्रजापतये न मम। ततः संस्रवप्राशनमवघ्राणं वा कृत्वा द्विराचम्य अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिं स्वाहा इति कुर्यात्। ततः प्रणीताविमोकमग्नेः पश्चिमतः कुर्यात्।

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—प्रायश्चित्तहोमकर्मणः साङ्गफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थं पूर्णपूरणार्थं च इदं पूर्णपात्रं सद्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् न मम।

ततः अग्निं प्रार्थयेत्—ॐ सदस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामया सिषर्ठ० स्वाहा॥ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते॥ तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा॥

तदुपरान्त—प्रायश्चित्तोतराङ्गविष्णुश्राद्धसंपत्तये ब्राह्मणचतुष्टयाय पक्वान्नम्-आमान्नं तन्निष्क्रयं वा दास्ये। इस प्रकार संकल्प करके विष्णुश्राद्ध के अनुकल्प भूत अन्न आदि को देकर—प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गत्वेन विहितगोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्तिगोमूल्यं तुभ्यं संप्रददे।

उत्तरगोदान करके वायव्य में उत्तराङ्गभूत अग्नि का पूजन निम्न मन्त्र का उच्चारण करे—ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽ उक्तिं विधेम॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से पूजन करावें—

ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं बलं श्रियम्।
आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥

अब त्र्यायुपकरण करे, जिसकी विधि यह है—अनामिका अंगुली के द्वारा स्रुवे में लगे घी और भस्म को निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने शरीर के अंगों पर लगावे—**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्—हृदि।**

होमाङ्गदक्षिणासङ्कल्पः—प्रायश्चित्तहोमकर्मणः साङ्गफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थं च इमां दक्षिणामाचार्याय तुभ्यं संप्रददे। कृतस्य प्रायश्चित्तकर्मणः साद्गुण्यार्थं पञ्चदश ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि। अस्मिन् प्रायश्चित्तकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं भूयसीं दक्षिणामन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये।

आचार्य निम्न श्लोकों और मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेव का विसर्जन करावें—

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥ १॥
भो भो वह्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक।
कर्मान्तरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्॥ २॥
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ ३॥

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञपते सहसूक्त वाकः सर्ववीरतं जुषस्व स्वाहा॥ १॥ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे॥ २॥

तदुपरान्त तिलक, रक्षाबन्धन, घृतछायादर्शन और आशीर्वाद मन्त्र पाठ आदि करें।

दश दानानि

स्वर्णयुक्त सींगोंवाली, चाँदी से अलंकृत खुरोंवाली, ताम्र से सुशोभित पृष्ठवाली, मुक्ता से युक्त पुच्छवाली, कांसे के दोहन पात्रवाली गाय को नवीन वस्त्र से अलंकृत करके तथा गंधादि के द्वारा पूजित कर निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए यजमान गौ की पूजा करें—**ॐ सवत्सायै गवे नमः**। इस नाममन्त्र से गाय की पूजा करके निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे—

ॐ इरावती धेनुमती हि भूतर्ठ० सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥

ब्राह्मणवरणसंकल्पः—करिष्यमाण-गोदानकर्मणिएभिः वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गोदानप्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

ॐ यदाबन्धन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकायसुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥

उपरोक्त दो मन्त्रों का उच्चारण करके '**ॐ स्वस्ति**' ऐसा ब्राह्मण कहे, यहाँ कुछ लोग गोपुच्छ तर्पण भी करते हैं। (इसलिए) यजमान के दायें हाथ में त्रिकुश, जल, अक्षत, द्रव्य और गोपुच्छ देकर आचार्य निम्न संकल्प करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतानेकपापक्षयपूर्वकं मम गृहे उत्तरोत्तरशुभफलप्राप्त्यर्थं च इमां सवत्सां गां रुद्रदैवत्यां स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां मुक्तालाङ्गूलयुतां कांस्यदोहनवस्त्रायुगच्छन्नां गोरोमसङ्ख्यसहस्त्रावच्छिन्नगोलोकवासकामः गोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे। ततः प्रार्थना—

यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याघौघनाशिनी।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा॥
गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

तदुपरान्त निम्न कामस्तुति का उच्चारण करें—

ॐ कोदात्कस्माऽअदात्कामोदात्कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते॥

इसके बाद **ॐ स्वस्ति** कहें। उसके बाद दान की प्रतिष्ठा करे, इस संकल्प के द्वारा—**कृतैतत् गोदानकर्मणः साङ्गतासंपत्तये गोत्राय शर्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।**

यजमान प्रदक्षिणा करे और आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवे व्यवस्थिता।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

भूदानम्—आचार्य पूर्व की तरह वरण आदि करवाके यजमान से निम्न संकल्प करावें—**अद्येत्यादि गोत्रः शर्मा गोत्राय शर्मणे सालङ्कृताय षष्टिसहस्त्रवर्षमितं वैकुण्ठे विष्णुलोकावाप्तिकामः इमां भूमिं सस्योद्भवां सवृक्षफलपुष्पाद्युपेतां विष्णुदैवतां तुभ्यमहं संप्रददे॥** ब्राह्मण के हाथ में दे। ब्राह्मण भूमि की प्रदक्षिणा करते हुए दान लें और **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** इस मन्त्र का उच्चारण करें और 'स्वस्ति' कहकर प्रार्थना करे—

सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता।
अनन्तसस्यफलदा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
यस्यां रोहन्ति बीजानि वर्षाकाले महीतले।
भूमेः प्रदानात्सकला मम सन्तु मनोरथाः॥

प्रार्थना के पश्चात् यजमान आचार्य सहित ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

तिलदानम्—आचमन से लेकर भूतोत्सादन पर्यन्त कर्म करके तीन द्रोण (पौने तेरह सेर एक पल) अथवा यथाशक्ति तिलों को आगे किसी पात्र या बर्तन में रखकर कुशा, यव आदि लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा श्रीविष्णुप्रीतये तिलदानं करिष्ये।**

प्रतिज्ञा करके यजमान ब्राह्मण की पूजा करके तिलों को पोंछकर—

विष्णोर्देहसमुद्भूताः कुशाः कृष्णतिलास्तथा।
धर्मस्य रक्षणायार्थमेत्प्राहुर्दिवौकसः॥

इस प्रकार पूजा करके '**विष्णुप्रीतये इत्यन्तं पूर्वोक्तमुल्लिख्य इमान् द्रोणत्रय-द्रोणद्वय-एकद्रोणान्यतमपरिमितान् तिलान् प्रजापतिदेवान् सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** ऐसा कहकर ब्राह्मण के हाथ में जलादि देकर—

महर्षेर्गोत्रसंभूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः।
तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु॥

ऐसा कहकर तिलद्रोण का स्पर्श करे। तिलपात्र दान को सोलह पल से निर्मित अथवा यथाशक्ति निर्मित ताम्रपात्र में रखकर यथाशक्ति उसमें सुवर्ण रखकर—

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।
तिलपात्रप्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा॥

पूर्वोक्त विधि से और उपरोक्त मन्त्रविशेष को पढ़ते हुए यथाशक्ति सुवर्ण अथवा उसका मूल्य दक्षिणादान की प्रतिष्ठा की सिद्धि के लिए दे। तिल का मूल्य तिल के परिमाण के अनुसार संकल्प करे।

हिरण्यदानम्—यजमान आचमन से लेकर भूतोत्सादन पर्यन्त गोदान की तरह करके कुश, यव, तिल और जल हाथ में लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, अक्षयस्वर्गकामः, पापक्षयकामः, पितृतारणकामः, ईश्वर-प्रीतिकामो वा सुवर्णदानं करिष्ये।**

ऐसी प्रतिज्ञा करके पुनः यह संकल्प करें—**तदङ्गत्वेन ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणं सुवर्णस्य पूजनं च करिष्ये।** संकल्प के उपरान्त गन्ध आदि के द्वारा ब्राह्मण की पूजा करके पूर्व की तरह वरण करके सुवर्ण का प्रोक्षण करके निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

पुनः यजमान देशकाल का पूर्व की तरह उच्चारण करके तथा उद्देश्य का उच्चारण करके यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, इदं कर्षमात्रं सुवर्णमग्निदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** ऐसा कहकर—

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

इस दानवाक्य का यजमान उच्चारण करके ब्राह्मण के हाथ में कुश और जल के साथ सुवर्ण देवे, उसके बाद सुवर्णदान की दक्षिणा प्रदान करने के लिए निम्न संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, सुवर्णदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।** यह कहकर दक्षिणा देवें और ब्राह्मण इस यजु का उच्चारण करे—**ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** पुनः ब्राह्मण यह कहें—'**ॐ स्वस्ति**' **अग्निदैवतायै सुवर्णं प्रतिगृह्णामि,** ऐसा कहकर ब्राह्मण दान ले ले। इसके उपरान्त इस मन्त्र का उच्चारण करके कामस्तुति पढ़े—**ॐ कोदात्कस्मा-अदात्कामोदात्कामायादात्। कामो दा ता कामः प्रतिग्रहीता कामै तत्ते॥**

आज्यदानम्—चार सेर, दो सेर या एक सेर घृत सामने रखकर पूर्व की तरह दान की प्रतिज्ञा कर ब्राह्मण की पूजा और वरण करके घृत का प्रोक्षण करने के उपरान्त पूजा करके यजमान यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वाराविष्णुप्रीतये इदमाज्यं विष्णुदैवतं (मृत्युञ्जयदैवम्) तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** सुवर्ण की दक्षिणा या उसका मूल्य, दानप्रतिष्ठा की सिद्धि के लिए निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान प्रदान करे—

ॐ कामधेनोः समुद्भूतं देवानामुत्तमं हविः।
आयुर्वृद्धिकरं दातु राज्यं पातु सदैव माम्॥

वस्त्रदानम्—सूक्ष्मतन्तु से बने हुए दो हाथ से ज्यादा चौड़ा और आठ हाथ के लम्बे जिनका किनारा कटा न हो, ऐसे नये दो वस्त्र आगे रखकर पूर्व की तरह दान, प्रतिज्ञा, ब्राह्मणपूजन, वरण, वस्त्रप्रोक्षण एवं पूजन आदि करके

यजमान इस संकल्प करके ब्राह्मण को प्रदान करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम-(पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं वासोयुग्मं बृहस्पतिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे॥ ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें।

निम्न श्लोक को यजमान पढ़कर वस्त्र देवे—

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

सुवर्ण की दक्षिणा अथवा उसका मूल्यदान प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए यजमान ब्राह्मण (आचार्य) को प्रदान करे।

धान्यदानम्—सतहत्तर सेर सोलह पल धान सामने रखकर दानप्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके धान्य का प्रोक्षण और पूजन करके यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं धान्यं प्रजापतिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें।

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान धान्य का दान करे—

सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत्।
प्राणिनो जीवनोपायमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। धान्य का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

गुडदानम्—तीन सेर अथवा यथाशक्ति गुड़ को आगे रखकर दानप्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके गुड़ का प्रोक्षण और पूजन करके यजमान यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इमं गुडं सोमदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें। निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान गुड़ का दान करे—

ॐ यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरश्च जनार्दनः।
सामवेदस्तु वेदानां महादेवस्तु योगिनाम्॥

प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा।
तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः।
मम तस्मात्परालक्ष्मीं ददस्व गुड सर्वदा॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। गुड़ का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

रजतदानम्—तीन पल अथवा एक पल या यथाशक्ति रजत (चाँदी) को आगे रखकर दान-प्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके रजत का प्रोक्षण और पूजन करके यह संकल्प यजमान करे—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं रजतचन्द्रदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवे।

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान रजत का दान करे—

ॐ प्रीतिर्यतः पितॄणां च विष्णुशङ्करयोः सदा।
शिवनेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। रजत का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

लवणदानम्—सतहत्तर सेर सोलह पल अथवा यथाशक्ति लवण को आगे रखकर दानप्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके लवण का प्रोक्षण और पूजन करके यजमान यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं लवणं सोमदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे।** इस संकल्प को पढ़कर देवें।

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान लवण का दान करे—

ॐ यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं विना।
शंभोः प्रीतिकरं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। लवण का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

मंगलस्नानम्

भैरव देवता की प्रतिष्ठा के आयोजन में पहले दिन नित्यक्रिया करके यजमान अपनी पत्नी के साथ उपवास रखकर निम्न संकल्प करके मंगलस्नान करे—

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-भैरवप्रतिष्ठानिमित्तं सपत्नीकोऽहं मङ्गलस्नानं करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् यथायोग्य सर्वौषधि आदि सुगन्धित चूर्णों से और आँवले आदि के सुगन्धित तैल से शरीर पर लेपन कर यजमान स्नान करके आचमन कर मन्त्र के साथ नये ऊपर एवं नीचे के वस्त्रों को धारण करे। उन वस्त्रों को धारण करवाने के लिए आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करे—

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूचो रायस्पोषमभिसंव्यायिष्ये॥ इस मन्त्र से अधोवस्त्र पहनकर यजमान दो बार आचमन करे। इसके बाद—

ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसैन्द्राबृहस्पती।
यशो भगश्च माऽविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्॥

यदि यजमान को नवीन वस्त्र धारण न करवाना हो तो आचार्य मन्त्र का उच्चारण न करे। पत्नी का भी वस्त्र धारण और कंचुकी (चोली) आदि का धारण बिना मन्त्र के ही आचार्य को करवाना चाहिए। (इसी प्रकार संस्कार्य का भी यथासम्भव वस्त्रधारण होना चाहिए) प्रत्येक वस्त्र के धारण पर दो बार आचमन करना चाहिए। सौभाग्य कुमकुम आदि के द्वारा तिलक करना चाहिए। तदुपरान्त गोबर से लिपी हुई रंगवल्ली स्वस्तिक आदि से अलंकृत, शुभ वस्त्र से आच्छादित पवित्र भूमि पर श्रीपर्णी आदि प्रशस्त काठ के पीढ़े पर अथवा कम्बल या कुशा आदि के आसन पर स्वयं पूर्वाभिमुख बैठकर अपने पीढ़े के समान दो पीठों पर पत्नी एवं संस्कार्य को बिठावें। अपने

दाहिने पत्नी होगी और पत्नी के दाहिने संस्कार्य होगा। सभी कर्मों के आरम्भ में किये जानेवाले कर्म की निर्विघ्नता सिद्धि के लिए कुलाचार के अनुसार गणेश अथवा गणेशाम्बिका की पूजा करे। वह इस प्रकार है—शिखा बाँध करके, कच्छा बाँध करके हाथ में कुश लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके पूजन-सामग्री एवं अपने ऊपर यजमान जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

उपरोक्त दो यजुर्मन्त्रों से दाहिने एवं बायें हाथ की अनामिका अंगुली के मूल में अथवा मध्य में क्रमशः पवित्र धारण करके स्मार्तविधि से आचमन करें। वह स्मार्तविधि इस प्रकार से है—आचमन के लिए विहित पात्र में जल लेकर अंगूठे और कनिष्ठिका को पृथक् कर शेष मिली हुई तीन अंगुलियों से युक्त हाथ द्वारा उड़द डूबने भर जल लेकर तीन बार पीवे। तदुपरान्त हाथ को धोकर अंगों का स्पर्श करें, उसका क्रम इस प्रकार से है—अंगूठे के मूल से दो बार मुँह का स्पर्श करके मिली हुई तीन अंगुलियों वाले हाथ से चेहरे का स्पर्श करें। अंगूठा और तर्जनी से दोनों नासिकाओं को अंगूठा और अनामिका से दोनों आँखों को, उन्हीं दोनों से कानों को, कनिष्ठिका और अंगूठे से नाभि को, हाथ के तलवे से हृदय को, सभी अंगुलियों से सिर को, हाथ के अगले भाग से कंधों को स्पर्श करें। एक के लिए एक बार आचमन करके पुनः दूसरी बार तीन आचमन करके पूर्व की तरह अंगों का स्पर्श करें। यह स्मार्त आचमन है। पौराणिक आचमन में तो केशव आदि निम्न चौबीस नामों का उच्चारण करें—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ मधुसूदनाय नमः।**

ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ नारसिंहाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ कृष्णाय नमः।

आचार्य निम्न वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्राणायाम करावें—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो३म्।

उपरोक्त गायत्री मन्त्र का नौ बार उच्चारण करके पहले अंगूठे से दाहिनी नाक का स्पर्श करके मौन होकर नेत्रों को बन्द करके नाभि में स्थित चतुर्भुज भगवान् का ध्यान करते हुए बायीं नासिका से धीरे-धीरे श्वाँस को खींचते हुए तीन बार मन्त्र की आवृत्ति करते हुए पूरक प्राणायाम करे। इसके पश्चात् अंगूठे से दक्षिण नासिका को और अनामिका एवं कनिष्ठिका अंगुली से बायीं नाक को बन्द करके श्वाँस को रोककर हृदय में ब्रह्माजी का ध्यान करके तीन बार उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए कुम्भक प्राणायाम करे। पुनः दाहिनी नाक से अंगूठे को हटाकर अनामिका अंगुली व कनिष्ठिका अंगुली से बायें नाक को बन्द करके श्वाँस को दाहिनी नाक से धीरे-धीरे छोड़ते हुए ललाट में भगवान् शिव का ध्यान करके उपरोक्त मन्त्र को तीन बार पढ़ते हुए रेचक प्राणायाम करे।

तदुपरान्त यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करके रक्षादीप प्रज्वलित करे—

भो दीप! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

आचार्य और ब्राह्मण स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का उच्चारण करें। तदुपरान्त आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान के मस्तक पर तिलक करें—

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्‌गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर तिलक के मध्य में अक्षत लगावें—

येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।
ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्॥

जलयात्रा

ब्राह्मणों से आज्ञा प्राप्त कर यजमान अपनी पत्नी और सुहागिन स्त्रियों और आचार्य सहित ब्राह्मणों को साथ लेकर आठ अथवा नौ कलश लेकर जलाशय को जावें और वहाँ हाथ-पैर धोकर आसन पर बैठकर प्राणायाम करे, तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-भैरवप्रतिष्ठाङ्गभूतत्वेन जलयात्रां करिष्ये। ततो गणपतिवरुणादीन् षोडशोपचारैः पूजयेत्।

पुनः मण्डल के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में पूर्व की तरह तीन कलशों का स्थापन एवं पूजन करे। इसी प्रकार ईशानकोण से लेकर वायव्यकोण तक चारों कोने में चार कलशों की तथा उनके मध्य में वरुण की पूजा करके निम्न प्रार्थना करें।

एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते॥
तीक्ष्णायुधं तीक्ष्णगतिं दिगीशं चराचरेशं वरुणं महान्तम्।
प्रचण्डपाशाङ्कुशवज्रहस्तं भजामि देवं कुलवृद्धिहेतोः॥

आवाहयाम्यहं देवं वरुणं यादसां पतिम्।
प्रतीचीशं जगत्प्राणसेवितं पाशहस्तकम्॥

उपरोक्त श्लोकों द्वारा कलश पर वरुण का आवाहन करके पूजन करें। उसके बाद जलमाताओं की पूजा करें। उसका प्रकार यह है कि अग्निकोण में वस्त्र से ढँकी हुई भूमि पर अक्षत का सातपुञ्ज दक्षिण से उत्तर की ओर बनावें। उनपर–

जलमातृणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः कूर्मिमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः मकरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः जलूकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तूक्यै नमः तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

तदुपरान्त—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिष्ठापन करावें।

पुनः—**ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितमातरः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्।** तदुपरान्त '**ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितजलमातृभ्यो नमः**' यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें। तदुपरान्त जीव माताओं का पूजन वहीं सात अक्षतपुञ्जों का बनाकर मिम्न क्रम से करें—

जीवमातृणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः धनदामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि

स्थापयामि ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः मङ्गलामावाहयामि स्थापयामि ॥५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः अचलावाहयामि स्थापयामि ॥६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

तदुपरान्त—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो३ꣳ प्रतिष्ठ ॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिष्ठापन करावें।

पुनः—**ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्याद्यावाहितजीवमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्।** तदुपरान्त '**ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्याद्यावाहितजीवमातृभ्यो नमः**' यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें।

पुन स्थलमातृकाओं का पूजन करें। वहीं आगे सात अक्षतपुञ्जों को बनाकर—

स्थलमातृणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्यै नमः ऊर्मिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महामायायै नमः महामायामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पानदेव्यै नमः पानदेवीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः वारुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः निर्मलामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गोधायै नमः गोधामावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

तदुपरान्त—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो३ꣳ प्रतिष्ठ ॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिष्ठापन करावें।

पुनः—**ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहितस्थलमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्।** तदुपरान्त—**ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहितस्थलमातृभ्यो नमः।** यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करावें।

इस समय कुछ लोग सप्तसागर के पूजन की भी इच्छा करते हैं। उसकी विधि यह है—सर्वप्रथम अक्षतपुञ्जों पर निम्न मन्त्र से आवाहन करके षोडशोपचार या पञ्चोपचार के द्वारा पूजा करावें। **ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ २॥ उदारदुपाठ० शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभि:॥**

पुन: आचार्य इन्द्रादि दशदिग्पालों का यजमान से आवाहन करवा के पूजन करावें। इस अवसर पर कुछ लोग दिग्पालबलिदान भी करते हैं। इसके उपरान्त आचार्य जलाशय स्थित वरुण का पूजन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से करावें—**ॐ उरुठ०हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्था मन्वेत वाऽ उ। अपदेपादा प्रति धातवेकरुतापवक्ता हृदया विधश्चित्॥ नमो वरुणायाभिष्ठितो वरुणस्य पाश:॥** इस मन्त्र से आवाहन करके '**ॐ वरुणाय नम:**' इस नाममन्त्र से अथवा षोडशोपचारों द्वारा पूजन करके उसके बाद निम्न मन्त्र से अथवा नाममन्त्रों से बारह आहुति दें—

ॐ अदभ्य: स्वाहा वार्भ्य: स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्य: स्वाहा स्त्रवन्ताभ्य: स्वाहा स्यन्दमानाभ्य: स्वाहा कूप्याभ्य: स्वाहा सूर्द्याभ्य: स्वाहा धार्याभ्य: स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सागराय स्वाहा॥ इस मन्त्र से। नाममन्त्र के पक्ष में—**ॐ अद्भ्य: स्वाहा। ॐ वार्भ्य: स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा। ॐ तिष्ठन्तीभ्य: स्वाहा। ॐ स्त्रवन्तीभ्य: स्वाहा। ॐ स्यन्दमानाभ्य: स्वाहा। ॐ कूप्याभ्य: स्वाहा। ॐ सूद्याभ्य: स्वाहा। ॐ धार्य्याभ्य: स्वाहा। ॐ अर्णवाय स्वाहा। ॐ समुद्राय स्वाहा। ॐ सागराय स्वाहा।** इन मन्त्रों से हवन करें। तदुपरान्त आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके वरुण देवता को यजमान से नमस्कार करावें—

ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय: सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥

आचार्य निम्न दो श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से वरुण देवता की प्रार्थना करावें—

ॐ प्रतीचीश नमस्तुभ्यं सर्वाघौघनिषूदन।
पवित्रं कुरु मां देवः सर्वकार्येषु सर्वदा॥ १॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान्विधिरनुष्ठितः।
स सर्वस्त्वत्प्रसादेन पूर्णो भवत्वपांपते॥ २॥

तदुपरान्त यजमान सुहागिन स्त्रियों को सौभाग्यद्रव्य, ताम्बूल और चना आदि देकर ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा देवें।

पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य कलशों को उठाकर सुवासिनियों के हाथ में देवें—**ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदा न वऽ इन्द्र प्राशूर्भवा शचा॥**

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ यथे मां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु॥

आचार्य और ब्राह्मण—**ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानार्ठ० रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानार्ठ० सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणर्ठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥ तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥ स्वस्ति**

न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुंभ्यः॥ १२॥

इस बलि मन्त्र का आचार्य उच्चारण करें—**ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालाय भासुराय त्रिनेत्रज्वालामुख अवतर अवतर कपिल पिङ्गल ऊर्ध्वकेश-जिह्वालालन छिन्दि-छिन्दि भिन्धि-भिन्धि कुरु-कुरु चल-चल ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं बलिं गृहाण स्वाहा।**

तत्पश्चात् सपत्नीक यजमान, बन्धु, ज्ञाति से समन्वित होकर मण्डप की ओर प्रस्थान करे। मण्डप के पश्चिमद्वार के समीप में जाकर पूर्ववत् सभी दोष के शमन के लिए क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करें। इसके बाद मण्डप के पश्चिमद्वार पर आकर स्थित हुए यजमान और उसकी पत्नी की सुवासिनियाँ आरती करके पश्चिमद्वार से ही मण्डप के मध्य में उन्हें ले जावें।

भैरवसहस्त्रनामस्तोत्रम्

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीभैरव सहस्त्रनामस्तोत्र मन्त्रस्य ब्रह्मानन्द भैरवऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, भैरवो देवता, बं बीजम्, ह्रीं शक्ति, सर्वाभीष्ट सिद्ध्ये जपे विनियोगः।

करन्यास:—ॐ ह्रां बां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं क्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं ब्रं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं बैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः बः कर्तलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास:—ॐ ह्रां बां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं बीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं बूं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं बौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः बः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

वन्दे नाथं स्फटिक-सदृशं भैरवं भासिताङ्गं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी-नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं
हस्ताग्राभ्यां सुदृढवपुषं शूल-दण्डोपधानम्॥ १॥
करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्य्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति विरुदनाथः सिद्धिदो भैरवाख्यः॥ २॥

ॐ नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जगदाद्य नमो नमः॥ १ ॥
नमः कल्पस्वरूपाय विकल्पाय नमो नमः।
नमः शुद्धस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः॥ २ ॥
नमः कङ्कालरूपाय कालरूप नमोऽस्तु ते।
नमः त्र्यम्बकरूपाय महाकालाय ते नमः॥ ३ ॥
नमः संसारसाराय शारदाय नमो नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ ४ ॥

नमः क्षेत्रनिवासाय क्षेत्रपालाय ते नमः।
क्षेत्राक्षेत्रस्वरूपाय क्षेत्रकर्त्रे नमो नमः॥ ५ ॥
नमो नागविनाशाय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातङ्गरूपाय भाररूप नमोऽस्तु ते॥ ६ ॥
नमः सिद्धस्वरूपाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमो बिन्दुस्वरूपाय बिन्दुसिन्धुप्रकाशिने॥ ७ ॥
नमो मङ्गलरूपाय मालवाय नमो नमः।
नमः सङ्कटनाशाय शङ्कराय नमो नमः॥ ८ ॥
नमो धर्मस्वरूपाय धर्मदाय नमो नमः।
नमोऽनन्तस्वरूपाय एकरूप नमोऽस्तुते॥ ९ ॥
नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिकार नमोऽस्तुते।
नमो मोहनरूपाय मोक्षरूपाय ते नमः॥ १० ॥
नमो जलदरूपाय सामरूप नमोऽस्तुते।
नमः स्थूलस्वरूपाय शुद्धरूपाय ते नमः॥ ११ ॥
नमो नीलस्वरूपाय रङ्गरूपाय ते नमः।
नमो मण्डलरूपाय मण्डलाय नमो नमः॥ १२ ॥
नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्रनाथाय ते नमः।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मवक्त्रे नमो नमः॥ १३ ॥
नमस्त्रिशूलधाराय धाराधारिन्नमोऽस्तु ते।
नमः संसारबीजाय विरूपाय नमो नमः॥ १४ ॥
नमो विमलरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो जङ्गमरूपाय जलजाय नमो नमः॥ १५ ॥
नमः कालस्वरूपाय कालरुद्राय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १६ ॥
नमः शत्रुविनाशाय भीषणाय नमो नमः।
नमः शान्ताय दान्ताय भ्रमरूप नमोऽस्तु ते॥ १७ ॥

न्यायगम्याय शुद्धाय योगिध्येयाय ते नमः।
नमः कमलकान्ताय कालवृद्धाय ते नमः॥ १८॥
नमो ज्योतिःस्वरूपाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमः कल्पस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १९॥
नमो जयस्वरूपाय जगज्जाड्य-निवारिणे।
महाभूताय भूताय भूतानां पतये नमः॥ २०॥
नमो नन्दाय वृन्दाय वादिने ब्रह्मवादिने।
नमो वादस्वरूपाय न्यायगम्याय ते नमः॥ २१॥
नमो भवस्वरूपाय मायानिर्माणरूपिणे।
विश्ववन्द्याय वन्द्याय नमो विश्वम्भराय ते॥ २२॥
नमो नेत्रस्वरूपाय नेत्ररूपिन्नमोऽस्तु ते।
नमो वरुणरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ २३॥
नमो यमस्वरूपाय वृद्धरूपाय ते नमः।
नमः कुबेररूपाय कालनाथाय ते नमः॥ २४॥
नमः ईशानरूपाय अग्निरूपाय ते नमः।
नमो वायुस्वरूपाय विश्वरूपाय ते नमः॥ २५॥
नमः प्राणस्वरूपाय प्राणाधिपतये नमः।
नमः संहाररूपाय पालकाय नमो नमः॥ २६॥
नमश्चन्द्रस्वरूपाय चण्डरूपाय ते नमः।
नमो मन्दरवासाय वासिने सर्वयोगिनाम्॥ २७॥
योगिगम्याय योग्याय योगिनां पतये नमः।
नमो जङ्गमवासाय वामदेवाय ते नमः॥ २८॥
नमः शत्रुविनाशाय नीलकण्ठाय ते नमः।
नमो भक्तिविनोदाय दुर्भगाय नमो नमः॥ २९॥
नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः।
नमो भूतिविभूषाय भूषिताय नमो नमः॥ ३०॥

नमो रजःस्वरूपाय सात्त्विकाय नमो नमः।
नमस्तामसरूपाय तारणाय नमो नमः॥ ३१॥
नमो गङ्गाविनोदाय जयसन्धारिणे नमः।
नमो भैरवरूपाय भीषणाय नमो नमः॥ ३२॥
नमः सङ्ग्रामरूपाय सङ्ग्रामजयदायिने।
सङ्ग्रामसाररूपाय पावनाय नमो नमः॥ ३३॥
नमो वृद्धिस्वरूपाय वृद्धिदाय नमो नमः।
नमस्त्रिशूलहस्ताय शूलसंहारिणे नमः॥ ३४॥
नमो द्वन्द्वस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः।
नमो शत्रुविनाशाय शत्रुबुद्धि-विनाशिने॥ ३५॥
महाकालाय कालाय कालनाथाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ ३६॥
नमः शुभस्वरूपाय शम्भुरूपिन्नमोऽस्तु ते।
नमः कमलहस्ताय डमरुहस्ताय ते नमः॥ ३७॥
नमः कुक्कुरवाहाय वाहनाय नमो नमः।
नमो विमलनेत्राय त्रिनेत्राय नमो नमः॥ ३८॥
नमः संसाररूपाय सारमेयाय वाहिने।
संसारज्ञानरूपाय ज्ञाननाथाय ते नमः॥ ३९॥
नमो मङ्गलरूपाय मङ्गलाय नमो नमः।
नमो न्यायविशालाय मन्त्ररूपाय ते नमः॥ ४०॥
नमो यन्त्रस्वरूपाय यन्त्रधारिन्नमोऽस्तु ते।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ ४१॥
नमः कलङ्करूपाय कलङ्काय नमो नमः।
नमः संसारपाराय भैरवाय नमो नमः॥ ४२॥
रुण्डमालाविभूषाय भीषणाय नमो नमः।
नमो दुःखनिवाराय विहाराय नमो नमः॥ ४३॥

नमो दण्डस्वरूपाय क्षणरूपाय ते नमः ।
नमो मुहूर्तरूपाय सर्वरूपाय ते नमः ॥ ४४ ॥
नमो मोदस्वरूपाय श्रोत्ररूपाय ते नमः ।
नमो नक्षत्ररूपाय क्षेत्ररूपाय ते नमः ॥ ४५ ॥
नमो विष्णुस्वरूपाय बिन्दुरूपाय ते नमः ।
नमो ब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मचारिन्नमोऽस्तु ते ॥ ४६ ॥
नमः कन्थानिवासाय पटवासाय ते नमः ।
नमो ज्वलनरूपाय ज्वलनाय नमो नमः ॥ ४७ ॥
नमो कालरूपाय धूर्तरूपाय ते नमः ।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ ४८ ॥
नमो वैद्यस्वरूपाय वैद्यरूपिन्नमोऽस्तु ते ।
नमः औषधरूपाय औषधाय नमो नमः ॥ ४९ ॥
नमो व्याधिनिवाराय व्याधिरूपिन्नमो नमः ।
नमो द्वारनिवाराय ज्वररूपाय ते नमः ॥ ५० ॥
नमो रुद्रस्वरूपाय रुद्राणां पतये नमः ।
विरूपाक्षाय देवाय भैरवाय नमो नमः ॥ ५१ ॥
नमो ग्रहस्वरूपाय ग्रहाणां पतये नमः ।
नमः पवित्रधाराय पर्शुधाराय ते नमः ॥ ५२ ॥
यज्ञोपवीतदेवाय देवदेव नमोऽस्तुते ।
नमो यज्ञस्वरूपाय यज्ञानां फलदायिने ॥ ५३ ॥
नमो रणप्रतापाय तापनाय नमो नमः ।
नमो गणेशरूपाय गणरूपाय ते नमः ॥ ५४ ॥
नमो रश्मिस्वरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः ।
नमो मलयरूपाय रश्मिरूपाय ते नमः ॥ ५५ ॥
नमो विभक्तिरूपाय विमलाय नमो नमः ।
नमो मधुररूपाय माधिपूर्णकलापिने ॥ ५६ ॥

कालेश्वराय कालाय कालनाथाय ते नमः।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥५७॥
नमो योनिस्वरूपाय मातृरूपाय ते नमः।
नमो भगिनीरूपाय भैरवाय नमो नमः॥५८॥
नमो वृषस्वरूपाय कर्मरूपाय ते नमः।
नमो वेदान्तवेद्याय वेदसिद्धान्तसारिणे॥५९॥
नमः शाखाप्रकाशाय पुरुषाय नमो नमः।
नमः प्रकृतिरूपाय भैरवाय नमो नमः॥६०॥
नमो विश्वरूपाय शिवरूपाय ते नमः।
नमो ज्योतिःस्वरूपाय निर्गुणाय नमो नमः॥६१॥
निरञ्जनाय शान्ताय निर्विकाराय ते नमः।
निर्ममाय विमोहाय विश्वनाथाय ते नमः॥६२॥
नमः कण्ठप्रकाशाय शत्रुनाशाय ते नमः।
नमः आशाप्रकाशाय आशापूरकृते नमः॥६३॥
नमो मत्स्यस्वरूपाय योगरूपाय ते नमः।
नमो वाराहरूपाय वामनाय नमो नमः॥६४॥
नमः आनन्दरूपाय आनन्दाय नमो नमः।
नमोऽस्त्वनर्धकेशाय ज्वलत्केशाय ते नमः॥६५॥
नमः पापविमोक्षाय मोक्षाय च नमो नमः।
नमः कैलाशनाथाय कालनाथाय ते नमः॥६६॥
नमो बिन्दुदबिन्दाय बिन्दुभाय नमो नमः।
नमः प्रणवरूपाय भैरवाय नमो नमः॥६७॥
नमो मेरुनिवासाय रक्तवासाय ते नमः।
नमो मेरुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥६८॥
नमो भद्रस्वरूपाय भद्ररूपाय ते नमः।
नमो योगिस्वरूपाय योगिनां पतये नमः॥६९॥

नमो मन्त्रस्वरूपाय मित्ररूपाय ते नमः।
नमो ब्रह्मनिवासाय काशीनाथाय ते नमः ॥ ७० ॥
नमो ब्रह्माण्डवासाय ब्रह्मवासाय ते नमः।
नमो मातङ्गवासाय सूक्ष्मवासाय ते नमः ॥ ७१ ॥
नमो मातृनिवासाय भ्रातृवासाय ते नमः।
नमो जगन्निवासाय जलावासाय ते नमः ॥ ७२ ॥
नमः कौलनिवासाय नेत्रवासाय ते नमः।
नमो भैरववासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ७३ ॥
नमः समुद्रवासाय वह्निवासाय ते नमः।
नमश्चन्द्रनिवासाय चन्द्रावासाय ते नमः ॥ ७४ ॥
नमः कलिङ्गवासाय कलिङ्गाय नमो नमः।
नमः उत्कलवासाय इन्द्रवासाय ते नमः ॥ ७५ ॥
नमः कर्पूरवासाय सिद्धिवासाय ते नमः।
नमः सुन्दरवासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ७६ ॥
नमः आकाशवासाय वासिने सर्वयोगिनाम्।
नमो ब्राह्मणवासाय शूद्रवासाय ते नमः ॥ ७७ ॥
नमः क्षत्रियवासाय वैश्यवासाय ते नमः।
नमः पक्षिनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ७८ ॥
नमः पातालमूलाय मूलावासाय ते नमः।
नमो रसातलवासाय सर्वपातालवासिने ॥ ७९ ॥
नमः कङ्कालवासाय कङ्कवासाय ते नमः।
नमो मन्त्रनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ८० ॥
नमोऽहङ्काररूपाय रजोरूपाय ते नमः।
नमः सत्त्वनिवासाय भैरवाय नमो नमः ॥ ८१ ॥
नमो नलिनरूपाय नलिनाङ्गप्रकाशिने।
नमः सूर्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ ८२ ॥

नमो दुष्टनिवासाय साधूपायस्वरूपिणे।
नमो नम्रस्वरूपाय स्तम्भनाय नमो नमः॥ ८३॥
पञ्चयोनिप्रकाशाय चतुर्योनिप्रकाशिने।
नवयोनिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥ ८४॥
नमः षोडशरूपाय नमः षोडशधारिणे।
चतुःषष्टिप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥ ८५॥
नमो बिन्दुप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमो गणस्वरूपाय सुखरूप नमोऽस्तुते॥ ८६॥
नमोऽम्बरस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो नानास्वरूपाय मुखरूपाय नमोऽस्तुते॥ ८७॥
नमो दुर्गस्वरूपाय दुःखहन्त्रे नमोऽस्तुते।
नमो विशुद्धदेहाय दिव्यदेहाय ते नमः॥ ८८॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो निशाप्रकाशाय पिशाचाय नमो नमः॥ ८९॥
नमो निशाप्रकाशाय निशारूप नमोऽस्तुते।
नमः सोमार्धरामाय धराधीशाय ते नमः॥ ९०॥
नमः संसारभाराय भारकाय नमो नमः।
नमो देहस्वरूपाय अदेहाय नमो नमः॥ ९१॥
देवदेहाय देवाय भैरवाय नमो नमः।
विश्वेश्वराय विश्वाय विश्वधारिन्नमोऽस्तु ते॥ ९२॥
स्वप्रकाशप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः।
स्थितिरूपाय स्थित्याय स्थितीनां पतये नमः॥ ९३॥
सुस्थिराय सुकेशाय केशवाय नमो नमः।
स्थविष्ठाय गरिष्ठायं प्रेष्ठाय परमात्मने॥ ९४॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः पारदरूपाय पवित्राय नमो नमः॥ ९५॥

नमो वेधकरूपाय अनिन्द्राय नमो नमः ।
नमः शब्दस्वरूपाय शब्दातीताय ते नमः ॥ ९६
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो निन्दास्वरूपाय अनिन्दाय नमो नमः ॥ ९७।
नमो विष्णुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः शरण्यशरण शरण्यानां सुखाय ते ॥ ९८।
नमः शरण्यरक्षाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः स्वाहास्वरूपाय स्वधारूपाय ते नमः ॥ ९९ ॥
नमो वौषट्स्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
अक्षराय नमस्तुभ्यं त्रिधामात्रास्वरूपिणे ॥ १०० ॥
नमोऽक्षराय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः ।
अर्धमात्राय पूर्णाय पूर्णाय ते नमो नमः ॥ १०१ ॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमोऽष्टचक्ररूपाय ब्रह्मरूपाय ते नमः ॥ १०२ ॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
नमः सृष्टिस्वरूपाय सृष्टिकर्त्रे महात्मने ॥ १०३ ॥
नमः पाल्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ।
सनातनाय नित्याय निर्गुणाय गुणाय ते ॥ १०४ ॥
नमः सिद्धाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः ।
नमो धारास्वरूपाय खड्गहस्ताय ते नमः ॥ १०५ ॥
नमस्त्रिशूलहस्ताय भैरवाय नमो नमः ।
नमः कुण्डलवर्णाय शवमुण्डविभूषिणे ॥ १०६ ॥
महाक्रुद्धाय चण्डाय भैरवाय नमो नमः ।
नमो वासुकिभूषाय सर्पभूषाय ते नमः ॥ १०७ ॥
नमः कपालहस्ताय भैरवाय नमो नमः ।
पानपात्रप्रमत्ताय मत्तरूपाय ते नमः ॥ १०८ ॥

नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो माधवरूपाय माधवाय नमो नमः॥ १०९॥
नमो माङ्गल्यरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः कुमाररूपाय स्त्रीरूपाय नमो नमः॥ ११०॥
नमो गन्धस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो दुर्गन्धरूपाय सुगन्धाय नमो नमः॥ १११॥
नमः पुष्पस्वरूपाय पुष्पभूषण ते नमः।
नमः पुष्पप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥ ११२॥
नमः पुष्पविनोदाय पुष्पपूजाय ते नमः।
नमो भक्तिनिवासाय भक्तदु:खनिवारिणे॥ ११३॥
भक्तप्रियाय शान्ताय भैरवाय नमो नमः।
नमो भक्तस्वरूपाय रूपदाय नमो नमः॥ ११४॥
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो वासाय भद्राय वीरभद्राय ते नमः॥ ११५॥
नमः संग्रामसाराय भैरवाय नमो नमः।
नमः खट्वाङ्गहस्ताय कालहस्ताय ते नमः॥ ११६॥
नमऽघोराय घोराय घोराघोरस्वरूपिणे।
घोरघर्माय घोराय भैरवाय नमो नमः॥ ११७॥
घोरत्रिशूलहस्ताय घोरपानाय ते नमः।
घोररूपाय नीलाय भैरवाय नमो नमः॥ ११८॥
घोरवाहनगम्याय अगम्याय नमो नमः।
घोरब्रह्मस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ ११९॥
घोरशब्दाय घोराय घोरदेहाय ते नमः।
घोरद्रव्याय घोराय भैरवाय नमो नमः॥ १२०॥
घोरसङ्गाय सिंहाय सिद्धसिंहाय ते नमः।
नमः प्रचण्डसिंहाय सिंहरूपाय ते नमः॥ १२१॥

नमः सिंहप्रकाशाय सुप्रकाशाय ते नमः।
नमो विजयरूपाय जगदाद्य नमो नमः ॥ १२२ ॥
नमो भार्गवरूपाय गर्भरूपाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२३ ॥
नमो मेध्याय शुद्धाय मायाधीशाय ते नमः।
नमो मेघप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२४ ॥
दुर्ज्ञेयाय दुरन्ताय दुर्लभाय दुरात्मने।
भक्तिलभ्याय भव्याय भविताय नमो नमः ॥ १२५ ॥
नमो गौरवरूपाय गौरवाय नमो नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२६ ॥
नमो विघ्ननिवाराय विघ्नराशिन्नमोऽस्तुते।
नमो विघ्नविदाराय भैरवाय नमो नमः ॥ १२७ ॥
नमः किंशुकरूपाय रजोरूपाय ते नमः।
नमो नीलस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२८ ॥
नमो गणस्वरूपाय गणनाथाय ते नमः।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ १२९ ॥
नमो योगिप्रकाशाय योगिगम्याय ते नमः।
नमो हेरम्बरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३० ॥
नमस्त्रिधा स्वरूपाय रूपदाय नमो नमः।
नमः स्वरस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३१ ॥
नमः सरस्वतीरूपाय बुद्धिरूपाय ते नमः।
नमो वन्द्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३२ ॥
नमस्त्रिविक्रमरूपाय त्रिस्वरूपाय ते नमः।
नमः शशाङ्करूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३३ ॥
नमो व्यापकरूपाय व्याप्यरूपाय ते नमः।
नमो भैरवरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १३४ ॥

नमो विशदरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः सत्त्वस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १३५॥
नमः सूक्तस्वरूपाय शिवदाय नमो नमः।
नमो गङ्गास्वरूपाय यमुनारूपिणे नमः॥ १३६॥
नमो गौरीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो दुःखविनाशाय दुःख-मोक्षस्वरूपिणे॥ १३७॥
महाचलाय वन्द्याय भैरवाय नमो नमः।
नमो नन्दस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १३८॥
नमो नन्दिस्वरूपाय स्थितररूपाय ते नमः।
नमः केलिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १३९॥
नमः क्षेत्रनिवासाय वासिने ब्रह्मवादिने।
नमः शान्ताय शुद्धाय भैरवाय नमो नमः॥ १४०॥
नमो नर्मदरूपाय जलरूपाय ते नमः।
नमो विश्वविनोदाय जयदाय नमो नमः॥ १४१॥
नमो महेन्द्ररूपाय महनीयाय ते नमः।
नमः संसृतिरूपाय शरणीयाय ते नमः॥ १४२॥
नमस्त्रिबन्धुवासाय बालकाय नमो नमः।
नमः संसारसाराय सरसां पतये नमः॥ १४३॥
नमस्ते जलरूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमः काव्यस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १४४॥
नमो गोकर्णरूपाय ब्रह्मवर्णाय ते नमः।
नमः शङ्करवर्णाय हस्तिकर्णाय ते नमः॥ १४५॥
नमो विष्टरकर्णाय यज्ञकर्णाय ते नमः।
नमः शम्बुककर्णाय भैरवाय नमो नमः॥ १४६॥
नमो दिव्यसुकर्णाय कालकर्णाय ते नमः।
नमो भयदकर्णाय भैरवाय नमो नमः॥ १४७॥

नमः आकाशवर्णाय कालकर्णाय ते नमः।
नमो दिग्रूपकर्णाय भैरवाय नमो नमः॥ १४८॥
नमो विशुद्धकर्णाय विमलाय नमो नमः।
नमः सहस्रकर्णाय भैरवाय नमो नमः॥ १४९॥
नमो नेत्रप्रकाशाय सुनेत्राय नमो नमः।
नमो वरदनेत्राय जयनेत्राय ते नमः॥ १५०॥
नमो विमलनेत्राय योगिनेत्रयाय ते नमः।
नमः सहस्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः॥ १५१॥
नमः कलिन्दरूपाय कलिन्दाय नमो नमः।
नमो ज्योतिःस्वरूपाय ज्योतिषाय नमो नमः॥ १५२॥
नमस्तारप्रकाशाय ताररूपिन् नमोऽस्तुते।
नमो नक्षत्रनेत्राय भैरवाय नमो नमः॥ १५३॥
नमश्चन्द्रप्रकाशाय चन्द्ररूप नमोऽस्तुते।
नमो रश्मिस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १५४॥
नमः आनन्दरूपाय जयानन्दस्वरूपिणे।
नमो द्रविडरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १५५॥
नमः शङ्खनिवासाय शङ्कराय नमो नमः।
नमो मुद्राप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥ १५६॥
नमो न्याससस्वरूपाय न्यासरूप नमोऽस्तुते।
नमो बिन्दुस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १५७॥
नमो विसर्गरूपाय प्रणवरूपाय ते नमः।
नमो मन्त्रप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥ १५८॥
नमो जम्बुकरूपायाय जङ्गमाय नमो नमः।
नमो गरुडरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १५९॥
नमो लम्बुकरूपाय लम्बिकाय नमो नमः।
नमो लक्ष्मीस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १६०॥

नमो वीरस्वरूपाय वीरणाय नमो नमः।
नमः प्रचण्डरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६१ ॥
नमो दम्भस्वरूपाय डमरुधारिन्नमोऽस्तु ते।
नमः कलङ्कनाशाय कालनाथाय ते नमः ॥ १६२ ॥
नमः सिद्धिप्रकाशाय सिद्धिदाय नमो नमः।
नमः सिद्धस्वरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६३ ॥
नमो धर्मप्रकाशाय धर्मनाथाय ते नमः।
धर्माय धर्मराजाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६४ ॥
नमो धर्माधिपतये धर्मध्येयाय ते नमः।
नमो धर्मार्थसिद्धाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६५ ॥
नमो निर्जररूपाय रूपारूपप्रकाशिने।
नमो राजप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६६ ॥
नमः प्रतापसिंहाय प्रतापाय नमो नमः।
नमः कोटिप्रतापाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६७ ॥
नमः सहस्त्ररूपाय कोटिरूपाय ते नमः।
नमः आनन्दरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १६८ ॥
नमः संहारबन्धाय बन्धकाय नमो नमः।
नमो विमोक्षरूपाय मोक्षदाय नमो नमः ॥ १६९ ॥
नमो विष्णुस्वरूपाय व्यापकाय नमो नमः।
नमो माङ्गल्यनाथाय शिवनाथाय ते नमः ॥ १७० ॥
नमो व्यालाय व्याघ्राय व्याघ्ररूप नमोऽस्तु ते।
नमो व्यालविभूषाय भैरवाय नमो नमः ॥ १७१ ॥
नमो विद्याप्रकाशाय विद्यानां पतये नमः।
नमो योगिस्वरूपाय क्रूररूपाय ते नमः ॥ १७२ ॥
नमः संहाररूपाय शत्रुनाशाय ते नमः।
नमो पालकरूपाय भैरवाय नमो नमः ॥ १७३ ॥

नमः कारुण्यदेवाय देवदेवाय ते नमः।
नमो विश्वविलाशाय भैरवाय नमो नमः॥ १७४॥
नमो नमः प्रकाशाय काशिवासिन्नमोऽस्तुते।
नमो भैरवक्षेत्राय क्षेत्रपालाय ते नमः॥ १७५॥
नमो भद्रस्वरूपाय भद्रकाय नमो नमः।
नमो भद्राधिपतये भयहन्त्रे नमोऽस्तु ते॥ १७६॥
नमो मायाविनोदाय मायिने मदरूपिणे।
नमो मत्ताय शान्ताय भैरवाय नमो नमः॥ १७७॥
नमो मलयवासाय कैलाशाय नमो नमः।
नमः कैलाशवासाय कालिकातनयाय ते॥ १७८॥
नमः संसारसाराय भैरवाय नमो नमः।
नमो मातृविनोदाय विमलाय नमो नमः॥ १७९॥
नमो यमप्रकाशाय नियमाय नमो नमः।
नमः प्राणप्रकाशाय ध्यानाधिपतये नमः॥ १८०॥
नमः समाधिरूपाय निर्गुणाय नमो नमः।
नमो मन्त्रप्रकाशाय मन्त्ररूपाय ते नमः॥ १८१॥
नमो वृन्दविनोदाय वृन्दकाय नमो नमः।
नमो बृंहितरूपाय भैरवाय नमो नमः॥ १८२॥
नमो मान्यस्वरूपाय मानदाय नमो नमः।
नमो विश्वप्रकाशाय भैरवाय नमो नमः॥ १८३॥
नमो नैमिषपीठाय सिद्धपीठाय ते नमः।
नमो मण्डलपीठाय भक्तपीठाय ते नमः॥ १८४॥
नमो यशोदानाथाय कामनाथाय ते नमः।
नमो विनोदनाथाय सिद्धनाथाय ते नमः॥ १८५॥
नमो नाथाय नाथाय ज्ञाननाथाय ते नमः।
नमः शङ्करनाथाय जयनाथाय ते नमः॥ १८६॥

नमो मुद्गलनाथाय नीलनाथाय ते नमः।
नमो बालकनाथाय धर्मनाथाय ते नमः॥ १८७॥
विश्वनाथाय नाथाय कार्यनाथाय ते नमः।
नमो भैरवनाथाय महानाथाय ते नमः॥ १८८॥
नमो ब्रह्मसनाथाय योगनाथाय ते नमः।
नमो विश्वविहाराय विश्वमाराय ते नमः॥ १८९॥
नमो रङ्गसनाथाय रङ्गनाथाय ते नमः।
नमो मोक्षसनाथाय भैरवाय नमो नमः॥ १९०॥
नमो गोरक्षनाथाय गोरक्षाय नमो नमः।
नमो मन्दारनाथाय नन्दनाथाय ते नमः॥ १९१॥
नमो मङ्गलनाथाय चम्पानाथाय ते नमः।
नमः सन्तोषनाथाय भैरवाय नमो नमः॥ १९२॥
नमो निर्धननाथाय सुखनाथाय ते नमः।
नमः कारुण्यनाथाय भैरवाय नमो नमः॥ १९३॥
नमो द्रविडनाथाय दरिनाथाय ते नमः।
नमः संसारनाथाय जगन्नाथाय ते नमः॥ १९४॥
नमो माध्वीकनाथाय मन्त्रनाथाय ते नमः।
नमो न्याससनाथाय ध्याननाथाय ते नमः॥ १९५॥
नमो गोकर्णनाथाय महानाथाय ते नमः।
नमः शुभ्रसनाथाय भैरवाय ते नमः॥ १९६॥
नमो विमलनाथाय मण्डलनाथाय ते नमः।
नमः सरोजनाथाय सत्वनाथाय ते नमः॥ १९७॥
नमो भक्तसनाथाय भक्तिनाथाय ते नमः।
नमो मोहननाथाय वत्सनाथाय ते नमः॥ १९८॥
नमो मातृसनाथाय विश्वनाथाय ते नमः।
नमो बिन्दुसनाथाय जयनाथाय ते नमः॥ १९९॥

नमो मङ्गलनाथाय धर्मनाथाय ते नमः ।
नमो गङ्गासनाथाय भूमिनाथाय ते नमः ॥ २०० ॥
नमो धीरसनाथाय बिन्दुनाथाय ते नमः ।
नमः कञ्चुकिनाथाय शृङ्गिनाथाय ते नमः ॥ २०१ ॥
नमः समुद्रनाथाय गिरिनाथाय ते नमः ।
नमो माङ्गल्यनाथाय कद्रुनाथाय ते नमः ॥ २०२ ॥
नमो वेदान्तनाथाय श्रीनाथाय नमो नमः ।
नमो ब्रह्माण्डनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २०३ ॥
नमो गिरीशनाथाय वामनाथाय ते नमः ।
नमो बीजसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २०४ ॥
नमो मन्दिरनाथाय मनोनाथाय ते नमः ।
नमो भैरवनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २०५ ॥
अम्बानाथाय नाथाय जन्तुनाथाय ते नमः ।
नमः कालिसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २०६ ॥
नमो मुकुन्दनाथाय कुन्दनाथाय ते नमः ।
नमः कुण्डलनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २०७ ॥
नमोऽष्टचक्रनाथाय शूलनाथाय ते नमः ।
नमो विभूतिनाथाय शूलनाथाय ते नमः ॥ २०८ ॥
नमो न्यायसनाथाय न्यायनाथाय ते नमः ।
नमो दयासनाथाय जङ्गमनाथाय ते नमः ॥ २०९ ॥
नमो विशदनाथाय जगन्नाथाय ते नमः ।
नमः कामिकनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २१० ॥
नमः क्षेत्रसनाथाय जीवनाथाय ते नमः ।
नमः शैलसनाथाय चैलनाथाय नमो नमः ॥ २११ ॥
नमो मात्रासनाथाय अमात्राय नमो नमः ।
नमो द्वन्द्वसनाथाय भैरवाय नमो नमः ॥ २१२ ॥

नमः शूरसनाथाय शूरनाथाय ते नमः।
नमः सौजन्यनाथाय सौजन्याय नमो नमः॥२१३॥
नमो दुष्टसनाथाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भवसनाथाय बिम्बनाथाय ते नमः॥२१४॥
नमो भैरवनाथाय भैरवाय नमो नमः।
नमो विटङ्कनाथाय टङ्कनाथाय ते नमः॥२१५॥
नमश्चर्मसनाथाय खड्गनाथाय ते नमः।
नमः शक्तिसनाथाय धनुर्नाथाय ते नमः॥२१६॥
नमो बाणसनाथाय शापनाथाय ते नमः।
नमो यन्त्रसनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२१७॥
नमो गण्डूषनाथाय गण्डूषाय नमो नमः।
नमो डाकिनीनाथाय भैरवाय नमो नमः॥२१८॥
नमो डामरनाथाय डारकाय नमो नमः।
नमो डङ्कसनाथाय डङ्कनाथाय ते नमः॥२१९॥
नमो माण्डवनाथाय यज्ञनाथाय ते नमः।
नमो यजुःसनाथाय क्रीडानाथाय ते नमः॥२२०॥
नमः सामसनाथायाथर्वनाथाय ते नमः।
नमः शून्याय नाथाय स्वर्गनाथाय ते नमः॥२२१॥

फलश्रुतिः

इदं नामसहस्त्रं मे रुद्रेण परिकीर्तितम्।
यः पठेत्पाठयेद्वापि स एव मम सेवकः॥२२२॥
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।
यः शृणोति दुराषं हि तं तं प्राप्नोति साधकः॥२२३॥
राजद्वारे श्मशाने तु पृथिव्यां जलसन्निधौ।
यः पठेन्मानवो नित्यं स शूरः स्यान्न संशयः॥२२४॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा पठेन्नरः।
स यावद् बुद्धिमंल्लोके भवत्येव न संशयः॥ २२५॥
यः शृणोति नरो भक्त्या स एव गुणसागरः।
यः श्रद्धया रात्रिकाले शृणोति पठतेऽथवा॥ २२६॥
स एव साधकः प्रोक्तः सर्वदुष्टविनाशकः।
अर्धरात्रौ पठेद्यस्तु स एव पुरुषोत्तमः॥ २२७॥
त्रिसन्ध्यायां देवगृहे श्मशाने च विशेषतः।
वने च मार्गगमने बले दुर्जनसन्निधौ॥ २२८॥
यः पठेत्प्रयतो नित्यं स सुखी स्यान्न संशयः।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्॥ २२९॥
शूरार्थी लभते शौर्यं पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात्।
एकविंशतिमन्त्रेण अक्षरेण सहैव मे॥ २३०॥
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वकाममवाप्नुयात्।
रक्षार्थी रसमात्रेण रसं प्राप्नोति नित्यशः॥ २३१॥
अन्नार्थी लभते चान्नं सुखार्थी सुखमाप्नुयात्।
रोगी प्रमुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥ २३२॥
शापार्थी लभते शापं सर्वशत्रुविनाशनम्।
स्थावरञ्जगमं वापि विषं सर्वं प्रणश्यति॥ २३३॥
सर्वलोकप्रियः शान्तो मातृपितृप्रियङ्करः।
संग्रामे विजयं तस्य यः पठेद्भक्तिसंयुतः॥ २३४॥
सकलं विजयं देवि स्तोत्रमेतत्प्रकीर्तितम्।
इदं स्तोत्रं महत्पुण्यं निन्दकाय न दर्शयेत्॥ २३५॥
असाधकाय दुष्टाय मातृपितृविकारिणे।
अधार्मिकायाकुलीनाय नेदं स्तोत्रं प्रकाशयेत्॥ २३६॥
साधकाय च भक्ताय योगिने धार्मिकाय च।
गुरुभक्ताय शान्ताय दर्शयेत्साधकोत्तमः॥ २३७॥

अन्यथा पापभिन्नस्यात्क्रोधोऽयं भैरवोत्तमे।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गोपनीयं प्रयत्नतः॥ २३८॥
इदं स्तोत्रं च रुद्रेण रामस्यापि मुखेऽर्पितम्।
तन्मुखाद्विश्रुतं लोके दरिद्राय च बान्धवे॥ २३९॥
रामेण कथितं भ्रात्रे लक्ष्मणाय मदात्मने।
ततो दुर्वाससे प्राप्तं तेनैवोक्तं तु पाण्डवे॥ २४०॥
पाण्डवो ह्यब्रवीत्कृष्णं कृष्णेनेह प्रकीर्तितम्।
अस्य स्तोत्रस्य माहात्म्यं रामो जानाति तत्त्वतः॥ २४१॥
रामोऽपि राज्यं सम्प्राप्तो अस्य स्तोत्रस्य पाठतः।
पाण्डवोऽपि तथा राज्यं सम्प्राप्तो भैरवस्य च॥ २४२॥
अनेन स्तोत्रपाठेन किमलभ्यं भवेदिति।
सर्वलोकस्य पूज्यस्तु सत्यं सत्यं न संशयः॥ २४३॥

॥ इति भैरवसहस्रनामस्तोत्रम्॥

श्रीभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ॐ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥ १ ॥
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः॥ २ ॥
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः॥ ३ ॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभीरुर्भैरवीनाथो भूतपो योगिनीपतिः॥ ४ ॥
धनदो धनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्॥ ५ ॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलनेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः॥ ६ ॥
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
बटुको बहुवेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः॥ ७ ॥
भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः॥ ८ ॥
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः॥ ९ ॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥ १० ॥
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥ ११ ॥
शुद्धो नीलाञ्जनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग् बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः॥ १२ ॥

सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥ १३॥
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना भैरवस्य महात्मनः॥ १४॥
मया ते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम्।
य इदं पठते स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ १५॥
न तस्य दुरितं किञ्चिनैव भूतभयं तथा।
न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा॥ १६॥
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्।
पातकानां भयं नैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्॥ १७॥
मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये।
औत्पादिकभये चैव तथा दुःस्वप्नजे भये॥ १८॥
वन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।
सर्वं प्रशममायाति भयं भैरवकीर्त्तनात्॥ १९॥
एकादशसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि सम्वत्सरमतन्द्रितः॥ २०॥
स सिद्धिमाप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि च मानवैः।
षणमासाद् भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम्॥ २१॥
राजशत्रुविनाशार्थं जपेन्मासाष्टकं यदि।
रात्रौ वारत्रयं भृत्यो राजानं वशमानयेत्॥ २२॥
धनार्थं च सुतार्थं च दारार्थं यस्तु मानवः।
पठेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि॥ २३॥
धनं पुत्रांस्तथा दारान् प्राप्नुयान्नात्र संशयः।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥ २४॥
भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सद्यो न संशयः।
निगडैश्चापि यो बद्धः कारागृहनिपातितः॥ २५॥

शृङ्खलाबन्धनं प्राप्तः पठेच्चेदं दिवानिशम्।
यान् यान्समीहते कामांस्तांस्तान्प्राप्नोति निश्चितम्॥ २६॥
अप्रकाश्यमिदं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित्।
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिते॥ २७॥
दद्यात्स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम्।
इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम्॥ २८॥
सन्तोषं परमं प्राप्य भैरवस्य प्रसादतः।
भैरवस्य प्रसन्नाऽभूत् सर्वलोकमहेश्वरी॥ २९॥
भैरवस्तु प्रहृष्टोऽभूत् सर्वज्ञः परमेश्वरः।
जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरीम्॥ ३०॥

॥ श्रीभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीबटुकभैरवसहस्त्रनामस्तोत्रम्

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीबटुकभैरवसहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मानन्दभैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बटुकभैरवो देवता, वं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, सर्वाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

न्यासः

ॐ ह्रां बां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं बीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं बैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं बौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः बः करतलकरपृष्ठभ्यां नमः (एवं हृदयादि)।

ध्यानम्

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्य्याविघ्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥ १॥
वन्दे बालं स्फटिक-सदृशं कुन्तलोद्भासिवक्त्रं,
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणी-नूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं महेशं
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं शूलखड्गौ दधानम्॥ २॥

स्तोत्रम्

ॐ ह्रीं बटुकः कामदो नाथोऽनाथप्रियप्रभाकरः।
भैरवो भीतिहा दर्पः कन्दर्पो मीनकेतनः॥ १ ॥
रुद्रो बटुकभूतीशो भूतनाथः प्रजापतिः।
दयालुः क्रूर ईशानो जनीशी लोकवल्लभः॥ २ ॥
देवो दैत्येश्वरो वीरो वीरवन्द्यो दिवाकरः।
बलिप्रियः सुरश्रेष्ठः कनिष्ठो नैष्ठिकः शिशुः॥ ३ ॥
महाबलो महातेजा वित्तजो द्युतिवर्द्धनः।
तेजस्वी वीर्यवान् वृद्धो विवृद्धो भूतनायकः॥ ४ ॥
बालकः पालकः कामो विकामः काममर्द्दनः।
कालिकारमणः कालीनायकः कालिकाप्रियः॥ ५ ॥

कालीशः कालिकाकान्तः कालिकानन्दवर्धनः ।
कालिकाहृदयज्ञानी कालिकातनयो नयः ॥ ६ ॥
खगेशः खेचरः खेटो विशिष्टः खेटकप्रियः ।
कुमारः क्रोधनः कालीप्रियः पर्वतरक्षकः ॥ ७ ॥
गणेज्यो गणपो गूढो गूढप्रायो गणेश्वरः ।
गणनाथो गणश्रेष्ठो गणमुख्यो गणप्रियः ॥ ८ ॥
घोरनादो घनश्यामो घनस्वामी घनान्तकः ।
चम्पकाभश्चिरञ्जीवी चारुवेषश्चराचरः ॥ ९ ॥
चिन्त्योऽचिन्त्यगुणो धीमान् सुचित्तस्थश्चितीश्वरः ।
छत्री छत्रपतिश्छत्ता छिन्ननासामनः प्रियः ॥ १० ॥
छिन्नाभश्छिन्न - सन्तापश्छद्मीराच्छर्दिनान्तकः ।
जेता जिष्णुर्जहीशानो जनानन्दो जनेश्वरः ॥ ११ ॥
जनको जनसन्तोषो जनजायविनाशनः ।
जालन्धरो जनाराध्यो जनाध्यक्षो जनप्रियः ॥ १२ ॥
जीवहा जीवदो जन्तुर्जीवनाथो जलेश्वरः ।
जयदो जित्वरो जिह्मो जयश्रीर्जयवर्धनः ॥ १३ ॥
जयभूमिर्जयाकारो जयहेतुर्जयेश्वरः ।
झंकारकृदनन्तात्मा झंकारहेतुरात्मभूः ॥ १४ ॥
झञ्ज्योश्चरिहरीभर्त्ता विर्त्ता भृत्यकेश्वरः ।
टीत्कारहृदमेयात्मा टङ्केशष्टङ्कनायकः ॥ १५ ॥
ठकारभूष्ठरन्ध्रीशो गिरिष्ठष्ठकुरः पतिः ।
ढुण्ढिर्ढक्काप्रि यः पान्थो ढुण्ढिराजो निरन्तकः ॥ १६ ॥
ताम्रस्तमीश्वरस्तोता तीर्थराजस्तडित्प्रभः ।
त्रियक्षस्त्र्यक्षकस्तम्भस्तार्थकस्तम्भटेश्वरः ॥ १७ ॥
स्थलस्थः स्थावरः स्थाता स्थिरबुद्धिः स्थिरेन्द्रियः ।
स्थिरज्ञानी स्थिरप्रीतिः स्थिरस्थितिः स्थिराशयः ॥ १८ ॥

दामो दामोदरो दम्भो दाडिमीकुसुमप्रियः।
दारिद्र्यहा दमी दिव्यो दिव्यदेहो दिनप्रभुः॥ १९॥
दिनकरो दिवानाथो दिवसेशो दिवाकरः।
दीर्घश्चरो दलज्योतिर्दलेशो दलसुन्दरः॥ २०॥
दलप्रियो दलाभासो दलपूज्यो दलप्रभुः।
दलकान्तिर्दलाकारो दलसेव्यो दलार्चितः॥ २१॥
दीर्घबाहुर्दलश्रेष्ठो दललुब्धो दलाकृतिः।
दानवश्यो दयासिन्धुर्दयालुर्दीनवल्लभः॥ २२॥
धनेशो धनदो धर्मो धनराजो धनप्रभुः।
धनप्रदो धनाध्यक्षो धनमान्यो धनञ्जयः॥ २३॥
धीवरो धातुको धाता ध्रुवो धूमलवर्धनः।
धनिष्ठो धवलच्छत्री धनकाम्यो धनेश्वरः॥ २४॥
धीरो धीरतरो धेनुर्धीरेशो धरणीप्रभूः।
धराधीशो धरानाथो धरणीनायको धरः॥ २५॥
धराकान्तो धरापालो धरणीजनवल्लभः।
धराधरोऽधरो धृष्ठो धृतराष्ट्रो धनीश्वरः॥ २६॥
नारदो नीरदो नेता नीतिपूज्यो नतिप्रियः।
नीतलभ्यो नतीशानो नीतिबल्धो नतीश्वरः॥ २७॥
पार्थिवः पार्थसम्पूज्यः पार्थदः प्रणतः पृथुः।
पृथिवीशः पृथासूनुः पृथिवीभृत्य ईश्वरः॥ २८॥
पुराणः पारदः पान्थः पाञ्चालीपावकः प्रभुः।
पूर्वः सुरपतिः श्रेयान् प्रीतिदः प्रीतिवर्द्धनः॥ २९॥
पार्वतीशः परेशानः पार्वतीहृदयप्रियः।
पार्वतीरमणः पूतः पवित्रः पापनाशनः॥ ३०॥
पात्री पत्रलिसन्तुष्टः परितुष्टः पुमान् प्रियः।
पर्वेशः पर्वताधीशः पर्वतो नायकात्मजः॥ ३१॥

फाल्गुनस्तु फणानाथः फणीशः फणरक्षकः।
फणीपतिः फणीशानः फणराजः फणाकृतिः॥ ३२॥
बलभद्रो बली बालो बलधीर्बलबर्द्धनः।
बलप्राणो बलाधीशो बलिदानप्रियंकरः॥ ३३॥
बलिराजो बलिप्राणो बलिनाथो बलप्रियः।
बलीवरश्च बालेशो बालकप्रियदर्शनः॥ ३४॥
भंद्रो भद्रपदो भीमो भीमसेनो भयंकरः।
भव्यो भव्यप्रियो भूतपतिर्भूविनायकः॥ ३५॥
भूतेशो भूतिदो भर्गो भूतभव्यो भवेश्वरः।
भवानीशो भवेशानो भवानीनायकोऽर्भकः॥ ३६॥
मकारो माधवो मीनो मीनकेतुर्महेश्वरः।
महेषुर्मदनो मन्थो मिथुनेशोऽमराधिपः॥ ३७॥
मरीचिर्मञ्जुलो मोहो मोहहा मोहमर्दनः।
मोहको मोहनो मेधाप्रियो मोहविनाशकः॥ ३८॥
महीपतिर्महीशानो महीराजो मनोहरः।
महीश्वरो महीपालो महीनाथो महीप्रियः॥ ३९॥
महीधरो महादेवो मनुराजो मनुप्रियः।
मौनी मौनधरौ मेघो मन्दारो मतिवर्द्धनः॥ ४०॥
मतिदो मन्थरो मन्त्रो मन्त्रीशो मन्त्रनायकः।
मेधावी मानदो मानी मानहा मानमर्दनः॥ ४१॥
मीनगो मकराधीशो मधुरो मणिरञ्जितः।
मणिरम्यो मणिभ्राता मणिमण्डनमण्डितः॥ ४२॥
मन्त्रपो मन्त्रपो मुग्धो मोक्षदो मोक्षवल्लभः।
मल्लो मल्लप्रियो मञ्जो मल्लको मेलनप्रभुः॥ ४३॥
मल्लिको मल्लिकागन्धी मल्लिका-कुसुमप्रियः।
मालतीशो मघानाथोऽमोघमूर्तिर्मघेश्वरः॥ ४४॥

मूलाघो मूलहा मूलो मूलदो मूलमत्सरः ।
माणिक्यरोचिः सम्मुग्धो मणिकूटो मणिप्रियः ॥ ४५ ॥
मुकुन्दो मदनो मन्दो मन्दवन्द्यो मनुप्रभुः ।
मनःस्थो मेनकाधीशो मेनकाप्रियर्शनः ॥ ४६ ॥
यमो यामो यमीदेवो यादवो यदुनायकः ।
याचको याज्ञिको यज्ञो यज्ञेशो यज्ञवर्धनः ॥ ४७ ॥
रमापती रमाधीशो रमेशो रामवल्लभः ।
रमापती रमानाथो रमाकान्तो रमेश्वरः ॥ ४८ ॥
रेवतीरमणो रामो रमेशो रामनन्दनः ।
रमामूर्ती रतशानो राकाया नायको रविः ॥ ४९ ॥
लक्ष्मीधरो ललज्जिह्वो लक्ष्मीबीज जपे रतः ।
लम्पटो लम्बराजेशो लम्बोदरो लकारभूः ॥ ५० ॥
वामनो वल्लभो वन्द्यो वनमाली वनेश्वरः ।
वनस्थो वनगो विन्ध्यो विन्ध्यराजो वनाह्वयः ॥ ५१ ॥
वनेचरो वनाघीशो वनमालाविभूषणः ।
वेणुप्रियो वनाकारो वनाराध्यो वनप्रभुः ॥ ५२ ॥
शम्भुः शङ्कर सन्तुष्टः शम्बरारिः शरासनः ।
शबरीप्रणतः शालः शिलीमुखध्वनिप्रियः ॥ ५३ ॥
शकुलः शल्लकः शीतः शीतरश्मिः सितांशुकः ।
शीलदः शीकरः शीलः शीलशीली शनैश्चरः ॥ ५४ ॥
सिद्धः सिद्धिकरः साध्यः सिद्धिभूः सिद्धिभावनः ।
सिद्धान्तवल्लभः सिन्धुः सिन्धुतीरनिषेवितः ॥ ५५ ॥
सिन्धुपतिः सरोधीरः सरसीरुहलोचनः ।
सरित्पतिः सरित्संस्थः सरः सिन्धुः सरोवरः ॥ ५६ ॥
सखा वीरपतिः सूतः सचेताः सत्पतिः सितः ।
सिन्धुराजः सदाभूतः सदाशिवः सतां पतिः ॥ ५७ ॥

सदीशः सदनः सूरिः सेव्यमानसतीपतिः ।
सूर्यः सूर्यपतिः सेव्यः सेवाप्रियः सनातनः ॥ ५८ ॥
सतीशः सरसीनाथः सतीराजः सतीश्वरः ।
सतीप्राणः सतीनाथः सतीसेव्यः सतीपतिः ॥ ५९ ॥
सिद्धराजः सतीतुष्टः सचिवः सव्यवाहनः ।
सतीनायकसन्तुष्टः सव्यसाची सुमन्तकः ॥ ६० ॥
सच्चित्तः सर्वसन्तोषी सर्वारामः सुसिद्धिदः ।
सर्वाराध्यः सचिवाख्यः सतीपतिसुसेवितः ॥ ६१ ॥
सागरः सगरः सार्थः समुद्रः समुद्रप्रियः ।
समुद्रतीरसन्तुष्टः समुद्रप्रियदर्शनः ॥ ६२ ॥
समुद्रीशः सरोनाथः सरसिजविलोचनः ।
सरसीजलदाकारः सरसीजलदार्चितः ॥ ६३ ॥
सामुद्रिक समुद्रात्मा साध्यमानः सुरेश्वरः ।
सुरसेव्यः सुरेशानः सुरनाथः सुरार्चितः ॥ ६४ ॥
सुराध्यक्षः सुराराध्यः सुरवन्द्यविशारदः ।
सुरमुख्यः सुरप्रायः सुरसिन्धुनिवासवान् ॥ ६५ ॥
सुधाप्रियः सुधाधीशः सुधाराध्यः सुधापतिः ।
सुधानाथः सुधाभूतः सुधासागरसेवितः ॥ ६६ ॥
हाटको हीरको हन्ता हीरकस्य रुचिः प्रभुः ।
हव्यवाहो हरिद्राभो हरिद्रारसमर्दनः ॥ ६७ ॥
हेतिर्हेतुर्हरित्राता हरिनाथो हरिप्रियः ।
हरिपूज्यो हरिप्राणो हरहृष्टो हरीन्द्रकः ॥ ६८ ॥
हरीशो हन्तृको हीरो हरिनामपरायणः ।
हरिमुग्धो हरीरम्यो हरिदासो हरिश्वरः ॥ ६९ ॥
हरो हरिपतिर्हारो रोहिणीचित्तहारकः ।
हरिहितो हरिप्राणो हरिवाहनशोभनः ॥ ७० ॥

हासो हासप्रियो हूहूर्हुतभुग् हतवाहनः ।
हुताशनो हली हक्को हालाहलहलायुधः ॥ ७१ ॥
हलाकारो हलीशानो हलिपूज्यो हलिप्रियः ।
हरपुत्रो हरोत्साहो हरसूनुर्हरात्मजः ॥ ७२ ॥
हरवन्द्यो हराधीशो हरातङ्को हराकृतिः ।
हरमान्यो हराङ्कस्थो हरवैरिविनाशनः ॥ ७३ ॥
हरशत्रुर्हरामर्षोऽहंकारो हरिणीप्रियः ।
हाटकेशो हटेशानो हाटकप्रियदर्शनः ॥ ७४ ॥
हाटको हाटकप्राणो हाटभूषणभूषितः ।
हेतिदो हन्तको हंसो हंसगतिर्हराह्वयः ॥ ७५ ॥
हंसीपतिर्हरोन्मत्तो हंसीशो हरवल्लभः ।
हरपुष्पप्रभो हंसीप्रियो हंसविलासकः ॥ ७६ ॥
हरबीजरतो हारी हरितो हरिताम्पतिः ।
हरित्प्रभुर्हरित्पालो हरिरन्तरनायकः ॥ ७७ ॥
हरिद्दिशो हरित्प्राणो हरप्रियः प्रियो हितः ।
हेरम्बो हुँकृति-क्रुद्धो हेरम्बानन्दनो हठी ॥ ७८ ॥
हेरम्बप्राणसंहर्ता हेरम्बहृदयप्रियः ।
क्षमापतिः क्षणः क्षान्तः क्षुरधारः क्षितीश्वरः ॥ ७९ ॥
क्षितीशः क्षितितः क्षीणः क्षितिपालः क्षितिप्रभुः ।
क्षितीशानः क्षितिप्राणः क्षितिनायकसत्प्रियः ॥ ८० ॥
क्षितिराजः क्षणाधीशः क्षणपतिः क्षणेश्वरः ।
क्षणप्रियः क्षमानाथः क्षणदानायकः प्रियः ॥ ८१ ॥
क्षणिकः क्षणदाधीशः क्षणदाप्राणदः क्षमी ।
क्षमः क्षोणिपतिः क्षोभः क्षोभकारी क्षमाप्रियः ॥ ८२ ॥
क्षमाशीलः क्षमारूपः क्षमामण्डनमण्डितः ।
क्षमानाथः क्षमाधारः क्षमाकारीः क्षमाकरः ॥ ८३ ॥

क्षेमः क्षीणरजाः क्षुद्रः क्षद्रपानविशारदः ।
क्षुद्रेशानः क्षणाकारः क्षीरपानतकत्परः ॥ ८४ ॥
क्षीरशायी क्षणेशानः क्षोणिभृत्क्षणदोत्सवः ।
क्षेमंकरः क्षमालुब्धः क्षमाशास्त्रविशारदः ॥ ८५ ॥
क्षमीश्वरः क्षमाकामः क्षमाहृदयमण्डनः ।
नीलाद्रिरुचिराशीशो नीलपर्वतसन्निभः ॥ ८६ ॥
नीलमणिप्रभारम्यः शशिभूषणभूषितः ।
शशधरः शरीभूतो मुण्डमालाविभूषितः ॥ ८७ ॥
मुण्डस्थो मुण्डसन्तुष्टो मुण्डमालाधरोऽनघः ।
दिग्वासा विदिगाकारो दिगम्बरवरप्रदः ॥ ८८ ॥
दिगम्बरीश आनन्दो दिगम्बरतनूद्भवः ।
पिङ्गलैकजटो धृष्टो डमरुवादनप्रियः ॥ ८९ ॥
सृणीकरः सृणीशानः खड्गधृक् खड्गपालकः ।
शूलहस्तो मतङ्गाभो मातंगोत्सवसुन्दरः ॥ ९० ॥
अभयङ्कर ऊर्वङ्गो लंकापतिविनाशनः ।
नगाशयो नगेशानो नागमण्डनमण्डितः ॥ ९१ ॥
नगाकारो नगाधीशो नगशायी नगप्रियः ।
घटोत्सवो घटाकारो घण्टावाद्यविशारदः ॥ ९२ ॥
कपालपाणिरम्बेशः कपालासनसादनः ।
पद्मपाणिः कपालश्च त्रिनेत्रो नागवल्लभः ॥ ९३ ॥
किंकिणीजालसन्तुष्टो जलप्रायो जलाकरः ।
अपमृत्युहरो मायामोहमूलविनाशनः ॥ ९४ ॥
आयुधः कमलानाथः कमलाकान्तवल्लभः ।
राज्यदो राजराजेशो राजीवपट्टशोभनः ॥ ९५ ॥
डाकिनीनायको नित्यो नित्यधर्मपरायणः ।
डाकिनीहृदयज्ञानी डाकिनीदेहनाशकः ॥ ९६ ॥

डाकिनीप्राणदः शुद्धः श्रद्धेयचरितो विभुः।
हेमप्रभो हिमेशानो हिमानीप्रियदर्शनः॥ ९७॥
हेमदो मर्मदो नामी नामधेयो नगात्मजः।
वैकुण्ठो वासुकीप्राणो वासुकीकण्ठभूषणः॥ ९८॥
कुण्डलीशो मखध्वंसी मखराजो मखेश्वरः।
मखाकारो मखाधीशो मखमालाविभूषणः॥ ९९॥
अम्बिकावल्लभो वाणीपतिर्वाणीविशारदः।
वापीशो वाचः प्राणश्च वचःस्थो वचनप्रियः॥ १००॥
वेलाधरो दिशामीशो दिङ्नागो हि दिगीश्वरः।
दूर्वाप्रियो दुराराध्यो दारिद्र्यभयभञ्जनः॥ १०१॥
तर्कस्तर्कप्रियस्तर्क्यो वितर्क्कस्तर्कवल्लभः।
तर्कसिद्धोऽतिसिद्धात्मा सिद्धदेहो गुहाशयः॥ १०२॥
ग्रहगर्भो ग्रहेशानो गन्धगन्धी विशारदः।
मङ्गलो मङ्गलाकारो मङ्गलवाद्यवादकः॥ १०३॥
मङ्गलीशो विमानस्थ विमानो नैकनायकः।
बुधेशो बिबुधाधीशो बुधवारो बुधाकरः॥ १०४॥
बुधनाथो बुधप्रीतो बुधवन्द्यो बुधाधिपः।
बुधसिद्धो बुधप्राणो बुधबुद्धो बुधप्रियोः॥ १०५॥
सोमप्रभो मनःसिद्धो मनोजप्राणनाशनः।
सोमेशो मशकाकारो सोमपाः सोमनायकः॥ १०६॥
कामगः कामहा बौद्धः कामनाफलदोऽधिपः।
त्रिदशो दशरात्रेशो दशाननविनाशनः॥ १०७॥
लक्ष्मणो लक्ष्यसम्भर्त्ता लक्ष्यसंख्यो मनःप्रियः।
विभावसुर्नलेनाशो नायको नागजाप्रियः॥ १०८॥
नलकान्तिर्नलोत्साहो नरदेवो नराकृतिः।
नरपतिर्नरेशानो नारायणनरेश्वरः॥ १०९॥

अनिलो मारुतो मांसो मांसैककरसेवितः।
मरीचिरमरेशानो मागधो मगधप्रभुः॥ ११०॥
सुन्दरो सेवकोद्धारी द्वारदेश-निवासनः।
देवकीगर्भसञ्जातो देवकीसेवकः कुहूः॥ १११॥
बृहस्पतिः कविः शुक्रः शारदासाधकप्रियः।
शारदासाधकः प्राणः शारदासेवकोत्सुकः॥ ११२॥
शारदासाधक श्रेष्ठो वीतरागो गजप्रभुः।
मांसप्रियो मधुप्राणो मधुमांसमहोत्सवः॥ ११३॥
मधुपो मधुपश्रेष्ठो मधुपानसदारतिः।
मोदकादान सम्प्रीतो मोदका मोदमोदितः॥ ११४॥
आमोदामोदितो नन्दो नन्दिकेशो नदेश्वरः।
नदीप्रियो नदीनाथो नदीतीररुहस्तपाः॥ ११५॥
तपन-स्तापन-स्ताम्रतापहा तापकारकः।
पतंगो गोमुखो गौरो गोपालो गोपवर्द्धनः॥ ११६॥
गोपतिर्गोपसंहर्ता गोवृन्दैकप्रियोऽतिगः।
गर्विष्ठो गुणरम्यश्च गुणसिन्धुर्गुरुप्रियः॥ ११७॥
गुणपूज्यो गुणोपेतो गुणवाद्यो गुणोत्सुकः।
गुणीशः केवलो गर्भः सुगर्भो गर्भरक्षकः॥ ११८॥
गाम्भीर्यधारको धर्त्ता विधर्ता धर्मपालकः।
जगदीशो जगन्मित्रो जगत्राता जगत्प्रभुः॥ ११९॥
जगद्धाता जगद् भोक्ता जगज्जाप्य विनाशनः।
जगत्कर्ता जगद्धर्ता जगज्जीवनजीवनः॥ १२०॥
मालतुपुष्पसुप्रीतो मालतीकुसुमोत्सवः।
मालतीकुसुमाकारो मालतीकुसुमप्रभुः॥ १२१॥
मालतीकुसुमाकारो मालतीनिषेवितः।
रसालमञ्जरीलुब्धो रसालतरुवल्लभः॥ १२२॥

रसालतरुवासी वै रसालफलसुन्दरः ।
रसालरससन्तुष्टो रसालरसलालसः ॥ १२३ ॥
केतकीपुष्पसन्तुष्टो केतकीगर्भसम्भवः ।
केतकीपत्रसंकाशः केतकीप्राणनाशनः ॥ १२४ ॥
गर्त्तस्थो गर्त्तगम्भीरो गर्त्तेशो गर्त्तनायकः ।
गत्तगेशोऽतिगर्त्तस्थो गर्त्तक्षीरनिवासकः ॥ १२५ ॥
गणसेव्यो गणाध्यक्षो गणराजो गणाह्वयः ।
आनन्दभैरवो भीरुर्भैरवेशो रुरुर्भगः ॥ १२६ ॥
सुब्रह्मभैरवो वामभैरवो भूतभावनः ।
भैरवीतनयो देवीपुत्रः पर्वतसम्भवः ॥ १२७ ॥

फलश्रुतिः

नाम्नाऽनेन सहस्रेण स्तुत्वा बटुकभैरवम् ।
लभते ह्यतुलां लक्ष्मीं देवानामपि दुर्लभाम् ॥ १२८ ॥
उपदेशं गुरोर्लब्ध्वा योगे त्रिमंगली भवेत् ।
अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां वासरे भूमिसम्भवे ॥ १२९ ॥
शुक्रे वा रविसंक्रातौ योगोऽयमुत्तमः प्रभो ।
तस्मिन् योगे महेशानि सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ १३० ॥
लक्षमावर्त्तयेन्मन्त्री मन्त्रराजं नगेश्वरि ।
नित्यकर्म सुसिद्ध्यर्थं तत्फलं लभते ध्रुवम् ॥ १३१ ॥
स्तवमेनं-पठेन्मन्त्री पाठयन् वा यथाविधि ।
दुर्लभां लभते सिद्धिं सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ १३२ ॥
न प्रकाश्यं च पुत्रेषु भ्रष्टेषु तु कदाचन ।
अन्यथा सिद्धिरोधः स्याद्वातुलो वा भवेत्प्रियः ॥ १३३ ॥
स्तवस्यास्य प्रसादेन देवनायकवत्प्रियः !
संग्रामे विजयेच्छत्रून्मातंगानिव केसरी ॥ १३४ ॥
राजानं वशयेत्सद्यो देवानपि वशं नयेत् ।
किं वा परं फलं नाथ स्तवराजस्य कथ्यताम् ॥ १३५ ॥

यद्यन्मनसि संकल्प्य स्तवमेनमुदीरयन्।
तत्तदाप्नोति देवेश बटुकस्य प्रसादतः॥ १३६॥
आपदां हि विनाशाय कारणं कान्तदुर्लभम्।
देवासुररणे घोरे देवानामुपकारकम्॥ १३७॥
प्रकाशितं मया नाथ तन्त्रे भैरवदीपके।
अपुत्रो लभते पुत्रं षणमासान्निरतो नरः॥ १३८॥
पठित्वा पाठयित्वाऽपि स्तवराजमनुत्तमम्।
दरिद्रो लभते लक्ष्मीमीप्सितामपि निश्चलाम्॥ १३९॥
कन्यार्थी लभते कन्यां सर्वरूपसमन्विताम्।
प्रदोषे बलिदाने च वशयेदखिलं जगत्॥ १४०॥
वटे वा बिल्वमूले वा रम्भायां विपनेऽपि वा।
जपेत्सततमालक्षं मन्त्रराजस्य सिद्धये॥ १४१॥
वर्णलक्षं जपेद्वापि दिङ्मात्रं हि प्रदर्शितम्।
पूजयेत्तु तिलैर्माषैर्दुग्धैर्मांसैर्झस्तथा॥ १४२॥
घृतपक्वान्नतो वाऽपि जेमनै रससंकुलैः।
पूजयेद्धारयेद्वापि स्तवमेनं सुसाधकः॥ १४३॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि यथाविधि सुरप्रिये।
शत्रुतो न भयं तस्य नाग्निचोरास्त्रवज्रजम्॥ १४४॥
ज्वरादिसम्भवं वापि सत्यं सत्यं महेश्वरि।
भैरवाराधनाशक्तो यो भवेत्साधकः प्रभो॥ १४५॥
सदाशिवः स विज्ञयो भैरवेणेति भाषितम्॥ १४६॥
श्रीमद्भैरवराजरञ्जनविधौ वैय्यग्र्यमासेधुषः
पुंसः पञ्चविधा भवन्ति नवधा ह्यष्टौ तथा सिद्धयः।
क्षोणीपालकिरीटकोटिमणिरुन्मालाभरैर्भूयशो-
मौग्ध्यं पादपयोजयोर्विजयते मूर्ध्नि प्रभोश्छत्रताम्॥ १४७॥

॥ श्री बटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

आपदुद्धारणबटुकभैरवस्तोत्रम्

मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्॥ १ ॥

श्रीपार्वत्युवाच

भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रागमादिषु।
आपदुद्धारणं मन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम्॥ २ ॥
सर्वेषां चैव भूतानां हितार्थं वाञ्छितं मया।
विशेषतस्तु राज्ञां वै शान्तिपुष्टिप्रसाधनम्॥ ३ ॥
अङ्गन्यासकरन्यासदेहन्याससमन्वितम् ।
वक्तुमर्हसि देवेश मम हर्षविवर्धन॥ ४ ॥

ईश्वर उवाच

शृणु देवि महामन्त्रमापदुद्धारहेतुकम्।
सर्वदुःखप्रशमनं सर्वशत्रुविनाशनम्॥ ५ ॥
अपस्मारादिरोगाणां ज्वरादीनां विशेषतः।
नाशनं स्मृतिमात्रेण मन्त्रराजमिमं प्रिये॥ ६ ॥
ग्रहरोगभयानां च नाशनं सुखवर्धनम्।
स्नेहाद्वक्ष्यामि ते मन्त्रं सर्वसारमिमं प्रिये॥ ७ ॥
सर्वकामार्थदं पुण्यं राज्यभोगप्रदं नृणाम्।
आपदुद्धारणमिति मन्त्रं वक्ष्याम्यशेषतः॥ ८ ॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य देवीप्रणवमुद्धरेत्।
बटुकायेति वै पश्चादापदुद्धारणाय च॥ ९ ॥
कुरुद्वयं ततः पश्चाद् बटुकाय पुनः क्षिपेत्।
देवीप्राणवमुद्धृत्य मन्त्रोद्धारमिमं प्रिये॥ १० ॥
मन्त्रोद्धारमिमं देवि त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
अप्रकाश्यमिमं मन्त्रं सर्वशक्तिसमन्वितम्॥ ११ ॥

स्मरणादेव मन्त्रस्य भूत-प्रेत-पिशाचकाः।
विद्रवन्त्यतिभीता वै कालरुद्रादिव प्रजाः॥ १२॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि पूजयेद्वापि पुस्तकम्।
नाग्निचौरभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा॥ १३॥
न च मारीभयं किञ्चित्सर्वत्र सुखवान्भवेत्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्र-पौत्रादिसम्पदः॥ १४॥
भवन्ति सततं तस्य पुस्तकस्यापि पूजनात्।
न दारिद्र्यं न दौर्भाग्यं नापदां भयमेव च॥ १५॥

पार्वत्युवाच

क एष भैरवो नाम आपदुद्धारणो मतः।
त्वया च कथितो देव भैरवः कल्पवित्तमः॥ १६॥
तस्य नामसहस्राणि अयुतान्यर्बुदानि च।
सारमुद्धृत्य तेषां वै नामाष्टशतकं वद॥ १७॥
यानि संकीर्तयन्मर्त्यः सर्वदुःखविवर्जितः।
सर्वान्कामानवाप्नोति साधकः सिद्धिमेव च॥ १८॥

ईश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः।
आपदुद्धारणस्येदं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ १९॥
सर्वपापहरं पुण्यं सर्वापत्तिविनाशनम्।
सर्वकामार्थदं देवि साधकानां सुखावहम्॥ २०॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वोपद्रवनाशनम्।
आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम्॥ २१॥
नामाष्टकशतस्यास्यच्छन्दोऽनुष्टुप्प्रकीर्तितम्।
बृहदारण्यको नाम ऋषिर्देवोऽथ भैरवः॥ २२॥
अष्टबाहुं त्रिनयनमिति बीजं समाहितम्।
शक्तिकं कीलकं शेषमिष्टसिद्धौ नियोजयेत्॥ २३॥

सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः।
देहान्तन्यासकं चैव पूर्वं कुर्याच्च साधकः॥ २४॥
ह्रीं बीजं बटुकः शक्तिः प्रणवः कीलकं मतम्।
आरोग्यायुरभीष्टश्रीसिद्ध्यर्थं विनियुज्यते॥ २५॥
भैरवं मूर्ध्नि विन्यस्य ललाटे भीमदर्शनम्।
नेत्रयोर्भूतहननं सारमेयानुगं भ्रुवोः॥ २६॥
कर्णयोर्भूतनाथं च प्रेतवाहं कपोलयोः।
नासापुटौष्ठयोश्चैव भस्माङ्गं सर्पभूषणम्॥ २७॥
अनादिनाथं सौम्ये च शक्तिहस्तं गले न्यसेत्।
स्कन्धयोर्दैत्यशमनं बाह्वोरतुलतेजसम्॥ २८॥
पाण्योः कपालिनं न्यस्य हृदये मुण्डमालिनम्।
शान्तं वक्षःस्थले न्यस्य स्तनयोः कामचारिणम्॥ २९॥
उदरे च सदा तुष्टं क्षेत्रेशं पार्श्वयोस्तथा।
क्षेत्रपालं पृष्ठदेशे क्षेत्रज्ञं नाभिदेशके॥ ३०॥
पापौघनाशनं कट्यां बटुकं लिङ्गदेशके।
गुदे रक्षाकरं न्यस्य तथोर्वो रक्तलोचनम्॥ ३१॥
जानुनोर्घुर्घुरारावं जङ्घयो रक्तपाणिकम्।
गुल्फयोः पादुकासिद्धं पादपृष्ठे सुरेश्वरम्॥ ३२॥
आपादमस्तकं चैव आपदुद्धारकं तथा।
पूर्वे डमरुहस्तं च दक्षिणे दण्डधारिणम्॥ ३३॥
खड्गहस्तं पश्चिमे च घण्टावादिनमुत्तरे।
आग्नेय्यामग्निवर्णं च नैर्ऋत्यां च दिगम्बरम्॥ ३४॥
वायव्यां सर्वभूतस्थमैशान्यां चाष्टसिद्धिदम्।
ऊर्ध्वं खेचारिणं न्यास्य पाताले रौद्ररूपिणम्॥ ३५॥
एवं न्यस्य च देहे स्वे षडङ्गेषु ततो न्यसेत्।
रुद्रमङ्गुष्ठयोर्न्यस्य तर्जन्योस्तु शिखीमुखम्॥ ३६॥

शिवं मध्यमयोर्न्यस्यानामिकायां त्रिशूलिनम्।
ब्रह्माणं तु कनिष्ठायां तलयोस्त्रिपुरान्तकम्॥ ३७॥
मांसाशिनं कराग्रे तु करपृष्ठे दिगम्बरम्।
हृदये भूतनाथाय आदिनाथाय मूर्धनि॥ ३८॥
आनन्दपदपूर्वादय नाथायाथ शिखासु च।
सिद्धस्थावरनाथाय कवचे विन्यसेत्तथा॥ ३९॥
सहजानन्दनाथाय न्यसेन्नेत्रत्रयेषु च।
परमानन्दनाथाय अस्त्रं चैव प्रयोजयेत्॥ ४०॥
एवं न्यासविधिं कृत्वा यथावत्तदनन्तरम्।
ध्यायेच्चैव महेशनि साधकः सर्वसिद्धये॥ ४१॥
ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्वा पठेन्नरः।
शुद्धस्फटिकसङ्काशं सहस्रादित्यवर्चसम्॥ ४२॥
नीलजीमूतसङ्काशं नीलाञ्जनसमप्रभम्।
अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम्॥ ४३॥
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्।
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्॥ ४४॥
दिगम्बरं कुमारेशं बटुकाख्यं महाबलम्।
खट्वाङ्गमसिपाशौ च शूलं दक्षिणभागतः॥ ४५॥
डमरुं च कपालं च वरदं भुजगं तथा।
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्॥ ४६॥
ध्यात्वा जपेत्सुसन्तुष्टः सर्वान्कामानवाप्नुयात्॥ ४७॥

॥ आपदुद्धारणबटुकभैरवस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीबटुकभैरवकवचम्

ॐ अस्य श्रीबटुकभैरवकवचस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, बटुकभैरवो देवता मम सर्वाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

देव्युवाच

ॐ भगवन्सर्ववेत्ता त्वं देवानां प्रीतिकारकम्।
भैरवं कवचं ब्रूहि यदि चास्ति कृपा मयि॥ १ ॥
प्राणत्यागं करिष्यामि यदि नो कथयिष्यसि।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव न संशयः॥ २ ॥
इति देव्या वचः श्रुत्वा बृहस्पतिसमप्रभुः।
उवाच कवचं तस्यै देवदेवो महेश्वरः॥ ३ ॥

महादेव उवाच

कवचं बटुकस्येदं शृणु मत्प्राणवल्लभे।
चण्डिके तत्र सर्वस्वं बटुकस्य विशेषतः॥ ४ ॥
तन्त्र-मन्त्राक्षरं चैव बटुकस्य स्वरूपकम्।
शङ्खवर्णोऽद्वितीयो वा बटुकश्चन्द्रशेखरः॥ ५ ॥
आपदुद्धारणो नाम भैरवः परिकीर्तितः।
प्रवक्ष्यामि समासेन चतुर्वर्गस्य सिद्धये॥ ६ ॥
ॐ प्रणवं कामदं विद्याल्लज्जाबीजं च सिद्धिदम्।
बटुकायेति विज्ञेयो महापातकनाशनम्॥ ७ ॥
आपदुद्धारणयेति आपदुद्धारकं नृणाम्।
कुरु द्वयं महेशानिं मोहनं परिकीर्तितम्॥ ८ ॥
बटुकाय महेशानि जपनं परिकीर्तितम्।
लज्जाबीजं तथा विद्यान् मुक्तिदं परिकीर्तितम्॥ ९ ॥
द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः क्रमेण जगदीश्वरिः।
'ॐ' शिरसि पातु नित्यं पातु ह्रीं कंठदेशके॥ १०॥

बटुकं पातु हृदये नाभौ आपदुद्धारकम्।
कुरु द्वयं लिङ्गमूले आपदुद्धारणाय च॥ ११॥
सर्वदा पातु ह्रीं बीजो बाह्वोर्युगलमेव च।
खड्गं च सहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः॥ १२॥
ॐ ह्रीं बटुकाय सततं सर्वाङ्गेषु च सर्वदा।
ॐ ह्रीं कालपाशयोः पातु तथा वीरासनो हृदि॥ १३॥
महाकालः शिरः पातु कण्ठदेशे तु भैरवः।
दण्डपाणिर्गुह्यमूले भैरवी सहितस्ततः॥ १४॥
ॐ ह्रीं ललितं भैरवं पातु अष्टाभिः शक्तिभिः सह।
ॐ ह्रीं विश्वनाथः सदा पातु सर्वाङ्गे मम सर्वदा॥ १५॥
ॐ ह्रीं अन्नपूर्णा पातु अवसादतु चंडिका।
असिताङ्गं शिरः पातु ललाटे रुरुभैरवः॥ १६॥
चण्डभैरवः वक्त्रं तु संकट-श्रीक्रोधभैरवः।
हृदि उन्मत्तकः पातु कपाली बाहुयुग्मके॥ १७॥
नाभौ भीषणः पातु लिङ्गे संहारभैरवः।
हंसबीजं पादयुग्मे सोऽहं रक्षतु हस्तयोः॥ १८॥
प्राणपानौ समाने च उदानं व्यानमेव च।
प्राणिनां रक्षतु द्वारमूले दशदिक्षु समन्तकः॥ १९॥
प्रणवः पातु सर्वाङ्गे लज्जाबीजं महाभयम्।
इति श्रीदेवीकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम्॥ २०॥
चतुर्वर्गप्रदो नित्यं स्वयं देवेन प्रकाशितम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि भैरवं कवचं परम्॥ २१॥
सदानन्दमयो भूत्वा लभते परमं पदम्।
यश्चैनं धारयेद् देवि कवचं मन्मुखोदितम्॥ २२॥
कोटिजन्मार्जितं पापं विनश्यति च तत्क्षणात्।
जलमध्ये अग्निमध्ये दुर्गमे शत्रुसंकटे॥ २३॥

कवचं स्मरणाद् देवि सर्वत्र विजयी भवेत्।
भक्तियुक्तेन मनसा कवचं पूजयेत् यदि॥ २४॥
कामतुल्यस्तु नारीणां रिपूणां च यमो यमः।
तस्य पादाम्बुजं छन्दं राज्ञां मुकुटभूषणम्॥ २५॥
तस्य मूर्तिं विलोक्यैव कुबेरोऽपि तिरस्कृतः।
अस्य विज्ञानमात्रेण सर्वसिद्धिर्न संशयः॥ २६॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बटुकं नरः॥ २७॥
प्राप्नोति फलं तस्य परे च नरकं व्रजेत्।
मन्वन्तरत्रयं स्थित्वा तिर्यङ्योनिषु जायते॥ २८॥
इह लोके महारोगी दारिद्रेण पीडितः।
शत्रूणां वशगो भूत्वा करपात्री भवेज्जडः॥ २९॥
देयं शिष्याय पूज्याय शान्ताय प्रियवादिने।
यो दद्याद् परिप्रेक्षेभ्यः तस्य नश्यति सत्त्वरम्॥ ३०॥
आयुर्विद्या यशो धर्मो बलं चैव न संशयः।
लक्ष्मीपुत्र-कलत्रादि धनधान्यादि-सम्पदः॥ ३१॥

॥ श्रीबटुकभैरवकवचं सम्पूर्णम्॥

कालभैरवकवचम्

महादेव उवाच

प्रीयतां भैरवो देवो नमो वै भैरवाय च।
देवेशि देहरक्षार्थं कारणं कथ्यतां ध्रुवम्॥ १॥
म्रिर्यंते साधका येन बिना श्मशानभूमिषु।
रणेषु चातिघोरेषु महामृत्युभयेषु च॥ २॥
शृंगीसलिलवज्रेषु ज्वरादिव्याधिवह्निषु।

देव्युवाच

कथयामि शृणु प्राज्ञ भैरवं कवचं शुभम्॥ ३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन मातृकाजारजो यथा।
ॐ अस्य श्रीभैरवकवचस्य आनन्दभैरवऋषि-
स्त्रिष्टुप्छन्दः श्रीभैरवो देवता बं बीज ह्रीं शक्तिः
ॐ भैरवेति कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः
ॐ सहस्त्रे महाचक्रे कर्पूरधवले गुरुः॥ ४॥
पातु मां भैरवो देवो भैरवः सर्वकर्मसु।
पूर्वस्यामसितांगो मां दिशि रक्षतु सर्वदा॥ ५॥
आग्नेय्यां च रुरुः पातु दक्षिणे चण्ड भैरवः।
नैर्ऋत्यां क्रोधनः पातु उन्मत्तः पातु पश्चिमे॥ ६॥
वायव्यां मां कपाली च नित्यं पायात्सुरेश्वरः।
भीषणो भैरवः पातु उत्तरस्यां तु सर्वदा॥ ७॥
संहारभैरवः पायादीशान्यां च महेश्वरः।
ऊर्ध्वं पातु विधाता च पाताले नंदको विभुः॥ ८॥
सद्योजातस्तु मां पायात्सर्वतो देवसेवितः।
वामदेवो वनांते च वने घोरस्तथाऽवस्तु॥ ९॥

जले तत्पुरुषः पातु स्थले ईशान एव च।
डाकिनीपुत्रकः पातु पुत्रान् मे सर्वतः प्रभुः॥ १० ॥
हाकिनीपुत्रकः पातु दारांस्तु लाकिनीसुतः।
पातु शाकिनिकापुत्रः सैन्यं वै कालभैरवः॥ ११ ॥
मालिनीपुत्रकः पातु पशूनश्वान् गंजास्तथा।
महाकालोऽवतु क्षेत्रं श्रियं मे सर्वतो गिरा॥ १२ ॥
वाद्यं वाद्यप्रियः पातु भैरवो नित्य संपदम्।
एतत्कवचमीशान तव स्नेहात्प्रकाशितम्॥ १३ ॥
नाख्येयं नरलोकेषु सारभूतं सुरप्रियम्।
यस्मै कस्मै न दातव्यं कवचं सुरदुर्लभम्॥ १४ ॥
न देयं परशिष्येभ्यः कृपणेभ्यश्च शंकर।
यो ददाति निषिद्धेभ्यः सर्वभ्रष्टो भवेत्किल॥ १५ ॥
अनेन कवचेनैव रक्षां कृत्वा विचक्षणः।
विचरन्यत्र कुत्रापि न विघ्नैः परिभूयते॥ १६ ॥
मंत्रेण रक्ष्यते योगी कवचं रक्षकं यतः।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दुर्लभं पापचेतसाम्॥ १७ ॥
भूर्जे रभांत्वचि वापि लिखित्वा विधिवत्प्रभो।
कुंकुमेनाष्टगंधेन गोरोचनैश्च केसरैः॥ १८ ॥
धारयेत्पाठयेद्वापि संपठेद्वापि नित्यशः।
संप्राप्नोसि फलं सर्वं नात्रकार्या विचारणा॥ १९ ॥
सततं पठ्यते यत्र तत्र भैरवसंस्थितिः।
न शक्नोति प्रभावं वै कवचस्यास्य वर्णितुम्॥ २० ॥
नमो भैरवदेवाय सर्वभूताय वै नमः।
नमस्त्रैलोक्यनाथाय नमो सर्वहिताय वै॥ २१ ॥

॥ इति कालभैरवकवचम् समाप्तम्॥

कालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनांघ्रिपङ्कजम्
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरम्
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे॥ १॥

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परम्
नीलकंठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे॥ २॥

शूलटङ्ककालदण्डपाणिमादिकारणम्
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियम्
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे॥ ३॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहम्
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्कणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिम्
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे॥ ४॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे॥ ५॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकम्
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे॥ ६॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिम्
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे ॥ ७ ॥
भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे ॥ ८ ॥
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्द्धनम्।
शोकमोहदैन्यलोभपापतापनाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम्॥ ९ ॥

॥ इति कालभैरवाष्टकं समाप्तम् ॥

कालभैरवस्तुतिः

ॐ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥ १॥
श्मशानवासीः मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः॥ २॥
कंकालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिंगललोचनः॥ ३॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कंकाली धूम्रलोचनः।
अभीरुर्भैरवो नाथो भूपो योगिनीपतिः॥ ४॥
धनदो धनहारी च धनवान् प्रतिभावान्।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत्॥ ५॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनोज्ज्वलन् नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः॥ ६॥
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
बटुको बहुवेषश्च खट्वांगवरधारकः॥ ७॥
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः॥ ८॥
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शंकरप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः॥ ९॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥ १०॥
कंकालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनस्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥ ११॥
शुद्धो नीलांजनप्रख्यो प्रत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः॥ १२॥

सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिसेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥ १३॥
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरतिव हि।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः॥ १४॥
मयां ते कथितं देवि! रहस्यं सर्वकामदम्।
यं इदं पठते स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ १५॥
न तस्य दुरितं किञ्चिन्नैव भूतभयं तथा।
न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभं तथा॥ १६॥
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्।
पातकानां भयं नैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्॥ १७॥
मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये।
औत्पातिकभये चैव तथा दुःस्वप्नजे भये॥ १८॥
बन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।
सर्वं प्रशमनं याति भयं भैरवकीर्तनात्।' १९॥
एकादशसहस्त्रं तु पुरश्चरणमुच्यते।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद् देवि सम्वत्सरमतन्द्रितः॥ २०॥
स सिद्धिमाप्नुयादिष्टां दुर्लभोऽपि च मानवः।
षड्गमासान्भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम्॥ २१॥
राजशत्रुविनाशार्थं पठेन्मासाष्टकं यदि।
रात्रौ वा जपते देवि नाशयेत् सर्वशत्रुकान्॥ २२॥
जपेन्मासत्रयम्मर्त्यो राजानं वशमानयेत्।
धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी चापि मानवः॥ २३॥
पठेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि।
धनं पुत्रं तथा दारान् प्राप्नुयान्नात्र संशयः॥ २४॥
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सत्यं न संशयः॥ २५॥

निगडैश्चापि यो बद्धः कारागृहनिपातितः ।
शृङ्खलाबन्धनप्राप्तः पठेच्चेद्यदि वा निशम् ॥ २६ ॥
यान्यान्समीहते कामांस्तांस्तां प्राप्नोति निश्चितम् ।
अप्रकाश्यमिदं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ २७ ॥
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिते ।
दद्यात्स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम् ।
इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम् ॥ २८ ॥
सन्तोषं परमं प्राप्य भैरवस्य महात्मनः ।
भैरवस्य प्रसन्नोऽभूत्सर्वलोकमहेश्वरी ॥ २९ ॥
भैरवस्तु प्रहृष्टोऽभूत् सर्वगः परमेश्वरः ।
जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरीम् ॥ ३० ॥

॥ इति कालभैरवस्तुतिः ॥

भैरवाष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ भैरवाय नमः।
ॐ भूतनाथाय नमः।
ॐ भूतात्मने नमः।
ॐ भूतभावनाय नमः।
ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः।
ॐ क्षेत्रपालाय नमः।
ॐ क्षेत्रदाय नमः।
ॐ क्षत्रियाय नमः।
ॐ विराजे नमः।
ॐ श्मशानवासिने नमः।
ॐ मांसाशिने नमः।
ॐ खर्पराशिने नमः।
ॐ स्मरान्तकाय नमः।
ॐ रक्तपाय नमः।
ॐ पानपाय नमः।
ॐ सिद्धाय नमः।
ॐ सिद्धिदाय नमः।
ॐ सिद्धिसेविताय नमः।
ॐ कङ्कालाय नमः।
ॐ कालशमनाय नमः।
ॐ कलाकाष्ठातनवे नमः।
ॐ कवये नमः।
ॐ त्रिनेत्राय नमः।
ॐ बहुनेत्राय नमः।
ॐ पिङ्गललोचनाय नमः।
ॐ शूलपाणये नमः।
ॐ खड्गपाणये नमः।
ॐ कङ्कालिने नमः।
ॐ धूम्रलोचनाय नमः।
ॐ अभीरवे नमः।
ॐ भैरवीनाथाय नमः।
ॐ भूतपाय नमः।
ॐ योगिनीपतये नमः।
ॐ धनदाय नमः।
ॐ धनहारिणे नमः।
ॐ धनवते नमः।
ॐ प्रतिभानवते नमः।
ॐ नागहाराय नमः।
ॐ नागकेशाय नमः।
ॐ व्योमकेशाय नमः।
ॐ कपालभृते नमः।
ॐ कालाय नमः।
ॐ कपालमालिने नमः।
ॐ कमनीयाय नमः।
ॐ कलानिधये नमः।
ॐ त्रिलोचनाय नमः।
ॐ ज्वलन्नेत्राय नमः।
ॐ त्रिशिखिने नमः।
ॐ त्रिलोकपाय नमः।
ॐ त्रिनेत्रतनयाय नमः।
ॐ डिम्भाय नमः।
ॐ शान्ताय नमः।

ॐ शान्तजनप्रियाय नमः ।
ॐ कालभैरवाय नमः ।
ॐ बहुवेषाय नमः ।
ॐ खट्वाङ्गवरधारकाय नमः ।
ॐ भूताध्यक्षाय नमः ।
ॐ पशुपतये नमः ।
ॐ भिक्षुकाय नमः ।
ॐ परिचारकाय नमः ।
ॐ धूर्ताय नमः ।
ॐ दिगम्बराय नमः ।
ॐ शौरिणे नमः ।
ॐ हरिणाय नमः ।
ॐ पाण्डुलोचनाय नमः ।
ॐ प्रशान्ताय नमः ।
ॐ शान्तिदाय नमः ।
ॐ सिद्धाय नमः ।
ॐ शङ्करप्रियबान्धवाय नमः ।
ॐ अष्टमूर्तये नमः ।
ॐ निधीशाय नमः ।
ॐ ज्ञानचक्षुषे नमः ।
ॐ तपोमयाय नमः ।
ॐ अष्टाधाराय नमः ।
ॐ षडाधाराय नमः ।
ॐ सर्पयुक्ताय नमः ।
ॐ शिखीसख्ये नमः ।
ॐ भूधराय नमः ।
ॐ भूधराधीशाय नमः ।
ॐ भूपतये नमः ।
ॐ भूधरात्मजाय नमः ।
ॐ कङ्कालधारिणे नमः ।
ॐ मुण्डिने नमः ।
ॐ नागयज्ञोपवीतकाय नमः ।
ॐ जृम्भणाय नमः ।
ॐ मोहनाय नमः ।
ॐ स्तम्भिने नमः ।
ॐ मारणाय नमः ।
ॐ क्षोभणाय नमः ।
ॐ शुद्धाय नमः ।
ॐ नीलाञ्जनप्रख्याय नमः ।
ॐ दैत्यघ्ने नमः ।
ॐ मुण्डभूषिताय नमः ।
ॐ बलिभुजे नमः ।
ॐ बलिभुङ्नाथाय नमः ।
ॐ बालाय नमः ।
ॐ बालपराक्रमाय नमः ।
ॐ सर्वापत्तारणाय नमः ।
ॐ दुर्गाय नमः ।
ॐ दुष्टभूतनिषेविताय नमः ।
ॐ कामिने नमः ।
ॐ कलानिधये नमः ।
ॐ कान्ताय नमः ।
ॐ कामिनीवशकृद्वशिने नमः ।
ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः ।
ॐ वैद्याय नमः ।
ॐ प्रभवे नमः ।
ॐ विष्णवे नमः ।

भैरवाभिषेकविधिः

शंख में शुद्ध जल भरकर रुद्रसूक्त के निम्न मन्त्रा का उच्चारण करते हुए भैरव देवता की मूर्ति के ऊपर शंख के द्वारा जलधारा प्रदान करावें—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो तऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ १ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिर्ठ० सीः पुरुषं जगत् ॥ ३ ॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिं जगदयक्ष्मर्ठ० सुमना असत् ॥ ४ ॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक। अहींश्च सर्वां जम्भयनत्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव ॥ ५ ॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनर्ठ० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशो वैषार्ठ० हेड ईमहे ॥ ६ ॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽ अदृश्रनदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥ ७ ॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानो हन्तेभ्भ्यो कर नमः ॥ ८ ॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्कन्योंर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो वप ॥ ९ ॥ विज्यन्धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ२॥ उत। अनेशनस्य या इषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥ १० ॥ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥ ११ ॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् ॥ १२ ॥ अवतत्त्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्ष्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥ १३ ॥ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे। उमाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥ १४ ॥ मानो महान्तमुत मा नोऽ अर्भकमा नऽ उक्षितम्। मानो वधीः पितरमोत मातरमानः प्रियास्तन्वोरुद्र रीरिषः ॥ १५ ॥ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो

अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥ १६॥ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः॥ १७॥ नमो बभ्लुशाय व्याधिनेन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायातताविने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः॥ १८॥ नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नमऽ उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः॥ १९॥ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचे रवे परिचरायारण्यानां पतये नमः॥ २०॥ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांठ०सद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्योनक्तं चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः॥ २१॥ नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः॥ २२॥ नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः॥ २३॥ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृंठ०हतीभ्यश्च वो नमः॥ २४॥ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥ २५॥ नमः सेनाभ्यः

सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः॥ २६॥ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः॥ २७॥ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च॥ २८॥ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च न्नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च॥ २९॥ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च॥ ३०॥ नम आशवे चाजिराय्र च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च॥ ३१॥ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च॥ ३२॥ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चाव सान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च॥ ३३॥ नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च॥ ३४॥ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥ ३५॥ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णोषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च॥ ३६॥ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च॥ ३७॥ नमः कूप्याय चाऽव-ट्याय च नमो वीघ्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च॥ ३८॥ नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च

नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च॥ ३९ ॥ नमः शंगवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय॥ ४० ॥ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ ४१ ॥ नमः पार्य्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च॥ ४२॥ नमः सिकत्याय च प्रवाह्याषय च नमः किर्ठ०शिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च॥ ४३॥ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च॥ ४४॥ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पार्ठ०सव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च॥ ४५ ॥ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानार्ठ०हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः॥ ४६॥ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रं नीललोहित। आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्म्यो च नः किञ्चनाममत्॥ ४७॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ ४८ ॥ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे॥ ४९ ॥ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः। अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड॥ ५० ॥ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि॥ ५१ ॥ विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रर्ठ०हेतयोन्यमस्मन्निवपन्तु

ताः ॥ ५२ ॥ सहस्त्राणि सहस्त्रशां बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ ५३ ॥ असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्याम् । तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ५४ ॥ अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि । तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ५५ ॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ठ०रुद्रा उपश्रिताः । तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ५६ ॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः । तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ५७ ॥ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ५८ ॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ५९ ॥ ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्युधः । तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ६० ॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ६१ ॥ येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् । तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ६२ ॥ य ऽएतावन्तश्च भूयार्ठ०सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषार्ठ०सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ६३ ॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥ ६४ ॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥ ६५ ॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥ ६६ ॥

कुण्डनिर्माणम्

चतुरस्त्रकुण्डनिर्माणम्—चौबीस अङ्गुल का गज लेकर चारों तरफ (पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर) एक सा नाप द्वारा नापने से मय लेपन द्वारा चतुरस्त्र कुण्ड एक हाथ का बन जायेगा।

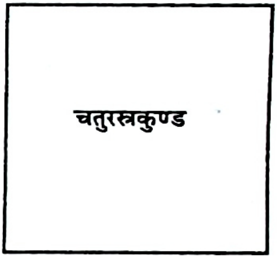

पद्मकुण्डनिर्माणम्—चौबीस अंगुल का चतुरस्त्र बनाकर उस चतुरस्त्र के ठीक मध्य से एक गोलाकार प्रकाल द्वारा तीन अंगुल का वृत्त बनावे। तदनन्तर छः अंगुल का गोलाकार दूसरा वृत्त उसी के ऊपर बनावे। फिर नौ अंगुल का वृत्त गोलाकार तीसरा और बारह अंगुल का गोलाकार वृत्त चौथा उसी पर बनाने पर चौदह अंगुल, सात यव और तीन यूका अर्थात् साढ़े चौदह अंगुल का वृत्त गोल पाँचवा उसी पर बना दे। तदनन्तर दो वृत्त को छोड़कर अर्थात् प्रारम्भ के दो वृत्त तीन और छः को छोड़कर पश्चिम, दक्षिण ओर उत्तर दिशा में एक-एक चिह्न करे। फिर नैर्ऋत्य, वायव्य, ईशान और अग्निकोण में एक-एक चिह्न करे। इस तरह आठ चिह्न वृत्त में हुंए—ऐसा निश्चय हो जाने पर उन दिशा और विदिशाओं के मध्य-मध्य में पुनः एक चिह्न दे। ये चिह्न सोलह बराबर-बराबर के होंगे। इस तरह सोलह चिह्न (रेखा) हो जाने पर उत्तर दिशा से एक चिह्न (रेखा) को छोड़ता हुआ पद्माकार रेखा देने से पद्म कुण्ड का निर्माण हो जाता है।

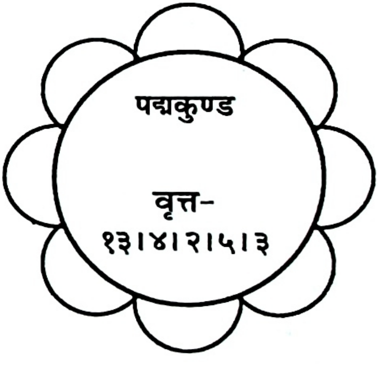

योनिकुण्डनिर्माणम्—चौबीस अङ्गुल का चतुरस्त्र बनाकर उस चतुरस्त्र में दक्षिणोत्तर आधे पर एक लम्बी रेखा दे। तदनन्तर पश्चिम भाग के आधे भाग का दो हिस्सा पूर्व और पश्चिम की ओर करें। फिर उसके आधे में अर्थात् कोने से एक रेखा दे, जो टेढ़ी दूसरी कोने में जाकर मिले। इस तरह फिर दूसरे कोने से रेखा दे। इसी तरह दूसरे कोने में दे। इस प्रकार दोनों आधों में चार रेखा टेढ़ी होगी। फिर उस पूर्व निर्मित चतुरस्त्र के ठीक पूर्व दिशा की तरफ के मध्य से पाँच अङ्गुल, एक यव और दो यूका बढ़ा दें। फिर चतुरस्त्र के किये हुए ठीक मध्य से अर्थात् दक्षिण दिशा से सटी एक रेखा टेढ़ी दे, जो पूर्व के ठीक मध्य में बढ़ी हुई पाँच अङ्गुल एक यव और यूका वाली रेखा के ऊपरी हिस्से में मिल जाय। इसी प्रकार उत्तर दिशा से एक रेखा दे। तदनन्तर नीचे प्रकाल को दक्षिण की तरफ और उत्तर की तरफ बने हुए दोनों हिस्सों के ठीक मध्य से, इसी प्रकार उत्तर की ओर से प्रकाल द्वारा रेखा पश्चिम दिशा के ठीक मध्य में मिलाने से योनि कुण्ड बन जाएगा।

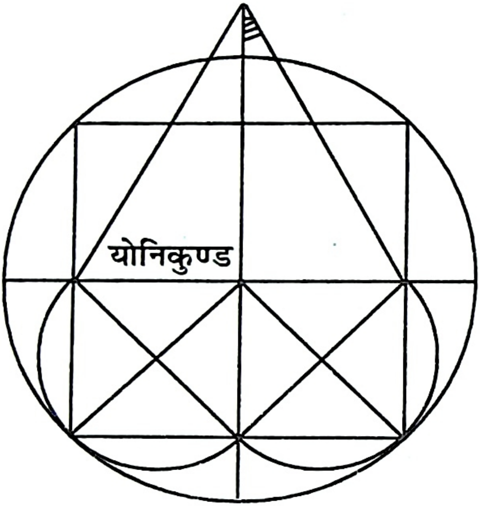

दीपदान

हमारे धर्मग्रन्थों में भैरवजी के लिये दीपदान का विशेषरूप से महत्त्व वर्णित किया गया है। आकस्मिक विपत्तियों के नाश के लिए तथा अपनी सुख-समृद्धि के लिये रविवार और मंगलवार के दिन भैरवजी के मन्दिर में उनका पूजन कर प्रसन्न हृदय से दीपदान अवश्य करना चाहिये। इनके दीपदान में गौघृत का ही प्रयोग करना चाहिए। किन्तु अन्य तान्त्रिक सिद्धियों के लिये तिल के तेल का ही प्रयोग करना चाहिए। पूरब की ओर दीपक का मुख रखने से समस्त प्रकार के सुखों एवं मनोवांछित कामना की प्राप्ति होती है। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये इनके मन्दिर में दीपक को उत्तराभिमुख रखकर जलाना चाहिए। आत्मरक्षा हेतु इनके मन्दिर में दीपक को पश्चिम दिशा की ओर रखकर जलाना करना चाहिए

भैरवव्रत

मनोवांछित फलों की प्राप्ति के लिये भैरवजी का व्रत अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। अपनी सुख-समृद्धि हेतु सभी स्त्री एवं पुरुषों को रविवार एवं मंगलवार के दिन इनका व्रत करना चाहिये। इस दिन व्रत रखकर सायंकाल के समय इनके मन्दिर में इनकी सांगोपांग पूजा और अर्चना करके उन्हें लालकनेर और गुड़हल की माला अर्पित करनी चाहिए। नैवेद्य में पायस की खीर, गेहूँ के आटे और खोवे से निर्मित लड्डू, गुड़ एवं घृत से बनी हुई गेहूँ की लप्सी और बेसन के लड्डू इनको चढ़ाने चाहिए। उस दिन इनको चढ़ाये हुए नैवेद्य का ही भक्षण करना चाहिए। जो स्त्री-पुरुष इस प्रकार से भैरवजी का व्रत नियमित रूप से करते हैं, उनके सभी कष्टों का नाश होता है और उनकी मनोवांछित मनोकामना पूर्ण होती है।

भैरव आरती

ॐ जै भैरव स्वामी, प्रभु तुम अन्तर्यामी।
काल कपाली कलानिधि, तुम त्रिभुवनगामी॥
ॐ जै भैरव स्वामी

तुम त्रिलोक के स्वामी, खण्ड चन्द्रधारी।
शिव स्वरूप कपाली-कपाली भक्तन अघहारी॥
ॐ जै भैरव स्वामी

कर त्रिशूल अरु उमरु, खप्पर मन मोहे।
मणिमय किङ्गिण नूपूर, चरण कमल सोहे॥
ॐ जै भैरव स्वामी

स्वच्छ स्फटिक सम कुण्डल, कानन मह राजो।
स्वान सुशोभित डमरु, डिम डिम डिम बाजै॥
ॐ जै भैरव स्वामी

भूतप्रेत सब नाचत, गावत बैताला।
मदमाते मतवाले, पीते मधु प्याला॥
ॐ जै भैरव स्वामी

भैरवजी की, आरती जो नर-नारी गावे।
पाप ताप मिट जावै सुख सम्पत्ति पावे॥
ॐ जै भैरव स्वामी

भैरवप्रतिष्ठासामग्री

रोली २०० ग्राम, मौली १५० ग्राम. धूपबत्ती ४ पैकेट, केसर ६ मासा, कपूर ४ तोला, अबीर, बुक्का, सिन्दूर १०० ग्राम, हलदी पीसी १०० ग्राम, मेंहदी पीसी १०० ग्राम, यज्ञोपवीत (५०), रूई २५० ग्राम, चावल १० किलो, पान ८० नग प्रतिदिन, सुपारी ५ किलो। बेसन का लड्डू १ किलो प्रतिदिन, मिश्री आधा किलो, बतासा १ किलो, ऋतुफल एक दर्जन प्रतिदिन, पंचमेवा १ किलो। इलायची छोटी दो तोला, लवंग दो तोला, जावित्री दो तोला, जायफल २० नग, अतर की शीशी दो, कस्तूरी शीशी एक, गुलाबजल की शीशी एक बड़ी, गोबर, गोमूत्र, दुग्ध आधा लीटर प्रतिदिन, दधि २५० ग्राम प्रतिदिन, चीनी ५०० ग्राम प्रतिदिन, गो घृत, शहद २५० ग्राम, पीली सरसों १०० ग्राम, कच्चा सूत सौ हाथ। रुद्राक्ष की माला एक, सुगन्धित पुष्प माला २५ प्रतिदिन, लाल कनेर और गुड़हल की माला, तुलसी, दूर्वा, बिल्वपत्र, प्रतिदिन। नारियल जटादार पचीस, गरी का गोला ग्यारह, चन्दन का मुठ्ठा लाल, सफेद एक-एक, हरसा एक। पाँच-पाँच रुपये का लाल, पीला, हरा, काला रंग, पंचरत्न की पुड़िया सात।

सर्वौषधि—५ रुपये का मुरा, ५ रुपये का जटामासी ५ रुपये का वच, ५ रुपये का कूट, ५ रुपये शिलाजीत, ५ रुपये आंबाहलदी, ५ रुपये दारूहलदी, ५ रुपये का सटी (कचूर), ५ रुपये का चंपा, ५ रुपये का नागरमोथा।

सप्तमृत्तिका—हाथी के स्थान की मिट्टी, घोड़े के स्थान की मिट्टी, बल्मीक (दीमक) की मिट्टी, नदी संगम की मिट्टी, तालाब की मिट्टी, राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी, गोशाला की मिट्टी।

सप्तधान्य—यव दो किलो, गेहूँ दो किलो, धान दो किलो, तिल दो किलो, ककुनी आधा किलो, सावाँ आधा किलो. चना दो किलो।

नवग्रहकाष्ठ—नवग्रह काष्ठ की १०८-१०८ लकड़ियाँ। कुशा एक सौ आठ। मृगचर्म एक व कम्बल एक, सूत की डोरी दस हाथ की, ताँबे का तार बीस हाथ का, काली उड़द एक किलो, लोहे की कंटिया चार, काष्ठ की दो चौकी, काष्ठ का पाटा तीन, १ बण्डल सूतरी, केले के स्तम्भ आठ, ५ रुपये का हरताल, ५ रुपये का मैनसिल, ५ रुपये का सुरमा काला, ५ रुपये का सुरमा सफेद, ५ रुपये का पारा, कांक्षी वरिका, कौसिस, गेरू, अगर, तगर, खश, वैष्णवी, सहदेवी, लक्ष्मणा, ब्राह्मी, सोंठ, शमी, शताबरी, गुडूची, सौराष्ट्री, अर्जुन, आवला, गोरोचन, कौवाकोठी, शंखपुष्पी, वरियरा, भटकटैया, सोमलता, ऋतु जन्य फल प्रतिदिन, बड़ा नीबू, कागजी नीबू, जामुन पत्र, अशोक पत्र, कदम्बपत्र, सेमरपत्र, पंचपल्लव. की छाल, सेवार, ऊख का रस, सुरोदक, शान्त्युदक, क्षीरोदक, सितपुष्पोदक,

गोशृङ्गोदक, फलोदक, नवरत्नोदक, सुवर्णोदक, मेघजल, तीर्थजल, गुलाबजल, केवड़ाजल, अतर, फुलेल। अग्निहोत्र की भस्म। मक्खन आधा किलो, दुग्ध पाँच किलो, दही ढ़ाई किलो, गोबर, गोमूत्र, धान का लावा एक पाव, सत्तू सौ ग्राम, जौ का आटा डेढ़ किलो, चावल का आटा २५० ग्राम, मसूर का आटा २५० ग्राम, जटामासी का चूर्ण ५० ग्राम, आँवला का चूर्ण ५० ग्राम।

अन्नाधिवास के लिये अन्न—भैरवजी की अन्नाधिवास के लिए दो बोरा चावल. दो बोरा गेहूँ।

घृताधिवास के लिये घृत—भैरवजी की घृताधिवास के लिए गो घृत टीन एक, ब्रह्मशिला एक, कूर्मशिला एक। मिट्टी की पेटी एक, लोहे की कंटिया आठ, ऊन का सूत २५० ग्राम, तीन ताँगे का सूत पाँच सौ हाथ। चाँदी का तार दो सौ हाथ, कलश चाँदी अथवा ताम्र का एक, कलश ताम्र अथवा पीतल के पाँच, कमण्डलु (झारी) एक, तस्तरी पीतल दस, पूर्णपात्र कलश (ब्रह्मा के लिये) एक, बघोना (खीर पकाने के लिये) एक, कटोरा कांसे का बड़ा एक, कटोरी ग्यारह, थाली दो, थाली कांसे की एक, परात एक, कड़छुल पीतल एक, सड़सी पीतल एक, दो कांसे की कटोरी (छायापात्र के लिये), आरतीदानी एक, धूपदानी एक, घण्टा एक, घड़ौल एक, शंख एक, मिट्टी के कलश दो सौ पचास, मिट्टी कसोरा एक सौ, पत्तल एक सौ, मीठा तेल ढ़ाई किलो, सुवर्ण के टुकड़े पाँच, चाँदी के टुकड़े पाँच, ताँबे के टुकड़े पाँच, पीतल के टुकड़े पाँच, शीशा एक, रांगा एक।

आचार्यवरणसामग्री, ब्राह्मणवरणसामग्री। भैरवजी को चढ़ाने के लिये लाल रंग के वस्त्र। भैरवजी की सुवर्ण मूर्ति एक। वास्तु, क्षेत्रपाल, योगिनी, नवग्रह एवं असंख्यात रुद्र की मूर्ति। सुवर्ण की शलाका दो, सुवर्ण के टुकड़े नब्बे, सुवर्ण की जिह्वा एक (वसोर्धारा के लिए), चाँदी के पञ्चपात्र।

ध्वजा-पताका तथा वेदियों के लिये वस्त्र—सफेद कपड़ा दो थान, लाल कपड़ा एक थान, पीला कपड़ा एक थान, हरा कपड़ा एक थान, काला कपड़ा एक थान, पंचरंगा चंदवा बड़ा एक, चंदवा छोटा पाँच।

शय्यासामग्री। मन्दिर के लिये शय्यासामग्री की सभी वस्तुएँ। मन्दिर के लिये समस्त पूजनसामग्री कमण्डलु सहित।

हवन सामग्री—तिल ८० किलो, चावल ४० किलो, यव २० किलो, चीनी १० किलो, घृत १ टीन, पञ्चमेवा दो किलो, चन्दन का चूरा एक किलो, कमलगट्टा १ किलो, गुग्गुल आधा किलो, आम की लकड़ी ८० किलो, गोयठा ५०।

वास्तुशान्ति, प्रतिष्ठा एवं यज्ञादि के लिए सम्पर्क करें-
डॉ. अशोक कुमार गौड वेदाचार्य
पुत्र-स्व० दौलतराम गौड वेदाचार्य
भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल,
डी. ७/१४ सकरकन्द गली,
वाराणसी
मोबाइल : ९७९२३५३७४५

लेखक की लेखनी से

यज्ञमन्त्रसंग्रह ।
हरिहरयागरहस्य ।
त्रिपिण्डीश्राद्धपद्धति ।
गयाश्राद्धपद्धति ।
सर्वदेवप्रतिष्ठामहोदधि ।
दुर्गायागपद्धति ।
सन्तानगोपालानुष्ठानविधि ।
शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी ।
गायत्रीयागरहस्य ।
लक्ष्मीनारायणप्रतिष्ठाविधि ।
सूर्यप्रतिष्ठाप्रयोग ।
व्यवस्थासंग्रह । श्री विद्याधर गौड़
अम्बायागपद्धति ।
दुर्गापूजाहवनपद्धति ।
महामृत्युञ्जययागरहस्य ।
भुवनेश्वरीरहस्य ।
कालभैरवरहस्य ।
पञ्चदेवप्रतिष्ठारहस्य
वेदीपूजारहस्य ।
शिवशक्तियागरहस्य ।
श्यामा (खाटूबाबा) रहस्य ।

लक्ष्मीयागरहस्य ।
गणपतियागरहस्य ।
सूर्ययागरहस्य ।
अन्नपूर्णारहस्य ।
रा[illegible]
रुद्रय[illegible]
हनु[illegible]रहस्य ।
गा[illegible]
ब[illegible]रहस्य ।
वि[illegible] अर्थात् विष्णुयागपद्धति।
गंगारहस्य ।
नृसिंहरहस्य ।
सरस्वतीरहस्य ।
लक्ष्मीरहस्य ।
राधारहस्य ।
दुर्गारहस्य ।
गणपतिरहस्य ।
पूजारहस्य ।
विष्णुरहस्य ।
शिवरहस्य ।
कालीरहस्य ।

चौखम्बा विद्याभवन
वाराणसी

KP
Press